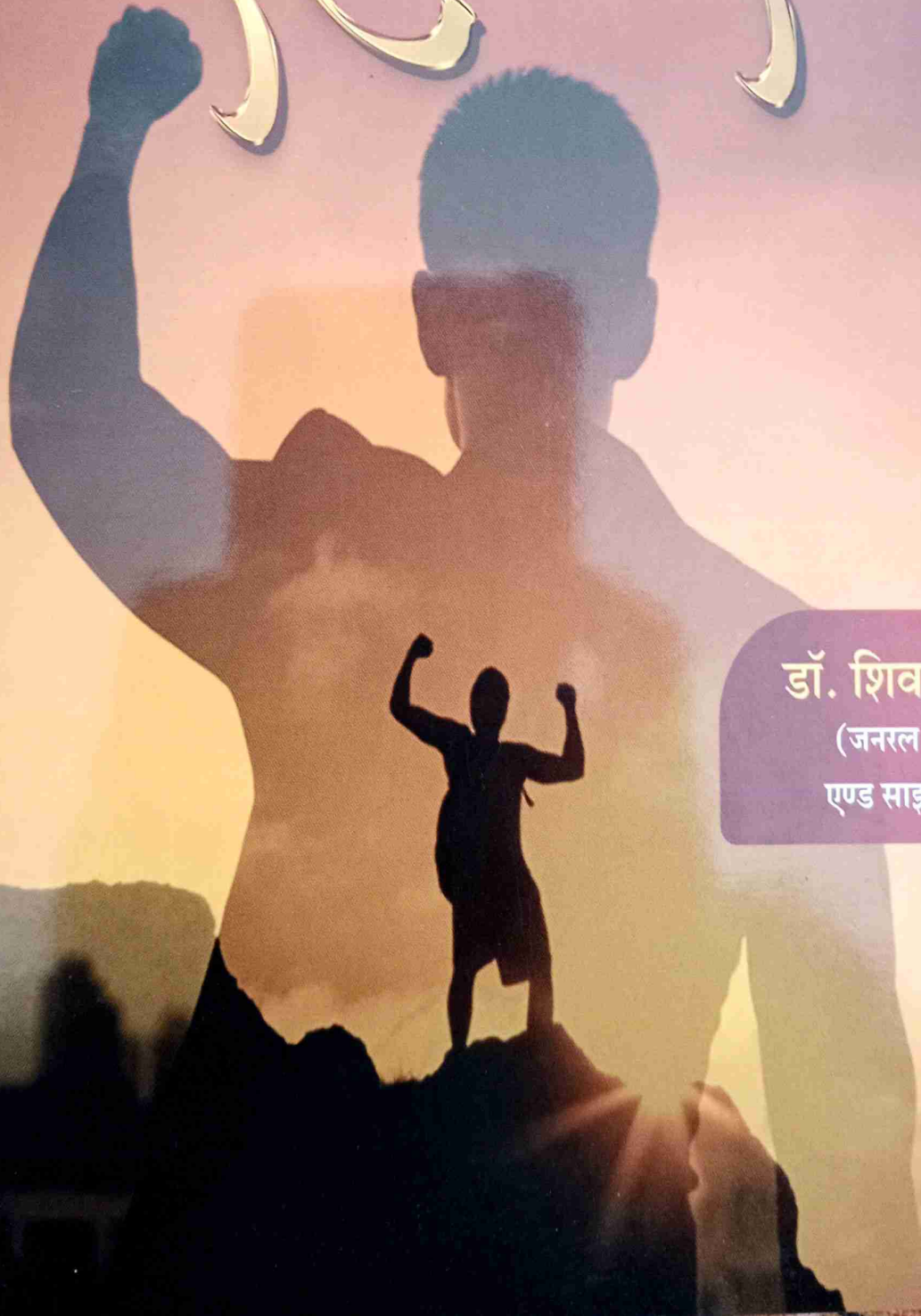


रचनात्मक जीवन की खोज

जीवन के दस कदम



डॉ. शिवशंकर पटेल
(जनरल फिजीशियन
एण्ड साइकोलॉजिस्ट)

विषय-सूची

- | | | | |
|---|---------|---|---------|
| 1. मैं सोचता हूँ एवं इस पुस्तक का उद्देश्य | 01-04 | 7. छठवां कदम - अनुशासन में रहें। | 152-177 |
| 2. पहला कदम - एक सोच बनायें | 05-45 | 1. अनुशासन का महत्व | |
| 1. सोच क्या है ? | | 2. आत्मअनुशासन | |
| 2. सोच कैसी हो ? (ग्यारह प्रकार की सोचों का वर्णन) | | 3. आत्म अनुशासित बनने के तरीके (आठ तरीके) | |
| 3. कौन सी सोच हमें आगे ले जाती है और कौन सी पीछे | | 8. सातवां कदम - आत्मविश्वासी बने। | 178-210 |
| 4. सकारात्मक सोच एवं नकारात्मक सोच में अन्तर | | 1. आत्मविश्वास क्या है ? | |
| 3. दूसरा कदम - सपने देखे। | 46-66 | 2. आत्मविश्वास का महत्व | |
| 1. सपने क्यों देखना चाहिये ? | | 3. आत्मविश्वास प्राप्त करने के तरीके (आठ तरीके) | |
| 2. सपनों के प्रकार | | 9. आठवां कदम - धैर्य रखे, हिम्मत के साथ चलें। | 211-248 |
| 3. सपने किस प्रकार देखने चाहिये | | 1. ग्यारह समस्याएँ एवं उनका हल | |
| 4. तीसरा कदम - अपने आपको पहचानियें। | 67-81 | 10. नौवां कदम - ईमानदारी के साथ चलें। | 249-265 |
| 1. अपने आपको क्यों पहचानें ? | | 1. जीवन के प्रत्येक पहलू में ईमानदारी | |
| 2. अपने गुणों को किस प्रकार बाहर लायें (पांच तरीके) | | 11. दसवां कदम - व्यक्तित्ववान बनें। | 266-299 |
| 5. चौथा कदम - लक्ष्य निर्धारित करें। | 82-123 | 1. व्यक्तित्व का महत्व | |
| 1. लक्ष्य क्या है ? और लक्ष्य क्यों बनाना चाहिये ? | | 2. व्यक्तित्व प्राप्ति के 15 तरीके | |
| 2. लक्ष्य का महत्व एवं लक्ष्य का प्रकार | | | |
| 3. लक्ष्य प्राप्ति के तरीके (ग्यारह तरीके) | | | |
| 6. पांचवा कदम - समय का ख्याल रखें। | 124-151 | | |
| 1. समय का महत्व | | | |
| 2. समय का सही मैनेजमेंट (मैनेजमेंट के दस तरीके) | | | |
| 4. अपने बीते हुये कल की समीक्षा करें | | | |



आभार पृष्ठ

मैं अपने माता पिता एवं बहन-भाइयों व परिवार के सभी सदस्यों को पूरे मन से धन्यवाद देना चाहूँगा जिनका आशीर्वाद मेरी जिन्दगी के हर मुसीबत व मोड़ पर ढाल की तरह काम करता है और मुझे प्रेरणा देता है।

मैं अपने ईष्ट को अन्तरात्मा से नमन करता हूँ जिसने मुझे इतनी बड़ी प्रतिभा व शक्ति दी है।

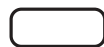
मैं अपने गुरुजनों व बड़ों को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे विकसित किया है।

मैं अपने दोस्तों को बहुत बहुत धन्यवाद देना चाहूँगा क्योंकि मेरे दोस्त मेरे लिये उस पतवार के समान हैं जो नाव को किनारे तक पहुंचाती है, उनकी मदद के बिना मैं इतने बड़े काम को पूरा नहीं कर सकता था, उन्होंने मुझे प्रत्येक समय साथ दिया और उत्साहित किया।

मैं उन सारे पत्र-पत्रिकाओं के लेखकों व संपादकों को धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्हें पढ़कर मैंने अपने ज्ञान को बढ़ाया है मैंने अपनी इस पुस्तक में किसी अन्य पुस्तक की किसी भी रूप में कापी करने की कोशिश नहीं की है। अगर भूल वस मुझसे ऐसा हो गया हो तो कृपया मुझे सूचित करें। अगले संस्करण में आपके विचारों का पूरा श्रेय देने की कोशिश करूँगा।

मैंने इस पुस्तक में उपयोग किये गये वाक्यांशों का संबंधित व्यक्ति को पूरा श्रेय देने की कोशिश की है। अगर मैं भूलवश ऐसा नहीं कर पाया हूँ तो सूचना मिलते ही मैं पूरी कोशिश करूँगा आपको अपने वाक्य के लिये पूरा श्रेय मिले।

(डॉ. शिव शंकर पटेल)



“मे सोचता हूँ”

ये दुनियाँ यूँ ही चलती रही है और चलती रहेगी, लोग आयेगें और चले जायेंगे। किसी के आने जाने से इस दुनियाँ को कोई फर्क नहीं पड़ता परन्तु प्रत्येक आने वाले इंसान का दायित्व जरूर बनता है कि जो विरासत हमारे पूर्वजों ने हमें सौंपी है हम उससे बेहतर विरासत अपनी आने वाली पीढ़ियों को सौंपें। इसलिये हमें बेहतर से बेहतर काम करना होगा, जिससे इस खूबसूरत संसार के निर्माण में हमारी भी कुछ भागीदारी रहे और आने वाली पीढ़ियाँ हमें भी याद रखें और वह भी वैसा ही करने की कोशिश करें जैसा हमने किया है।

इस अनन्त दुनिया में पता नहीं कितने लोग आये और चले गये परन्तु इन लोगो में से चन्द लोगो का ही इतिहास मिलता है। मैं वह बिल्कुल नहीं कहता शेष अन्य लोगो ने कुछ नहीं किया होगा, किया होगा और बेहतर करने की कोशिश भी की होगी परन्तु वे सब शायद परिवर्तन के खिलाफ उठने वाली आँधी के सामने रुक न सके होंगे इसलिये इतिहास ने उन्हें भुला दिया।

‘इतिहास कर्मवीरों का होता है, कर्मवीर वही होते हैं जो हर मुसीबत के सामने मुस्कराते हुए खड़े रहते हैं।’

इस दुनियाँ में एक बात तो बिल्कुल तय है, इतिहास उन्ही का होता है जो कमर कसकर कठोर से कठोर मेहनत के लिये सदा अपनी कमीज की बाँहे चढ़ाये तैयार रहते हैं और काम पूरा करने में तेजी से जुट जाते हैं, जो नीरस से नीरस काम को करने से भी नहीं उबते और न ही थकते हैं और जिन्हे काम के बिना चैन नहीं पड़ता, जो धूल मिट्टी और कचरे में भी काम करने से नहीं घबराते, जिन्हे काम से ही काम रहता है और अपने भाग्य पर रोने के बजाय मुकाबला करना पसंद करते हैं।

‘वे सभी महान व्यक्ति, जो अपने साथियों की अपेक्षा अधिक उंचे उठे हैं अपने आप को एतिहासिक बनाये हैं, केवल अपनी इच्छा शक्ति लगान और सामर्थ्य के कारण अन्य बाते तो उनमें भी वैसी ही थी जैसी उनके साथियों में थी।’

अगर हमें महान व्यक्ति बनना है, जीवन का अधूरा चित्र पूरा करना है तो

उसे हमें अपने पुरुषार्थ से ही भरना पड़ेगा, कभी-कभी हम लोग इस अधूरे चित्र को सीमित मानसिकता के कारण पूरा नहीं कर पाते, फिर भी हममें से कुछ ऐसे लोग जरूर हैं, जो बाधाओं में रहते हुये भी अपने अधूरे चित्र को अधिक सुन्दर रूप से पूरा करते हैं, ऐसा संयोगवश नहीं होता, नियति उनके प्रति हमसे भी अधिक क्रूर रहती है। उन क्रूरताओं के रहते भी कई महान पुरुषों ने नियत को एक चुनौती दी। इस संसार में सभी महापुरुषों को संघर्ष और विरोध की ज्वाला में सुलझना पड़ा है, उनकी अग्निपरीक्षा प्रायः अज्ञात ही रही है उनसे कभी भी अपने संघर्ष और बधाओ को अपनी कमजोरी नहीं बनाया बल्कि हमेशा इन्हे अपनी ताकत बनाकर चले हैं और अपनी एक निष्ठा के कारण ही अपना जीवन उच्च ध्येय की पूर्ति के लिये समर्पित किया है और इतिहास को मजबूर कर दिया कि वह उन्हे हमेशा याद करता रहें।

“जीवन यात्रा कर्मवीरों के लिये है कायरों के लिये नहीं”

-शेक्सपियर-

कुछ लोग हमेशा शिकायत करते रहते हैं, इतना बड़ा काम मैं अकेला नहीं कर सकता इसलिये ऐसे लोगों को एक बात हमेशा याद रखनी चाहिये।

“ महान व्यक्ति सदा अकेले चले हैं और अपने इस अकेलेपन के कारण ही दूर तक चले हैं ”

इस दुनिया में अकेले अपने सहारे ही कई व्यक्तियों ने संसार के महानतम कार्य संपन्न किये हैं। उन्हे एकमात्र अपनी ही प्रेरणा प्राप्त हुई, वे अपने ही आंतरिक प्रेरणाम्रोत से आगे बढ़ते रहे हैं। दुख के क्षणों में भी हमेशा प्रफुल्लित रहे हैं, दूसरों से अपने दुःख को मिटाने की उम्मीद नहीं रखी अपनी निज वृत्तियों में ही उन्होंने सहारा देखा है।

‘अकेलापन जीवन का परम सत्य है परन्तु अकेलेपन से घबराना जी तोड़ना, कर्त्तव्यपथ से हतोत्साहित या निराश होना सबसे बड़ा पाप है।’

- पं. श्री राम शर्मा ‘आचार्य’

जो व्यक्ति अकेला होता है और हमेशा आगे बढ़ने की सोचता है उसके निजी आंतरिक प्रदेश में छिपी हुई महान शक्तियाँ अपने आप विकसित होने लगती हैं, जो इंसान को आगे बढ़ने के लिये नये-नये रास्तों का निर्माण करती जाती है

और इंसान किसी अन्य व्यक्ति पर आश्रित होने के बजाय धीरे धीरे अपने ऊपर आश्रित होने लगता है और जब इंसान एक बार अपने ऊपर आश्रित हो जाता है तो फिर वह कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखता क्योंकि उसकी उच्चतम शक्तियाँ जागृति हो जाती हैं जो उसकी प्रत्येक अग्निपरीक्षा में चट्टान की तरह खड़ी रहती हैं।

इस संसार में सब कुछ तो अधूरा पड़ा है साहसियों के लिये मांजिल की कमी कभी नहीं रही है मैं निराशा में यकीन नहीं करता क्योंकि मुझे यकीन है और एक उम्मीद भी है साथ ही इंसान की शान्ति पर मेरी आस्था अटल है, एक दिन यह अधूरा संसार जरूर पूरा होगा क्योंकि इंसान ने दुबले पतले नाजूक शरीर में दिमाग नाम की एक बेमिसाल चीज है, जो कोई बंधन स्वीकार नहीं करती और न ही कभी हार मानती।

इस पुस्तक का उद्देश्य

इस संसार में जो व्यक्ति सफल हुये हैं उनसे ऐसा क्या किया ? जिससे वह सफल व्यक्ति कहलाये और जो व्यक्ति असफल हुये वह ऐसा क्या नहीं कर पाये ? जिससे वह असफल कहलाये। मैंने इस पुस्तक में महापुरुषों की आत्मकथा, जीवनी और उनके संघर्षमय जीवन के अध्ययन के आधार पर साथ ही अपनी जिन्दगी से प्राप्त अनुभव के आधार पर तमाम बारीक से बारीक प्रेरणात्मक बातों को लिखने की कोशिश की है जो सामान्य व्यक्ति और महान व्यक्ति के बीच अंतर को दूर करने में सहायक होती है। अगर कोई व्यक्ति मेरे द्वारा लिखी गयी सीख को अपनी जिन्दगी में उतारता है तो निश्चित रूप से मेरी यह पुस्तक वरदान सिद्ध होगी नहीं तो प्रत्येक कागज की तरह यह पुस्तक भी कागज की कागज ही रहेगी क्योंकि पुस्तकें तो निर्जीव पत्थर के समान होती हैं जिस प्रकार उसका उपयोग किया जायेगा वह वही रूप धारण कर लेगा चाहे तो ईश्वर की मूर्ति बना लें या फिर कब्र।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का मालिक स्वयं होता है कोई गुरु, कोई शिक्षक, आपको मार्ग बता सकता है, विधि और उपाय बता सकता है परन्तु करना तो आपको ही होगा। सफलता पाने के लिये अवसर आपको पैदा करना होगा, आपको रास्ते में चलना होगा, आपको घर के दरवाजे के सामने प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये कि कोई आयेगा और आपको महान पुरुष बना देगा। आपको व्यर्थ में आँखे गढ़ाये

नहीं बैठना चाहियें। सामने पड़े अवसरों को नजर अंदाज नहीं करना चाहिये जीवन वैसे भी बहुत छोटा है, और आप उसे और व्यर्थ करके उसे और छोटा न करें।

मैंने इस पुस्तक में जितने सिद्धांतों के बारे में जिक्र किया है बिल्कुल सामान्य और सरल भाषा में आम व्यक्ति को ध्यान में रखते हुये किया है मैंने इस पुस्तक में सफलता के लिये जरूरी सभी मापदंडों को प्रेणानात्मक उदाहरणों के द्वारा बताने की कोशिश की है। मैं आशा करता हूँ कि मेरा यह प्रयास उन लोगों के लिये बहुत फायदेमंद होगा जो जीवन में कुछ करना चाहते हैं कुछ पाना चाहते हैं, मेरी यह पुस्तक उन सभी लोगों के लिये फायदेमंद सिद्ध होगी जो प्रयास तो कर रहे हैं मगर उन्हें यह पता नहीं है कि उन्हें जाना कहाँ और कैसे है ?

पाठकों से मेरा निवेदन है कि इस पुस्तक को पढ़ें, समझें और अपने जीवन में उतारे क्योंकि मरफी का नियम है 'सिद्धांत मार्गदर्शन करते हैं, वही प्रयोग आपको परिणाम तक ले जाते हैं।'

“ मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। हे ! प्रभु जो व्यक्ति अपने सपनों के लिये संघर्ष करे, बिना तुझसे शिकायत करे हमेशा आगे बढ़ने का प्रयास करें उसके सपने मत टूटने देना क्योंकि सपने टूटने के बाद इंसान टूट जाता है। ”

—डॉ. शिवशंकर पटेल

पहला कदम 'एक सोच बनाये'

'सोच दुनिया में शासन करती है'

—इमर्सन—

“जब हम एक सोच बना लेते हैं, उसके बारे में बातें करते हैं, और अपनी इस सोच के आधार पर कोई निर्णय लेते हैं तो फिर किन्तु परन्तु शंका, संदेह आदि का कोई महत्व नहीं रह जाता।” सोच दिल एवं दिमाग से निकली हुई एक ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिये दिशा का निर्धारण करती है। लक्ष्य एवं सोच दोनों हमारे चेतन मस्तिष्क से ही उत्पन्न होते हैं परन्तु लक्ष्य की उत्पत्ति एक गहन सोच के बाद होती है, इसीलिये प्रत्येक व्यक्ति के पास दुविधा से रहित एक विशुद्ध सोच होनी चाहिये।

ऐसा माना जाता है, प्रत्येक व्यक्ति का मन एक दिन में लगभग 100 बार परिवर्तित होता है और यह तब और परिवर्तनशील हो जाता है। जब कोई अवसर सामने आता है परिणामस्वरूप हमारे दिमाग में एक दुविधायुक्त जंग शुरू हो जाती है और यह दुविधायुक्त जंग हमारे मस्तिष्क को पचासों प्रकार की बातें सोचने में मजबूर कर देती है जिससे व्यक्ति तनावग्रस्त हो जाता है। इस समय हमें स्वप्रेरणा की जरूरत होती है साथ ही अपने दिमाग को सकरात्मक रखते हुए 'एक सोच' की ओर ले जाने की जरूरत होती है क्योंकि एक अच्छी सोच सौ प्रकार की दुविधात्मक सोच से अच्छी होती है।

कुछ लोगों की आदत होती है कि वह सोचते बहुत ज्यादा हैं परन्तु एक भी सोच को लक्ष्य में परिवर्तित नहीं कर पाते हैं, जिसका परिणाम एक ही होता है। 'दरिद्रता'। ऐसे लोगों को मेरी एक ही सलाह है। कम सोचों। परन्तु अच्छा सोचों और उसे कार्यरूप में परिणित करें।

इस दुनिया में तीन प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं।

पहला – जो सोचकर सिर्फ कहता हैं ।

इस प्रकार के व्यक्ति संभवतः अन्य लोगो की दृष्टि में न पाये जाते हो परन्तु मेरी दृष्टि में ऐसे लोगो की संख्या काफी अधिक है, ऐसे व्यक्ति प्रतिदिन नयी-नयी तरकीबे बनाते हैं किन्तु कार्यरूप में परिणित नहीं करते हैं । इनकी जिंदगी सिर्फ सोचने में गुजर जाती है ।

इस प्रकार के व्यक्ति वास्तव में कभी-कभी लाजबाब चीजे भी सोचते है जिसे जिन्दगी में वे खुद कभी भी नहीं उतार पाते । हा इसका फायदा दूसरे व्यक्ति जरूर उठा ले जाते हैं । इस प्रकार के व्यक्तियों के बारे में अन्य व्यक्ति कहते हैं 'पता नहीं यह व्यक्ति क्या-क्या फालतू सोचता रहता है । इसका कुछ नहीं हो सकता । इसका भगवान ही मालिक है ? एक लड़के ने 18 वर्ष की उम्र में कलेक्टर बनने की सोची और सबसे कहता मै तो आई.ए.एस. बनूँगा परन्तु करता कुछ नहीं था, उसने फिर सोचा कलेक्टर नहीं बन पाया तो क्या हुआ ? अब मैं डिप्टी कलेक्टर बनूँगा । बड़े उत्साह से तैयारी करने लगा परन्तु परिश्रम करने के बजाय सोचने में ही समय गुजार दिया, अब वह 28 वर्ष का हो गया । अब वह कहने लगा कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर के लिये अतिरिक्त बुद्धि और पैसा चाहिये इसलिये अब मैं सोच रहा हूँ कि किसी दफ्तर का बाबू बन जाऊँ इसके बाद देखूँगा । लेकिन अफसोस की बात यह है कि वह 32 वर्ष की उम्र में भी 14 वर्ष की तैयारी और सोच के बाद भी बेरोजगार ही रहा ।

निष्कर्ष :-

- ❖ 18 वर्ष की उम्र में उसने एक सोच बनायी जो बहुत अच्छी बात थी परन्तु उसकी वह सोच दृढ़ न होने की वजह से दफन हो गयी ।
- ❖ इस लड़के के पास हमेशा एक नयी सोच आती रही जिससे उसका कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं हो सका ।
- ❖ एक सोच न रखने वालों को कभी सफलता नहीं मिल पाती और उसे लोग महामूर्ख ही कहते है चाहे वह कितना बड़ा विद्वान हो ।

❖ इस कहानी में लड़के ने बहुत बड़ी बड़ी बाते सोची किन्तु सिर्फ बताने के लिये ।

दूसरा :- जो सोच कर कहता भी है और करता भी है ।

इस प्रकार का व्यक्ति सोचता है और अपनी इस सोच के बारे में लोगो को बताता भी है । ऐसा व्यक्ति सोचकर लोगो से सिर्फ इसलिये कहता है क्योंकि वह जानना चाहता है , हमारी इस सोच के बारे में लोगो की राय क्या है ? लोगो की राय जानने के बाद वह अपनी इस सोच को बिना किसी संकोच के कार्यरूप में परिणित कर देता है और फिर अपने सिद्धांतो के अनुसार सतत प्रयास करते हुये विजयश्री प्राप्त करता है इस प्रकार के व्यक्तियों के लिये लोग कहते हैं – 'यार वह आदमी जो कहता है, उसे जरूर करता है, इसके जैसा सिद्धांतवादी ओर मेहनती मैने कही नहीं देखा । देखना ! एक दिन यह व्यक्ति बहुत आगे जायेगा ।'

एक सैनिक का लड़का सैनिको की ड्रेस पहनकर अपने दोस्तो को इकट्ठा कर आर्मी के तर्ज पर नेतृत्व करता था । जब उसकी माँ पूछती बेटा तू ऐसा क्यों करता है ?

उसका जबाब होता था 'माँ एक दिन तू देखना ! मै पिता जी से बड़ा आर्मी आफिसर बनूँगा और कार्सिका को स्वतंत्र करवाऊँगा । फ्रांस के लोगो को बता दूँगा की कार्सिका के लोग तुम्हारे गुलाम नहीं रह सकतें।'

ऐसा कहने वाला वह बच्चा एक दिन फ्रांस का सम्राट बन गया और सम्राट नेपोलियन के नाम से प्रसिद्ध हुआ । मेरे कहने का मतलब जो व्यक्ति सोचकर कहता है और अपने उद्देश्य के लिये प्रयत्न करता है वही एक नायक बनता है ।

तीसरा :- जो सोचता है और चुपचाप करता है ।

इस प्रकार का व्यक्ति एक बार जो सोच बना लेता है बिना किसी से कुछ कहे कार्य प्रारंभ कर देता है वह किसी से कोई परामर्श नहीं लेता, सिर्फ अपने काम में ध्यान देता है और पूरी ईमानदारी और निष्ठा से कार्य करते हुये सफलता प्राप्त

करता है क्योंकि उसकी एक सोच होती है “अगर मैं इस काम में कामयाब हुआ तो सफल व्यक्ति कहलाऊँगा और अगर 0.1% असफल भी रहा तो जैसी जिन्दगी चल रही है वैसी चलती रहेगी, कम से कम मैं बाद में मैं पछताऊँगा तो नहीं, काश मैं उस काम को उस समय कर लिया होता तो आज मेरी स्थिति ऐसी नहीं होती।”

ऐसे लोगो के बारे में लोग कहते हैं ‘यार वह आदमी छुपा रूस्तम निकला कभी ऐसा लगा ही नहीं कि वह इस स्थान तक पहुंच जायेगा। कुछ भी कहो इस व्यक्ति में कोई न कोई बात तो है।’

दुनिया में अधिकतर कामयाब इसी श्रेणी के होते हैं।

1. सोच कैसी हो ? :-

सोच किस प्रकार की होनी चाहिये ? इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही जटिल है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की सोच अलग अलग होती है। जिसका स्वरूप व्यक्ति के आसपास के वातावरण एवं उसके मनोदशा पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति की सोच पर जिस चीज का सबसे बड़ा प्रभाव पड़ता है, वह है उसके आसपास का वातावरण। प्रेरणा देने वाले व्यक्ति या किताबे कोई जादू की छड़ी नहीं देते, न ही कोई जादुई मंत्र देते। वह सिर्फ व्यक्ति की सोच को विक्षेपित कर देते हैं। उसके आसपास के वातावरण को शुद्ध कर देते हैं। और व्यक्ति विशेष की सोच को एक नई दिशा की ओर मोड़ देते हैं। जिससे वह कामयाब होता है। मैं मुख्यतः दो प्रकार की सोच के बारे में चर्चा करना चाहूँगा :-

1. ऐसी सोच जो हमें पीछे ले जाती है।
2. ऐसी सोच जो हमें आगे ले जाती है।

ऐसी सोच जो हमें पीछे ले जाती है :-

“मनुष्य की जैसी सोच होती है वह वैसा ही काम करता है।” मैं आगे ऐसी बहुत सी सोच का वर्णन करूँगा जो व्यक्ति को हमेशा पीछे कदम रखने के लिये मजबूर करती है इस प्रकार की सोच इंसान को आगे नहीं बढ़ने देती और उसकी सफलता की राह में बाधा बनकर खड़ी होती है।

सोच बिहीन सोच :- इस प्रकार की सोच सामान्यतः उन व्यक्तियों में पायी जाती है जो कुछ सोचते ही नहीं। इस प्रकार के व्यक्ति बिल्कुल उदासीन प्रवृत्ति के होते हैं।

- ❖ उसके आसपास क्या हो रहा है ?
- ❖ आज की जरूरत क्या है ?
- ❖ मुझे क्या करना चाहिये ?
- ❖ हमसे हमारे परिवार की अपेक्षायें क्या हैं ?
- ❖ मैं इस संसार को क्या दे सकता हूँ ?
- ❖ मेरा मूल्य क्या है ?
- ❖ मनुष्य होने के मायने क्या हैं ? आदि जैसी सोच का पूर्णतः अभाव होता है, उसकी जिन्दगी जैसी चल रही है, वह वैसा ही चलता रहता है, कभी भी आगे जाने के बारे में सोचता ही नहीं। अगर इस प्रकार के व्यक्तियों से कोई कुछ कहता भी है कुछ करो तो उसका जबाब होता है ‘हाँ’ मैं भी सोच रहा हूँ कुछ करूँ। देखो कुछ न कुछ सोचूँगा। इस प्रकार के व्यक्तियों का एक साल बाद भी यही जबाब होता है और दस साल बाद भी यही जबाब होता है अर्थात् ताउम्र इसी बात को पकड़े जिन्दगी गुजार देता है।

एक व्यक्ति ने एक बार एक लड़के से कहा तुम्हारे पास अच्छी कुशलता है, अच्छे विचार हैं, लोगो के पास अच्छा व्यवहार है, मेरे पास एक प्लान है, मैं सोचता हूँ तुम उसे अच्छी प्रकार से कर सकते हो अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हो। इसे तुम जरूर करो।

लड़के ने कहा ‘ भाई साहब अभी मैं अपना ग्रेजुएशन पूरा कर लूँ। वैसे भी मेरी हैसियत इतनी नहीं है कि ये सब मैं कर सकूँ। कुछ समय बाद इसके बारे में जरूर सोचूँगा।’

दूसरे वर्ष वह व्यक्ति उस लड़के से पुनः मिला और कहा ‘तुमने कुछ करना प्रारंभ किया।’ लड़का ‘अभी मैं मुसीबत में हूँ, मैं सोच तो रहा हूँ कुछ न कुछ करूँ।’

दो वर्ष बाद एक बार फिर इस व्यक्ति की मुलाकात उस लड़के से हुई। उसने फिर पूछा और तुम्हारा क्या चल रहा है ?”

“लड़के ने कहा बस कट रही है ”

व्यक्ति ने फिर पूछा “ क्यों ” ?

लड़का – “ सोच तो रहा हूँ कुछ करूँ, परन्तु अभी व्यवस्था नहीं बन पा रही है, जब सोचता हूँ कोई काम करूँ तो कोई न कोई समस्या आ जाती है ” **व्यक्ति ने कहा** – “ आज से दो वर्ष पहले भी तुम्हारी स्थिति यही थी, तीन वर्ष पहले भी तुम्हारी स्थिति यही थी और पाँच वर्ष पहले भी तुम्हारी स्थिति यही थी अगर तुम सोचते हो कोई चमत्कार होगा तो न पाँच वर्ष पहले हुआ और न ही आज होगा और न ही भविष्य में होगा। रही बात परिस्थितियों की तो प्रत्येक इंसान परिस्थितियाँ लेकर पैदा होता है उनमें इतनी क्षमता नहीं होती जो एक दृढ़ निश्चय से युक्त इंसान को रोक सके। तुम्हें रोकती है तो सिर्फ तुम्हारी बुद्धि जिसमें सोचने की क्षमता ही नहीं है, तुमने सिर्फ एक बात रट रखी है परिस्थिति सही नहीं है, मैं सोच रहा हूँ कुछ न कुछ करूँ। इसी कारण तुम सिर्फ सोच रहे हो परन्तु कुछ कर नहीं पा रहे हो, क्योंकि तुम किसी बड़े चमत्कार की उम्मीद में हो. ”

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि -

- ❖ लड़का न ही कुछ सोचता है और न ही कुछ करना चाहता है वह सिर्फ अपनी कमी छुपाने के लिये ऐसी बातें करता है.
- ❖ वह किसी बहुत बड़े चमत्कार की प्रतीक्षा में है.
- ❖ इस लड़के जैसे समाज में अनेक निठल्ले लोग हैं जो बिना हाथ पैर हिलाये सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं जो व्यावहारिक रूप से असंभव है इसलिये जीवन भर परिस्थितियों को दोष देते हुये सोचते रहते हैं और अपने भाग्य पर रोते रहते हैं .

इस प्रकार के व्यक्ति अक्सर कहते हैं, अन्य व्यक्ति मुझसे अधिक योग्य हैं मुझसे ज्यादा समर्थवान हैं, मुझे कौन पूछता है ?” परन्तु यह भूल जाते हैं कि

ऐसा कौन सा रास्ता था ? जिस पर चलकर अन्य व्यक्तियों ने अपने आपको इस स्थिति में पहुंचाया है. मैं भी वैसा ही रास्ता बनाऊँगा जिससे मुझे भी लोग पूछने लगे

2. छोटी सोच :-

“ जिन लोगो की सोच छोटी होती है वह छोटी छोटी बातों में इतने उलझ जाते हैं कि उन्हें कुछ अलग सोचने का समय ही नहीं मिलता। किन्तु जब कभी ऐसे व्यक्ति अपनी सोच को थोड़ा परिवर्तित करते हैं तो फिर उन्हें कोई रोक भी नहीं पाता ”

छोटी सोच के व्यक्तियों की संख्या समाज में बहुत ज्यादा होती है। ऐसे व्यक्ति उन लोगो से ज्यादा खतरनाक होते हैं जो सोचते ही नहीं. इस प्रकार की सोच वाले व्यक्ति अपने आपको परम संतोषी और त्यागी समझते हैं, परन्तु वास्तव में व्यवहार में वह ऐसे होते नहीं हैं. इस प्रकार के व्यक्तियों से कुछ कहा भी जाय तो निरर्थक ही होता है क्योंकि वह भाग्यवादी और कलहप्रिय होते हैं वे कहते हैं -

- ❖ आप मुझे सलाह न दो मैं सब कुछ जानता हूँ.
- ❖ मेरी नजरों में कोई महान नहीं है क्योंकि उसके जैसा मैं भी कर सकता हूँ मेरे पास भी बहुत कुछ है।
- ❖ मैं जैसा हूँ, वैसा ही ठीक हूँ किसी के सम्मान की मुझे कोई भूख नहीं है।
- ❖ दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति चरित्रहीन, अहंकारी और भ्रष्ट है।
- ❖ मैं इस काम पर विश्वास नहीं करता। यह काम जोखिम युक्त है।
- ❖ मैं ऐसा क्यों करूँ ?
- ❖ सफलता और असफलता अपने-अपने पूर्वार्द्ध का फल होता है इसे कोई परिवर्तित नहीं कर सकता।

छोटी सोच रखने वाला व्यक्ति एक छोटी सी जगह तक सीमित रह जाता है, जिस प्रकार मेढक को एक छोटा सा कुआँ सागर प्रतीत होता है उसी प्रकार छोटी सोच रखने वाले व्यक्ति को अपना जीवन और अपना काम ही महान लगता है, अगर दो चार व्यक्ति उसके साथ हैं तो भी वह अपने आपको महान समझता है इस

प्रकार का व्यक्ति प्रत्येक छोटी छोटी बातों को अपनी प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिन्ह समझ लेता है। और हमेशा उसी में उलझा रहता है परिणामस्वरूप अपनी जिन्दगी को यूँ ही गवां देता है।

एक बार की घटना है। मैं चार पाँच लोगों के बीच बैठा था, वहाँ पर शिक्षा के महत्व के बारे में चर्चा हो रही थी। मैंने कहा 'प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित होना जरूरी है, इसमें खुद की और देश की प्रगति छुपी है, पढ़े लिखे व्यक्ति की काम करने की शैली कुछ अलग ही होती है, पढ़ा लिखा व्यक्ति जो भी काम करता है उसमें गुणवत्ता रहती है'।

वही पर बैठे एक शख्स ने जबाब दिया - 'आप पढ़े लिखे हो तो कौन सा करोड़पति हो गये'।

मैंने कहाँ - 'करोड़पति होना अलग बात है बुद्धिमान, जानकार होना अलग बात है, करोड़पति का काम एक शिक्षित जानकार व्यक्ति के बिना नहीं हो सकता परन्तु एक शिक्षित व्यक्ति का काम करोड़पति के बिना हो सकता है।' उसने कहा 'आपके अंदर घमंड है'

मैंने पूछा - क्यों ?

उसने कहा - 'क्योंकि आप मुझे नीचा दिखाना चाहते हैं, मैं कम पढ़ा लिखा हूँ इसलिये आप मेरा उपहास कर रहे हैं'।

मैंने कहा - 'आपका दिल दुखाने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं तो सिर्फ एक राय दे रहा था। क्योंकि मुझे लगा कि यहाँ पर बैठा प्रत्येक व्यक्ति ऐसा कर सकता है।'

उस शख्स ने (गुस्सा होते हुये कहा) - आप अपनी सलाह अपने पास रखें मैं जैसा हूँ, जिस हाल में हूँ खुश हूँ और आप से ज्यादा मेरी समाज में इज्जत है, आप जैसे लोगों को मैं दो मिनट में खरीद सकता हूँ आप सिर्फ डॉक्टर है कोई प्रधानमंत्री नहीं।

मैंने कहा - आपने ऐसा बोलकर यह सिद्ध कर दिया कि आप और आपका परिवार आज तक यही पर क्यों है ? रही बात खरीदने की तो आज तक कोई व्यक्ति पैदा

नहीं हुआ जो किसी मनुष्य को खरीद सके। मुझे खरीदने का खवाब आप छोड़ ही दें तो उचित होगा। आप मुझसे इस प्रकार की बात इसलिये नहीं कर सके कि आप महान व्यक्ति हैं, आप मुझसे इस प्रकार की बात सिर्फ इसलिये कर सके क्योंकि मैं सहज उपलब्ध होकर आप लोगों को एक रास्ता बताने की कोशिश कर रहा था जो शायद आपको आगे बढ़ने के लिये नितांत जरूरी था। परन्तु शायद 'मैं गलत था' जो आपकी मानसिकता को पढ़ न सका। इसमें आपकी कोई गलती नहीं है शायद आपकी सोच ही यही तक है। ऐसी घटना आम बात है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में घटित हो ही जाती है, इससे एक बात स्पष्ट होती है कि छोटी सोच के व्यक्ति की सोच को परिवर्तित करना कितना मुश्किल काम है फिर भी हमें ऐसे लोगों को प्रेरणा देते रहना चाहिये हो सकता है हम 100 में से सिर्फ दो व्यक्तियों की ही सोच को परिवर्तित करने में कामयाब हो पाये। लेकिन हमारी यह कामयाबी दो जिन्दगियों को बचाने के लिये पर्याप्त है और हम ऐसा कर सकते हैं।

आखिर छोटी सोच आती कहाँ से है ? :-

जन्म लेने वाला प्रत्येक बच्चा लगभग समान आईक्यू लेकर ही संसार में आता है। परन्तु यह सोचने वाली बात है बड़े होकर प्रत्येक व्यक्ति की सोच में इतना बड़ा परिवर्तन कैसे हो जाता है ? ऐसा क्या होता है कि हममें से अधिकतर लोगों की सोच छोटी हो जाती है ? इसका क्या कारण है ? इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही जटिल है परन्तु मैंने जो अनुभव किया और जो एक कामन सर्वे के आधार पर निष्कर्ष निकाला है वह इस प्रकार है -

1. जब बच्चा छोटा होता है, उस समय उसको दुनिया में बारे में कुछ भी पता नहीं होता, न ही वह धर्म जानता न ही वह जाति जानता और न ही वह यह जानता उसे क्या करना चाहिये ? क्या नहीं करना चाहिये। क्या उचित है ? क्या अनुचित है ? वह तारे मांगता है, आकाश में उड़ने की सोचता है, अच्छा खाना चाहता है, अच्छे कपड़े चाहता है अच्छे खिलौने चाहता है, सभी का प्यार चाहता है, परन्तु अफसोस की बात ये है कि 90% बच्चों को ये सब चीजे नसीब नहीं होती है

परिणामस्वरूप उसके मन में एक प्रकार की हीनता उत्पन्न होने लगती है।

2. जब कोई बच्चा बड़ी-बड़ी सोच युक्त बातें करता भी है तो हमारे द्वारा उसे हंसकर टाल दिया जाता है या फिर उसको अपनी सीमाओं में रहने की हिदायत दे दी जाती है।

3. जब बच्चा छोटा होता है उसे सिखाया जाता है 'जितनी चादर है उतना ही पैर पसारो' उससे यह कभी नहीं कहा जाता 'जहाँ तक पैर जाय उतनी बड़ी चाहर ही कर लो।' उससे कहा जाता है, जितना तुम्हारे पास है उसी में खुश रहने की कोशिश करो उससे कभी नहीं कहा जाता है कि 'अभी जितना है वह तुम्हारे लिये पर्याप्त है परन्तु तुम्हारे बड़े होने पर यह तुम्हारे लिये पर्याप्त नहीं होगा।' उससे कभी नहीं कहा जाता बेटा ! बड़े होकर तुम्हें वैज्ञानिक बनना है, एक नायक बनना, एक आफीसर बनना है, एक उद्योगपति बना है, तुम्हें समाज की सेवा करनी है। बल्कि उससे कहा जाता है तुम खूब पढ़ लिखकर 15-20 हजार की नौकरी कर लेना और एक सुन्दर लड़की से शादी कर सुकून की जिन्दगी काटना या फिर अभिभावकों द्वारा कहा जाता है कि तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है मैं तुम्हारे लिये इतना छोड़कर जाऊँगा जिससे तुम्हारी जिंदगी सुकून से कट जायेगी।

4. मैंने देखा है कुछ बच्चों की बचपन से इतनी उँची सोच होती है कि उस प्रकार की सोच अच्छे-अच्छे अनुभवी व्यक्तियों के पास नहीं होती, परन्तु अफसोस की बात यह है कि समाज के अधकूचरे बुद्धिमान व्यक्तियों द्वारा उनकी इस सोच को दबा दिया जाता है क्योंकि इन अधकूचरे बुद्धिमान व्यक्तियों को यह रास नहीं आता कि उनसे 40-50 वर्ष छोटा बच्चा इतनी बड़ी बड़ी बातें करें। यह अधकूचरे बुद्धिमान उस बच्चे को बिगड़ें और असभ्य बच्चे का दर्जा दे डालते हैं और कहते हैं 'मेरे बाल ऐसे थोड़ी झड़ गये हैं' अभी तुम कितने दिवाली के हो जो बड़ी-बड़ी बातें करते हो परिणाम यह होता है कि बच्चे के मन में एक डर बैठ जाता है जो हीन भावना पैदा करता है जो ताउम्र उसके साथ रहता है। कहने का मतलब 'एक छोटी सोच का व्यक्ति एक बड़ी सोच के बच्चे को भी छोटी सोच का बना देता है।'

ऐसे कई कालेज हैं कहने के लिए व्यवसायिक हैं वहाँ से चिकित्सक बनाये जाते हैं, इंजीनियर्स बनाये जाते हैं। परन्तु वास्तव में वहाँ उँची सोच रखने वाला एक भी व्यक्ति नहीं है। मैं ऐसे अनेक कालेजों, स्कूलों को जानता हूँ, जहाँ बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है जो कही न कही बच्चों की मानसिकता को कमजोर करता है। मैं जिन कालेजों की बात कर रहा था उन कालेजों का आलम ये है कि छात्र अगर प्रोफेसर के पैर न छुयें, उनके कानसेप्ट का समर्थन न करें, भले ही कानसेप्ट गलत ही हो, कालेज की कमी बता दे या फिर अपने हित के लिये कोई बात बोल दे, तो समझिये उसकी सामत ही है उसे नेता घोषित कर दिया जाता है साथ ही असमाजिक तत्व बना दिया जाता है। छात्रों को इतनी मानसिक यातना दी जाती है कि उसकी सोच छोटी हो ही जाती है।

5. ऐसे कई विकासशील देश हैं जहाँ पर वर्गीय भेदभाव बहुत ज्यादा होता है जो बच्चों की सोच को कही न कही प्रभावित करता है।

6. कभी-कभी जरूरत से ज्यादा थोपा गया अनुशासन भी बच्चों की मानसिकता को कमजोर करता है और उनकी सोच को प्रभावित करता है। जब मैं ग्वालियर में था उस समय मेरे साथ एक लड़का रहता था उसके माता पिता अक्सर यही कहते थे 'ऐसा न करो वैसा न करो' परिणाम यह हुआ कि वह अच्छी प्रतिभा रखते हुये भी अंतरमुखी स्वभाव का हो गया। वह किसी के सामने अपनी बात को प्रभावी ढंग से नहीं कह पाता था, जबकी वह सही कह रहा है इस बात को अच्छी तरह जानता था परन्तु उसके मन में एक डर भरा रहता था कही सामने वाला हमारी बात का बुरा न मान जाय।

ऊपर लिखी सारी बातें इंसान की मानसिकता को छोटा करती हैं। कहने का मतलब बच्चों को जिस प्रकार का वातावरण मिलता है वह उसी प्रकार की सोच रखने वाले होते हैं, बचपन में इंसान की सोच जिस प्रकार विकसित हो जाती है वह उसके साथ जीवन पर्यन्त रहती है। एक बहुत अच्छा उदाहरण है - 'जानवर कितना ताकतवर होता है फिर भी वह एक रस्सी से बंधा रहता है इसका कारण यह होता है

कि जब वह छोटा होता है तो उसे उस रस्सी से बाँध दिया जाता है उस समय वह पूरी कोशिश करता है कि उस रस्सी से वह मुक्त हो जाय परन्तु उसके बार बार कोशिश करने के बावजूद भी वह उस रस्सी के बंधन से मुक्त नहीं हो पाता परिणामस्वरूप धीरे-धीरे वह अपनी इस कोशिश को छोड़ देता है। क्योंकि उसकी एक सोच बन जाती है कि अब उससे मुक्त नहीं हुआ जा सकता। परिणामस्वरूप ताकतवर होने के बावजूद भी वह उस रस्सी के बंधन में आसानी से बंधा रहता है, ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी बचपन में मिले संदेहात्मक तथ्य रूपी रस्सी में बंधा रहता है जबकी उसमें उस रस्सी को तोड़कर बाहर निकलने की कई गुनी क्षमता होती है।

छोटी सोच से मुक्त कैसे हो ? :-

छोटी सोच से मुक्त होना न होना व्यक्ति विशेष की इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है, फिर भी मैं कुछ उपाय बताना चाहूँगा, जिनको जीवन में उतारने से धीरे धीरे इस प्रकार की सोच से छुटकारा मिलने लगता है और व्यक्ति उच्च विचारों की ओर अग्रसर हो सकता है -

- ❖ तथ्यविहीन बातों को नजर अंदाज करें।
- ❖ हमेशा सकारात्मक व्यवहार रखें।
- ❖ किसी भी प्रकार के अवरोध या दबाव के सामने झुकने के बजाय उसे स्वीकार करें।
- ❖ बार-बार कहें हमें इस पर पूर्ण विश्वास है।
- ❖ एक आशा हमेशा बनाये रखे।
- ❖ महापुरुषों की जीवनियां पढ़ें।
- ❖ प्रेरक प्रसंगों का नियमित पाठक बनें।
- ❖ हमेशा उच्च विचार वाले व्यक्तियों के संपर्क में रहें और उनसे सलाह लें।
- ❖ हमेशा सोचे मैं जहाँ हूँ, जैसा हूँ यह मेरे लिये उपयुक्त नहीं है।
- ❖ जिस काम से आपको डर लगता है उसे बार बार करें।

- ❖ सोचे परिवर्तन संसार का नियम है जिसे मुझे स्वीकार करना होगा।
- ❖ एक अच्छे श्रोता बने और एक अच्छे विद्यार्थी बनें।
- ❖ हमेशा कहे मैं विजेता हूँ, मुझे कोई नहीं हरा सकता।
- ❖ सफल व्यक्तियों से मिले और उनकी सफलता का रहस्य जानने की कोशिश करें।
- ❖ नकारात्मक व्यक्तियों से हमेशा दूरी बनायें रखें।

उपर वर्णित सभी प्रकार की बातें आपको उच्च विचारों की ओर ले जायेगी, धीरे-धीरे आप खुद महसूस करने लगेंगे, आपकी हीनता खत्म हो रही है, और आप अपने रोग पर विजयी होने लगे हैं। फिर आप जो चाहेंगे आपके पास होगा।

3. मध्यम सोच :-

“ मध्यम सोच का व्यक्ति वह होता है जो हमेशा भीड़ में चलता रहता है।” मध्यम सोच के व्यक्ति समाज में लगभग 80% के आसपास पाये जाते हैं वह समाज के किसी भी समूह में मिल जायेगे, दुनिया के प्रत्येक गली, घर, चौराहे पर मिल जाते हैं वह काफी संतोषी प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं वह किसी भी प्रकार के परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते हैं उनकी सोच कुछ इस प्रकार होती है -

- ❖ जो उसको मिल गया पर्याप्त है, वह उसी में अच्छा जीवन जी लेगा।
- ❖ वह किसी भी चीज में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहता, उसे लगता है जो कुछ हो रहा है वह सब होना ही है वह उसे बदल नहीं सकता।
- ❖ यह मेरा काम नहीं है, बड़ा काम करने के लिये इस दुनिया में बहुत लोग हैं।
- ❖ वह हमेशा तुलनात्मक जिंदगी जीता है, वह कहता है मैं उन सभी से तो ठीक ही हूँ जो मुझसे भी बदतर जिन्दगी जी रहे हैं।
- ❖ वह हमेशा नीचे देखता है।
- ❖ इस सोच का व्यक्ति मेहनत भी खूब करता है, काम भी खूब करता है किन्तु उसका कोई लक्ष्य नहीं होता।
- ❖ प्रत्येक काम को टालने की कोशिश करता है।

- ❖ उसे दूसरों से बड़ी उम्मीदें होती हैं।
- ❖ अपने आपको कभी लीड नहीं करना चाहता। हमेशा पर्दे के पीछे रहना चाहता है। हमेशा हताश निराश रहता है और हमेशा उलझनों में फंसा रहता है।
- ❖ उसे रोटी, कपड़ा और मकान ही सबसे बड़ी चुनौती लगती है।
- ❖ वह जीवन भर इतना उलझा रहता है कि उसे दुनिया का अन्य कोई काम महत्वपूर्ण नहीं लगता।
- ❖ वह अपना संपूर्ण जीवन 'दुआये' और 'आशीर्वाद' मांगने में ही गुजार देता है।

ऊपर लिखी सभी प्रकार की बातें एक मध्यम सोच के व्यक्ति की होती हैं। इस प्रकार की सोच रखने वाले व्यक्ति से अगर कुछ कहा जाय कि 'आपमें इस काम को करने की योग्यता है आप इसे करें।' तो उसका जबाब होता है - 'अभी मेरे पास कुछ जिम्मेदारियाँ हैं इसे पूरा कर लूँ इसके बाद यह काम करूँगा।'

परन्तु गौर करने वाली बात यह है कि इसकी जिम्मेदारियाँ कभी खत्म नहीं होती और जिन्दगी भर उन्हीं परिस्थितियों में उलझा रहता है।

इस प्रकार का व्यक्ति अपनी युवा-अवस्था में सोचता है - 'अभी पढ़ाई लिखाई कर लूँ। कुछ समय बाद कहता है कोई नौकरी कर लूँ। नौकरी मिलने के बाद कहता है बच्चों को पढ़ा लिखा कर उनको उनके पैरो में खड़ा कर दूँ, उनकी शादी कर दूँ, कुछ दिन बाद कहता है अपने नाती पोतो के लिये कुछ कर दूँ।' जब इस प्रकार जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते इसकी जिन्दगी का महत्वपूर्ण समय गुजर जाता है तब कहता है 'इस जिन्दगी में करना तो मैं भी बहुत कुछ चाहता था परन्तु कभी समय ही नहीं मिला, अब तो सिर्फ सांसे गिन रहा हूँ।'

कहने का मतलब इस प्रकार की सोच रखने वाला व्यक्ति अपनी सारी जिन्दगी इस बात के प्रदर्शन में गुजार देता है कि पूरे परिवार की जिम्मेदारी उठाने की क्षमता सिर्फ उसी में है, अगर वह नहीं होगा या फिर वह दूसरे काम में लग जायेगा, तो सब कुछ बर्बाद हो जायेगा। ऐसा व्यक्ति यह कभी नहीं सोचता कि जब वह संसार में

नहीं था तब भी संसार ज्यों का त्यों चल रहा था, अभी है तो भी संसार वैसा का वैसा ही चल रहा है। हां प्रत्येक व्यक्ति का एक कर्त्तव्य जरूर बनता है कि जिस स्थिति में इस संसार को हमारे बुजुर्गों ने सौंपा था उससे कही बेहतर संसार बनाकर हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को सौंपें।

इस संसार का लगातार विकास हुआ है, मनुष्य हित में तरह-तरह के आविष्कार हुये हैं, मानवता को बचाने के लिये इस संसार में अनगिनत महापुरुषों ने न सिर्फ काम किया है बल्कि अपना पूरा जीवन ही लगा दिया है। एक मिनट के लिये सोचकर देखिये क्या इन व्यक्तियों के पास परिवार नहीं रहा होगा क्या इनके माता पिता, बीबी बच्चे नहीं रहे होंगे? क्या उनके पास पारिवारिक जिम्मेदारियाँ नहीं रही होंगी? क्या उन्हें अग्नि परीक्षा से नहीं गुजरना पड़ा होगा। बिल्कुल गुजरना पड़ा होगा फिर भी उन्होंने इस समाज की भलाई के लिये अनगिनत काम किये। उन्होंने ऐसा किया इसका सिर्फ एक ही कारण था 'सोच का' उनने एक सोच बनायी मैंने जो कष्ट उठाये हैं वह कष्ट अपनी आने वाली पीढ़ी को नहीं उठाने दूँगा। इसके लिये उन्होंने अपनी साधारण सोच को दिव्य सोच में परिवर्तित किया और इसी काम में लग गये। परन्तु इस दुनिया में कितनी बड़ी बिडम्बना है कि जिस उम्र में कुछ युवा रचनात्मक कार्य में व्यस्त होते हैं, वही दूसरी ओर युवाओं का एक बहुत बड़ा हिस्सा निरर्थक कार्यों में लिप्त रहता है जबकि अगर ऐसे युवा चाहे तो बहुत बड़ा रचनात्मक कार्य कर सकते हैं परन्तु अफसोस वे ऐसा नहीं करते हैं।

इस प्रकार के युवाओं के पास रचनात्मक कार्य के लिये समय ही नहीं होता और बाद में भाग्य पर दोषारोपण करते हैं। परन्तु ऐसा कभी क्यों नहीं सोचते कि जब मैं ऐश कर रहा था, जब मैं सो रहा था तब भी सफल होने वाला व्यक्ति काम कर रहा था।

एक बार की बात है मेरा दोस्त मार्केट से लौट कर आया और बोला - 'जानते हो शिव आज क्या हुआ?'

मैंने पूछा - 'क्या हो गया?'

उसने कहा – ‘न्यू मार्केट चौराहे में चार पाँच लड़के खड़े थे, वही पास से एक लड़की गुजरी उसे देखकर वह लड़के आपस में कहने लगे वाह ! क्या लड़की है ? काश ! भगवान की कृपा से मुझे ऐसी लड़की मिल जाय तो जिन्दगी धन्य हो जाया।’ मेरे दोस्त ने फिर कहा – ‘मैंने सोचा मैं रात को ग्यारह बजे काम के पीछे दौड़ रहा हूँ और ये भगवान से अपने लिये कुछ और ही मांग रहे हैं।’

मैंने कहा – ‘तुम्हें क्या लगता है ? तुम सही हो या फिर वो लड़के।’

उसने कहा – ‘इसमें कोई शक नहीं है’ मैं ही सही हूँ ‘क्योंकि मुझे पता है मैं कौन हूँ, मुझे कहाँ जाना है और इस दुनिया में क्या बेहतर कर सकता हूँ।’

मैंने कहा – ‘‘वास्तव में अगर तुम्हारे जैसी सोच प्रत्येक युवा की हो जाय तो दुनिया का अधूरापन खत्म हो जाय। परन्तु अफसोस ऐसा कभी नहीं हो सकता क्योंकि हमारी बड़ी तादाद में युवा शक्ति ऐसी ही दुआये भगवान से मांगती हुई खड़ी रहती है।’’

यह तो सिर्फ एक छोटा सा उदाहरण है इस प्रकार के व्यक्ति आपको प्रत्येक गली चौराहे पर मिल जायेंगे, अगर देखना है तो किसी भी पान की दुकान, चाय की दुकान में खड़े होकर देख लेना।

एक बार मैं मुम्बई गया हुआ था, चूँकि रात को पहुँचा था इसलिये मैं एक चाय वाले के यहां चाय पीते हुये बैठा था उसी समय वहाँ पर दो तीन लड़के आ गये, उनमें कहा – ‘‘जल्दी से चाय देना’’ वो ऐसा रियेक्ट कर रहे थे जैसे बहुत व्यस्त हो परन्तु जब चाय के पैसे देने की बारी आयी तो कोई हजार का नोट दिखा रहा था कोई पाँच सौ का, कम से कम 20 मिनट – 8 रुपये दूढ़ने में लगा दिये। जब तीनों लड़के चले गये तो चाय वाले ने कहा – ‘ये देश कभी विकास नहीं कर सकता।’

मैंने पूछा – ‘क्यों ?’

उसने बोला – ‘यहाँ के लोग खाने पीने में तो जल्दबाजी दिखाते हैं परन्तु काम करने में कभी जल्दबाजी नहीं दिखाते। दो हजार रुपये जेब में रखते हैं उसे बार बार निकालते हैं, गिनते हैं और पुनः जेब में रख लेते हैं और बड़े रौब के साथ चलते हैं और कहते हैं मेरे पास बहुत पैसा है मुझे कोई टेन्शन नहीं है।’’

मैंने बड़े उत्सुकता से पूछा – ‘‘आप ये सब कैसे कह सकते हैं ?’’

उसने कहा – ‘‘भाई साहब ये मेरा प्रतिदिन का अनुभव है, सुबह 8 बजे जगते ही सबसे पहले लोग मेरे यहाँ चाय पीने आते हैं चाय पीकर तीन घंटे पेपर पढ़ते हैं जैसे इन्हीं को लोकसभा के प्रश्न उत्तर में भाग लेना हो। फिर एक घंटे आपस में बहस करेंगे आप ही बताइये ये चार घंटे जो हमारी दुकान में फालतू गुजारते हैं अगर उस समय का उपयोग खुद के विकास में लगाये तो क्या हम आगे नहीं बढ़ सकते।’’ मैंने कहा – ‘ऐसा तो नहीं है कि ये सभी काम न करते हो, कोई न कोई काम जरूर करते होंगे।’

उसने कहा – ‘भाई साहब मैंने कब बोला ये काम नहीं करते हैं ये सभी काम करते हैं परन्तु महीने में सिर्फ से चार हजार का। जिसमें से दो हजार खर्च कर देते हैं और दो हजार जेब में रखकर गिनते रहते हैं।’

मैंने कहा – ‘आप उनकी छोड़ो आप मुझे ये बताओ कि आपके पास इतने अच्छे विचार हैं तो फिर आप चाय क्यों बेचते हो ?’

कुछ देर चुप रहकर उसने कहा – ‘‘आप आज यही रुकेंगे।’’

मैंने कहा – ‘‘हाँ’’

चायवाला – भाई साहब आप शाम को 8 बजे के करीब आना।

मैंने कहा – ‘‘ठीक है।’’

मैं वहाँ से चला गया और शाम को ठीक आठ बजे उसकी दुकान पर गया उस दुकान पर एक लड़का मिला मैंने कहा। ‘वो दद्दा कहाँ गये ?’

उसने कहा – ‘आते ही होंगे।’

मैं कुछ देर में क्या देखता हूँ, कि एक दस लाख की गाड़ी रुकती है और उसमें से वही व्यक्ति बाहर आता है जिसने मुझे सुबह चाय पिलाई थी।

उसने बोला – ‘‘भाई साहब चलो घूम के आते हैं।’’

मैंने कहा – ‘चलो’

मैंने इस चाय वाले के साथ जाकर जो देखा मैं हैरान रह गया। तीन-तीन होटलो का

मालिक, चार स्कूल, एक कालेज, व्हीआईपी फ्लैट और उसके बच्चे ए-क्लास की नौकरी वाले। मेरी हालत ये हो गयी कि मैं आगे कुछ बोल ही नहीं पाया।

उसने मुझे भौंककर कहा - “सर काम में भी करता हूँ काम वो भी करते हैं लेकिन वो जो चार घंटे मेरी चाय की दुकान में गंवाते हैं उसी चार घंटों में मैं पैसा कमाता हूँ, फिर जब वो काम करते हैं मैं उस समय बिजनेस करता हूँ। मैंने अपना सफर चाय की दुकान से शुरू किया था और यहाँ तक पहुंच गया हूँ। जिन्दगी में किसी भी काम को मैं छोटा बड़ा नहीं समझता हूँ, इसलिये आगे बढ़ता जा रहा हूँ।”

उसने फिर कहा - “मैं हमेशा कुछ अलग करने की सोचता हूँ मुझे भीड़ में चलने की आदत नहीं है क्योंकि भीड़ में बहुत ही सामान्य सोच के व्यक्ति होते हैं जो हमेशा सुरक्षात्मक खेलते-खेलते आउट हो जाते हैं।”

मेरे कहने का मतलब अगर वास्तव में आपको अपनी जिन्दगी से प्रेम है, आप चाहते हैं कि मैं कुछ ऐसा करूँ कि लोग मुझे भी याद रखें तो आज ही, इसी वक्त इस भीड़ को चुपचाप छोड़ दीजिये क्योंकि इस भीड़ से आपको कुछ भी हासिल नहीं होने वाला, उल्टा उलझन भरी जिन्दगी मिलेगी। आज से आप नयी सोच के साथ एक नयी जिन्दगी की शुरुआत कीजिए। सफलता आपको जरूर मिलेगी यह मेरा विश्वास है।

4. विकल्पनात्मक सोच :-

“जिस व्यक्ति के पास विकल्प होता है वह किसी भी काम में परिपूर्ण नहीं होता क्योंकि जब वह किसी छोटी सी मुसीबत में भी फंसता है तो उसके पास भागने का रास्ता होता है।”

अक्सर देखा जाता है जब इंसान के पास विकल्प होता है तो वह किसी भी काम को दृढ़तापूर्वक नहीं कर पाता है क्योंकि वह सोचता है कि चलो इस काम में सफल नहीं हुआ तो कोई बात नहीं मेरे पास अगला काम है परिणाम यह होता है कि वह अपने प्रत्येक काम में असफल होता चला जाता है। वही दूसरी ओर अगर इंसान सोचता है कि मेरे पास इस काम को पूरा करने के सिवाय कोई अन्य रास्ता नहीं है

तो फिर वह विपरीत परिस्थितियों से लड़ता है और जीत की ओर जाता है।

मराठा इतिहास की एक घटना है सिंगगढ़ की विजय संकल्प लिये मराठों ने इस पर आक्रमण किया। कमन्द की सहायता से वह सिंहासन पर चढ़ गये। भयंकर युद्ध हुआ युद्ध का नेता ताना जी मारा गया। इसके मरने की खबर सुनकर हिम्मत हारकर सेना भागने लगी और जिस रस्से के बल चढ़कर ऊपर आयी थी उसी से नीचे उतरने का इरादा करने लगी। ताना जी के छोटे भाई, सूर्या जी ने जब यह देखा तो जाकर चुपके से रस्से का किले की ओर वाला सिरा काट दिया, अब जब मराठे उधर भागने लगे तो सूर्या जी ने चिल्लाकर बोला - “मराठो भागते कहाँ हो” वह रास्ता तो मैंने पहले से ही काट दिया। जब मराठो ने देखा कि यहाँ से भागने का उपाय कुछ नहीं है तब उस ओर से ध्यान हटाकर युद्ध करने लगे और एक घमासान युद्ध करके मराठो ने एक और जीत अपने नाम कर लिया।

‘किसी व्यक्ति के पास विकल्प होना अच्छी बात है परन्तु प्रत्येक विकल्प को जीवन में उतारना उचित नहीं है।’

- कनेडी

आप खुद सोचिये कभी न कभी हमारे सामने ऐसी स्थिति आ जाती है जब हमारे पास कोई रास्ता नहीं होता, उस समय हमारा कोई सहयोगी भी नहीं होता है। और हमारे पास सिर्फ एक ही रास्ता होता है ‘करो या मरो’ तब हम क्या करते हैं ? उस समय हम एक ही काम करते हैं किसी भी प्रकार से उस मुसीबत से बाहर निकलने की, उसके लिये हम अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करते हैं। वही दूसरी ओर अगर हमारे पास कोई अन्य रास्ता होता है या फिर कोई सहयोगी होता है तो हम मुसीबत के समय दूसरे रास्ते से निकलने की कोशिश करते हैं या फिर सहयोग के लिये अपने सहयोगी को पुकारते हैं।

एक बार की घटना है एक महिला बहुत दिनों से बीमार थी उसके हाथ पैर काम नहीं कर रहे थे यहाँ तक की वह अपनी शय्या से भी नहीं उठ सकती थी, अचानक उसके घर में आग लग गयी उसने देखा आग फैलती जा रही है और उसके

बच्चे ऊपर वाली मंजिल में लेटे हुये हैं, उसके आस पास अन्य कोई भी नहीं हैं। ऐसी स्थिति में उसके दिमाग में एक ही बात आयी, उसे किसी भी कीमत में अपने बच्चों को बचाना है और ऐसा करने के सिवाय उसके पास कोई रास्ता भी नहीं है। उसने इस समय सिर्फ एक सोच बनायी मैं बच्चों को बचाऊँगी, और एक ही झटके में विस्तर से खड़ी होकर ऊपर की ओर दौड़ पड़ी और बच्चो को बचा लिया।

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि जब इंसान यह सोचकर काम करता है इस काम को करने के सिवाय उसके पास कोई रास्ता नहीं है तो फिर वह उस काम को पूरा करने के लिये अपनी सारी क्षमता और बुद्धि कौशल का उपयोग करता है जब व्यक्ति यह मान लेता है कि यह काम ही उसकी जिन्दगी को सफल बनायेगा, उसके जीवन को प्रकाशित करेगा तब व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी हंसते-हंसते अपना कर्तव्य पूरा करता है। इसलिये 'व्यक्ति को कभी भी विकल्पनात्मक सोच नहीं बनानी चाहिये क्योंकि इससे व्यक्ति सफल तो कभी कभी होता है परन्तु असफल हमेशा होता है।'

कुछ लोग समाज में ऐसे भी होंगे जो मेरी इस बात से सहमत नहीं होंगे और हो सकता है सोंचे भी कि मैं तो बिल्कुल रखूँगी जिससे अगर इस काम में सफल नहीं हुआ तो अगला काम कर लूँगी तो मैं इस प्रकार के व्यक्तियों से एक ही प्रश्न पूछूँगा।

“ आप जो काम वर्तमान समय में कर रहे है अगर उसे सही तरीके से नहीं कर पा रहे हैं तो इस बात की क्या गारंटी है ? दूसरा काम कर ही लेगे। और सफल हो ही जायेंगे।”

5. दुविधात्मक सोच :-

दुविधात्मक सोच वाले व्यक्ति भी समाज में बड़े पैमाने पर पाये जाते है। उनके मन में एक प्रश्न हमेशा रहता है 'करूँ या न करूँ।' जिसका उत्तर वह कभी नहीं ढूँढ पाते है। परन्तु हां जब उन्हें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है तो फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखते। कई बार इंसान की जिंदगी में करूँ या न करूँ, कहीं या न कहीं, जाऊँ या न जाऊँ, इस काम को करूँ या फिर उस काम को करूँ, यह आदमी

मेरा सहयोग करेगा या फिर वह आदमी जैसी दुविधात्मक सोच के कारणकई अवसर सामने से निकल जाते हैं और व्यक्ति की असफलता के कारण बनते हैं। ऐसा जिन्दगी में हमारें साथ अक्सर होता है चाहे हम इस बात को ध्यान में रखे या न रखें। इसका परिणाम यह होता है कि हम अपने अवसरों को गवाते रहते है। दुविधात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति की हालत ये होती है। 'माया मिले न राम'। लेकिन जैसे ही उसकी सारी दुविधा मिट जाती है, उसे चाही गयी प्रत्येक चीज मिल जाती है।

एक संत थे उन्होंने एक नये शिष्य को दीक्षा दिया और कहा भगवान का ध्यान लगाओ और प्रार्थना करो। शिष्य ने ध्यान लगाया परन्तु ध्यान न लगा। उसने अपने गुरु से कहा - "गुरुवर ! कई" दिनो के प्रयत्न करने के बावजूद मेरा ध्यान नहीं लग रहा है।

गुरु ने आंखे बंद की और कुछ सोचकर बोले - ठीक कहते हो यहाँ तुम्हारा मन नहीं लगेगा। चलो कही और चलते हैं।

अगले दिन गुरु और शिष्य किसी अन्य स्थान की खोज में निकल पडे। रास्ते में गुरु ने देखा शिष्य ने एक झोला बड़े सावधानी से सम्भाल रखा हैं और उसकी सुरक्षा में शिष्य का विशेष ध्यान हैं। जब शाम हो गयी तो शिष्य ने एक गाँव देखकर बोला - "गुरुदेव क्यों न हम यही विश्राम कर ले और रात्रि बिताये। सुबह फिर चल पडेंगे।"

गुरु ने कहा - "हमें रात्रि का क्या भय ? हमारे पास है ही क्या जिसे चोर डाकू रात में लूट लेंगे ?"

शिष्य - "नही गुरुदेव मेरी बात मान लीजिये, हम कहीं रुक जाते है।"

गुरु - "अच्छा चलो कोई कुआँ मिलेगा वही रुक जायेगे। हाथ मुंह धोने और शीतल जल पीने से थकान कम हो जायेगी।"

आखिर एक कुआँ मिल ही गया गुरु ने कहा - "यह स्थान उत्तम है तुम शौच आदि को जाना चाहते हो तो जा सकते हो।"

शिष्य - "हां गुरुदेव ! मेरा झोला सम्भालकर रख ले मैं जाता हूँ।" शिष्य के जाने

के बाद गुरु ने उसका झोला देखा तो उसमें सोने की ईंट थी। शिष्य को जब लौटते देखा तो गुरु ने सोने की ईंट को कुएं में फेंक दी। धड़ाम की आवाज सुनकर शिष्य दौड़कर आया। उसने सोने की ईंट के बारे में गुरु से पूँछा। गुरु ने कहा “वह तो कुएँ में डूब गयी इसी की चिन्ता में तुम्हारा मन ध्यान में नहीं लग रहा था। राम और माया के बीच की दुविधा मिट गयी है अब तुम्हारा मन ध्यान में लगने लगेगा। कहो वापस आश्रम चले या फिर आगे चले।”

शिष्य – “गुरुदेव मैं समझ गया बिना दुविधा, अशान्ति को त्यागे मन नियंत्रित नहीं रह सकता है।”

उपरोक्त कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि बिना दुविधा के त्यागे इंसान उन्नति नहीं कर सकता है, दुविधात्मक सोच इंसान को हमेशा भटकाती रहती है, वह किसी भी एक काम में एकाग्र नहीं हो पाता और पूरी जिन्दगी यूँ ही गवाँ देता है।

“ दुविधात्मक सोच इंसान के मन को एकाग्र नहीं होने देती है, और मन के नियंत्रण एवं एकाग्रता बिना संसार में जीवित नहीं रहा जा सकता।”

—महाकवि गेटे

इंसान की जिंदगी में बार बार ऐसे कई अवसर आते हैं जो उसकी अपेक्षा के अनुरूप तो नहीं होते परन्तु उसे कामयाब बनाने के लिये महत्वपूर्ण होते हैं लेकिन वह उससे बेहतर अवसर के इंतजार में दुविधावश कुछ कर नहीं पाता एवं और बेहतर और बेहतर के चक्कर में फंसा रहता है, ऐसे में जब कभी बेहतर अवसर आता है उस समय व्यक्ति स्वयं उस बेहतर अवसर के लिये बेहतर नहीं रहता। क्योंकि कहा भी जाता है जब अवसर होता है तो पैसा नहीं होता और जब पैसा होता है तो अवसर नहीं होता। यहाँ पर गौर करने वाली बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा होता है लेकिन ऐसा न हो इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को जो काम मिले, जो अवसर मिले, उसी को अपना समझकर बेहतर ढंग से करना चाहिये।

“एक बार एक व्यक्ति से उसका दोस्त ने पूँछा क्यों दोस्त तुमने अभी तक कोई नौकरी नहीं की ?” उस व्यक्ति ने कहा – यार कोई मेरे योग्यता के अनुरूप

परफेक्ट नौकरी नहीं मिल पायी। नौकरी तो बहुत मिली परन्तु मैने किया नहीं क्योंकि वह सभी नौकरी मेरे लायक नहीं थी। दोस्त – यार हमारे कंपनी में जनरल मैनेजर की जगह खाली है शायद वह तुम्हारे के लिये परफेक्ट हो।

उस व्यक्ति ने उसके दोस्त की कंपनी में जाकर इन्टरव्यू दिया सब कुछ उसके अनुकूल था परन्तु उस कंपनी की ‘कोर कमेटी’ ने यह कहते हुये उसको जनरल मैनेजर नहीं रखा कि आपके पास सब कुछ होते हुये भी अनुभव न होने की वजह से आप इस पद के लिये योग्यता नहीं रखते हैं।

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि अगर उस व्यक्ति ने पहले की नौकरियों को नहीं ठुकराया होता तो उसके पास अनुभव की कमी नहीं होती और वह अपनी इच्छित नौकरी का अधिकारी जरूर होता। इसलिये व्यक्ति को सामने आये अवसर को दुविधा के कारण नजरअंदाज नहीं करना चाहिये क्योंकि जो अवसर उसके पास आता है वह देखने सुनने में छोटा हो सकता है। परन्तु वह अवसर उस व्यक्ति की सफलता का बीज होता है और अगर उसके पास अच्छा बीज होता है तो बुद्धिमान इंसान को एक अच्छा वृक्ष बनाने में कोई कठिनाई नहीं होती। यह सृष्टि का परम सत्य है।

6. सुरक्षात्मक सोच :-

“ जो व्यक्ति जोखिम नहीं उठाता है वह कभी विजेता नहीं बनता”

—अज्ञात

सुरक्षात्मक सोच वह होती है जहां पर किसी प्रकार का जोखिम नहीं होता इस प्रकार का व्यक्ति हमेशा उसी रास्ते पर चलना पसंद करता है जो पूर्णतः सुरक्षित हो और चूंकि वह हमेशा सुरक्षात्मक सोच रखता है, इसलिये उसके पास निर्णय लेने की क्षमता भी नहीं होती परिणाम स्वरूप वह कभी भी विजेता नहीं बन पाता और न ही किसी काम में परिपूर्ण होता। पूरी जिन्दगी एक खेल का मैदान होती है जहां हमें विजेता बनने के लिये जोखिम लेना ही होता है। हम सारी जिंदगी सुरक्षित नहीं चल सकते यह पूर्णतः सत्य है। मान लीजिये क्रिकेट का खेल चल रहा है और बल्लेबाज

कोई जोखिम नहीं ले रहा है वह सिर्फ अपना विकेट बचाकर खेल, खेल रहा है तो क्या कभी वह अपनी टीम को विजय दिला सकता है ? यह मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी है क्योंकि रन बनाने के लिये अच्छे शॉट लगाने होंगे और अच्छे शॉट के लिये जोखिम लेना होगा। मैं मानता हूँ कि प्रत्येक गेंद पर शॉट नहीं लगाये जा सकते हैं, परन्तु ऐसा भी नहीं है कि शॉट के लिये एक भी गेंद अच्छी न आये। जरा सोचिये अगर आप शॉट लायक गेंद को भी सुरक्षात्मक खेलते हैं तो फिर आप विजेता कभी नहीं बन सकते क्योंकि गेंदों की भी सीमा होती है और इतनी सारी गेंदों में एकाद गेंद ऐसी भी होगी जिसको चाहे आप कितना भी सुरक्षात्मक खेले वह आपका विकेट जरूर उखाड़ देगी। ठीक इसी प्रकार अपने वास्तविक जिंदगी में भी होता है हम कितना भी सुरक्षित चले परन्तु समय रूपी गेंद इतनी खतरनाक होती है कि उस समय हमारे बचने का कोई रास्ता नहीं होता।

कुछ समय पहले हमारे देश में एक बहुचर्चित घटना हुई थी जिसमें एक व्यक्ति ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ आत्महत्या कर लिया था। वह व्यक्ति वास्तव में कभी जोखिम युक्त काम नहीं करता था, हमेशा सुरक्षित काम करता था उसका परिवार भी अच्छा चल रहा था, अपनी नौकरी के दौरान वह ऐसी कोई गलती नहीं करता था जो उसे किसी भी प्रकार की नुकसानदायक हो और न ही ऐसा कोई काम करता था जो जोखिम भरा हो। परन्तु समय कब बदल जाय यह किसी को नहीं पता। उसका समय भी उसे बुरे दौर में लाकर खड़ा कर दिया उसके बॉस ने उसे नौकरी से यह कहते हुये निकाल दिया कि 'तुम बेहद कमजोर कर्मचारी हो तुममें निर्णय लेने की क्षमता नहीं है' उस व्यक्ति की नौकरी चली गयी अब वह बेरोजगार हो गया उसे कही भी नौकरी नहीं मिल पा रही थी। उसने एक बर्फ की छोटी सी फेंकट्री खोली जो बेहद सुरक्षित व्यवसाय था परन्तु वह अपनी सोच के कारण उस व्यवसाय में भी घाटा उठाया अब वह बैंक के भी कर्ज में डूब गया। अब उसके पास न ही घर बचा न ही पैसा बचा और उसने जिंदगी से निराश होकर इतनी बड़ी घटना को अंजाम दे डाला। इस घटना से एक ही निष्कर्ष निकलता है कि सुरक्षात्मक

चलने से जब तक कोई नुकसान नहीं था तो ठीका था परन्तु मुसीबत में भी जहाँ कोई सुरक्षात्मक रास्ता है ही नहीं वहाँ भी सुरक्षात्मक रास्ता ढूँढना कितना बेवकूफी भरा काम था। यहाँ पर उस व्यक्ति के पास बहुत सारे रास्ते हो सकते थे अगर कही वह अपनी सोच को थोड़ा सा परिवर्तित कर लेता।

अगर खुद को और आने वाली पीढ़ी को इस प्रकार की सोच से मुक्त रखना है और जीत की ओर जाना है तो दिमाग में यह न पाले कि मुझे सिर्फ स्कूल जाना है, कालेज जाना है, अच्छे नम्बर लाना है एक अच्छी नौकरी कर परिवार चलाना है, बल्कि दिमाग में यह भी रखे कि इन सब चीजों के साथ-साथ हमें अन्य चीजें भी सीखनी हैं और उनके बारे में भी सोचना है जो आगे चलकर हमारी व्यवहारिक जिंदगी में महत्वपूर्ण रोल अदा करती हैं। क्योंकि एक परफेक्ट जीवन के लिये किताबी ज्ञान के साथ साथ सांस्कृतिक और व्यवहारिक ज्ञान की भी सख्त जरूरत होती है। इसका कारण है कि समाज में व्यक्ति जब आता है तो उसके द्वारा अर्जित अंकसूची के नम्बर समाज द्वारा नहीं देखा जाता बल्कि उसके काम को और उसके जीवन शैली को देखा जाता है।

जिंदगी में एक बात तो बिल्कुल तय है आखिर इंसान सुरक्षात्मक रूप से कब तक चलेगा उसे कभी न कभी कही न कही जोखिम तो उठाना ही पड़ेगा। बिना जोखिम उठाये दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती, फिर बड़ा काम तो बड़ा काम ही होता है।

7. नकारात्मक सोच :-

“ अगर आप सोचते हैं कि इस काम में सफलता नहीं मिलेगी तो आपको किसी काम में सफलता नहीं मिलेगी। ”

—जेम्स हॉक

जो व्यक्ति नकारात्मक प्रवृत्ति का होता है उसे आसान से आसान रास्ते में भी जोखिम महसूस होती है।

❖ इस सोच का व्यक्ति न तो खुद काम करता और न ही आसपास के व्यक्तियों

को कुछ करने देता है।

- ❖ उसके पास प्रत्येक काम को असंभव बताने के लिये बहुत सारे तर्क होते हैं।
- ❖ वह प्रत्येक आने वाले कल को संसय की निगाहो से देखता है वह हमेशा सोचता है मेरे साथ कल कोई बुरा हादसा होने वाला है।
- ❖ वह प्रत्येक काम, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक छण को शंका की निगाह से देखता है।
- ❖ थोड़ी सी कठिनाई उसे पहाँड़ प्रतीत होती है।
- ❖ इस प्रकार के व्यक्ति को प्रत्येक तंत्र में कमी लगती है उसे प्रत्येक काम कठिनाई युक्त और अधूरा प्रतीत होता है।
- ❖ इस प्रकार का व्यक्ति बहुत बड़ा अलोचक होता है। वह अच्छे से अच्छे काम को भी अपने तर्कों के माध्यम से गलत सिद्ध कर देता है।
- ❖ उसे प्रत्येक काम को करने से पहले ही संसाधनो की कमी महसूस हो जाती है।
- ❖ वह सोचता है इस काम को करने वाले बहुत सारे लोग असफल हैं तो फिर मैं कैसे सफल हो सकता हूँ।
- ❖ उसके पास 'क्यों' कैसे, किसलिये जैसे शब्द तो होते हैं परन्तु ऐसे, इसलिये जैसे शब्दो का पूर्णतः अपरिहार्य होता है।
- ❖ अगर नकारात्मक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति को कोई काम बताया जाय और उसे प्रत्येक कदम में साथ देने का वादा भी किया जाय तो भी वह उस काम को नहीं करता है, वह सोचता है इस काम में मदद करने वाले व्यक्ति का बहुत बड़ा लाभ है वह सिर्फ मेरा उपयोग करना चाहता है।
- ❖ वह सोचता है अगर मदद करने वाला व्यक्ति मेरी मदद नहीं किया तो फिर मैं क्या करूँगा ?
- ❖ मैं इतना भाग्यशाली कहाँ हूँ कि इस काम में सफल हो जाऊँगा।
- ❖ उसे इस दुनिया में कोई भी मददगार व्यक्ति प्रतीत नहीं होता। सभी व्यक्ति

स्वार्थी लगते हैं।

एक नकारात्मक प्रवृत्ति का व्यक्ति किस प्रकार से दूसरो को प्रभावित करता है हम इस उदाहरण को भलिभांति समझ सकते हैं – जब मैं इन्दौर में था तो हमारे सामने वाले मकान में चार लड़के रहते थे सभी मध्यप्रदेश राज्य सेवा परीक्षा की तैयारी कर रहे थे उन चारों में से एक नकारात्मक प्रवृत्ति का लड़का था, वह हमेशा बोलता था आज के युग में सफल होना बहुत कठिन है, हर जगह भ्रष्टाचार है, सिर्फ पैसे वाले ही कुछ अलग कर सकते हैं। वगैरह-वगैरह तर्क देकर हमेशा हीनता वाली बातें करता रहता था। परिणाम यह हुआ कि चारो लड़के असफल हो गये उसके साथ रहने वाला एक लड़का जो पहली चांस में ही प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा में सफल हो गया था। वह भी चार वर्ष की तैयारी के बाद प्रारंभिक परीक्षा नहीं निकाल पाया। अन्ततः उन चारो में से एक लड़का इस नकारात्मक सोच वाले लड़के से अलग होकर तैयारी किया और अगले ही वर्ष सफल हो गया, आज वह आई.पी. एस. आफिसर है। यहाँ पर ध्यान देने वाली बात यह है कि उस नकारात्मक सोच वाले लड़के ने अपने तीनों साथियों को प्रभावित किया परन्तु जब इन चारो में से एक लड़का अलग हो कर, जैसे ही अपनी सोच को थोड़ा सकारात्मक किया सफल हो गया बाकी अपने घर वापस चले गये। जबकि इन वापस घर लौटने वालो में से ही एक लड़का पहले ही प्रयास में सफलता की देहलीज में खड़ा था, परन्तु अफसोस वह चार वर्ष की तैयारी के बाद भी सफल नहीं हुआ।

इस प्रकार के बहुत सारे उदाहरण समाज में देखने और सुनने को मिल जाते हैं जो एक प्रतिभावान व्यक्ति को भी काम करने से रोक देते हैं अर्थात् इसे हतोत्साहित कर देते हैं।

नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति के सामने अगर हीरा रखा हो तो उसे वह हीरा, नहीं पत्थर ही प्रतीत होता है। एक बार एक व्यक्ति एक साधु के पास गया, उसने कहा "हे ! महात्मा मैं जिंदगी से हताश हूँ, बस अब तो लगता है इस दुनिया से अलविदा कह दूँ।"

साधु ने पूछा - “क्यों”

वह व्यक्ति बोला - “महात्मा जी मैं जिन्दगी में बहुत कुछ करना चाहता हूँ मगर कोई रास्ता ही समझ में नहीं आता। अगर कभी कोई काम करता भी हूँ तो उस काम में सफलता नहीं मिलती है। साधु ने अपनी आंखे बंद की और कुछ देर बाद बोले “बेटा मेरे पास एक थैला है जिसमें हीरा है।” इसे ले जाओ और इस हीरे को बेचकर अपनी जिंदगी सम्भालो।”

वह आदमी इस थैले को लेकर चल दिया, अभी बीच रास्ते में ही था कि उसने सोचा इस थैले को देख तो लूँ। जब उसने उस थैले को देखा तो उसे हीरे की जगह पत्थर दिखायी दिया। उसे बहुत क्रोध आया और साधु के पास जाकर बोला - “तुम साधु नहीं पाखण्डी हो, तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो। ये रहा तुम्हारा थैला और पत्थर इसे अपने पास रखो, किसी और को बेवकूफ बनाना।” साधु विनम्रता पूर्वक - “बेटा ! क्रोध मत करो, इसे बेचकर तो आओ साधु के कहने पर वह आदमी उस पत्थर को बेचने के लिये एक सोने चांदी की दुकान में गया परन्तु दुकानदार ने उसे लेने से इंकार कर दिया। वह पुनः साधु के पास आकर आग बबूला होकर बोला - “हे ! पाखण्डी तूने वह पत्थर देकर मुझे बेचने के लिये भेजा उस दुकानदार ने मेरा अपमान किया। तूने क्या समझा था ? वह दुकानदार तेरे से भी ज्यादा मूर्ख होगा, मैंने तो पहले ही कहा था यह पत्थर है।” और उस आदमी ने उस हीरे को साधु के सामने फेंक दिया।

साधु ने (बड़े ही सहजता पूर्वक) एक बार पुनः जाने के लिये कहा परन्तु इस बार किसी सोने चांदी की दुकान के बजाय जौहरी के पास जाने के लिये कहा, साथ ही इस बार हजार सोने की मुद्रा में भी न बेचने को कहा। वह आदमी तैयार हो गया। जब वह जौहरी के पास जाकर उस पत्थर को दिखाया तो जौहरी ने उसे ध्यानपूर्वक देखकर पांच सौ सिक्के देने की पेशकश की परन्तु उस आदमी ने न बेचने की बात कही तो जौहरी ने उसे उस पत्थर की कीमत एक हजार सोने के सिक्के देने की कही। परन्तु उस आदमी ने न बेचने की बात कही और वापस जाकर साधु के चरणों

में लेट कर अपने किये पर मांफी मांगने लगा तब साधु ने (उसे उठाते हुए) कहा - “बेटा जिस प्रकार से तुम हीरे को पत्थर समझ बैठे थे उसी प्रकार तुम प्रत्येक काम को महत्वहीन समझते हो और काम को करने से पहले ही उसमें असफलता देख लेते हो। इसलिये तुम्हें कोई काम समझ में नहीं आता इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, तुम्हारी सोच तुम्हें आगे नहीं बढ़ने देती। बस तुम अपनी सोच को थोड़ा परिवर्तित कर लो तुम्हारे पास हजारों रास्ते होंगे। एक बात हमेशा याद रखना ‘दिल डूबा तो नौका डूबी’।”

निष्कर्ष :-

- ❖ नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को चाहे जितना अच्छा अवसर दिया जाय तो भी उस अवसर को नकार देता है।
- ❖ जीत उसका दरवाजा खटखटाती रहती है फिर भी वह शंसयवश दरवाजा नहीं खोल पाता।
- ❖ हीरे की परख एक जौहरी ही कर सकता है।
- ❖ नकारात्मक व्यक्ति के लिये न ही दुनिया में कोई काम है और न ही कोई रास्ता होता है।

मैंने सात प्रकार की सोच का वर्णन किया है जो हमें पीछे ले जाती है और हम शारीरिक ताकत रखते हुये भी कमजोर बने हुये मायूश एकांत खड़े हुये दुनिया को देखते हुये अपने भाग्य को कोसते हुये खड़े रहते हैं। हमें कुछ भी समझ में नहीं आता हम क्या करें ? और ऐसा सोचते सोचते दुनिया को देखते-देखते पता नहीं कब हमारी आंखे बंद हो जाती है और हम जिस प्रकार इस दुनिया में आये थे उसी प्रकार इस दुनिया से वापस चले जाते हैं।

एक सोच जो हमें आगे ले जाती है :-

“जिस व्यक्ति की सोच सुन्दर और रचनात्मक होती है उसका प्रत्येक काम सुन्दर और रचनात्मक होता है साथ ही जीवन जीने का प्रत्येक क्षण हंसते हुये खुशी-खुशी गुजारता है।”

“ इस दुनिया में प्रत्येक सुन्दर काम को एक सुन्दर सोच ने संपन्न किया है और आगे भी विशुद्ध सोच ही प्रत्येक काम को सम्पन्न करेगी। ”

मैं आगे कुछ रचनात्मक सोचों के बारे में वर्णन करूँगी जो आपको एक नये जीवन की ओर ले जायेगी और सदा आपको आगे बढ़ने के लिये रास्ते बतायेंगी। मैं जिन सोचों के बारे में जिक्र कर रहा हूँ वह प्रत्येक महापुरुष के पास रही है और प्रत्येक महापुरुष ऐसी ही सोच के कारण महान से महान कार्य सम्पन्न किये हैं।

1. सकारात्मक सोच :-

“ जिस व्यक्ति के पास श्रेष्ठ विचार होते हैं वह व्यक्ति कभी अकेले नहीं रहता। ”

— ‘सर फिलिप’

“ सफलता के लिये यह जरूरी होता है कि व्यक्ति की सोच सकारात्मक हो उसके मन में अपने काम के प्रति एक विश्वास, आशा और उत्साह हो। ”

अगर आपको दुनिया का सर्वश्रेष्ठ इंसान बनना है और कुछ अलग करना है तो किन्तु, परन्तु कर पाऊँगा या न कर पाऊँगा जैसे शब्दों को त्याग कर दीजिये और अपनी निगाहें सिर्फ अपने काम के अंतिम चरण में लगाये रखिये।

जब एक सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कोई काम करता है तो उसे प्रारंभ करने से पहले एक सोच मन में बना लेता है कि मैं जो काम कर रहा हूँ भयंकर से भयंकर आंधियों और विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे द्वारा किये गये काम का जिक्र इतिहास में होगा और मेरी कीर्ती हमेशा के लिये अमर हो जायेगी और मैं ऐसा करूँगा।

एक बार भयंकर अकाल पड़ा चारों ओर पानी के कारण तबाही मची हुई थी, जंगल के सारे जानवर पानी के कारण व्याकुल थे क्योंकि जंगल की एक मात्र झील भी सूखने के कगार में थी जानवरों ने सोचा अब इस जंगल को छोड़कर किसी अन्य सुरक्षित जगह की ओर पलायन किया जाय जहाँ पर पानी हो। परन्तु एक चूहे ने जंगल के पलायन से इंकार कर दिया और उसने कहा मैं झील की खुदाई करूँगा।

और एक सोच बनाकर वह अपना काम शुरू कर दिया। उधर जानवरों ने भी जंगल से पलायन शुरू कर दिया। चूहे को झील खोदते हुये देखकर जानवर हंसकर कहते “— हे ! चूहा तू आत्महत्या क्यों कर रहा है ? तू झील से पानी कभी नहीं निकाल पायेगा। हमारे साथ तू भी चल इसी में तेरी भलाई है। ” चूहा किसी की ओर ध्यान न देकर सिर्फ अपना काम करता रहता। इसी बीच झील के किनारे एक हाथी आया उसने चूहे से कहा — “ चूहा भाई ! तू क्यों निरर्थक प्रयास कर रहा है ? अगर जंगल के सारे जानवर भी इस काम में लग जाय तो भी यह काम पूरा नहीं हो सकता। तू तो चूहा है जो सिर्फ बिल बना सकता है कोई झील नहीं। ”

चूहे ने मुस्कराते हुये कहा — “ हाथी भाई ” मैंने झील की खुदाई का अपने मन में संकल्प लिया है इसलिये जब तक मेरा शरीर साथ देगा, मैं अपनी कोशिश जारी रखूँगा। मुझे पूरा यकीन है कि मैं झील में पानी निकाल लूँगा और अगर ऐसा न भी कर पाया तो भी मैं कुछ न कुछ ऐसा जरूर करके जाऊँगा कि जब इस जंगल का इतिहास लिखा जायेगा तो मेरा नाम परिस्थितियों से भागने वालों में नहीं बल्कि लड़ने वालों में होगा। ”

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है जब कोई यह सोच लेता है कि मैं तो इस काम को पूरा करके ही दम लूँगा तो फिर उसे कोई बाधा अवरोध नहीं रोक पाते हैं।

“ कोई भी काम कैसा है ? काम का परिणाम क्या होगा यह मायने नहीं रखता क्योंकि किसी काम का परिणाम तो काम करने के बाद ही पता चलता है परन्तु यह जरूर मायने रखता है कि आपकी उस काम के प्रति सोच कैसी है ? ” अगर आप सोचते हैं कि यह काम अच्छा है मैं इसे कर सकता हूँ तो आप उसे जरूर कर सकते हैं और उस काम का परिणाम भी सकारात्मक होगा किन्तु अगर आप सोचते हैं कि यह काम अच्छा नहीं है और फिर भी करते हैं तो उसका परिणाम नकारात्मक ही होगा भले ही आप अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करें क्योंकि काम का परिणाम इंसान की सोच पर निर्भर करता है। इसकी क्षमता पर नहीं। ” कभी-कभी एक क्षमतावान व्यक्ति सब कुछ होते हुये भी सकारात्मक

सोच के अभाव के कारण सफल नहीं होता वही दूसरी ओर शारीरिक कमजोरी होने के बाद भी जिसके पास कुछ भी नहीं होता सफलता की ऊँचाइयों को छूता है इसका एक ही कारण होता है उसके दिमाग में मौजूद सकारात्मक सोच। आपने सुना भी होगा और देखा भी होगा फलां व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर था, फलां व्यक्ति अपने घर से एक लोटा लेकर आया था और आज करोड़ों का मालिक है और शहर का सबसे सफल इंसान है। आपको प्रत्येक शहर में अनेक लटोरिये मिल जायेंगे जो लोगों के देखते ही देखते करोड़पति हो गये, किन्तु क्या कभी अन्य लोगों ने सोचा ? फलां व्यक्ति कैसे इतना बड़ा व्यवसायी और सफल इंसान बन गया ? हम में से कोई सोचने को तैयार नहीं है और अगर हम सोचते भी है तो नकारात्मक कि सामने वाले की किस्मत उसको उस स्थान तक पहुँचा दी है, जबकि ऐसा कभी नहीं होता क्योंकि किस्मत से एक या दो व्यक्ति सफल हो सकते हैं इतने सारे लोग नहीं। इतने सारे लोग तो सिर्फ अपनी सोच और मेहनत की बदौलत लोटापति से करोड़पति बने हैं उनमें एक सोच बनायी और बस बिना किसी भय के निकल पड़े और सफलता की ओर बढ़ते गये। और देखते ही देखते उनका कार्वा बढ़ता गया।

अगर किसी सफल व्यक्ति से पूछा जाय कि आप यहाँ तक कैसे पहुँचे ? तो इसका जबाब होता है – बस एक सोच बनायी थी कि जो काम करने जा रहा हूँ, उस के दो ही परिणाम हो सकते हैं या तो सफल हूँगा या तो असफल हूँगा। अगर सफल हुआ तो एक सफल इंसान कहलाऊँगा परन्तु असफल हुआ तो जैसा सब कुछ चल रहा था वैसा चलता ही रहेगा, जिस स्थिति में था उससे नीचे तो नहीं जाऊँगा और इसी सोच के सहारे आगे बढ़ता गया। सकारात्मक सोच का व्यक्ति हमेशा एक ही बात सोचता है। “मेरे पास क्या था ? जो मैंने खो दिया है ‘अभी क्या है जो मैं खो दूँगा मेरे पास जो है वह मेरे मेहनत से ही मिला है और आगे भी मेरी मेहनत से ही मिलेगा।’ मेरी मेहनत कभी खाली नहीं जायेगी। वह कुछ न कुछ हमें देकर ही जायेगी। मैं जो भी काम करूँगा वह पूरा होगा।”

जो व्यक्ति सकारात्मक सोच का होता है उसे किसी की मदद की जरूरत

नहीं होती क्योंकि वह सदा अपने आप से मदद लेता है। परन्तु जो व्यक्ति नकारात्मक होता है उसकी कोई कितना भी मदद करें वह कभी आगे नहीं बढ़ पाता।

मेरा एक दोस्त था उसने कहा “यार मैं कुछ करना चाहता हूँ किन्तु मेरे पास पैसे नहीं हैं।” मैंने सोचा मुझे इस दोस्त की मदद करनी चाहिये। मैंने उसे एक बिजनेस शुरू करने लायक पैसे दे दिये। उसने बिजनेस शुरू किया परन्तु कुछ ही समय में सब कुछ बंद करके चला गया, मैं काफी दिनों तक फोन करता रहा आ जाओ मैं तुम्हारी पूरी मदद करूँगा, परन्तु वह वापस नहीं आया और न ही आज तक कुछ कर पाया, और मेरा अनुमान है कि भविष्य में भी कुछ नहीं कर पायेगा क्योंकि उसके पास सकारात्मक सोच का अभाव है। उसकी सोच थी कि वह बिजनेस शुरू करने के साथ ही करोड़पति बन जाय जो व्यवहार में असंभव है इसका कारण यह है कि जब इंसान कोई काम शुरू करता है तो दो बातें होती हैं पहली कभी कभी तो शुरुआत में ही सफलता मिल जाती है। दूसरी शुरुआत में सफलता नहीं मिलती वह संघर्ष चाहती है बस यही पर सकारात्मक सोच की जरूरत होती है अगर कहीं थोड़ा सा भी नकारात्मक विचार आया या व्यक्ति निराश हुआ, वही पर व्यक्ति हार जाता है जबकि अगर यहाँ पर वह सकारात्मक होता तो जीत निश्चित थी।

एक बार मैं अपने गाँव गया चूँकि जब मैं गाँव जाता हूँ तो गाँव के लड़कों की भीड़ मेरे पास लगी ही रहती है। मैं बच्चों के पास खड़ा ही था कि अचानक एक लड़का आकर पूछने लगा – “भइया पी.एस.सी. क्या होता है ? मैंने उसे विस्तार पूर्वक बताया।”

उसने फिर पूछा – “भइया मैं उसे कर सकता हूँ ?”

मैंने कहा – “क्यों नहीं ? तुम्हारे हमारे जैसे लोग ही तो प्रत्येक काम करते हैं। अगर तुमने दिल से सोच लिया है कि मुझे इसे करना है। तो समझो तुमने आधी परीक्षा पास कर ली, रही बात आधी परीक्षा की तो उसके लिये तैयारी शुरू कर दो।” वही पर खड़े एक अन्य लड़के ने कहा – “सोचने से अगर कुछ होता तो आज सभी

प्रधानमंत्री होते।" मैंने कहा - "बेटा ! तुम यह क्यों नहीं सोचते ? जिसने सोचा था आज वही तो प्रधानमंत्री है, जिसने कभी सोचा ही नहीं क्या वह कभी प्रधानमंत्री बन सकता है ? अगर तुम कभी सोचोगे ही नहीं कि मैं ऐसा काम कर लूँ तो क्या कभी कर सकोगे ? तुम खाना खाने से पहले सोचते हो अब खाना खा लिया जाय, नहाने से पहले सोचते हो नहा लिया जाये सोने से पहले सोचते हो अब सोया जाय। फिर भी इस प्रकार की बातें करते हो। अगर दुनिया के सारे महापुरुष तुम्हारे जैसी सोच के होते तो शायद आज भी हम जंगलो में रहते और कंदमूल, घास-पत्ती खा रहे होते। एक बात याद रखना बिना सोच के हम एक कदम भी नहीं बढ़ा सकते और हम सोचते हैं इसीलिये मनुष्य है।"

"जो सोचता है मैं दुनिया जीतूंगा, वही दुनिया जीतता है, जो सोचता है मैं संसार को कुछ देकर जाऊँगा वही कुछ दे पाता है।"

2. उच्च सोच :-

" जिस व्यक्ति के अंदर ऊँची सोच होती है वह व्यक्ति से सौ गुना ज्यादा काम करा लेती है, इतना काम करा लेती है कि उस व्यक्ति के काम को देखकर सारी दुनिया आश्चर्य चकित हो जाती है।"

" उच्च सोच रखने वाले व्यक्ति समाज में बहुत कम पाये जाते हैं लेकिन प्रत्येक कामयाब व्यक्ति उच्च सोच के ही होते हैं।"

उच्च सोच का व्यक्ति कुछ इस प्रकार का होता है -

- ❖ हमेशा कोई न कोई रचनात्मक काम करने की सोचता है।
- ❖ वह हमेशा अपनी वर्तमान जिंदगी से ऊपर जाने की सोचता है।
- ❖ उसकी जिंदगी में संतुष्टि जैसे शब्दों की कोई जगह नहीं होती है।
- ❖ उच्च सोच का व्यक्ति उसी काम को करता है जिसे आम व्यक्ति छोड़ता जाता है।
- ❖ वह अपने लिये हमेशा कठिन मार्गों को चुनता है।
- ❖ वह जितनी चोटे खाता है उसके इरादे उतने ही बुलंद होते जाते हैं जितना

उसे रोका जाता है उतना ही खतरनाक होता जाता है।

- ❖ जहां अन्य लोगों को कोई संभावनायें दिखायी नहीं देती वही उसको संभावनायें दिखायी देती है।
- ❖ उसकी सोच हमेशा किसी न किसी परिवर्तन की ओर होती है।
- ❖ जिसे लोग कचरा समझते हैं, उसे वह हीरा बनाने में जुटा रहता है।
- ❖ वह हमेशा भीड़ की उलटी दिशा में चलता है।

उच्च सोच रखने वाला व्यक्ति इस बात से कभी मतलब नहीं रखता कि दुनिया ऐसा करती है या दुनिया में ऐसा ही होता है, बल्कि वह सिर्फ इस बात से मतलब रखता है कि दुनिया ऐसा क्यों नहीं करती ? या ऐसा क्यों नहीं होता। न्यूटन ने देखा सेव नीचे गिरता है इससे पहले भी लाखों करोड़ों लोगों ने देखा होगा परन्तु इस बात को सिर्फ न्यूटन ने ही क्यों सोचा ? अन्य लोगों ने क्यों नहीं सोचा ? इसका एक ही कारण था अन्य लोगों ने अपनी सोच के अनुसार सोचा कि ऊपर की चीज नीचे ही आती है 'ऐसा होता है' जबकि न्यूटन ने सोचा 'सेव नीचे गिरने के बजाय उपर क्यों नहीं जाता ?' बस यही सोच ऐसा क्यों नहीं होता ? के कारण गुरुत्वाकर्षण के नियम की उत्पत्ति हुई। दुनिया में जितने काम हुये, जितने आविष्कार हुये, जितने भी विकास के काम हुये इन सबकी उत्पत्ति "क्यों" शब्द से हुई है। क्योंकि 'क्यों' के बाद ही 'कैसे' होता है और 'कैसे' के बाद ही ऐसे की उत्पत्ति होती है। और 'क्यों', 'कैसे', ऐसे शब्दों की जननी एक महान सोच ही होती है।

एक बार मैंने एक व्यक्ति से पूछा - "ताजमहल सबसे पहले कहाँ बना ?"

उसने कहा - " आगरा में "

मैंने कहा - 'नहीं'

उसने कहा - " क्यों ? ये तो प्रत्येक व्यक्ति जानता है।"

मैंने कहा - "दुनिया क्या जानती है ? क्या नहीं जानती ? ये तो मुझे नहीं पता परन्तु इतना जरूर पता है कि ताजमहल सबसे पहले आगरा में नहीं बल्कि शाहजहाँ की सोच में बना।"

मैं किताबे लिखता हूँ, लेख लिखता हूँ कभी-कभी जब मैं अपनी पुस्तकें पढ़ता हूँ तो मुझे यकीन नहीं होता कि यह पुस्तक मैंने ही लिखी है। वास्तव में मैं लिखता भी नहीं हूँ। लिखने का काम तो हमारे चेतन मन में मौजूद सोच करती है मैं तो सिर्फ पेन चलाता हूँ। कहने का मतलब प्रत्येक रचनात्मक कार्य हमारे शरीर में उपस्थित चेतन सोच करती है। हम तो सिर्फ उसका अंतिम रूप देते हैं।

एक पेट्रोल पंप का कर्मचारी पूरे सप्ताह काम करने के बाद एक दिन छुट्टी मनाने पाँच सितारा होटल में जाता था, आखिर वह पाँच सितारा होटल ही क्यों जाता था। अन्य जगह भी तो छुट्टी मनाने जा सकता था। वह अन्य जगह न जाकर पाँच सितारा होटल ही इसलिये जाता था क्योंकि वह जानना चाहता था कि उसकी सोच और वहाँ आने वाले व्यक्तियों की सोच में क्या अंतर है? वहाँ आने वाला व्यक्ति सफलता की मुकाम में क्यों है? उसमें ऐसी कौन सी चीज है जो उसे सफल बना रही है? उसने एक ही चीज अनुभव की, वह है 'सोच'। वहाँ पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की सोच आम आदमी की सोच की तुलना में बिल्कुल अलग होती है जो वह सोचता है उस तक आम व्यक्ति सपनों में भी नहीं पहुँच पाता और जो आम व्यक्ति सोचता है वह इस प्रकार की सोच को अपने आस पास भी नहीं आने देता और यही से उस पेट्रोल पंप के कर्मचारी ने अपनी सोच को परिवर्तित किया और बन गया लाखों की धड़कन धीरुभाई अंबानी। कहने का मतलब अगर आप कुछ अलग करना चाहते हैं तो हमेशा उँची सोच वाले व्यक्तियों के संपर्क में रहें।

उँची सोच वाला व्यक्ति घटिया काम भी यह समझ कर करता है कि यह काम मेरी जिंदगी का अहम काम है। कुछ लोग एक ही काम को कर रहे होते हैं परन्तु उनकी सोच इस काम के प्रति अलग अलग होती है। कोई उसे मजबूरी में कर रहा होता है, कोई किसी के दबाव में कर रहा होता है, जबकि कोई अपना कर्त्तव्य समझ कर कर रहा होता है। परिणाम स्वरूप एक ही काम में कई लोग असफल हो जाते हैं और कुछ लोग सफल हो जाते हैं। यहाँ पर जो लोग दबाव में या फिर मजबूरी में काम करते हैं वह असफल होते हैं और जो व्यक्ति यह सोचकर काम करते हैं यह काम

मेरा है इसे पूरा करना मेरा कर्त्तव्य है वह सफल हो जाते हैं।

एक बार मैं ट्रेन से सफर कर रहा था मेरे सामने वाली सीट पर पाँच लड़के बैठे थे उनमें से चार गप्पे मार रहे थे परन्तु एक लड़का बुक पढ़ रहा था। जो लड़का बुक पढ़ रहा था - "यार अब आराम किया जाय कल सुबह आफिस जाना है।"

जो लड़के गप्पे मार रहे थे उनमें से एक ने कहा - "कल छुट्टी मार देगे एक दिन वेतन ही न कटेगा इससे ज्यादा क्या होगा?"

बुक पढ़ने वाला लड़का बोला - "यहां पर वेतन कट जाना, नौकरी चली जाना मायने नहीं रखता, मायने यह रखता है कि मेरे कारण कंपनी का नुकसान क्या होगा? और मैं किसी भी कीमत में यह नहीं चाहता कि मेरे कारण कंपनी का किसी भी प्रकार से नुकसान हो और लोग परेशान हो। आखिर कंपनी की सफलता में ही मेरी सफलता छुपी है।"

गप्पे मारने वाला लड़का (चुटकी लेते हुये) बोला - "तुम्हारी बातों से लगता है तुम कंपनी के मालिक जल्दी बनने वाले हो।" उसे लड़के ने कहा - "दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति कंपनी का मालिक तो नहीं बन सकता परन्तु हां जो काम उसके हिस्से में सौंपा गया है उसे वह अच्छी तरह जरूर कर सकता है।"

उसकी यह बात सुनकर सभी लड़के चुप हो गये। यहाँ गौर करने वाली बात यह है कि नौकरी तो पांचो कर रहे थे और उसी कंपनी में कर रहे थे परन्तु पाँचों की उस काम के प्रति सोच अलग अलग थी। जहाँ एक लड़का कंपनी को अपना समझ कर काम कर रहा था वही दूसरी ओर अन्य लड़के सिर्फ नौकरी कर रहे थे।

जैसा कि हमने पहले भी कहा है जब हम कोई काम करते हैं तो अगर उस काम के प्रति हमारी सोच अच्छी है तो वह अच्छे ढंग से और समय में संपन्न होगा किन्तु अगर हमारी उस काम के प्रति सोच अच्छी नहीं है तो अधिक समय में और कम गुणवत्ता वाला ही होगा। यानि जो काम जिस भावना से किया जाता है। उसका प्रतिफल भी वैसा ही होता है।

एक बार स्वामी विवेकानन्द अपने शिष्यों के साथ पैदल भ्रमण पर निकले।

निर्माणाधीन मंदिर के पास उनकी तीव्र दृष्टि तीन मजदूरों पर पड़ी। उन्होंने (उत्साहपूर्वक) पहले मजदूर से पूँछा “क्यों भाई क्या कर रहे हो ?”

उसने उत्तर दिया – “देख नहीं रहे हो गधे की तरह जुटे हुये हैं। दिन भर काम करने के बाद थोड़ा मिल जाता है पर इतने के लिये ठेकेदार मानो जान निकाल लेगा।”

स्वामी जी ने यही प्रश्न दूसरे मजदूर से किया उसने जबाब दिया “मंदिर बन रहा है हमारी तो किस्मत में यही था कि मजदूरी करे सो कर रहे है।”

जब स्वामी जी ने तीसरे मजदूर से यही प्रश्न किया तो उसने भाव भरे हृदय से उत्तर दिया – “भगवान का घर बन रहा है मुझे प्रसन्नता है कि मेरी पसीने की कुछ बूँदे भी इसमें लग रही है। जो भी मिलता है उसी में मुझे खुशी है, मेरा गुजारा भी चल जाता है और प्रभु का काम भी हुआ जा रहा है।”

स्वामी जी ने अपने शिष्यों से कहा – “मंदिर तीनों बना रहे है किन्तु अंतर तीनों के काम के ढंग में है, एक गधे की तरह मजबूरी में, दूसरा भाग्य के नाम पर दुहाई देता हुआ व तीसरा समर्पण भाव से काम में जुटा है। यही अंतर तीनों के काम के गुणवत्ता में भी देखा जा सकता है।”

कहने का मतलब – “क्या काम किया जा रहा है यह महत्वपूर्ण नहीं है, उसे किस उद्देश्य से, किस सोच से, किस भावना से, किया जा रहा है यह महत्वपूर्ण होता है।”

जो व्यक्ति किसी काम को समर्पण भाव से करता है वह उसी काम में सफल हो जाता है जबकि मजबूरी में, बोझ समझकर करने वाले कई लोग असफल रहते हैं अर्थात् जिस काम में अन्य कई लोग असफल रहते हैं उसी काम में कुछ लोग सफल हो जाते हैं किसी जादुई छड़ी से नहीं बल्कि अपनी सोच की बदौलत।

“जिस काम में जो व्यक्ति सफल होता है वह उस काम को सर्वश्रेष्ठ मानता है जबकि जो सफल नहीं होता है वह अपनी कमी को न देखते हुये उस काम को हमेशा बुरा ही कहता है।” अब तय आपको करना है कि आप सफल व्यक्तियों से प्रेरणा लेकर काम करते हैं या फिर असफल, निराशावादी व्यक्तियों से। क्योंकि

दुनिया में सफलता और असफलता प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत सोच पर निर्भर करती है।

जिसके हैं पावन कर्म सभी, जो जागरूक उद्योगी है।

जो सोच समझकर काम करे, संयमी धीर जो योगी है ॥

जो कर्मों के अनुसार सदा, अपनी जीविका चलाता है।

उस अपमाद-रत मानव का, यश संतत बढ़ता जाता है।

(ध.बु.गाथा 124)

सकारात्मक व्यक्ति और नकारात्मक व्यक्ति में अंतर :-

- ❖ एक गिलास है उसमें आधे में पानी भरा है इस बात को नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहेगा – “गिलास आधा खाली है। वही सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहेगा – गिलास आधा भरा है।”
- ❖ अगर गाड़ी का पेट्रोल, पेट्रोल पंप के आधा किलोमीटर पहले खत्म हो जाय तो नकारात्मक सोच का व्यक्ति कहेगा – “आज बहुत बुरा हुआ गाड़ी का पेट्रोल, पेट्रोल पंप के आधा किलोमीटर पहले खत्म हो गया था मैं बहुत परेशान हो गया।” वही सकारात्मक सोच का व्यक्ति कहेगा “अच्छा हुआ गाड़ी का पेट्रोल, पेट्रोल पंप के पास ही खत्म हुआ भगवान का शुक्र है कि बीच रास्ते में खत्म नहीं हुआ नहीं तो मैं परेशान हो जाता।”
- ❖ अगर कहीं दुर्घटना हो जाय तो नकारात्मक व्यक्ति कहेगा – “आज बहुत बुरा हुआ मेरा एक्सीडेंट हो गया गाड़ी का बहुत बड़ा नुकसान हुआ।” सकारात्मक सोच का व्यक्ति कहेगा – “अच्छा हुआ कि सिर्फ गाड़ी का नुकसान हुआ जान बच गयी।”
- ❖ नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को काम में आये अवरोध में उसे काम की कमी दिखती है, जबकि सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को प्रत्येक अवरोध में

अपनी कमी दिखती है।

- ❖ नकरात्मक सोच वाले व्यक्ति को प्रत्येक काम में समस्या दिखती है जबकि सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को प्रत्येक समस्या में सफलता दिखती है।
- ❖ नकरात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है “काम बड़ा मुश्किल है, जबकि सकारात्मक सोच का व्यक्ति कहता है – “काम मुश्किल हो सकता है परन्तु असंभव नहीं है।”
- ❖ नकरात्मक सोच वाले व्यक्ति को प्रत्येक सिस्टम में कमी दिखती है जबकि सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को कमजोर सिस्टम में भी अच्छाई दिखती है।
- ❖ नकरात्मक सोच वाला व्यक्ति असफल लोगों की तरफ देखता है जबकि सकारात्मक सोच का व्यक्ति सफल व्यक्ति को देखता है।
- ❖ नकारात्मक व्यक्ति के पास ‘घमंड’ होता है जबकि समरात्मक व्यक्ति के पास ‘गर्व’ होता है।
- ❖ नकरात्मक सोच वाला व्यक्ति कल्पनाओं में ज़िंदगी जीता है। जबकि समरात्मक सोच वाला व्यक्ति वास्तविकता में ज़िंदगी जीता है।
- ❖ नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति हमेशा प्रत्येक काम को टालता है जबकि सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति प्रत्येक काम को पकड़ने की कोशिश करता है।
- ❖ नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है ‘मुझे सब कुछ पता है’ जबकि सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है ‘मुझमें अभी भी कमी है मैं सीखना चाहता हूँ।’
- ❖ नकारात्मक व्यक्ति के पास जोखिम ही जोखिम होता है जबकि सकारात्मक व्यक्ति के पास जोखिम होता ही नहीं।

“ अगर आप चाहते हो, लोग मुझे भी पूछें, मेरा भी नाम ले, मैं दुनिया को जीत लूँ, तो आज से पीछे ले जाने वाली सोच को छोड़कर आगे ले जाने वाली सोच

को अपना लीजिये और एक सोच बनाइये जो भी अवसर मेरे सामने आयेगा मैं उसी में आगे बढ़ूँगा। मेरे हिस्से में जो काम आया है मैं उसी में सर्वश्रेष्ठ बनकर दिखाऊँगा।”

“ऊँचा सोचो, अच्छा करो और दुनिया बदलो”

–नर्मल विसेंट पील

दूसरा कदम सपने देखे

“ प्रत्येक व्यक्ति को सपने देखना चाहिये जो व्यक्ति सपने नहीं देखता वह वास्तविक जिंदगी से कोसो दूर रहता है ।”

‘ए.पी.जे. अब्दुल कलाम’

अगर आपको आगे बढ़ने के लिये अपने आप से प्रोत्साहन लेना हो तो सपने देखना शुरू कर दीजिये क्योंकि ‘जिसका कोई सपना नहीं होता, उसका कोई लक्ष्य नहीं होता और जिसका कोई लक्ष्य नहीं होता उसका कोई अस्तित्व नहीं होता ।’

मैं तो कहता हूँ सपने देखो और उस सपने को हमेशा ऐसी जगह लिख लो जहां पर आपकी नजर बार बार जाती हो जिससे आपको आपका सपना बार बार याद आता रहेगा । ओलंपिक खेल 2008 में आठ स्वर्ण पदम जीतकर इतिहास लिखने वाले माइकल नेप्स्य ने कहा था – “मैं ज्यादा भावुक इसलिये हूँ क्योंकि मैं बहुत सारे सपने देखता हूँ, जिसको हमेशा लिख लेता हूँ । बचपन में मेरी टीचर ने कहा था मैं कुछ नहीं कर सकता मैंने उसी दिन एक सपना देखा और टीचर की उस बात को एवं अपने सपने को अपने बेडरूम की दीवाल में लिख दिया था और प्रतिदिन सुबह उठकर उसे देखता था जिससे मुझे एक नयी उर्जा मिलती थी जो मेरे काम करने की रफ्तार को दस गुना बढ़ा देती थी ।”

कुछ इसी अंदाज में आस्ट्रेलिया को हराने के बाद साउथ अफ्रीका के कप्तान ग्रीम स्मिथ ने कहा – “जब मैं 12 वर्ष का था तो एक सपना देखा था कि एक दिन दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम का कप्तान बनूँगा और इसे मैंने अपने दरवाजे में लिखकर चिपका दिया था । जब मैं दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम का कप्तान बन गया तो मैंने फिर एक सपना देखा आस्ट्रेलिया को उसी की धरती में हराऊँगा इसे भी मैंने अपने बेडरूम की दीवार में लिखकर चिपका दिया था और आज मुझे खुशी है कि मेरे

दोनों सपने पूरे हो गये ।” यहां पर मैंने जिस सपने के बारे में जिक्र किया है वह खुली आँखों वाला सपना था । इंसान को हमेशा खुली आँखों से ही सपना देखना चाहिये, बंद आँखों से नहीं क्योंकि बंद आँखों से देखा गया सपना वास्तविक नहीं होता । आगे मैं दोनों प्रकार के सपनों को परिभाषित करूँगा ।”

“उनका भविष्य अच्छा होता है जो सुंदर सपनों पर विश्वास करते हैं ।”

—इलेनर रूजबेल्ट

प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा सपने तीन प्रकार से देखे जाते हैं ।

1. ऐसे सपने जो बंद आँखों से देखे जाते हैं । “जो व्यक्ति रात को सोते समय सपने देखते हैं सुबह उनके पास कुछ भी नहीं होता किन्तु जो व्यक्ति दिन में खुली आँखों से सपने देखते हैं वे असंभव को संभव कर देते हैं ।”

—टी.ई. लॉरेन्स

बंद आँखों से सपना दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति देखता है, जब उसका चेतन शरीर सोया रहता है तब उसके चेतन मन में तरह तरह के ख्वाब आते हैं जो सोते सोते पूरे भी हो जाते हैं और वह सोते सोते मन ही मन बहुत खुश होता है परन्तु जैसे ही वह नींद से जगता है उसके हाथ में कुछ भी नहीं होता । ज्यादातर ऐसे सपने इंसान को उसके प्रतिदिन की दिनचर्या से संबंधित होते हैं । सारा दिन इंसान जो सोचता है रात को सोने के बाद वही बात उसके दिमाग में घूमती रहती है और सपनों के रूप में रूपांतरित हो जाती है, ज्यादातर ऐसे सपनों का कोई अस्तित्व ही नहीं होता । हां कभी कभी ऐसे सपने भी इंसान को कामयाब कर देते हैं यह इंसान के दिनभर की सोच पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार की बातें दिन भर सोचता है। इस प्रकार की सोच से कैकुले और लूनी को सफलता मिली थी । बैंजीन की संरचना किस प्रकार होती है ? वैज्ञानिकों के लिये महज एक प्रश्न बनकर रह गया था, किसी के पास भी इसका उत्तर नहीं था । कैकुले ने भी कई प्रयास किये थे परन्तु सफलता नहीं मिली थी । वह इसी काम में दिनभर खोये रहते थे । एक दिन उन्होंने रात को सोते समय एक सपना देखा छः बंदर एक दूसरे की ओर मुंह किये हुये चारों

ओर घूम रहे हैं, कैकुले नींद से जगे और ठीक उसी प्रकार का प्रयोग शुरू कर दिया जैसा उनने अपने सपने में देखा था और यह देखकर आश्चर्यचकित हो गये कि प्रयोग तो सफल हो गया। कहने का तात्पर्य यह है कि जो काम आप बार बार करते हैं 24 घंटे उसी के बारे में सोचते हैं, खुली आँखों से और बंद आँखों से भी उसी का सपना देखते हैं और कोई रास्ता नहीं मिल पा रहा है तो वह किसी भी रूप में आपके सामने आ सकता है। चाहे आप सो रहे हो या फिर जग रहे हो। क्योंकि इंसान जब 24 घंटे अपने लक्ष्य के बारे में सोचता है, सपने देखता है, उसके बारे में बातें करता है तो चेतन मन में उसकी बार बार पुनरावृत्ति होती है और नये नये तरीके आते हैं। और इन्ही तरीकों में से एक तरीका ऐसा भी होता है जो आपको कामयाब कर देता है ऐसा महज संयोगवश नहीं होता बल्कि वैज्ञानिक रूप से भी प्रमाणित हो चुका है।

2. ऐसे सपने जो खुली आँखों द्वारा देखे जाते हैं किन्तु चेतन मन सोया रहता है।

“ अगर इंसान का चेतन मन सोया रहता है तो खुली आँखों से देखे गये सपने भी महत्वहीन ही होते हैं। ”

जब इंसान का चेतन शरीर काम न करें तो अवचेतन शरीर का कोई अस्तित्व नहीं होता ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार से कोमा वाले व्यक्ति का शरीर जीवित रहते हुये भी चाह कर कुछ नहीं कर पाता। जिस स्थान पर जिस स्थिति में बैठा दिया जाय, लेटा दिया जाय वह उसी स्थिति में ही रहता है। कहने का मतलब इंसान को हमेशा चेतन शरीर को जागृति अवस्था में रखकर ही सपने देखना चाहिये। हवा में बातें नहीं करना चाहिये और न ही हवा हवाई सपने देखना चाहिये। यहाँ हवा हवाई से मेरा मतलब है कि 24 घंटे मात्र सपने देखना और उसके लिये एक भी कदम न बढ़ाना।

“सपने वादा करने के लिये प्रेरित करते हैं और वादा तभी पूरा होता है जब उसके लिये कोई कार्य किया जाता है।”

—(मार्सिका बीडर)

कभी-कभी लोग इतने सपने देखते हैं कि सपने देखते-देखते अपनी मुख्य

धारा से हट जाते हैं और वर्तमान में किये गये कार्य को भी बिगाड़ लेते हैं। परिणामस्वरूप असफल होते हैं।

एक बार एक दूध वाला एक वर्ष तक घी बनाया और उस घी को मिट्टी के बर्तन में लेकर बाजार बेचने के लिये चला, रास्ते में सपने देखने लगा, घी बेचकर पैसे लाउँगा, उन पैसे से एक छोटी सी दुकान खोलूँगा फिर पैसा कमाकर बड़ी दुकान खोलूँगा उससे पैसा कमाकर एक होटल खोलूँगा अपनी सारी भैसे बेच दूँगा। एक शानदार गाड़ी और बंगला खरीदूँगा और फिर रोब से चलूँगा। लोग मुझे देखकर शलूट मारेंगे और मैं सिर हिलाकर चल दूँगा। अभी उसका सपना चल ही रहा था कि जैसे ही उसने सलूट मारने वालों के अभिवादन के लिये सिर हिलाया उसका घड़ा नीचे गिर गया, घड़ा फूट गया और सारा घी जमीन में फैल गया, और उसके सारे सपने जमीन में बह गये। इस कहानी से यह निष्कर्ष निकलता है इंसान को ऐसे सपने देखना चाहिये जो सिर्फ हवा हवाई न हो बल्कि वास्तविक हो जिससे वर्तमान में किया जा रहा काम प्रभावित न हो क्योंकि किसी भी व्यक्ति का सपना तभी पूरा हो सकता है जब वर्तमान में किये जा रहे प्रत्येक काम को पूरे मन एवं पूरी क्षमता से किया जाय।

3. ऐसे सपने जो खुली आँखों से देखे जाते हैं।

“ सपने तभी देखे जब आप अपनी वास्तविक जिंदगी में जग रहे हो और जगने का कोई समय नहीं होता न ही कोई मुहुर्त होता। ”

“ सपने देखने का सबसे अच्छा तरीका तभी होता है जब आप जग रहे हो। ”

— पॉल बैलरी

कई व्यक्ति सपनों को बुरा मानते हैं परन्तु मैं सपनों को सफलता का एक बहुत बड़ा कदम मानता हूँ किन्तु तभी जब वह चेतन मन द्वारा देखा गया हो क्योंकि जिस व्यक्ति के पास सपने नहीं होते वह किसी भी कार्य को प्रभावी ढंग से नहीं कर पाता। कई लोग मुझसे कहते हैं ज्यादा सपने न देखो जमीन पर रहना सीखो। मैं अक्सर उनसे यही कहता हूँ - “मैं जमीन पर रहकर ही सपने देखता हूँ इसीलिये

आज तक चल रहा हूँ और भविष्य में चलता रहूँगा। लेकिन जब लोग मुझसे इस प्रकार की औचित्यहीन बातें कहते हैं तो मेरे गले के अंदर इस प्रकार की बात हजम नहीं होती और लोगो से मुझे कहना पड़ता है कि – “अब सपने देखने के लिये भी आप लोगो से पूछना पड़ेगा, अरे सपने तो मेरे हैं और मुझे सपने देखने के लिये भी आप लोगो की इजाजत लेनी पड़ेगी।” ऐसा प्रत्येक व्यक्ति के साथ होता है उसके आस पास बहुत अधिक तादाद में फालतू लोग होते हैं जिन्हें उसके सपने देखने में समस्या होती है। परन्तु आप इन लोगो की समस्याओं के कारण सपने देखना बंद मत करना क्योंकि ऐसे लोग खुद अपने आपमें ही बहुत बड़ी समस्या होते हैं। जिन्हें आपके सपनों से परहेज हो उन्हें यह कहकर अपने से दूर कर दीजिये कि “मैं तो सपना देखूँगा और पूरा करके भी बताऊँगा बस तुम दूर खड़े होकर देखते रहना।” एक बात का ध्यान रखना सपने हमेशा खुली आंखों द्वारा देखना और अपने सपने को पूरा करने के लिये पूरी क्षमता का उपयोग करना क्योंकि सिर्फ सपने देख लेना और कह देना बड़ी बात नहीं होती, बड़ी बात यह होती है कि आप अपने सपनों के लिये कितना और कैसे कार्य करते हैं ?

इस दुनिया में लगभग प्रत्येक व्यक्ति सपना देखता है परन्तु उसके सारे सपने वही पर टूट जाते हैं जहाँ पर वह उन सपनों के लिये कोई कार्य प्रारंभ नहीं करता है और प्रतिदिन अपने सपने को तोड़ता है। यहाँ पर सपने टूट जाना बड़ी बात नहीं होती, बड़ी यह होती है कि बार बार सपने टूटने से इंसान टूटने लगता है और उसका आत्मविश्वास खोने लगता है परिणामस्वरूप उसके पास जिंदगी जीने का मकसद नहीं बचता है। इसलिये कहा जाता है ‘सपने देख लेना ही सफलता प्राप्त कर लेना नहीं होता। सपना तो सफलता का प्रारंभ होता है उसका अंत तो तभी होता है जब उस सपने के लिये कठोर मेहनत की जाय।’ मेरा मानना है कि इंसान सिर्फ एक सपना देखे और इतना बड़ा देखे जहाँ तक अभी तक कोई न पहुंच पाया हो और उसे बार बार देखे और उस सपने को छोटे छोटे टुकड़ों में बांटकर एक एक कदम बढ़ाता जाय। सफलता तो अपने आप मिलेगी।

वैसे तो इस दुनिया में सफल व्यक्तियों की कमी नहीं है उन्हीं सफल व्यक्तियों में एक व्यक्ति का मैं एक उदाहरण में देना चाहूँगा जिनको मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह अपने बचपन से एक सपना देखा करते थे मैं एक दिन मुख्यमंत्री बनूँगा। वह अपने सपने को याद रखने के लिये एक नेता जी के घर के सामने खड़े रहते थे क्योंकि उन्हें पता था कि माननीय मुख्यमंत्री शाम को 15 मिनट के लिये यहाँ जरूर आते हैं और जब तक तात्कालिक मुख्यमंत्री जी को नहीं देख लेते थे वह वही पर खड़े उनका इंतजार करते रहते थे। उनके ऐसा करते करते एक दिन वह भी आ गया जब वह खुद उस स्थान पर थे। अर्थात् सी.एम. हाउस में थे। कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति सपना देख सकता है उसे पूरा भी कर सकता है अगर वास्तव में उसने दिल से सपना देखा है वरना दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति सपना देखता है।

“ दुनिया में वही सपने पूरे होते हैं जिनमें जान होती है ‘जान’ से मतलब कोशिश से है और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। ”

(हरिवंश राय बच्चन)

सपने क्यों देखना चाहिये ? :-

प्रत्येक व्यक्ति के दिल में एक प्रश्न जरूर उठता है सपने क्यों देखना चाहियें? क्या सपने देखे बिना काम नहीं किया जा सकता ? मैंने इस प्रश्न को पिछले पृष्ठ में भी बताने की कोशिश की थी। वास्तव में हमें सपने इसलिये देखना चाहियें क्योंकि—

- ❖ सपने इंसान के अंदर छुपी हुई शक्ति को जागृत करते हैं और इंसान को आगे बढ़ने के लिये दुगुनी शक्ति प्रदान करते हैं।
- ❖ सपने इंसान को एक दिशा निर्धारण में मदद करते हैं।
- ❖ सपने इंसान को लक्ष्य निर्धारित करने के लिये प्रेरित करते हैं।
- ❖ सपने इंसान को स्वप्रेरणा प्रदान करते हैं।
- ❖ सपने इंसान को मजबूती प्रदान करते हैं और विकट से विकट परिस्थितियों से लड़ने की प्रेरणा देते हैं।
- ❖ सपने इंसान को बताते हैं कि उसे क्या करना चाहिये ? क्यों करना चाहिये ?

- ❖ सपनों से इंसान लम्बी रेस का घोड़ा बनता है ।
- ❖ सपने इंसान को चलना सिखाते हैं ।
- ❖ सपने इंसान की तन्हाईयां दूर करते हैं ।

उपरोक्त लिखी बाते इंसान को सपने देखने से प्राप्त होती है सपने देखने वाले व्यक्ति को दुनिया का कोई काम कठिन नहीं लगता वह अपने आप को कभी अकेला महसूस नहीं करता क्योंकि उसके साथ उसका खूबसूरत सपना होता है वह उसी अपने सपने के सहारे नयी नयी मंजिलों में चढ़ता जाता है ।

एक बार फ्रैंकलिंग द रूजबेल्ट से कुछ लोग मिलने के लिये गये और उनसे पूछा – ‘आप हमेशा अकेले रहते है आप अपनी जिंदगी से बोर नहीं होते है ।’

फ्रैंकलिंग ने जबाब दिया – ‘आप लोगो को लगता है मैं अकेला रहता हूँ किन्तु यह सच नहीं है मेरे साथ हमेशा मेरा बहुत अच्छा दोस्त रहता है ।’

उन लोगो ने (उत्सुकता वस) पूछा – ‘सर ! मगर आपका दोस्त दिखाई नहीं दे रहा ।’

फ्रैंकलिंग – ‘मेरा दोस्त आपको इसलिये नहीं दिखाई दे रहा क्योंकि आप लोगो के अंदर उसे देख पाने की सामर्थ्यता नहीं है ।’

लोगो ने पूछा – ‘फ्रैंकलिंग साहब आपकी पहली हम लोगो के समझ से परे है कृपया खुलकर बताइये ।’

फ्रैंकलिंग – ‘मित्रों मेरा दोस्त और कोई नहीं बल्कि मेरा सपना है जो मुझे कभी अकेले नहीं रहने देता हमेशा मेरे साथ रहता है और मैं उसी से बाते करते हुये अपना काम करता रहता हूँ और वह मुझे आगे बढ़ने के लिये नयी नयी टिप्स देता रहता है एवं नये नये रास्ते बताता रहता है ।’

भारत के महान वैज्ञानिक जिन्हे भारत का प्रत्येक व्यक्ति सलाम करता है निवर्तमान राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कहते है ‘‘दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को सपना जरूर देखना चाहिये ओर हमेशा खुली आँखो से देखना चाहिये ।’’ उन्होने एक बात और कही थी जो व्यक्ति सपना नहीं देखता वह जिंदगी नहीं जीता ।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा था इंसान को हमेशा बड़ा सपना देखना चाहिये क्योंकि बड़ा सपना देखने से अगर इंसान अपने सपने के अंतिम रूप में नहीं भी पहुंच पाता तो भी वह बहुत सारे सपनों को पूरा कर ही लेता है । उदाहरण के तौर पर अगर कोई व्यक्ति समुन्दर पार करने का सपना देखता है तो बड़ा ताल तो पार कर ही जायेगा । कोई व्यक्ति अगर दुनिया का सबसे अमीर बनने की सोचता है तो अपने देश का सबसे अमीर व्यक्ति तो बन ही जायेगा ।

मार्टिन लूथर किंग ने एक सपना देखा था । कभी इस अश्वेत भवन में एक काला व्यक्ति भी रहेगा उनका सपना आखिर पूरा हुआ । वह भी दिन आ गया जब ओबामा के रूप में एक काला व्यक्ति अश्वेत भवन में पहुंच गया । विश्व के क्रांतिकारियों ने एक सपना ही तो देखा था कि एक दिन पूरा विश्व राजतंत्र से मुक्त होकर गणतंत्र बनेगा और आज ऐसा पूरे विश्व में है ।

एक बात हमेशा ध्यान रखना चाहिये ‘सपने देखने वालों के लिये मंजिल की कमी नहीं होती, सपने न देखने वालों की मंजिल के ऊपर खड़े रहने पर भी कोई मंजिल नहीं होती, सपने देखने वालो की कोई ख्वाहिश अधूरी नहीं रहती और सपने न देखने वालो के पास कोई ख्वाहिश ही नहीं रहती ।’

‘इंसान मिट सकता है मगर उसके द्वारा देखा गया सपना कभी नहीं मिट सकता क्योंकि उसे पूरा करने के लिये ईश्वर किसी न किसी को जरूर भेजता है ।’ आपने सुना ही होगा लोग कहते है ये मेरे पिता जी का सपना था अब मैं इसे पूरा करूँगा’ ये मेरे आदर्श गुरु का सपना था अब मैं इसे पूरा करूँगा आदि आदि । जरा गौर करिये अगर उनके पिता जी ने या गुरु जी ने कोई सपना ही नहीं देखा होता तो पुत्र और शिष्य के मन में यह विचार कैसे आता ? और जो काम समाज और देश के लिये जरूरी था वह कैसे पूरा होता ? इसलिये प्रत्येक व्यक्ति के पास एक सपना होना चाहिये सपना पूरा होगा या नहीं होगा इसकी चिंता मत करिये आप सिर्फ अपना कर्त्तव्य करिये और अपने काम में ध्यान दीजिये ।

सपने किस प्रकार देखना चाहिये :-

सपनों का कोई प्रकार नहीं होता, सपने तो बस सपने होते हैं सपनों का कोई भी आकार हो सकता है, किसी भी प्रकृति के हो सकते हैं, सपने एक अदृश्य बिन्दु है और इस बिंदु का आकार, आकृति व्यक्ति को महसूस करने के ऊपर निर्भर करती है वह जैसा महसूस करता है सपनों का रूप वैसा ही होता है। जिस अदृश्य बिंदु को हमारा मन महसूस करता है हम उस बिंदु की ओर अनायास खिंचते चले जाते हैं और हम उसके लिये कुछ न कुछ करने के लिये मजबूर हो जाते हैं।

एक बार चर्च में एक पादरी उपदेश दे रहे थे उनके उपदेश का विषय सपनों का महत्व था। जब पादरी जी का उपदेश खत्म हुआ तो राइट ब्रदर्स ने पादरी से एकांत में मिलकर एक प्रश्न पूछा - “पादरी जी ! मुझे इतना तो समझ में आ गया कि सपने देखना चाहिये, परन्तु एक बात समझ में नहीं आ रही कि हमें सपने किस प्रकार देखना चाहिये ?”

पादरी - बच्चों चलों मेरे साथ और एक मैदान में जाकर खड़े हो गये जहाँ से दूर-दूर तक कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और बोले - बच्चों तुम्हें कुछ समझ में आया। राइट ब्रदर्स - ‘नहीं पादरी’

पादरी - ‘बेटा आकाश की ओर देखो पक्षी किस प्रकार उड़ रहे हैं काश इंसान के पास भी ऐसी कोई चीज होती जिससे वह भी आकाश में उड़ सकता।’

राइट ब्रदर्स - ‘पादरी आप बिल्कुल सही कह रहे हैं किन्तु क्या ऐसा संभव है ?’

पादरी - ‘बेटा इस संसार में मनुष्य के लिये संभव तो सब कुछ है।’

राइट ब्रदर्स - ‘इसका मतलब हम भी आकाश में उड़ सकते हैं।’

पादरी - ‘सोचो तुम आकाश में उड़ रहे हो और सारी दुनिया को तुम ऊपर से देख रहे हो।’

राइट ब्रदर्स - ‘‘अपनी आंखें बंद कर कुछ सोचने लगे ओर एकायक पादरी से बोले - पादरी जी आप मुझे आशीर्वाद दो हम एक दिन आकाश में जरूर उड़ेंगे।’

पादरी (मुस्कराकर) बोले - ‘‘बच्चो ! अब वापस चले।’

यही राइट ब्रदर्स आगे चलकर हवाई जहाज के आविष्कारक बने। कहने का तात्पर्य जब इंसान सोचता है कि ऐसी चीज या ऐसी स्थिति मेरे पास भी हो तो वही आगे चलकर उसके सपनों में परिवर्तित हो जाती है। जब आप किसी गाड़ी या कार को देखते हैं तो आपके मन को भा जाती है और उसके बारे में सोचने लगते हैं। काश मेरे पास भी ऐसी गाड़ी या कार हो और आगे चलकर वह आपका सपना बन जाती है। जब आप किसी रूतबेदार व्यक्ति को देखते हैं तो आपके मन में एक हलचल होने लगती है। काश ऐसा रूतबा मेरा भी हो और यह आपका सपना बन जाता है। कुल मिलाकर इंसान की सोच के अनुसार अगर कोई भी बिंदु उसके सामने आता है तो वह उसका सपना बन जाता है।

एक बच्चा था वह अक्सर रात्रि में अपने घर की छत में खड़े होकर आकाश की ओर देखा करता था। एक दिन उसके पिता ने पूछा -

‘‘बेटा ! तुम क्या देखते रहते हो ?’’

बच्चे ने जबाब दिया - ‘‘चाँद को’’

पिता ने फिर पूछा - ‘‘क्या तुम्हें मालुम है कि चाँद हमसे कितना दूर है ?’’

बच्चे ने जबाब दिया - ‘‘नहीं, वही नापने की कोशिश कर रहा हूँ।’’

पिता ने (हंसते हुये) कहा - चाँद एक देवता है, भला देवता की दूरी को मापा जा सकता है। पिता की हंसी को देखकर बच्चे के भोले मन में एक टीस पैदा हो गयी उसे ऐसा लगा मानो उसके पिता ने उसकी इस बेवकूफी के लिये जोरदार थप्पड़ मारा हो उस बच्चे ने अपने पिता से कहा - ‘‘पिता जी ! एक दिन आप देखना मैं यह जरूर पता लगाकर रहूँगा कि हममें और इस चाँद देवता के बीच कितना अंतर है, मैं एक दिन उस चाँद देवता के पास जरूर जाऊँगा यह मेरा सपना है।

वह बच्चा और कोई नहीं था बल्कि चाँद पर पहुंचने वाले पहले व्यक्ति नील आर्मस्ट्रांग थे। वास्तव में इस दुनिया में नील आर्मस्ट्रांग जैसे व्यक्ति ही कुछ अलग कर पाते हैं और अपने सपने साकार कर पाते हैं। जब नील आर्मस्ट्रांग अपने प्रयोग के अंतिम चरण में थे उनका एक सहकर्मी बोला - ‘‘सर ! आप अपने जिंदगी का

सबसे खतरनाक कदम उठा रहे है एक बार आप अपने इस निर्णय पर पुनर्विचार कर लीजिये।" नीलआर्मस्ट्रांग (मुस्कराते हुये) बोले - "दोस्त ! मैं सब कुछ जानता हूँ, फिर भी अपने सपने को पूरा करने के लिये मैं कोई भी कीमत चुकाने को तैयार हूँ।" इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक इंसान का अपने सपनों के प्रति नजरिया अलग अलग हो सकता है किन्तु उसका परिणाम एक ही होता है, वह है 'सफलता'।

'सफलता प्राप्त करने की चाहत 'मजबूत सपनों' से उत्पन्न होती है ओर यही चाहत इंसान को विजेता बना देती है।'

सपनों की हकीकत :-

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि 'सपनों की एक ही हकीकत होती है किसी भी प्रकार से इच्छित चीज को प्राप्त कर लेना। कुछ लोग बंद आंखों से देखे गये सपनों पर पूरा विश्वास करते है।' बंद आंखों से देखे गये सपने इंसान की इच्छा के अनुसार हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते। सामान्यतः इच्छा के विरुद्ध ही होते है कभी-कभी बहुत सुंदर भी होते है और कभी-कभी बहुत डरावने भी होते है। जो सपने सुंदर होते है उसे समान्य व्यक्ति भूल जाता है परन्तु जो डरावने होते है वह व्यक्ति के मन में एक अन्देखा डर पैदा कर देते है और इंसान घबरा जाता है परिणाम यह होता है कि जब इंसान की आंखे पूर्णतः खुली होती है उस समय भी उसके द्वारा देखा गया वह सपना जो उसने बंद आंखों से देखा था बार-बार सामने आता है और वह उसे चाहकर भी भुला नहीं पाता है कुछ लोग उसे भुलाना भी नहीं चाहते है और उसके पीछे तर्क देते है मैंने फलां रात जो सपना देखा था वह कभी न कभी सच होकर ही रहेगा क्योंकि मेरे साथ हमेशा ऐसा ही होता है। मैं इस प्रकार के सपनों के संदर्भ में एक बात कहूँगा अगर आपको बंद आंखों से देखे गये सपनों में इतना यकीन है जिसका वर्तमान में कोई प्रमाण नहीं है और जो सिर्फ सोते समय मस्तिष्क में होने वाली रासायनिक स्वक्रियाओं द्वारा उत्पन्न हुआ है। तो फिर खुली आंखों से देखे गये सपनों के पूरा होने की विश्वसनीयता पर संदेह क्यों ? जबकि जो

सपना आपने खुली आँखों से देखा है हमेशा वह आपके सामने होता है, इसे आप देख सकते है, छू सकते हैं, महसूस कर सकते है। मेरे अनुसार रात को सोते वक्त देखे गये सपनों पर यकीन न करते हुये उसे भुलाने की कोशिश करे और उससे घबराये नहीं क्योंकि वह हकीकत में कभी सच नहीं होते हैं। किन्तु हाँ अगर आप उसके बारे में बार-बार सोचते है उसका बार बार दृष्टव्य करते है तो संयोगवश कभी कभी आपकी वास्तविक जिंदगी में भी सच हो जाता है। लेकिन जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, ऐसा वास्तविकता में न होकर महज एक संयोगवस होता है।

एक गांव में हैरी एवं पीटर नामक दो व्यक्ति रहते थे आपस में दोनो बहुत अच्छे दोस्त थे। हैरी को सोते समय देखे गये सपनों में बड़ा यकीन था, उसे पूर्ण विश्वास रहता था कि जो सपना उसने देखा है वह जरूर सच होकर रहेगा। वही पीटर इन सब चीजों से इत्तेफाक नहीं रखता था वह सिर्फ इतना जानता था कि खुली आंखों से देखा गया सपना ही हकीकत होता है रात को सोते समय देखा गया सपना तो महज एक संयोग होता है। हैरी ने एक दिन रात को सोते समय एक सपना देखा कि उसके साथ एक भयानक सडक दुर्घटना हुई है जिसमें उसके पास के सारे लोगो की मौत हो गयी है। हैरी जैसे ही नींद से जागा दौड़ते दौड़ते पीटर के पास गया और कहने लगा - पीटर मेरे साथ बहुत बुरा हादसा होने वाला है।

पीटर - "कुछ बताओगे क्या हो गया ?"

हैरी - "मैंने कल रात एक सपना देखा है जिसमें एक दुर्घटना होती है और उस दुर्घटना में कोई नहीं बचता।"

पीटर - "हैरी चिंता मत कर ऐसे सपनों की वास्तविक जिंदगी में कोई वास्तविकता नहीं होती।"

हैरी - "पीटर ! लेकिन मेरे साथ ऐसा अक्सर होता है।" पीटर समझा समझाकर हार गया किन्तु हैरी अपनी उस अवधारणा में टिका रहा। अन्त में पीटर ने कहा - "हैरी एक तो तेरे साथ ऐसा कुछ होगा नहीं और अगर हुआ भी तो मैं तुझे बचा लूँगा।"

हैरी - "पीटर ! तुम मुझे नहीं बचा पाओगे।"

पीटर – “हैरी ! तुझे मैं जरूर बचा लूँगाँ यह मेरा सपना है और मेरा सपना जरूर पूरा होगा इस पर मुझे पूर्ण विश्वास है।” तीन महीने गुजर गये हैरी अपनी दुर्घटना के बारे में सोचता था और पीटर उसे बचाने के बारे में। एक दिन हैरी का सपना सच हो गया जब उसके साथ भयंकर सड़क दुर्घटना हुई लेकिन पीटर ने उसे किसी प्रकार से बचा लिया। बाद में हैरी ने पीटर से कहा – “पीटर ! अगर तू नहीं होता तो शायद आज मैं यहां पर नहीं होता।”

पीटर ने कहा – “ हैरी ! तुझे मैं कैसे नहीं बचा पाता ? तुम्हे बचाना मेरा सपना जो था।”

हैरी – “ लेकिन एक बात है, मैंने तुमसे कहा था कि मैं जो सपना देखता हूँ वह सच हो जाता है और देखो सच भी हो गया।”

पीटर – “ हैरी ! तुम्हारा वह सपना सच नहीं हुआ यह सिर्फ तुम्हारा बहम है क्योंकि जो तुम्हारे जिंदगी में प्रतिदिन इतने उतार चढ़ाव आते हैं उन सबके बारे में तो तुम सपना नहीं देखते फिर भी उतार चढ़ाव आते हैं। इसलिये ऐसा तुम मत सोचो और न ही भविष्य में कभी सोचना।”

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है “सोते समय देखे गये सपने संयोग से सच हो सकते हैं हमेशा नहीं परन्तु जागते समय देखे गये सपने हमेशा सच होते हैं, संयोग से नहीं।”

आखिर सपनों की उत्पत्ति किस प्रकार होती है ? प्रत्येक व्यक्ति के दिमाग में यह बात जरूर आती है, इस प्रश्न के संदर्भ में बताना चाहूँगाँ कि आखिर सपने दिखते क्यों हैं ? मानव शरीर के मस्तिष्क में एक चेतना केन्द्र होती है यह चेतना केन्द्र प्रत्येक क्रिया के लिये अलग अलग होती है। इसी चेतना केन्द्र में से हमारे दिमाग में एक ऐसा केन्द्र भी होता है जो हमें निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं को अनुभव कराने की क्षमता रखता है और यह केन्द्र भविष्य रूपी दर्पण में इंसान को बार-बार यह दिखाने की कोशिश करता है कि वह कहाँ जाने के लिये आया है? वह क्या-क्या प्राप्त कर सकता है ? उसके जीवन में क्या-क्या उतार चढ़ाव आ

सकते हैं ? जैसे ही इंसान के सामने वह चीज या वह घटना आती है जिसे वह चेतना केन्द्र दिखाना चाहती है परिणाम स्वरूप उस वस्तु या घटना का प्रतिबिम्ब इंसान की आंखों में समारूपित हो जाता है जो आगे चलकर इंसान के मन में उतरकर उसके सपनों के रूप में सामने आता है। इसी घटना का इंसान की जिंदगी का टर्निंग प्वाइंट भी कहा जाता है।

“ इंसान जब कोई सपना पूरे दिलो दिमाग और जज्बात के साथ देखता है तो पूरा न होने की गुंजाइस ‘न’ के बराबर रह जाती है।”

सपनों की कोई सीमा नहीं होती :-

इस संसार में सपनों की कोई सीमा नहीं है। क्योंकि संसार परिवर्तनशील है, इस संसार में प्रतिदिन कुछ न कुछ परिवर्तन होता ही रहता है। उन्ही परिवर्तनों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में बदलाव भी स्वाभाविक है, जो बदलाव को स्वीकार नहीं करता उसे बदलता हुआ संसार स्वीकार नहीं करता। इसलिये इंसान के सपने भी लगातार परिवर्तित होते रहते हैं, और ऐसा होना जरूरी भी है। जब बच्चा छोटा होता है उसका सपना कुछ अलग ही होता है, जब स्कूल में पढ़ता है तो अच्छे नम्बर पाने का सपना देखता है, बड़े होने पर एक बेहतरीन कैरियर का सपना देखता है फिर बड़े होकर अच्छी गाड़ी और एक अच्छे बंगले का सपना देखता है। कहने का मतलब हमारे जीवन में लगातार परिवर्तन के अनुसार हमारे सपने उम्मीदें और जरूरते भी बदलती रहती हैं इसलिये इंसान की जिंदगी में सपनों की कोई सीमा नहीं होती। हमारा एक सपना पूरा होता है और हम दूसरा सपना देखने लगते हैं। मैं मानता हूँ इसमें कोई बुराई भी नहीं है क्योंकि इससे इंसान के सामने जिंदगी जीने का मकसद हमेशा बना रहता है।

बहुत पुरानी कहानी है एक व्यक्ति बहुत सारे सपने देखता था वह चाहता था कि वह कोचीन राज्य का राजा बने उसने उसके लिये भरपूर मेहनत किया परन्तु वह राजा नहीं बन पा रहा था वह परेशान होकर एक दिन अपने गुरु के पास गया और बोला – “गुरुदेव मैंने आज तक जो सपना देखा वह पूरा नहीं हुआ।”

गुरु - "बेटा ! तुम्हारा सपना क्या है ?"

उस व्यक्ति ने कहा - "मुझे कोचीन राज्य का राजा बनना है।"

गुरु - "जब तुमने राजा बनने का सपना देखा था तब तुम्हारी हैसियत क्या थी ?"

उस व्यक्ति ने कहा - " गुरुदेव ! आप तो जानते ही हैं मैं एक मजदूर के घर पैदा हुआ था और तब मैं मजदूर ही था।"

गुरु - "वर्तमान में तुम क्या हो ?"

उस व्यक्ति ने कहा - "राज्य का महामंत्री।"

गुरु - बेटा ! "इंसान को अगर आखिरी सीढ़ी तक पहुंचना है तो पहली सीढ़ी से ही चलना प्रारंभ करना पड़ता है और जो व्यक्ति शून्य से सबसे उंचाई वाली सीढ़ी तक जाने का सपना देखता है उसके बहुत सारे सपने अपने आप पूरे हो जाते हैं किन्तु उस व्यक्ति को दिखाई नहीं देते परिणाम स्वरूप व्यक्ति अनायाश ही परेशान रहता है। ऐसा ही कुछ तुम्हारे साथ है आज तुम मजदूर से महामंत्री हो अर्थात् अपनी मंजिल के एक कदम नीचे। तुम्हारे बहुत सारे सपने पूरे हुये हैं तुम अपने अंतिम सपने के बिल्कुल किनारे खड़े हो किन्तु तुमने अगर इस स्थान पर निराश होकर अपनी हिम्मत खो दी तो फिर अपने सपने की अंतिम सीढ़ी तक कभी नहीं पहुंच पाओगे। एक बात ध्यान रखना सपनों की कोई सीमा नहीं होती है सपने समुन्दर में उठने वाली लहरों के समान होते हैं जो कभी समाप्त नहीं होते हैं इसलिये सभी प्रकार के संसय से मुक्त होकर ईमानदारी पूर्वक अपना कर्तव्य करो, तुम्हें तुम्हारी मंजिल जरूर मिलेगी।"

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है -

1. जो व्यक्ति बहुत सारे सपने देखता है जिसके सपने वास्तविक रचनात्मक रतकर्म होते हैं वह नदर के समान धीरे धीरे अपने सारे सपने पूरा करता जाता है।
2. सपने देखने वाले व्यक्ति का कोई अंतिम सपना नहीं होता है।
3. किसी भी व्यक्ति को यह न भूलते हुये कि वह पहले कहाँ था निराश नहीं

होना चाहिये क्योंकि उसके बहुत सारे सपने उसके अंतिम लक्ष्य तक पहुंचते पहुंचते पूरे हो जाते हैं।

दूसरो की खुशी के लिये अपने सपनों की बलि न दें :-

एक बहुत बड़े विचारक ने लिखा है - " सपनों और दूसरो की खुशी में एक ही अंतर होता है सपने प्रकाश की तरह होते हैं और दूसरो की खुशी परछाई की तरह, अगर आपके पास सपना है तो प्रकाश होना तय है और उस प्रकाश में परछाई तो अपने आप पैदा हो जायेगी।"

इस दुनिया में ऐसे कई लोग मिल जायेंगे जिनका अपना खुद का कोई सपना नहीं होता या फिर होता भी है तो उसे दूसरो की खुशी के लिये पूरा करने से परहेज करते हैं। उदाहरण के तौर पर एक बच्चे का सपना होता है मैं एक खिलाडी बनूँ लेकिन उसके माता पिता का सपना होता है मेरा बेटा डॉक्टर बने एक बच्चे का सपना होता है वह वैज्ञानिक बने लेकिन उसके माता पिता का सपना होता है वह आईएएस अफ़ीसर बने, एक बच्चे का सपना होता है वह राजनेता बने लेकिन माता पिता का सपना होता है, वह एक सरकारी नौकरी करे। बस यही पर उससे चूक हो जाती है, वह अपने सपनों को किनारे कर अपनो कीखुशी के लिये उनके सपनों को पूरा करने लगता है और उसमें भी पूर्ण नहीं हो पाता क्योंकि उसका मन द्विआयामी हो जाता है परिणामस्वरूप वह सपनों से परहेज करने लगता है और जब उसके हाथ में कुछ भी नहीं बचता तो कहता है 'सपने मैंने भी देखे थे लेकिन कभी पूरे नहीं हुये शायद मेरे भाग्य में ऐसा था ही नहीं।'

इस स्थिति में इंसान को दृढ़ता पूर्वक निर्णय लेना चाहिये और अपने सपनों की प्राथमिकता देनी चाहिये और अपने सपनों की तरफ पूरी क्षमता से कर्तव्य करते हुये आगे बढ़ना चाहिये क्योंकि जब वह अपने सपनों की उंचाईयों को छूने लगता है तो अन्य लोग भी उसका साथ देने लगते हैं। यह संसार का नियम है। कार्ल -मार्क्स एक बार मास्को की एक विशाल सभा को संबोधित करते हुये कहते हैं - "मे दुनिया का श्रेष्ठ इंसान हूँ क्योंकि मैं बहुत सारे सपने देखता हूँ, लोग मेरा

मजाक उड़ाते हैं और अभी मेरे खिलाफ है लेकिन मुझे उसका कोई अफसोस नहीं होता, अफसोस होता है तो उन लोगो पर जो मेरा मजाक उड़ाते हैं क्योंकि मुझे उम्मीद है कि एक दिन हालात बदलेगे और मेरे सारे सपने सच होंगे।”

संसार का एक सबसे कड़वा सच है कि कोई भी व्यक्ति प्रत्येक व्यक्ति को खुश नहीं रख सकता चाहे वह कितना भी अच्छा काम करे और जिनका उस व्यक्ति से खुश रहना है वह रहेंगे ही चाहे उनके हिसाब से काम करे या न करें। इसलिये व्यक्ति को हर प्रकार की दुविधा को छोड़कर अपने सपनों की ओर बढ़ना चाहिये। इसी में खुद की, अपनो की, और आपसे जुड़े समाज के अन्य लोगो की भलाई है।

कोई करिश्मा आपके सपने पूरे नहीं कर सकता :-

एक कहावत है “ बिना खुद के मरे स्वर्ग नहीं मिलता” अर्थात खुद के चले बिना कोई यात्रा पूरी नहीं होती है, बिना खुद की मेहनत से कोई कामयाबी नहीं मिलती। अगर जिंदगी में कामयाब होना है, अपने सारे सपने पूरे करने है तो आपको खुद ही कदम बढ़ाना होगा, इसके लिये कोई चमत्कार नहीं होगा और न कोई अन्य व्यक्ति आपके कदमो को आगे बढ़ाने के लिये आयेगा। आपको खुद ही अपने सपनो के लिये कार्य करना पड़ेगा। कोई अन्य व्यक्ति आपकी मदद तभी करता है जब आप खुद अपने कदम बढ़ाने के लिये तैयार हो। अगर आप अपने जीवन के प्रति सजग नहीं है, नयी जमीन पर पाँव नहीं रखना चाहते, अपने सपनो के लिये उँची उड़ान नहीं भरना चाहते है तो चमत्कार होने पर भी आप इस चमत्कार का लाभ नहीं उठा पायेंगे।

एक व्यक्ति भगवान शंकर का बहुत बड़ा भक्त था वह प्रतिदिन पूजा करके भगवान से वरदान मांगता था। “हे ! प्रभु मेरी लाटरी लगवा दो।” एक दिन पार्वती जी ने भगवान शंकर से कहा “ हे ! प्रभु इस भक्त की आपको मदद करनी चाहिये। भगवान शंकर ने उस व्यक्ति को लाटरी लगने का वरदान दे दिया। कुछ दिन बाद फिर वह व्यक्ति आकर वही पुरानी बात कहने लगा। “ हे ! प्रभु मेरी लाटरी लगवा दो। पार्वती जी ने यह देखकर कहा – “ हे ! प्रभु आपने तो कहा था कि मैंने भक्त

को लाटरी लगने का वरदान दे दिया है परन्तु वह आज भी वही बात कह रहा है।” भगवान शंकर – “हे ! देवी मैंने इस व्यक्ति को लाटरी लगने का वरदान तो दे दिया था परन्तु लाटरी की टिकट तो उसी को लेना होगा। जब तक वह लाटरी की टिकट नहीं लेगा तब तक लाटरी कैसे लगेगी।”

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है –

1. ईश्वर उन्ही की मदद करता है जो खुद की मदद करते हैं।
2. कोई भी चमत्कार या वरदान, आशीर्वाद तभी काम आते है। जब आप किसी भी कार्य को प्रारंभ करते हैं।
3. बिना कर्म किये फल की कामना करना मूर्खता है।

भारत जैसे विकाशशील देशों में परिवार का एक सदस्य काम करता है शेष अन्य सदस्य बैठकर खाते हैं और उम्मीद भी रखते है, मेरे सारे सपने पूरे हो जाये, मैं अच्छी गाड़ी से चलूँ, मैं अच्छे कपड़े पहनूँ, मेरी लाइफ स्टाइल अलग हो और इसके लिये अपने मां-बाप पर नाजायज दबाव डालते है परंतु वह यह भूल जाते है कि जिस पर वह नजायज दबाव डाल रहे है उसको पूरे परिवार की चिंता है। ऐसे लोगो को देखकर बड़ा दुख होता है। कि जवान होकर सब कुछ होते हुये भी कुछ करना नहीं चाहते। बस दुनिया की सारी खुशी घर में बैठे-बैठे पाना चाहते है। इस प्रकार के लोगो से मैं एक बात कहना चाहूँगा – “अगर वास्तव में आप दुनिया की सारी खुशी पाना चाहते है तो घर से बाहर निकलिये आपकी खुशियाँ आपके दरवाजे में खड़ी आपका इंतजार कर रही है।”

मुसीबते किसी भी व्यक्ति को सपने पूरा करने से नहीं रोक सकती :-

‘अगर दिल में जज्बात हो मन में उमंग हो, सपने पूरा करने की प्रतिबद्धता हो तो इंसान अपने सपने जरूर पूरा करता है उसे कोई बाह्य अवरोध नहीं रोक पाता।’

1883 की घटना है इंजीनियर रोबलिंग न्यूयार्क को आइसलैंड से जोड़ने के लिये एक स्पेक्ट्रम ब्रिज बनाने का प्रोजेक्ट बना रहे थे दुनिया के सारे इंजीनियर यह

मान चुके थे कि इस प्रोजेक्ट को पूरा करना असंभव है, जब रोबलिंग ने इस चुनौती को स्वीकार किया तो सिर्फ वह मजाक बनकर रह गये, परन्तु यह ब्रिज तो उनका सपना बन चुका था, उनके हृदय में पूर्ण रूप से समाहित हो चुका था। वह उस प्रोजेक्ट के बारे में अपने साथियों से बातचीत करते रहते थे, परन्तु किसी ने उनका साथ नहीं दिया। आखिरकार रोबलिंग ने अपना प्रोजेक्ट अपने नवोदित इंजीनियर बेटे वाशिंगटन के साथ शुरू किया लेकिन कुछ महीने बाद ही रोबलिंग की एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई और वाशिंगटन बुरी तरह से घायल हो गया था उसको ब्रेन हैमरेज हुआ था, वह न चल सकता था और न ही बोल सकता था। प्रत्येक व्यक्ति उस प्रोजेक्ट एवं रोबलिंग के बारे में तरह तरह की नकारात्मक बातें करते थे लोग कहते थे रोबलिंग के साथ उसका प्रोजेक्ट भी चला गया, एक मात्र व्यक्ति था जो जानता था प्रोजेक्ट कैसे पूरा होगा? इस प्रकार की बातों को जब वाशिंगटन सुनता था तो उसके दिल में आग लग जाती थी। वह अपनी बात को अपने दोस्तों तक पहुंचाना चाहता था परन्तु उसके पास कोई उपाय नहीं था। एक दिन जब वह अस्पताल में बिस्तर पर लेटा था, अचानक उसने सूर्य के प्रकाश में चमकता हुआ ब्रिज देखा जिसके ऊपर आकाश था और उसके चारों ओर हरे भरे पौधे थे। तुरंत उसके मन में एक आइडिया आया परन्तु मजबूरी बस वह उस आइडिया को दूसरों तक पहुंचा नहीं सकता था, अचानक उसने देखा उसके हाथ की एक उंगली चल रही है, अब वह उसी उंगली के सहारे अपनी पत्नी के आर्म की मदद से अपनी बात को पहुंचाने लगा। वाशिंगटन ने अपनी उसी उंगली की सहायता से अपनी पत्नी की मदद से प्रोजेक्ट के सारे इन्स्ट्रक्शन इंजीनियरों को बताने लगा जिससे ब्रिज का काम पुनः प्रगति पर हो गया और तेरह वर्ष बाद रोबलिंग का ड्रीम ब्रिज बनकर तैयार था। इस कहानी से यही निष्कर्ष निकलता है कि जब एक विकलांग व्यक्ति जो न बोल सकता था, न चल सकता था अपने सपनों को पूरा कर सकता है तो एक समूचा व्यक्ति जो सब कुछ करने में सामर्थ्य है अपना सपना पूरा क्यों नहीं कर सकता? बस जरूरत होती है दिल में एक आग की और न रुकने वाले जुनून की

फिर तो सारी विपरीत परिस्थितियां भी अनुकूल हो जाती हैं।

“ अगर आप पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों की ओर बढ़ते हैं तो जिंदगी में जो सोचा है मिल जायेगा ”

—हेनरी डेविड थोरिया

जिस चीज में हमें उम्मीद नहीं होती वही चीज हमारे सपने पूरे कर सकती है :-

कभी-कभी हमें जिस चीज से बिल्कुल उम्मीद नहीं होती वही चीज हमारे सपने पूरे करने का जरिया बन जाती है इसलिये किसी भी चीज को हमें नजर अंदाज नहीं करना चाहिये जो भी अवसर हमारे सामने आये कम से कम उसके तह तक जरूर जाना चाहिये, भगवान का भेजा गया प्रसाद समझना चाहिये, किसी भी कीमत में उस अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिये क्योंकि हो सकता है जिसकी हमें तलाश है वह उसी अवसर में हो जिसे हम अज्ञानता बस नजर अंदाज कर रहे हैं।

“ जहाँ संभावनाये दिखायी नहीं देती है वास्तव में वही सबसे अधिक संभावनाये होती है। ”

एक नौजवान कॉलेज से स्नातक कर रहा था कई महीनों से वह एक शोरूम में खड़ी स्पोर्टकार को देख रहा था वह यह जानता था कि उसके पिता उस कार को खरीद सकते हैं और उसने अपने पिता से कहा “ वह यही स्पोर्टकार चाहता है। ” जैसे-जैसे स्नातक का समय पूरा हो रहा था वह इस बात के संकेत ढूढ़ने लगा कि उसके पिता ने वह कार खरीदी है। वह अपने स्नातक होने के बाद अपने पिता के कक्ष में गया उसके पिता ने कहा मुझे तुम पर गर्व है, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। और ऐसा कहते हुये उन्होंने अपने पुत्र को एक सुन्दर ढंग से लपेटा हुआ डिब्बा दिया। पुत्र ने उत्सुकतावस पर कुछ निराश होकर उस डिब्बे को खोला जिसमें उसने एक प्यारी जिल्द वाली बाईबिल देखी। गुरसे में उँची आवाज में उसने अपने पिता से कहा – “आपके पास इतना पैसा है परन्तु उपहार स्वरूप आप मुझे बाईबिल दे रहे हैं, यह

बाईबिल और आपको पैसा आपको मुबारक हो । और गुस्से में घर छोड़कर चला गया।”

बहुत साल बीत गये अब वह नौजवान एक सफल व्यक्ति बन गया था उसके पास सब कुछ था परन्तु उसे पिता की कमी का बार बार एहसास होता था अन्ततः उसने एक निर्णय लिया कि उसे अपने बूढ़े पिता के पास जाना चाहिये इसके पहले कि वह वहां जाने की तैयारी करता, उसे तार मिला कि उसके पिता की मृत्यु हो गई है और अपनी सारी संपत्ति उसके नाम वसीयत कर गये है । जब वह घर पहुंचा तो अचानक उसका दिल दुखः और पछतावे से भर गया । उसने अपने पिता के जरूरी दस्तावेजों की जांच शुरू की जिसमें उसे वही बाईबिल मिल गयी जिसे छोड़कर वह वर्षों पहले चला गया था । उसे वह बाईबिल वैसी की वैसी मिली । आँसुओं के साथ उसने उस बाईबिल को खोला और उसके पन्ने पलटने शुरू किये जैसे ही उसने बाईबिल का पहला पेज खोला उसके पीछे से एक कार की चाबी नीचे गिरी जो उसमें चिपकाई गयी थी, उस चाबी के साथ उस विक्रेता का नाम था जिसके शोरूम में वह स्पोर्टकार देखा करता था उसके साथ वह तारीख भी लिखी गयी थी जिस दिन उसको स्नातक की उपाधि मिली थी साथ ही पूरी कीमत अदा करने की बात भी लिखी गयी थी । इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है ।

1. कितनी बार हम ईश्वर के आशीर्वाद को खो देते हैं क्योंकि वह उस तरह के रैंप में नहीं होता जैसा हमने सोचा था ।
2. किसी भी अवसर को बिना पूरी जानकारी के नहीं टालना चाहिये । हो सकता है वही काम या अवसर आपकी जिन्दगी का अहम हिस्सा बन जाय और आपकी सफलता का रास्ता बन जाये ।

तीसरा कदम अपने आपको जानिये

मनुष्य इस संसार का मुकुटमणि एवं सबसे बुद्धिमान प्राणी कहा जाता है और उसको इस प्रकृति ने एक कसम दे रखी है कि इस सृष्टिरूपी बगीचे की समुचित देखभाल करते हुये उसे सुन्दर और उन्नत बनाना और मैं तेरे कुशल क्षेम की रक्षा करता रहूंगा, इस प्रकार प्रकृति यह बार-बार मनुष्य जाति को चेतावनी देती रहती है ।

आपको इस प्रकृति ने सबसे ज्यादा बुद्धिमान बनाया है इस संसार के सभी प्राणियों से भी ज्यादा श्रेष्ठ बुद्धि दी है आप इसका नाजायज प्रयोग न करके उसे एक उर्जा के रूप में पिनो लीजिये यही बुद्धि आपको विख्यात बना देगी और यही बुद्धि आपको कुख्यात बना देगी । आपको पता होना चाहिये कि आप इसी उर्जा के दम पर सारे संसार के हृदय सम्राट बन सकते हैं और इसी उर्जा के दम पर आप सभी के घृणा के पात्र बन सकते हैं । वह आप पर निर्भर करता है कि आप ईश्वर के द्वारा प्रदत्त इस वरदान का उपयोग किस प्रकार करते हैं ।

जरा सोचिये और विचार करिये, आप एक मात्र प्राणी हैं जिसके पास 1400 सी.सी. का मस्तिष्क है आपको 1400 सी.सी. का दिमाग ईश्वर द्वारा सिर्फ इसलिये नहीं दिया गया कि आप सांसे लेकर सिर्फ जिंदा रहे जिसमें हमेशा घुटन होती रहे और आप हमेशा अपने आपको नीचापन महसूस करते हुये जीवन को काटते रहे ।

एक बार एक बालक रवीन्द्रनाथ टैगोर के पास गया उसने कहा “गुरुदेव ! आप इतने लोगो को खाना उपलब्ध कराते हो । कृपया ऐसा मेरे साथ भी करें ।” गुरुदेव - “बेटा ! आप मुझे अपनी दोनो आंखे दे दे मैं आपको भोजन उपलब्ध करा दूंगा ।”

बालक - “गुरुदेव ! आप ये क्या कह रहे हैं ? मैं ऐसा नहीं कर सकता हूँ ।”

गुरुदेव - “अच्छा तुम एक आंख ही दे दो ।”

बालक तैयार नहीं हुआ तब गुरुदेव ने कहा - “अच्छा आप मुझे एक हाथ ही दे दो ।”

बालक रूठ कर बोला - “ गुरुदेव ! आप एक गरीब का मजाक उड़ा रहे है । मैंने आपके बारे में सुना था आप महान पुरुष है मेरी गरीबी दूर कर देंगे परन्तु आप तो भोजन के बदले मेरे शरीर का मूल्य लगा रहे है । ”

गुरुदेव - “ बेटा ! तू गरीब नहीं बल्कि तेरी आत्मा गरीब है, तेरा दिल गरीब है, तू तेरे अन्दर -विद्यवान अपार शक्ति और समर्थ को पहचान नहीं पा रहा है । ”

उस बालक के सब कुछ समझ में आ गया एक दिन वह आया जब उसके पास सब कुछ था और आगे चलकर भारत सरकार का कैबिनेट मंत्री बना ।

यहाँ सवाल उठता है नजरिये का कभी हम अपने आप पर दृष्टिपात ही नहीं करते, कभी हम अपने अंदर छुपी विराट साहस और प्रतिभा को देखते ही नहीं, हमेशा हम नजर अंदाज करते रहते है, जिसने अपने अंदर विद्यवान गुणों को पहचान लिया वह महानतम विभूतियों में शामिल हो जाता है और जो नहीं पहचान पाता वह उसी दलदल में फंसाँ निकलने की गुहार करता रहता है ।

“ अपने अवगुणों के प्रति सजग न होना यदि अनुचित है तो अपने गुणों को न पहचानना भी एक अवगुण या दोष ही है । ”

-: दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति में एक विशेष गुण होता है :-

“ इस संसार में सर्वगुण संपन्न व्यक्ति हजारों वर्षों बाद एक ही पैदा होता है और किसी में एक भी गुण न हो ऐसा व्यक्ति कभी पैदा ही नहीं होता । ”

प्रकृति ने इस संसार में सभी व्यक्तियों को किसी न किसी गुण से सुसज्जित किया है प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई प्रतिभा होती है, उसके अंदर एक विशेष गुण होता है जो व्यक्ति इस विशेष गुण को परख कर मूर्ती रूप देता है वह दुनिया के लोगो के दिलो में शासन करता है ।

गौर करने वाली बात है अगर बदबूदार घास में तथा विषधर सर्प में गुण हो सकते है तो फिर एक इंसान के अंदर कोई गुण क्यों नहीं हो सकता है ? हाँ मैं मानता हूँ कि जिस प्रकार एक ही दवाई से सारी बीमारियों का इलाज नहीं हो सकता, एक ही प्रकार के भोजन से सभी प्रकार के पोषक तत्व नहीं प्राप्त किये जा सकते । इसी

प्रकार एक ही व्यक्ति में सारे गुण नहीं हो सकते अर्थात सर्वगुण संपन्न नहीं हो सकता परन्तु किसी भी व्यक्ति में एक भी गुण न हो ऐसा भी नहीं हो सकता ।

जिस प्रकार प्रकृति में विविधता होती है उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की सोच, शक्ति और गुणों में विविधता होती है एक व्यक्ति अच्छा डॉक्टर हो सकता है परन्तु अच्छा इंजीनियर नहीं, एक अच्छा इंजीनियर एक डॉक्टर नहीं हो सकता । एक अच्छा खिलाड़ी एक अच्छा आफीसर नहीं हो सकता । एक अच्छा अभिनेता एक अच्छा नेता नहीं हो सकता । एक अच्छा गायक एक अच्छा वक्ता नहीं हो सकता ।

“ प्रकृति ने सिर्फ ऐसा इसलिये किया है कि संसार का संतुलन बना रहे और प्रत्येक चीज, जीव एवं इंसान का मूल्य बराबर बना रहे । ”

इस दुनिया में ऐसी कई महान विभूतियाँ हुई है जो जाना तो कही और चाहते थे परन्तु पहुँच कही और गये और जहाँ पहुँचे वहाँ टाप में रहे । इसका कारण था वह जहाँ जाना चाहते थे वहाँ पहुँचने लायक उनमें गुण नहीं थे और अंत में जहाँ पहुँचे उसी लायक गुण देकर उन्हें ईश्वर ने इस जमीन पर भेजा था इसलिये वे वहाँ पर टाप में रहे ।

एक लड़का बचपन से अपने कर्बे के लोगो से, अपने दोस्तो से कुछ अलग करना चाहता था उसने पायलट बनने के लिये कठिन परिश्रम किया परन्तु शारीरिक कमजोरी के कारण पायलट नहीं बन पाया इस घटना ने उसे तोड़कर रख दिया था और वह निराश होकर समुद्र के किनारे बैठा था । चूँकि आर्थिक रूप से भी कमजोर था । इसलिये उसको कोई रास्ता समझ में नहीं आ रहा था तभी किसी ने पीछे से आवाज दी “ बेटा ! निराश मत हो तुझे उस खुदा ने इस काम के लिये नहीं भेजा, बल्कि इससे भी खूबसूरत कोई बड़ा काम तुझसे करवाना चाहता है । ” जब पीछे मुड़कर उस लड़के ने देखा तो उसके गुरु (अध्यापक) जो उससे सबसे अधिक प्यार करते थे हाथ में कुछ लिये खड़े हुये थे । उसने पूछा “गुरुदेव आपके हाथ में क्या है ?”

अध्यापक - “बेटा ! तुम्हे इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश मिल गया है, साथ ही तुम्हारी स्कालरशिप भी शासन द्वारा मंजूर कर दी गयी है अब तुम इसमें प्रवेश लेकर अच्छी मेहनत कर टाप पर पहुंचो क्योंकि तुम ऐसा कर सकते हो, खुदा तुम्हारे साथ है।”

उस लड़के ने ऐसा ही किया और रामेश्वरम जैसी छोटी सी जगह से निकलकर भारत का महान वैज्ञानिक एवं प्रथम नागरिक बना। वह लड़का कोई और नहीं बल्कि भारत के महान वैज्ञानिक मिशाइल मैन ए.पी.जे. अब्दुलकलाम थे।

कहने का मतलब आप अगर अपने गुणों के अनुरूप कोई काम करते हैं तो फिर आपको टॉप पर पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता लेकिन उसके लिये जरूरी है कि आप अपने गुणों को पहचाने और उसे समझे।

सचिन तेन्दुलकर ने अपने क्रिकेट कैरियर की शुरुआत एक मध्यम तेज गेंदबाज के रूप में किया था परन्तु जब अपने अंदर विद्यमान बल्लेबाजी प्रतिभा को पहचाना तो दुनिया के महान बल्लेबाज हुये।

इतिहास पुरुष लेनिन एक अर्न्तमुखी स्वभाव का लड़का था लेकिन जब उसने अपनी इस कमजोरी को ताकत बनाया और अपने अंदर मौजूद शक्ति को पहचाना तो दुनिया के महान व्यक्तियों में शामिल हो गया। एक बार पत्रकारों ने लेनिन से पूछा कि “आप बचपन में इतने अर्न्तमुखी स्वभाव के थे लेकिन आज लाखों लोगो से एक साथ बात करते हैं। यह कैसे संभव हुआ।” लेनिन ने कहा - “महोदय जब मैं बीस वर्ष का था तो मुझे नहीं पता था कि मुझे कहाँ जाना है ? और मैं जानना भी नहीं चाहता था। क्योंकि उस समय तक मेरे मां-बाप मेरी प्रत्येक समस्या के सामने खड़े रहते थे। लेकिन कुछ दिनों पश्चात मुझे पता चला मेरे मां बाप मेरी समस्याओं से लड़ते लड़ते हार चुके हैं तब मैंने अपने आपको उन समस्याओं के सामने लाकर खड़ा किया और उन समस्याओं के आवेग ने मेरे अंदर मौजूद शक्ति और गुण को प्रकट कर दिया जैसे ही मुझे अपनी शक्ति का ऐहसास हुआ मुझे पता चल चुका था कि यह शक्ति एक नयी ऐतिहासिक घटना के लिये पर्याप्त है।”

“ प्रत्येक व्यक्ति के अंदर ऐसी शक्तिया छिपी रहती है जिन्हे न तो कोई देख सकता है और न उसकी कल्पना ही कर सकता है। अगर ऐसे किसी साधन का आविष्कार हो जाए जिसके माध्यम से व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों की तस्वीर ली जा सके तो मनुष्य अपनी ही शक्तियों को देखकर आश्चर्य चकित रह जायेगा।”

-विलियम जेम्स

-:किसी व्यक्ति का उसका गुण बिखरे हुये रूप में हो सकता है।:-

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि इस प्रकृति के सुन्दर उपवन में समाहित प्रत्येक चीज में एक विशेष गुण होता है। एक निर्जीव पत्थर होता है मगर वह भी अपने में हजारों गुण समाहित किये हुये इधर उधर बिखरा पड़ा होता है परन्तु जब यही पत्थर एक क्रम में व्यवस्थित होता है तो बड़े-बड़े बांध और पर्वतों का निर्माण कर देता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य में भी बिखरी हुई अनन्त एवं बहुमूल्य प्रतिभा छुपी हुई है बस उसे सहेजने की जरूरत है। अगर आपको कोई कार्य संपन्न करना है तो उसके लिये आवश्यक परामर्श और ज्ञान को बाहर दूढ़ने के बजाय अपने अंदर दूढ़िये सब कुछ आपके अंदर विद्यमान है जो आपका प्रत्येक काम बेहतर ढंग से संपादिक करेगा। जब आप अपनी बिखरी शक्तियों एवं क्षमता को इकट्ठा कर लेते हैं तो तब आप पायेंगे, आपके द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक कार्य सर्वश्रेष्ठ काम होता है।

एक बार एक चित्रकार को दुनिया की सबसे खूबसूरत वस्तु की चित्र बनाने की लालसा हुई, वह सबसे खूबसूरत वस्तु को खोजने के लिये निकल पड़ा, रास्ते में उसे एक साधु मिला, साधु से उसने पूछा “गुरुदेव ! कृपया आप इस दुनिया की सबसे खूबसूरत वस्तु के बारे में बतायें।”

उस साधु ने कहा - ‘श्रद्धा’

उस व्यक्ति को संतुष्टि न मिली उसने एक नयी नवेली दुल्हन से जिक्र किया उसने जबाब दिया - “इस दुनिया में प्रेम के सिवाय कोई वस्तु सुन्दर नहीं है।”

चित्रकार फिर भी संतुष्ट नहीं हुआ और उसने एक सैनिक से पूछा दुनिया की सबसे सुन्दर वस्तु कौन सी है ?

सैनिक ने कहा-“शान्ति, युद्ध से घटिया और शान्ति से सुन्दर कोई चीज नहीं है।”
उसे तीन चीजे मिली, ‘श्रद्धा’, ‘प्रेम’ और ‘शान्ति’ वापस लौटकर वह घर गया। घर पर जैसे ही गया उसके बच्चे उछलकर उसकी गोद में आ गये एवं पत्नी प्रसन्न मुद्रा में थी। इस प्रकार उसने देखा बच्चों की आंखों में ‘श्रद्धा’ एवं पत्नी के आंखों में ‘प्यार’ झलक रहा है और घर पर ‘शान्ति’ है। उसके समझ में आ गया और उसने ऐसा चित्र बनाया जिसका नाम ‘घर’ था। इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि जिस सुन्दर वस्तु को वह दुनिया में ढूढ़ रहा था, वह उसके पास ही थी, परन्तु बिखरी होने के कारण वह उस सुन्दर वस्तु को देख नहीं पा रहा था, लेकिन जब उसने उसे देखा, पहचाना और एक लड़ी में पिरोया तो घर नामक तस्वीर बनी और आगे चलकर वह व्यक्ति इसी तस्वीर के कारण सोहरतवान बना। अर्थात् महान चित्रकार कहलाया।

“ इंसान को सफलता, ऐश्वर्य, सोहरत बाहर नहीं ढूढ़ना चाहिये क्योंकि दुनिया की हर खूबसूरत चीज उसके अंदर मौजूद होती है।”

:-जो व्यक्ति अपने आपको जानता है उसके पास कोई समस्या नहीं होती :-

कहा जाता है कि ‘मुसीबत उसी के पास होती है जो मुसीबत की परवाह करता है, जो मुसीबतों में निदान ढूढ़ता है और मुसीबतों को खिलौना समझकर खेलता है उसे आगे बढ़ने से कोई मुसीबत नहीं रोक पाती।’ जो व्यक्ति जानता है मैं इस काम को कर सकता हूँ, जो जानता है मेरे अन्दर अद्भुत शक्तियाँ हैं उसे किसी भी जगह पर किसी भी काम को करने में, कोई कठिनाई नहीं होती। वह कठिन रास्तों में भी सुगम रास्ता निकाल लेता है।

एक बार की बात है महात्मा रामतीर्थ अमेरिका के दौरे पर गये वहाँ पर उन्हें एक व्यक्ति मिला उनके पास कोई भी समान न देखकर वह बड़ा आश्चर्य चकित हुआ और उसने स्वामी रामतीर्थ से प्रश्न कर दिया - “तुम्हारा समान कहा है ?”

स्वामी रामतीर्थ - “मेरा समान जितना मेरे शरीर पर है ओर हाथ पर वही है।” तब उसकी जिज्ञासा थोड़ी और बढ़ी और उसने फिर पूछा - “तुम्हारे पैसे कहाँ हैं ?”

स्वामी रामतीर्थ - “कहीं नहीं”

तब उसने पूछा - “फिर आप भोजन की व्यवस्था कैसे करते हो ?”

स्वामी जी - (जबाब देते हुये)- “जब मैं प्यासा होता हूँ तो पानी लिये लोग खड़े होते हैं, जब मैं भूखा होता हूँ तो लोग रोटी के टुकड़े दे देते हैं।”

उसने फिर पूछा - “यहाँ पर आपका कोई मित्र है।”

स्वामी रामतीर्थ ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा - “आप हैं तो।” आगे चलकर वह व्यक्ति स्वामी रामतीर्थ का सबसे बड़ा भक्त शिष्य बना।

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि अगर इंसान जानता है कि वह क्या कर सकता है ? वह किस प्रकार से कर सकता है ? तब उसे बाहरी दुनिया में मददगार खोजने की जरूरत नहीं होती, मददगार खुद ब खुद उसके पास आ जाते हैं जिसे अपनी शान्ति और शौर्य पर यकीन है वह दुर्लभ जगह पर भी चमकता है।

हमेशा इंसान को उत्साहपूर्वक अपनी मंजिल की ओर बढ़ना चाहिये और ऐसा इंसान तभी कर पाता है जब उसे पता होता है कि हम कौन हैं ? क्या करने आये हैं ? क्या कर रहे हैं ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर वस्तुतः इंसान के अंदर ही मौजूद हैं पर इंसान का दृष्टिकोण सही न होने के कारण पूरी ज्ञान शक्ति अंदर ही छुपी रह जाती है जिससे वह प्रत्येक समस्या से लड़ने के लिये बाहरी दुनिया में सहयोगी ढूढ़ता है। जो कभी नहीं मिलते और मिलते भी हैं तो सिर्फ अपने स्वार्थ के लिये। परन्तु जब आप अपनी शक्ति के अनुरूप, पूरी क्षमता के साथ चलते हैं तो सहयोगी निःस्वार्थ भाव से आपके साथ चलते हैं। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपना दृष्टिकोण साफ रखते हुये पूरी दृढ़ता के साथ जागकर एक स्वस्थ मन एवं तन बनाना चाहिये।

अपने आप को पहचाने, कैसे ? :-

आखिर इंसान अपने आपको किस प्रकार पहचाने ? वह किस प्रकार जाने

कि उसके अंदर कौन सा गुण है ? वह कैसे जाने कि उसके पास किस प्रकार के काम को करने की शक्तियाँ हैं ? अपने आपको पहचानने के लिये मैं कुछ बातें आगे बताने जा रहा हूँ -

1. अपनी जिज्ञासा को न दबायें :-

प्रत्येक मनुष्य के मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न होती है उसे बार बार ऐसा लगता है कि मैं फला काम को करूँ, मैं फला काम को आसानी से, अच्छी प्रकार से कर सकता हूँ। अगर आपके मन में भी कोई ऐसी भावना या जिज्ञासा आये तो उसे दबाये नहीं, उसे सामने लाने की कोशिश करें। क्योंकि अगर इंसान अपनी जिज्ञासा को, इच्छा को दबाता है तो उसकी वह जिज्ञासा उतनी ही प्रबल होकर सामने आने की कोशिश करती है, जिसके कारण इंसान अंदर ही अंदर संकुचित होने लगता है, परेशान होने लगता है परिणामस्वरूप उसका स्वभाव चिड़चिड़ा और क्रोधी हो जाता है और इन सबका परिणाम एक ही होता है 'असफलता'।

इंसान के मन में जिज्ञासा तभी उत्पन्न होती है जब उसके अन्दर विद्यमान शक्तियाँ उसके चेतन मन को तरंगे भेजती हैं, और यही तरंगे इंसान के मन से बार बार एक जिज्ञासा के रूप में उभरकर सामने आने की कोशिश करती हैं और इंसान एक निश्चित कार्य, वस्तु की ओर आकर्षित होता है।

“क्रोध आलस्य चिड़चिड़ापन जैसी व्याधियों से इंसान तभी पीड़ित होता है, जब उसका उसकी जिज्ञासा के अनुरूप कोई कार्य न हो।”

जो व्यक्ति पीछे है वह सिर्फ इसलिये क्योंकि उन्होंने अपनी जिज्ञासा को किसी कारण बस दबा दिया जबकि जो व्यक्ति आगे है उन्होंने अपनी जिज्ञासा को खोजा और उसे निखारकर उसके लिये प्रयास किया।

एक व्यक्ति था उसके मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि वह अपने कमरे में बैठे बैठे दूसरे कमरे में बैठे अपने बच्चों से बात कर लिया करें उसने इस जिज्ञासा के बारे में अपने मित्रों से बात की परन्तु उसके मित्रों ने उसकी इस जिज्ञासा को मजाक बना दिया। उसे भी अपने मित्रों की बात सुनकर मजाक लगने लगा और अपनी इस

जिज्ञासा को दबाने की कोशिश करने लगा परन्तु वह जितना अपनी जिज्ञासा को दबाता वह उतनी ही प्रबल होकर सामने आने लगी। परिणामस्वरूप वह परेशान रहने लगा, उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। एक दिन उसकी पत्नी ने उसके बदले हुये स्वभाव के बारे में पूछा - 'मुझे लगता है आपके दिमाग में कोई बड़ी उलझन है।' उस व्यक्ति ने अपनी जिज्ञासा के बारे में बताया तब पत्नी ने कहा - 'ऐसा हो सकता है और आपमें इस काम को करने की पूरी क्षमता भी है, बस आज से कोशिश करनी शुरू कर दीजिये।' उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया और आगे चलकर ग्राहम बेल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य यह है 'कि किसी भी व्यक्ति को अपनी जिज्ञासा का दमन नहीं करना चाहिये क्योंकि उसी जिज्ञासा के रूप में ही उसके आंतरिक शरीर में छुपी शक्तियाँ बाहर आती हैं।'

2. कदम रोके नहीं हमेशा आगे बढ़ायें :-

'लगातार प्रयास करते रहने से इंसान के अंदर मौजूद गुण सामने आ जाता है।'

'जिस प्रकार हीरे को तरासने के बाद ही उसमें चमक आती है उसी प्रकार इंसान में भी लगातार मुसीबतों से लड़ते-लड़ते ही निपुणता आती है और उसके असली गुण सामने आते हैं।'

एक कहावत है कि अभ्यास करते करते एक मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान हो जाता है, पत्थर पर बार बार रस्सी की रगड़ से निशान बन जाता है, फिर लगातार संघर्ष करने से इंसान के गुण प्रकट कैसे नहीं हो सकते ? हो सकते हैं और होते भी हैं परन्तु शर्त यही है कि आप बार बार मुसीबतों से टकराये और अपने कदमों को रोकने के बजाय उन्हें आगे बढ़ाये आप के अंदर मौजूद गुण अपने आप सामने आने लगेंगे।

एक लड़का है जिसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ जब मैं उससे पाँच वर्ष पहले मिला था तो उसे देखकर ऐसा लगता था कि यह लड़का इस दुनिया को कैसे फेंक करेगा ? बहुत ही शर्मिला प्रवृत्ति का था, उससे अगर कोई बात करने लगता था तो वह भाग जाता था, उसके इस व्यवहार से उसके माता पिता दुखी रहते थे। एक

दिन उसकी मां ने यह निश्चय किया कि मैं इसको बदल कर के रहूंगी और उसकी माँ धीरे धीरे उसे लोगो से मिलवाने लगी और एक दिन मंच पर ले जाकर खड़ा कर दिया। वह लड़का उस दिन तो उस मंच से सिर्फ चार वाक्य ही बोल पाया परन्तु जो बोला वास्तव में सराहनीय था। वही से उसकी जिंदगी में बदलाव आ गया आखिरकार बार-बार अपने अंदर मौजूद डर से लड़ते लड़ते एक ख्याति प्राप्त वक्ता बन गया। और आज महीने में लगभग दस से पंद्रह सेमिनार देता है और ऐसा सेमिनार देता है कि सुबह से शाम तक लोगो को बैठने के लिये मजबूर कर देता है आज वह ना सिर्फ वक्ता है बल्कि ख्याति प्राप्त कवि भी है।

कहने का तात्पर्य यह है, जहाँसे आपको डर लगना शुरू हो जाये वहाँ अपने कदम रोकने के बजाय और तेज कर दीजिये क्योंकि डर उत्पन्न होने के बाद ही आपके गुणों के आगवन का संकेत होता है। एक बात तो बिल्कुल तय है जितने महापुरुष हुये है उन सभी ने अपने गुणों को तभी पहचान पाये जब उनने संघर्ष किया, ठोकर खायी और बिकट परिस्थितियों में भी अपने कदमों को रोकने के बजाय हमेशा आगे बढ़ाया।

“ निरंतर कर्म करते हुये भी हो सकता है आपके गुण उजागर होने में कुछ बिलम्ब हो जाय परन्तु आपको समझ लेना चाहिये कि कर्मठता के अभाव में उसके प्रकट होने की कोई संभावना ही नहीं होती।”

—अज्ञात

3. महसूस करे आपको क्या अच्छा लगता है :-

जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है कि इंसान किसी काम या फिर किसी चीज के प्रति अपने आप आकर्षित होता है उसे ऐसा लगता है कि वह उस काम को बेहतर तरीके से कर सकता है वास्तव में उस समय उस व्यक्ति का गुण बाहर आने की कोशिश करता है परन्तु अज्ञानता बस या फिर किसी अन्य कारणवश इंसान उस काम को नजरअंदाज कर देता है परिणामस्वरूप उसका गुण उसके अंदर ही दफन हो कर रह जाता है और फिर कभी उभरकर सामने नहीं आता।

एक बार मैं इस विषय पर अपने दोस्तो से चर्चा कर रहा था मेरे एक दोस्त ने कहा – “जरूरी नहीं कि जो काम हमें अच्छा लगे उस काम के अनुरूप हमारे पास गुण हो ही और हम सफल हो ही जाय।”

मैंने कहा – “हां तुमने सही कहा, जरूरी नहीं है कि जो काम हमें अच्छा लगता है उस काम में सफलता के अनुरूप हमारे अंदर गुण हो ही, परन्तु यह निश्चित है कि अगर हम अपने पसंदीदा काम को पूरे समर्पण भाव से करते है तो उस काम को पूरा करने के दर्मियान कुछ ऐसे गुण जरूर प्रकट हो जाते है जो हमें महत्वपूर्ण व्यक्ति बना देते है।”

एक लड़का था उसके परिजन चाहते थे वह पढ़ लिखकर एक आफीसर बने। मगर उसे दीन दुखियों की सेवा करने में अच्छा लगता था, वह लाखों करुणामयी जनता के आँसुओ को अपनी आँखों में रखना चाहता था अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये वह सेवादल में काम करना शुरू कर दिया और पूरी क्षमता के साथ दीन हीन लोगो की सेवा में भी लग गया परन्तु उसने अपनी पढ़ाई में कभी आंच नहीं आने दी क्योंकि वह जानता था कि अगर उसकी पढ़ाई प्रभावित हुई तो शायद वह अपना पसंदीदा कार्य कभी नहीं कर पायेगा। वह लड़का अपने पसंदीदा कार्य के लिये दुगनी मेहनत करता था और ऐसा करते करते कमजोर और नाजुक कंधो वाला वह लड़का एक दिन अपने इन्ही कमजोर कंधो पर पूरे भारतवर्ष का भार लेकर चलने लगा, वह लड़का और कोई नहीं बल्कि भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी थे। वह हमेशा कहते थे – “कम बोलो काम ज्यादा करो जो काम खुद के मन को अच्छा लगे उसे जरूर करों।”

लाल बहादुर शास्त्री से एक बार पत्रकारों ने पूछा – “आप बहुत कम बोल पाते है फिर भी इतने बेहतर ढंग से देश चला रहे है इसका क्या कारण है ?”

शास्त्री जी ने (मुस्कुराते हुये) कहा – “ताजमहल की सुन्दरता का बखान पूरी दुनिया करती है परन्तु उसके नींव की चर्चा कोई नहीं करता, जिस पर इतनी आश्चर्य जनक इमारत बनी है, नींव के बारे में सिर्फ ताजमहल जानता है क्योंकि

वह उसी नींव के दम पर खड़ा है और अपनी खूबसूरती से सारी दुनिया को रिझा रहा है। बस कुछ ऐसा मेरे साथ भी है मेरे अंदर मौजूद गुण और शक्तियाँ नींव है और मेरा काम ताजमहल है।”

मैं कुछ ऐसे व्यक्तियों को जानता हूँ जो अपने वर्तमान काम से खुश नहीं है वो या तो किसी दबाव में उस काम को कर रहे है या फिर मजबूरी में। मैं ऐसे लोगो से एक ही बात कहूँगा अगर आप किसी दबाव या मजबूरी में कोई काम कर रहे है और अपने पसंदीदा कार्य को नजरअंदाज कर रहे है तो फिर आप अपनी जिंदगी से खिलवाड करने के अलावा कुछ नहीं कर रहे है क्योंकि आप इस प्रकार कभी खुश नहीं रह पायेंगे और न ही अपनी अलग पहचान बना पायेंगे।

“ जो आपको अच्छा लगे उसे कठिन परिश्रम के साथ प्राप्त करें ”

4. महसूस करे आपके किस काम या शैली की अन्य व्यक्ति तारीफ करते है :-

प्रत्येक व्यक्ति को अनुभव करते रहना चाहिये कि उसके आसपास के व्यक्ति उसके किस गुण की, किस शैली की, और किस काम की, तारीफ खुले दिल से करते है उसका कौन सा काम सराहनीय रहता है क्योंकि यह अपने गुणों के बारे में जानने का सबसे बेहतर तरीका होता है।

जो व्यक्ति इस बात को अनुभव कर लेता है वास्तव में वह अपने गुणों को पहचान जाता है। एक बात तो बिल्कुल तय है सामने वाला व्यक्ति आपकी तारीफ पूरे मन से तभी करता है जब वह आपके काम को पूरी तरह से जाँच परख लेता है और अलोचना करने की गुंजाइश उसके पास नहीं बचती और उसका दिल अनायाश ही कह उठता है वाह कितना गजब का आदमी है मैं तो इसके इस शैली का दिवाना हो गया। और आकर आपसे कहता है आपने कमाल कर दिया।

जब अन्य लोग आपके किसी काम की तारीफ करना शुरू कर दे तो आप समझ जाइये, यही काम करने का तरीका, या शैली आपकी असली ताकत है, बस उस ताकत को निखारना शुरू कर दीजिये आपको खुद व खुद कामयाबी मिलना

शुरू हो जायेगी और आप अपने क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हो जायेंगे।

लंदन का एक किशोर किसी स्टोर में क्लर्क था। उसे सुबह पांच बजे उठना पड़ता था, स्टोर में झाड़ू लगानी पड़ती थी और वह हर दिन चौदह घंटे बुरी तरह काम करता था। लेकिन दो साल तक इस बोरियत भरे काम को करते करते वह उकता गया था। एक दिन वह सुबह उठा और बिना नाश्ता किये ही पंद्रह मील पैदल चलकर अपनी मां से मिलने गया जो हाउसकीपर का काम करती थी। वह बेहद दुखी था। उसने मां को अपना दुखड़ा सुनाया। और रोते हुये उसने कसम खाई कि अगर उसे स्टोर में कुछ समय और काम करना पड़ा तो वह आत्महत्या कर लेगा। फिर उसने अपने पुराने स्कूल टीचर को एक लंबा और दुखद पत्र लिखा। उसके पुरानी स्कूल टीचर ने जब पत्र पढ़ा तो उसके लिखने की शैली एवं भाव टीचर के दिल को छू गये। उसके पुरानी टीचर ने जबाब में उसकी तारीफ करते हुये कहा कि “वह सचमुच बहुत बुद्धिमान है और बेहतर जिंदगी का हकदार है।” उन्होंने उसे स्कूल टीचर का काम देने का प्रस्ताव रखा। साथ ही कहा उसके पास लेखन की जबरदस्त प्रतिभा है वह उसे आगे बढ़ाये।

इस प्रशंसा ने उस बच्चे पर जादू सा असर किया और उसका भविष्य बदल दिया बाद में इसी किशोर ने ढेरो बेस्ट सेलिंग पुस्तकें लिखी और अपनी कलम के दम पर लाखो करोड़ो डालर कमाएँ। वह किशोर अन्य कोई नहीं था बल्कि वह एच.जी. वेल्स थे।

समकालीन मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने प्रयोगो से यह साबित किया है कि प्रशंसा लोगो को और अच्छी प्रकार काम करने की प्रेरणा देती है इससे इंसान अपने गुणों के बारे में जानने का अवसर मिलता है लेकिन यह तभी संभव है जब इंसान अपने उस गुण के प्रति गंभीर हो और उसको निखारने की हर संभव कोशिश करें। क्योंकि हीरा अपने अंदर बहुमूल्य गुण रखते हुये भी तब तक पत्थर के समान ही होता है जब तक उसे तरासा नहीं जाता है। तरासने के बाद ही उसकी कीमत बढ़ती है।

“गुणों को पहचान लेना ही काफी नहीं होता बल्कि उनको दुनिया के सामने

लाने से इंसान महत्वपूर्ण बनता है।”

“ दुनिया में यह मायने नहीं रखता है ‘आप कौन हो?’ कहां से आये हौ? आप क्या कर सकते है? आपकी सामर्थ्य क्या है? बल्कि मायने ये रखता है आपने किया क्या है?”

—‘अप्राह विनप्रे’

5. आँखे बंद करिये और सोचिये मैं कौन हूँ? :-

एक कहावत है ‘जब कुछ समझ में न आये तो अपनी आँखे बंद करो और जो दिल कहे उसे मान लो उसके बाद अपने आराध्य का स्मरण कर कार्य को प्रारंभ कर दो।’ इस बात से मैं पूर्णतः सहमत हूँ वास्तव में इंसान को जब कोई रास्ता समझ में न आये तो ऐसा ही करना चाहिये अब जो बात मैं कहने जा रहा हूँ पिछले चारो तरीकों से अलग है। इस दुनिया में ऐसे कई लोग है जिनके पास कोई रास्ता नहीं बचता, इस दुनिया का कोई भी काम मेरे बस का नहीं है ऐसा सोचने को मजबूर हो जाते है। ऐसे लोगो को मेरी सलाह है आप अपनी आँखे बंद करिये और सोचिये मैं कौन हूँ? मुझे ईश्वर ने पच्चासी हजार योनियों के बाद इस संसार में क्यों भेजा है, इस दुबले पतले नाजुक शरीर में आंधी, तूफान, भारी भरकम, कट्टर जानवरो से लड़ने की क्षमता कहाँ से आती है, इस दुनिया की प्रत्येक चीज को बनाने बिगाड़ने की क्षमता हमारे ही समुदाय में क्यों है। और जब ईश्वर ने हमारे मनुष्य समुदाय को इतनी बड़ी क्षमता देकर भेजा है तो फिर मैं भी तो उसी समुदाय का एक जीव हूँ, मेरे अंदर इतनी सारी क्षमता कैसे नहीं हो सकती? जो कार्य हमारे समुदाय के अन्य व्यक्ति कर रहे हैं वह काम मैं कैसे नहीं कर सकता?

एक बात हमेशा ध्यान रखिये दुनिया का कोई भी काम भले ही कितना बड़ा हो या आश्चर्यजनक हो हमारे और आप जैसे शारीरिक बनावट एवं क्षमता वाले व्यक्तियों ने ही पूरा किया और भविष्य में भी हम जैसे लोग ही पूरा करेंगे। फिर आप क्यों निराश होते है आप भी इसी प्रकार के मनुष्यों के वंशज है, आपमें भी वही क्षमता और शक्ति है। बस जरूरत है अपनी आत्मा की इन शक्तियों को पहचानने

की और स्वयं में ऊँचा उठने की आकांक्षा पैदा करने की। एक विचारक ने लिखा है—

“ विराट वृक्ष की शक्ति छोटे से बीज में छुपी रहती है। यही बीज खेत में उपयोगी खाद पानी प्राप्त कर बड़े वृक्ष के रूप में प्रस्फुटित होता है इसी प्रकार मनुष्य के अंदर भी समस्त संभावनायें एवं शक्तियाँ बीज रूप में छुपी हुई है जिसका विवेक रूपी जल से सिंचित कर तथा श्रेष्ठ विचारों की उर्वरक खाद से जागृत किया जा सकता है।”

चौथा कदम लक्ष्य निर्धारित करें

“ हमें जिंदगी में सदैव ऐसा लक्ष्य तय करना चाहिये जो हमारी पहुँच से दूर हो। इससे हमारे सामने जीवित रहने का मकसद हरदम बना रहेगा।”

— ‘टेड टर्नर-सी.एन.एन. संस्थापक’

लक्ष्य क्या है ? लक्ष्य का इंसान की जिंदगी में क्या महत्व है ? लक्ष्य कैसा होना चाहिये ? इन सबका मैं विस्तार पूर्वक वर्णन करूँगा। मगर इससे पहले मैं टेडटर्नर के कहे हुये वाक्य का आशय समझाना चाहता हूँ। टेड टर्नर ने जो बात कही है उसका बहुत ही आगूढ़ अर्थ है उनका इशारा इस बात की ओर है कि जिंदगी में प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार का लक्ष्य बनाना चाहिये जो उसके मन मस्तिष्क में इस तरह समाहित हो जाये कि उसके लक्ष्य के सिवाय उसके मन मस्तिष्क में दूसरा कोई ख्याल आये ही न। इस प्रकार की मन स्थिति उस व्यक्ति को प्रत्येक अन्य चीज भुलाकर सिर्फ उसके लक्ष्य बारे में सोचने एवं उसे किसी कीमत में पूरा करने के लिए विवश कर देगी। परिणाम स्वरूप उस व्यक्ति को मनुष्य जीवन के मायने समझ में आ जायेंगे। उस व्यक्ति को इस संसार में जीवित क्यों रहना है ? उसका, उसको मकसद मिल जायेगा और पूरी दुनिया उसे खूबसूरत लगने लगेगी। लक्ष्य पहुँच से दूर होने का मतलब व्यक्ति को सतत् काम करते रहना पड़े जिससे उसके पूरे जीवन में मकसद बना रहे।

एक लड़का अपनी जिंदगी से निराश था, अपने परिजनों से दुःखी था, उसे ऐसा महसूस हो रहा था जिंदगी में कुछ नहीं रखा, इस संसार में वह जीवित रहने के लायक नहीं है। वह अपने आप में एक बोझ है। एक दिन उसने निर्णय लिया मैं अब इस दुनिया में नहीं रहूँगा। वह लड़का अपने इस निर्णय को अंजाम देने के लिये एक बांध के किनारे गया और आत्महत्या के लिये उस बांध में छलांग लगा दिया, उसे ऐसा करते हुये एक पादरी ने देख लिया और पादरी उस लड़के को बचाने के लिये

उस बांध में कूद गये, पादरी ने उस लड़के को बचा लिया। लड़के ने पादरी से कहा – आपने मुझे क्यों बचाया ? मुझ अभागे को मर जाने दिया होता। पादरी ने (सहजता पूर्वक) कहा – “बेटा ! तेरी जिंदगी बचाने लायक थी, तुझमे असीम प्रतिभा है जो असाधारण व्यक्तियों में होती है। बस तेरे पास मकसद नहीं है, अब तुझे सिद्ध करना है तू कायर नहीं है, तू भी वह काम कर सकता है जो अन्य व्यक्ति करते हैं। उस लड़के ने पूछा – “मेरा मकसद क्या होना चाहिये ?”

पादरी – (मुस्कराते हुये) – “ बेटा ! अपनी अन्तरात्मा में देख तेरा मकसद तुझे मिल जायेगा और जो मकसद तुझे मिले उसे अपना मित्र समझना। फिर अपने उस मित्र के लिये जीवित रहना। उस लड़के को सारी बात समझ में आ गयी और आगे चलकर वह लड़का महान नाटककार शेक्सपियर बना। जिसका तोड़ दुनिया में आज तक पैदा नहीं हुआ।

निष्कर्ष – जिसके पास कोई मकसद नहीं होता वह असीम प्रतिभा रखते हुये भी लाचार बना रहता है।

- ❖ मकसद किसी अन्य व्यक्ति द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता, खुद व खुद निर्धारित किया जाता है।
- ❖ मकसद युक्त व्यक्ति हमेशा सुखी रहता है कोई भी दुःख उसे छू नहीं पाता।
- ❖ आत्महत्या वह व्यक्ति नहीं करता जो दुखी है या असफल है बल्कि आत्महत्या वह व्यक्ति करता है जिसके पास जीवन जीने का कोई मकसद नहीं होता।
- ❖ मकसद इंसान की सफलता की पहली और अंतिम सीढ़ी होती है।

लक्ष्य क्या है ? :-

“ लक्ष्य इंसान की आत्मा के द्वारा अनुभूत की गयी एक प्रकार की अनुभूति है जिसे छुआ जा सकता है, देखा जा सकता है और प्राप्त भी किया जा सकता है।”

दूसरे शब्दों में – ‘लक्ष्य एक प्रकार की चाहत है जो व्यक्ति विशेष के मन में उत्पन्न होकर उसके दिनचर्या में शामिल हो जाती है और उसे आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करती है।

इंसान की चाहत कुछ भी हो सकती है जो इंसान की रूचि एवं उसके सपनों पर निर्भर करती है। किसी इंसान के मन पर जब एक चाहत उत्पन्न हो जाती है तब उसका ध्यान अनायास ही उस चाहत को प्राप्त करने के लिये खिंचने लगता है और उसकी वही चाहत ही उसका लक्ष्य बन जाती है। परन्तु कभी कभी इंसान अपनी उस चाहत को अपने मन में ही दफन कर देता है। परिणामस्वरूप जिंदगी पर्यन्त लक्ष्य विहीन रह कर इधर उधर भटकता रहता है, ताउम्र एक चौराहे पर खड़ा वहाँ से गुजरने वाली रास्तों को देखता रहता है, मगर निर्णय नहीं ले पाता कि वह किस रास्ते में चले और चले भी तो क्यों चले ? यहाँ तक कि कभी कभी वह किसी रास्ते में चलना प्रारंभ भी कर देता है मगर अफसोस उसके पास एक विशुद्ध लक्ष्य न होने के कारण भटक जाता है और थक हार कर पुनः उसी चौराहे पर आकर खड़ा हो जाता है जहाँ से उसने चलना प्रारंभ किया था।

“ कई लोग केवल इसलिये हारते हैं क्योंकि उन्हें नहीं मालूम होता है कि उन्हें जाना कहाँ है। ”

—नार्मन बिसेंट पील

मैं चाहत के बारे में बात कर रहा था चाहत जरूरी नहीं इंसान की अच्छी ही हो। कभी-कभी बुरी चाहत भी इंसान के मन में उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में इंसान को अपनी चाहत की समीक्षा कर ही लक्ष्य में परिणित करना चाहिये। अच्छी चाहत और बुरी चाहत में अंतर क्या है ? एक सर्वे के आधार पर जो बाते सामने आयी मैं उन्ही बातों के आधार पर अच्छी चाहत और बुरी चाहत में अंतर बताने जा रहा हूँ जो इस प्रकार है -

अच्छी चाहते -

- ❖ मैं किसी के लिये कुछ करूँ।
- ❖ दीन-हीन व्यक्तियों की मदद करूँ।
- ❖ मैं दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति बनूँ मगर अपनी मेहनत तथा ईमानदारी से।
- ❖ लोग मुझे देखकर कहें कितना अच्छा आदमी है।

- ❖ मैं भी प्रतिष्ठापूर्ण पद में जाऊँ।
- ❖ मुझे, लोग मरने के बाद भी याद करें और बार बार भगवान को कोसते रहें।
- ❖ मैं इस लायक बनूँ कि दूसरों की मदद करता रहूँ और बदले में उनसे कुछ ना माँगू।
- ❖ मेरा काम और आचरण ऐसा हो जो लोगो का पथ प्रदर्शक बनें।
- ❖ जिस रास्ते से जाऊँ उस रास्ते को दूसरों के चलने लायक बना दूँ जिससे जो भी उस रास्ते से गुजरे उसे किसी प्रकार की परेशानी न हो।
- ❖ मेरी पहचान एक मसीहा के रूप में हो।
- ❖ मैं समाज का नेतृत्व करूँ, लोगो का मार्गदर्शक बनूँ।
- ❖ लोग मुझे सुने उनके मुंह से अनायास ही निकले एक बार फिर।
- ❖ हर आदमी मुझसे मिलने की चाहत रखे।
- ❖ मैं भगवान राम जैसा मर्यादा पुरुष, सरमन जैसा पुत्र या सीता जैसी पुत्री बनूँ
- ❖ मेरे पास इस संसार की हर अच्छी चीज हो।
- ❖ लोग मेरा सम्मान करें, मेरे पास ऐसे गुण हो जिससे न चाहते हुये भी लोग झुक जायें।
- ❖ मेरे पास इतनी दौलत और प्रेम हो कि दुनिया को बांटने के बाद भी खतम न हो।
- ❖ मैं समाज की प्रथम पंक्ति में बैठूँ और अन्य लोगो को बैठाने लायक बनूँ।
- ❖ दुनिया की सर्वश्रेष्ठ जगह का सर्वश्रेष्ठ इंसान बनूँ मेरे समान दूसरा कोई न हो।
- ❖ मैं महानायक बनूँ मेरी चर्चा प्रत्येक जगह हो, मेरे माता पिता को लोग कहे कितनी महान संतान को जन्म दिया है।
- ❖ सपने में भी मेरे कारण किसी को दुख न हो। अर्थात मैं किसी का भी मन, वचन कर्म से नुकसान न करूँ।

बुरी चाहते :-

- ❖ दुनिया का शहंशाह बनूँ लोग मेरे डर से काँपे मेरा नाम सुनते ही उनके मन में

खौप उत्पन्न हो जाये ।

- ❖ मैं अपने सम्प्रदाय और कौम के लोगो के लिये ही कुछ करूँ ।
- ❖ मेरे पास इस संसार की सारी दौलत हो अन्य लोग मेरे सामने गिड़गिड़ाते हुये याचना करें और मेरे दास बनकर रहे । चाहे मुझे उस दौलत को पाने के लिये लोगो के ऊपर पैर रखकर आगे जाना पड़े ।
- ❖ दुनिया के सारे स्त्री पुरुष मेरे सेवक हो । स्त्रियां मेरी भोग्या हो ।
- ❖ मैं कुछ न करूँ परन्तु मेरे पास सब कुछ हो, लोग सिर्फ मुझे सुने ।
- ❖ दूसरो के पास इतना सब कुछ कैसे है ? क्यों हैं ? इसे मैं बर्बाद कर दूँगा ।
- ❖ बस अपना काम निकल जाय, भले ही अन्य लोग परेशान हो इससे मुझे कोई लेना देना नहीं है ।
- ❖ मैं दुखी हूँ कोई बात नहीं परन्तु सामने वाला व्यक्ति सुखी क्यों है ? ऐसा क्या किया जाय कि सामने वाला व्यक्ति मेरे जैसा हो जाय ?
- ❖ कहीं मेरे कारण सामने वाला व्यक्ति सफल न हो जाय । मैं इसका साथ नहीं दूँगा, चाहे मुझे कितना भी नुकसान उठाना पड़े ।
- ❖ मेरे लिये सारे कानून नियम शिथिल हो जाये मैं जैसा चाहूँ वैसा करूँ, कोई मेरा विरोध न करें ।
- ❖ सारा संसार मेरे अनुसार चले कोई भी पत्ता मेरे इजाजत के बिना न हिले ।
- ❖ मेरी प्रत्येक जगह पूजा हो ।
- ❖ काश मेरे पास एक जादुई छडी हो और रातों रात मेरे पास सब कुछ हो ।
- ❖ मैं लोगो का अपमान करता रहूँ मगर अन्य लोग मेरा सम्मान करें ।
- ❖ मेरे सम्प्रदाय और संस्कृति के अलावा दुनिया में अन्य कोई समुदाय या संस्कृति न रहे ।
- ❖ कोई मेरे बराबरी में न बैठे प्रत्येक काम से पहले लोग मुझे पूँछे । मैं जैसा कहूँ लोग वैसा ही करें ।
- ❖ उपरोक्त उपर लिखी बातों में से कोई भी चाहत इंसान की हो सकती है या

फिर इससे अलग भी हो सकती है । परन्तु इंसान को अपना लक्ष्य ऐसा बनाना चाहिये जिसमें बुरी चाहतो का समावेश न हो, जो मानवता का दमन करने वाला न हो बल्कि मानवता को सदा जीवित रखने वाला हो ।

लक्ष्य का महत्व :-

इस संसार में प्रत्येक जीव का अपना-अपना लक्ष्य होता है । शेर का लक्ष्य शिकार करना, हिरण का लक्ष्य हिंसक जीवों से बचना इसी प्रकार दुनिया के प्रत्येक प्राणी का अपना एक लक्ष्य होता है । प्रत्येक प्राणी अपना एक लक्ष्य निर्धारित कर ही अपनी रहने वाली जगह को छोड़कर बाहर निकलता है उसे इस बात का फर्क नहीं पड़ता है कि अब वह कहां रहेगा ? उसे उसका लक्ष्य किस प्रकार मिलेगा ? कभी कभी तो अपने लक्ष्य की तलाश में इतनी दूर निकल जाता है कि शायद दूसरी बार अपने पहले वाले निवास में पहुंच ही नहीं पाता । इस संसार में सभी प्राणियों का लक्ष्य सिर्फ भोजन प्राप्त करना होता है । जिसको पूरा करने के लिये दिन रात घूमते रहते हैं, न कभी थकते और न ही आराम करते जब तक की उनका लक्ष्य पूरा न हो जाये । एक बात और उनको अपने समुदाय के प्राणियों से नफरत नहीं होती एक साथ रहते हैं एक झुंड में रहते हैं और न ही कभी प्रकृति के प्रकोप से हारते हैं, वर्षा हो, गर्मी हो या फिर तूफान कभी नहीं घबराते, वह उसी मौसम के अनुसार अपने आप को ढाल लेते हैं । इसके विपरीत अगर मनुष्य के बारे में कहा जाये तो उसके पास सब कुछ होते हुये भी मायूसी होती है हार होती है एक मन में घबराहट होती है क्यों ? क्योंकि मनुष्य का लक्ष्य निर्धारित नहीं होता है । परन्तु जिसका लक्ष्य निर्धारित होता है उसके पास न ही घबराहट होती न ही मायूसी हमेशा प्रसन्न रहता है । अब यहां पर प्रश्न उठता है कि अन्य प्राणियों की तरह मनुष्य भी तो अपनी जीविका चलाता है, मैं इस प्रश्न से सहमत भी हूँ फिर भी बताना चाहूँगा, जानवर और इंसान में एक ही फर्क होता है वह है, एक सोच का ।”

जानवरों की सोच सिर्फ भोजन पानी तक होती है परन्तु इंसान सभी प्राणियों का अग्रज है, सोचने समझने की शक्ति रखता है, उससे अन्य लोगो की भी अपेक्षाएं

होती है जिम्मेदारियों का एहसास भी इंसान ही कर सकता है इसलिये इंसान की सोच भी उँची होनी चाहिये और एक विशुद्ध लक्ष्य भी ।

एक बार कुछ लड़के आपस में बहस कर रहे थे, बहस का मुद्दा था, आज के युग में सफल नहीं हुआ जा सकता । जो लड़का इस पक्ष में था आज के युग में सफल नहीं हुआ जा सकता मैंने उससे पूछा - “ आज के युग में सफल क्यों नहीं हुआ जा सकता ? ”

उसने कहा - “ धन दौलत और पहुँच की जरूरत होती है । ”

मैंने वही के कुछ लोगो के नाम लिये और कहा - “ यह लोग पहले क्या थे ओर आज क्या है ? ”

उसने पूछा - “ मैं ऐसे लोगो को सफल नहीं मानता । सफल वह कहलाते हैं जिन्हे सारी दुनिया जानती है । ”

मैंने कहा - “ लेकिन इन्हे तो इनकी दुनिया जानती भी है और पहचानती भी है यहां तक की तुम और हम भी जानते है । ”

कुछ देर के लिये वह शांत हो गया मैंने फिर पूछा - “ तुमने आज तक वैसे क्या किया है ? और नहीं किया तो मेरे विचार से तुम्हे कुछ करना चाहिये । ”

वह बड़े रौब के साथ बोला - मैंने जिन्दगी के सारे ऐश कर लिये है और मेरे पिताजी के पास इतना कुछ है कि मुझे कुछ करने की जरूरत नहीं है ।

मैंने कहा - “ हां मैं देख रहा हूं तुम सारे ऐश कर रहे हो शर्ट की बटने टूटी हुई है और खाने का बिल कोई और दे रहा है । ”

उसने (तमतमाते हुये) कहा - “ आपके कहने का मलतब क्या है ? ”

मैंने कहा - “ तुममे और एक सफल व्यक्ति में बस यही अंतर है । तुम्हारी सोच में आम चीजे प्राप्त कर लेना ऐश है , जबकि सफल व्यक्ति की सोच में इन सबका कोई स्थान नहीं होता । माता पिता के पास धन दौलत हो या न हो उसको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता सिर्फ वह अपनी अलग पहचान चाहता है और इसी चाहत के दम पर सफल होता है । ”

यहाँ पर देखने लायक बात ये है कि उस लड़के को लक्ष्य के बारे में कुछ मालूम ही नहीं है, उसको लक्ष्य का महत्व ही नहीं पता, उसने कभी लक्ष्य के बारे में सोचा ही नहीं उसको पता ही नहीं कि सफलता क्या होती है ? वह सिर्फ इतना जानता है कि मेरे पास जो कुछ भी है पर्याप्त है मैं इसी के दम पर सारी जिन्दगी ऐश करता रहूँगा ।

वह लड़का लक्ष्य विहीन है, इसमें मैं उस लड़के की गलती कम ही मानता हूँ क्योंकि उसे आज तक बताया ही नहीं गया कि लक्ष्य क्या होता है ? उसे प्रत्येक चीज अभिवावको द्वारा या फिर आसपास के व्यक्तियों द्वारा आसानी से उपलब्ध करा दी गयी । उसे अकेले कभी चलने ही नहीं दिया गया, राह बताने वाले उसके साथ हमेशा उपलब्ध होते हैं ।

एक बात तो है कारण कुछ भी हो, लेकिन मेरे विचार से बीस पच्चीस वर्ष का लड़का कुछ न सोच पाये अपना लक्ष्य निर्धारित न कर पाये, यह बिल्कुल गलत है क्योंकि इंसान को कभी न कभी अकेला चलना ही पड़ता है, एक समय ऐसा भी आता है जब राह बताने वाले कोई नहीं होते हैं, उस समय खुद ही लक्ष्य निर्धारित करना पड़ता है, खुद ही निर्णय लेना पड़ता है ।

बिना लक्ष्य के एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है, अगर कोई घर से भी निकलता है तब भी उसके पास एक लक्ष्य होना चाहिये, नहीं तो वह गुम हो जायेगा क्योंकि बिना लक्ष्य के उसे कैसे पता चलेगा ? यदि उसे जाना कहाँ है ? , और जाना कैसे है ? वहां जाने का उद्देश्य क्या है ? बिना इन प्रश्नों के उत्तर के बगैर घर से निकलना असंभव है ।

सोचिये अगर खेल के मैदान से टार्गेट प्वाइंट को हटा दिया जाय तो खेल का अस्तित्व कैसा होगा ? दुनिया का प्रत्येक काम किसी न किसी लक्ष्य विशेष को ही ध्यान में रखकर किया जाता है । बांध बनाया जाता है, पुल बनाया जाता है, सड़क बनायी जाती है, नये-नये आविष्कार किये जाते हैं, उद्योग लगाये जाते हैं इन सबके पीछे एक लक्ष्य होता है । अगर लक्ष्य नहीं होगा तो फिर इन सभी कामों का

अस्तित्व कैसे होगा ?

लक्ष्य इंसान को महत्वपूर्ण बनाता है :-

जिस व्यक्ति के पास लक्ष्य होता है, उसे समाज की नजरे एक नये दृष्टिकोण से ही देखती है क्योंकि समाज की नजरों में एक आशा होती है कि सामने वाला व्यक्ति कभी भी कामयाब हो सकता है। आप इसी बात से देख लीजिये जब आप किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करते हैं तो लोगो का नजरिया आपके प्रति बहुत अच्छा होता है। लोग आपको इज्जत की निगाहों से देखते हैं परन्तु जब आप प्रतियोगी परीक्षा में असफल हो जाते हैं और तैयारी करना बंद कर देते हैं तो उन्ही समाज के व्यक्तियों का नजरिया परिवर्तित हो जाता है और लोग आपको नकारात्मक दृष्टि से देखने लगते हैं।

“इस दुनिया में लक्ष्य प्राप्त होना न होना अलग बात है लेकिन जिसके पास लक्ष्य नहीं होगा वह कोशिश करने से भी वंचित रह जायेगा और फिर एक उद्वेश्यहीन जिंदगी जीता है जिसमें मायूसी के अलावा कुछ नहीं होता है।” लक्ष्य इंसान को भटकने से बचाता है उसे सही मंजिल की ओर अग्रसर करता है और दुनिया का महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाता है। मेरे कहने का मतलब अगर एक व्यक्ति के पास एक विशुद्ध लक्ष्य होगा तो वह उसे प्राप्त करने की कोशिश करेगा और सतत् प्रयत्न करते हुये जब अपने लक्ष्य को हासिल कर लेगा तो एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हो जायेगा जो समाज की नजरों में एक व्यक्तित्वशील व्यक्ति के रूप में देखा जायेगा। दुनिया में जितने भी महापुरुष हुये हैं सबके पास एक लक्ष्य था। लक्ष्य को पूरा करने के दर्मियान मुसकिलें तो उनके पग-पग में आयी मगर उनने कभी अपने अंदर की आग बुझने नहीं दी उसी का परिणाम था कि लोगो ने उन्हे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में स्थान दिया। अन्य लोगो ने उन्हे महत्वपूर्ण तभी माना जब उनने हमेशा अपने आप को लोगो के सामने महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में पेश किया। लक्ष्य विहीन, सीधे-साधे रास्तों पर चलने वाले व्यक्ति को कोई महत्वपूर्ण नहीं मानता।

झुगी बस्ती से निकलकर अमीरों की सूची में पहुंचने वाले बेरी गोडी ने कहा

था - “अन्य लोग आपको महत्वपूर्ण तभी मानते हैं जब आप खुद को अपनी नजरों में महत्वपूर्ण मानते हैं वरना आप जैसे कई लोग पंक्ति बनाकर खड़े हैं।”

कुछ लोगो ने इस बात पर बेरी गोडी से पूछा - “इंसान महत्वपूर्ण कैसे बन सकता है ?”

बेरी गोडी ने कहा - “इंसान को उसका लक्ष्य एवं कर्म ही महत्वपूर्ण बनाता है।”

लक्ष्य व्यस्तता पैदा करता है :-

“व्यस्तता इंसान को अनेक प्रकार की उलझनों से बचा लेती है और इंसान का लक्ष्य ही इंसान को व्यस्त बनाता है।”

जब इंसान के पास लक्ष्य होता है तब उसके पास किसी प्रकार का समय अन्य गतिविधियों के लिये नहीं बचता परिणाम स्वरूप अन्य कई प्रकार की उलझनों से बचा रहता है और सिर्फ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है, उसे दुनिया की औचित्यहीन बातों से मतलब नहीं होता।

एक बात बिल्कुल तय है जब इंसान के पास एक विशुद्ध लक्ष्य होता है तो उसके पास अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ही समय होता है अर्थात उसका पल-पल का समय उसके लक्ष्य पर केन्द्रित रहता है और सांसारिक जीवन से तनाव मुक्त रहता है।

नन्द के समराज्य को हिलाकर रख देने वाले महान राजनीतिज्ञ चाणक्य ने लिखा है - “मैंने अपनी कसम और लक्ष्य को पूरा करने के लिये इतना समय गुजार दिया कि मुझे पता ही नहीं चला कि मैं उम्र के अंतिम पड़ाव में कब पहुंच गया। मैं इतना व्यस्त हो गया था कि मुझे सांसारिक दुनिया को देखने का मौका ही नहीं मिला।” आगे लिखते हुये चाणक्य ने फिर कहा - “अच्छा हुआ कि मैंने सांसारिक दुनिया नहीं देखी थी वरना इस दुनिया में इतना उलझ जाता कि मेरा वास्तविक लक्ष्य कमजोर हो जाता और एक भ्रष्ट सम्राज्य को मिटाने और एक महान सम्राज्य की स्थापना का मौका गवां देता।”

लक्ष्य एकाग्रता पैदा करता है :-

जब इंसान के पास एक लक्ष्य होता है और पल-पल सिर्फ वह अपने लक्ष्य के बारे में सोचता है अपने पूरे मन के साथ अपने उस लक्ष्य की ओर बढ़ता है तब उसके मस्तिष्क में एक प्रकार की एकाग्रता आने लगती है। जिस व्यक्ति के पास उसका लक्ष्य है वह दुनिया की किसी भी आकर्षक चीज के प्रति आकर्षित नहीं होता, उसके मन में विचलन नाम की कोई बात नहीं होती वह तो सिर्फ अपने धुन में काम करता रहता है अपने आपको अपने काम में इस तरह केन्द्रित कर लेता है कि सामने कुछ भी होता रहे। उसे फर्क नहीं पड़ता है। दुनिया में चित्रकारिता के जन्मदाता लियोनार्डो द-बिंसी एक बार एक चित्र बनाने की कोशिश कर रहे थे उन्हें उस चित्र को पूरे एक दिन में पूरा करने का लक्ष्य मिला था इसलिये उनका पूरा ध्यान उस चित्रकारिता में था। उस समय उनके दुकान के ठीक सामने से सम्राट की सवारी गुजरी जिसमें हजारों लोग थे। लोगो में इतना उदमाद था कि लोग नाच गा रहे थे और पूरा काफिला बिंसी साहब के सामने से निकल गया तभी वहाँ पर भगता हुआ एक व्यक्ति आया और पूछा - “बिंसी साहब यहाँ से सम्राट का काफिला निकला है वह किस दिशा में गया है ?”

बिंसी साहब चुप रहकर अपना काम करते रहे। वह आदमी (रुठकर बोला) “महोदय मैं आपसे ही बात कर रहा हूँ। क्या यहां से कोई काफिला निकला है ?”

बिंसी साहब - “महानुभाव ! मुझे क्षमा करे मैंने यहां से कोई काफिला निकलते हुये नहीं देखा।”

वह आदमी आगे बढ़ गया परन्तु कुछ देर पश्चात वापस आ कर फिर बोला - “बिंसी साहब ! आपको नहीं बताना था मत बताते परन्तु एक भटके हुये इंसान के साथ आपने जो मजाक किया यह अच्छी बात नहीं है।”

बिंसी साहब - “महाशय मुझे इस गलती के लिये क्षमा करें परन्तु वास्तविकता यही है कि मैंने अपने चित्र और चित्रकारिता के अलावा न कुछ देखा और न ही कुछ सुना क्योंकि मेरा पूरा ध्यान मेरे चित्र और उसे पूरा करने पर ही केन्द्रित था।” उस

व्यक्ति के सब कुछ समझ में आ गया और बिंसी जी के पद चिन्हों पर आगे चलकर एक महान चित्रकार बना।

लक्ष्य दूरगामी खुशियां पैदा करता है :-

मैं यह नहीं जानता कि आप जब अपने छोटे छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं तो आपको कैसी अनुभूति होती है ? मगर मैंने जो देखा है और जो अनुभव किया है जब कोई व्यक्ति अपना लक्ष्य हासिल कर लेता है तो उसकी खुशी देखने लायक होती है, उसके चेहरे को देखकर ऐसा लगता है मानो उसने दुनिया को फतह कर लिया हो। फैराडे के बारे में आप लोगो ने सुना होगा जब उन्होंने इलेक्ट्रो मैगनेटिक थ्योरी की खोज की थी तो वह इतने खुश हो गये कि जिस स्थिति में थे उसी स्थिति में अपने सहयोगी वैज्ञानिकों के पास यह कहते हुये दौड़ते-दौड़ते पहुंच गये। “मैंने खोज लिया मैं कामयाब हो गया।” जो उन्हें भागते हुये देखता वही हंसने लगता था। जब वह अपने सहयोगियों के पास पहुंचे तो उन्हें पता चला कि उनसे कपड़े ही नहीं पहन रखे। कहने का मतलब यह कि ‘इंसान जब अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है तब उसकी स्थिति अंधे को अचानक मिली रोशनी से कम नहीं होती।’

लक्ष्य कर्मशील बनाता है :-

जिसके पास एक लक्ष्य होता है वह सतत कर्म करता रहता है वह पूरी ईमानदारी के साथ प्रयत्न करता है, उसके पास जितनी क्षमता होती है पूरी क्षमता अपने कार्य में झोक देता है और आगे चलकर कर्त्तव्यनिष्ठ, कर्मवीर कर्मठ जैसे शब्दों से नवाजा जाता है।

जब बच्चा छोटा होता है तो माता पिता उसे लक्ष्य देते हैं बेटा अगर तुम कक्षा में प्रथम आओगे या फिर तुम्हारे इतने प्रतिशत आये तो तुम्हें फलां चीज दूंगा। परिणामस्वरूप बच्चा उस ईनाम को पाने के लिये अपने अभिभावकों द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करता है और इसके लिये वह जीतोड़ मेहनत करता है। इसी प्रकार उसे हमेशा नये लक्ष्य मिलते हैं और वह उन्हें प्राप्त करने की हरदम कोशिश करता है इस प्रकार से वह एक कर्मशील व्यक्ति बन जाता है और

एक कर्मशील व्यक्तित्व के नाम से जाना जाता है। कहा भी जाता है – “इंसान की पहचान उसके कर्मों से होती है उसके बात करने की कला और उपदेश करने से नहीं।” एक लड़का बहुत ज्यादा आलसी था। घर पर बैठे बैठे बहुत सारे सपने पूरा करना चाहता था परन्तु करता कुछ भी नहीं था, उसके माता पिता इस बात को लेकर बहुत परेशान थे, एक दिन उसके पिता ने अपने छोटे भाई से इसका जिक्र किया। छोटे भाई ने अर्थात् उसके अंकल ने उस लड़के से बात की और कहा – “अगर वह उसकी कंपनी में काम करने को तैयार हो जाता है और निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर लेता है तो मैं वादा करता हूँ कि उसे अपनी पूरी जिंदगी में कुछ नहीं करना पड़ेगा मैं पूरी जिंदगी मुफ्त में उसके सारे सपने पूरा करूँगा।” लड़का तैयार हो गया और अपने अंकल के साथ काम करना शुरू कर दिया और छः महीने में अपना निर्धारित लक्ष्य पूरा कर लिया। उसके अंकल ने खुश होकर उसे अपने पास बुलाया और कहा – “आज से तुम मुक्त हो, तुम्हारे सपनों की सारी चीजे बाहर खड़ी तुम्हारा इंतजार कर रही है।” लड़का चुपचाप खड़ा अपने अंकल की ओर देखता रहा। थोड़ी देर पश्चात उसके अंकल ने फिर कहा – “तुम्हारे पास दो रास्ते हैं एक रास्ता घर की ओर जाता है जहाँ पर मुफ्त में सब कुछ उपलब्ध है दूसरा रास्ता ऑफिस की केबिन की ओर जाता है जहाँ काम के साथ साथ दुनिया की सारी खुशियाँ हैं।” लड़का बिना कुछ बोले ऑफिस की केबिन की ओर चला गया। बाद में उसके सहकर्मियों ने पूछा – “उसने ऐसा क्यों किया ? जबकि उसके अंकल ने जिंदगी भर मुफ्त में सबकुछ उपलब्ध कराने का वादा किया था।” उस लड़के ने (मुस्कुराते हुये) कहा – “कल तक मैं कुछ नहीं करता था इसलिये मुझे जीवन के मूल्य का पता नहीं था और मेरा जीवन लक्ष्यविहीन था परन्तु जब मैंने किसी लक्ष्य के लिये काम किया तो मुझे जीवन का मूल्य समझ में आ गया और अब मैं बिना काम किये रह ही नहीं सकता।” आगे चलकर वही लड़का अमेरिकी उद्योग का सबसे सफलतम उद्योगपति बना। कहने का मतलब जब इंसान कोई काम करने लगता है तब वह काम उसकी आदत में शामिल हो जाता है और फिर बिना काम

किये उसे चैन नहीं मिलता उसे ऐसा महसूस होता है कि आज उसका कुछ गुम हो गया है।

लक्ष्य दूरदर्शी बनाता है :-

दूरदर्शी का मतलब आने वाले भविष्य के परिणामों के बारे में पहले से ही अनुमान लगा लेना। इस दुनिया में जितने भी महापुरुष हुये हैं अगर उनको देखा या पढ़ा जाय तो उन सभी के जीवन में कहीं न कहीं दूरदर्शिता दिखायी देती है, उनकी कार्यशैली वर्तमान के अनुसार कभी नहीं रही उनने जो भी कार्य किया भविष्य को ध्यान में रखकर किया। **‘एक सफल एवं कामयाब व्यक्ति के पास एक दूरदर्शिता रही है जो एक विशुद्ध लक्ष्य बनाकर ही प्राप्त की जा सकती।’**

एक बात जो मैंने अनुभव की है जिस व्यक्ति के पास लक्ष्य होता है, वह हमेशा दूर की सोचता है, उसकी सोच दुनिया के अन्य लोगो से हटकर होती है, वह तात्कालिक बधाओं और मुश्किलों के बारे में कभी नहीं सोचता और न ही देखता। धीरे-धीरे उसकी सोच इतनी बड़ी हो जाती है कि वह भविष्य में आने वाली प्रत्येक होनी अनहोनी एवं होने वाले लाभ व हानि को महसूस कर लेता है दुनिया के लगभग सभी कामयाब व्यक्तियों ने दूरदर्शिता को ध्यान में रखकर ही महान एवं कामयाब बने हैं उन्हीं में से चंद कामयाब व्यक्तियों को आगे मैं लिखने जा रहा हूँ जो अपने लक्ष्य एवं दूरदर्शिता के बल पर जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गये।

1. धीरूभाई अंबानी :-

धीरूभाई अंबानी भारत के ऐसे उद्योग पति थे जिनका नाम आते ही भारतीय उद्योग के लोगो के रोम खड़े हो जाते हैं। उन्होने वर्मा शेल पेट्रोल पंप पर नौकरी की परन्तु नौकरी उनका कभी मकसद नहीं रहा वह जानते थे, अगर अमीर बनना है तो नौकरी नहीं कारोबार करना चाहिये क्योंकि नौकरी से पेट पाला जा सकता है नाम , शोहरत, दौलत नहीं कमाया जा सकता।

जब भारत के लोग विदेशो में व्यापार करने में जुटे थे तब धीरूभाई ने भारत में ही व्यापार की संभावना को देखा उन्होने कारोबार करना प्रारंभ किया, कठिनाई

आयी दिक्कते आयी, लेकिन वह रूके नहीं, कहा भी जाता है जिनके सपने बड़े होते हैं, जो दूर की सोचते हैं, उनका उनकी वर्तमान मुसीबते कुछ नहीं बिगाड़ सकती। धीरुभाई अंबानी अपनी बुद्धि और दूरदर्शिता के दम पर एक ऐसी कंपनी शुरू की जो निजी क्षेत्र में भारत की सबसे बड़ी कंपनी बन चुकी है। जब उन्होंने 1959 में अपना कारोबार शुरू किया था तो मात्र 15,000 रुपये की पूंजी से शुरू किया था और जब 2002 में उनकी मृत्यु हुई तो 60,000 करोड़ रुपये छोड़ कर गये।

2. बिल गेट्स :-

दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बिल गेट्स ने जब एक नया साफ्टवेयर बनाया तो उस समय तक स्थापित सभी कंपनियों ने कहा - यह साफ्टवेयर नहीं चल पायेगा। परन्तु बिल गेट्स के अंदर दूरदर्शिता थी उन्होंने नये युग की संभावनाओं को पहचानकर इतने आसान एवं उपयोगी साफ्टवेयर बनाए कि ग्राहकों ने उन्हें हाथोहाथ लिया और दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बन गये।

3. हेनरी फोर्ड :-

हेनरी फोर्ड ने एक गरीब किसान के यहाँ जन्म लिया था बचपन में वे स्कूल तो गये परन्तु उनके पिता ने कुछ ही दिन बाद पढ़ाई छुड़वाकर खेती के काम में लगा दिया परन्तु उन्हें मशीनों से खेलने का बहुत शौक था और साथ ही उनकी आंखों में अमीर बनने का सपना था।

बीसवीं सदी के शुरूआत में कारे अमीर व्यक्तियों की पहचान थी उस समय वह कार सुधारने का काम करते थे उनके दिमाग में एक बात आयी अगर कारे सस्ती बना दी जाये और उन्हें आम व्यक्तियों तक पहुंचाया जाय तो इस प्रकार आम (मध्यम वर्ग) व्यक्ति के सपने भी पूरे हो जायेंगे और मेरा अमीर बनने का भी सपना पूरा हो जायेगा। उन्होंने अपनी इस दूरदर्शिता को अपनी वास्तविक जिंदगी में उतारकर काम करना प्रारंभ किया और तमाम बाधाओं से लड़ते हुये 1902 में अपनी खुद की कंपनी खोल दी और 1916 तक 7 करोड़ डालर के मालिक बन गये

उन्हे सस्ती कारो का पितामह कहा जाता है।

चेस्टर कार्लसन :-

फोटोकॉपियर की खोज करने वाले चेस्टर कार्लसन का जीवन मुश्किलों से भरा पड़ा था, गरीबी, बीबी से तलाक, लोगो द्वारा उड़ाये जाने वाला उपहास, उनकी जिंदगी को हिलाकर रख दिया था परन्तु चेस्टर कार्लसन हारे नहीं उन्हे उम्मीद थी कि एक दिन मेरा प्रयोग सफल होगा और मेरी सारी गरीबी मिट जायेगी और अपने इसी लक्ष्य दूरदर्शिता के दम पर फोटोकॉपियर का आविष्कार कर पायें और अमीर बन गये।

दुनिया महापुरुषों से भरी पड़ी है। जिनका उल्लेख करना इतना आसान काम नहीं है परन्तु सभी में जो एक कॉमन बात देखने को मिलती है, वह है 'दूरदर्शिता एवं उनका विशाल लक्ष्य' मैंने बहुत सारे कामयाब व्यक्तियों का अध्ययन किया है उनमें लगभग सभी का प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों से शुरू हुआ है और कामयाबी में जाकर खत्म हुआ है।

लक्ष्य कैसा होना चाहिये :-

लक्ष्य कैसा हो ? उसका प्रतिरूप कैसा हो ? यह व्यक्ति की मानसिकता पर निर्भर करता है फिर भी इस सिद्धांत के प्रति जो मेरा नजरिया है वह कुछ इस प्रकार है :-

इंसान का लक्ष्य ऐसा हो जो व्यक्ति को सोने न दे :-

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि "लक्ष्य ऐसा हो जो जगत के कल्याण के साथ साथ पथ प्रदर्शक हो, दूरगामी हो।"

मैं जो बात कहने जा रहा हूँ कि लक्ष्य ऐसा हो जो सोने न दे यहां पर रात को सोने से मतलब बिल्कुल नहीं है बल्कि उसका मतलब वास्तविक जिंदगी से जगने से है। वास्तव में जिस व्यक्ति के पास लक्ष्य नहीं होता, कोई मकसद नहीं होता, वह जागते हुये भी सोने के समान होता है उसे महसूस होता है कि वह जग रहा है परन्तु वह वास्तव में गहरी निद्रा में सो रहा होता है। वह इस प्रकार सोता है कि जगत को देख सकता है, बाते कर सकता है। छू सकता, बैठ सकता है, चल सकता

है, खा सकता है परन्तु उसका चेतन मन इतनी गहरी निद्रा में सोता है कि वह जगते हुये भी कुछ नहीं कर सकता है, ऐसे व्यक्तियों से अगर कुछ कहा जाय कि फला काम कर लो तो वह कहता है - “ यह मेरे बस का नहीं है या फिर कर लेंगे परन्तु अभी नहीं या फिर तुम करो यार मैं तुम्हारा जितना बनेगा सहयोग करूँगा परन्तु मैं नहीं कर सकता या फिर कहेगा मेरी जिंदगी ऐसी ठीक है मैं खुश हूँ।” कई प्रकार के तर्क देकर बात को टालने की कोशिश करता है ऐसा सिर्फ वह इसलिये करता है क्योंकि वह उस समय गहरी निद्रा में सो रहा होता है जिसके पास कोई मकसद नहीं होता।

“मकसदविहीन, लक्ष्यविहीन व्यक्ति को जगाना उतना ही कठिन होता है जितना एक पहाड़ी को काटकर मैदान बनाना। परन्तु जो व्यक्ति लक्ष्ययुक्त होता है वह हमेशा जगता रहता है जब रात के अंधेरे में सारी दुनिया सो रही होती है तब भी वह जगते हुये अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के तरकीब ढूँढता रहता है। उसके मन में सिर्फ एक ही बात होती है मैं किस प्रकार लक्ष्य प्राप्त करूँ ?” 24 घंटे वह अपने लक्ष्य के लिये काम करते हुये मनोरंजन करता है इसलिये कहा भी जाता है कि अपनी रुचि के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करना चाहिये जिससे काम करते वक्त मनोरंजन हो, बोझ न लगे।

प्राचीन काल में एकलव्य नामक एक लड़का था उसके मन में धनुर्विद्या सीखने की जिज्ञासा थी वह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धनुषधारी बनना चाहता था, वह अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिये एक ऋषि के पास गया मगर सामाजिक कारणों की वजह से उस ऋषि ने उसे धनुर्विद्या देने से इंकार कर दिया। परन्तु कहा जाता है जिसके इरादे बुलंद हो उसे भला दुनिया की ऐसी कौन सी ताकत है जो उसे अपने लक्ष्य को पूरा करने से रोक सके। एकलव्य भी उन्हीं में से एक था सारी तात्कालिक बधाओं से परे होकर उसी ऋषि को अपना गुरु बनाकर उसकी मूर्ति रखकर धनुषविद्या के लिये प्रयास करने लगा, दिन रात अभ्यास करते हुये वह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धनुषधारी बन गया जो अर्जुन से कही बढ़कर था। इस कहानी से एक बात

सामने आती है कि जो व्यक्ति अपने पूरे मन के साथ अपने लक्ष्य के लिये प्रयास करता है वह परिस्थितियों का दास नहीं होता बल्कि सारी परिस्थितियों को अपना दास बना लेता है और हर हाल में अपना लक्ष्य हासिल करता है।

प्रसिद्ध चित्रकार निकोलस ने कहा था - “जब आपके मित्र सो रहे हो, थियेटर में हो तब भी आपको अपने लक्ष्य के लिये जगते हुये काम करते रहना चाहिये।”

लक्ष्य ऐसा हो जिसका प्रतिबिम्ब हमेशा आप की आँखों में रहे :-

व्यक्ति का लक्ष्य हमेशा उसकी आँखों में एक प्रतिबिम्ब के रूप में रहना चाहिये और हमेशा उसे वास्तविक रूप में लाने का प्रयत्न करना चाहिये। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है अगर इंसान को कामयाब होना है तो उसे अपने लक्ष्य को हमेशा मन मस्तिष्क में रखना पड़ेगा, चाहे वह कोई भी काम करे परन्तु सभी कामों का अंतिम पड़ाव उसके वास्तविक लक्ष्य में होना चाहिये ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अर्जुन का निशाना पेड़ की डालियों पत्ती और चिड़ियाँ पर न होकर उसकी आँख पर था।

लक्ष्य ऐसा हो जो विपरीत परिस्थितियों में भी प्राप्त किया जा सके और जिसके प्राप्त होने की आशा मन में हमेशा बनी रहे :-

“किसी भी व्यक्ति का लक्ष्य जिज्ञासा से भरपूर हो उसे अपने लक्ष्य के लिये काम करते वक्त महसूस हो कि मैं दुनिया का सबसे आनंददायी काम कर रहा हूँ मेरा जो लक्ष्य है उसमें किसी भी प्रकार की उलझन नहीं है।”

मैंने अध्याय के शुरुआत में ही टेड टर्नर के बारे में थोड़ा सा जिक्र किया था। तमाम विपरीत परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने वाले टेड टर्नर आज अमेरिकी मीडिया के शहंशाह के रूप में जाने जाते हैं। अमेरिका मीडिया हाउस सी.एन.एन. के संस्थापक टर्नर ने जब 24 घंटे पहले न्यूज चैनल की कल्पना पेश की तो उस पर विश्वास करने वाले कम परन्तु हंसने वाले ज्यादा थे, लेकिन उन्होंने असंभव माने जाने वाले काम को संभव कर दिखाया। टर्नर ने अपने लक्ष्य की यात्रा बड़े ही विषम परिस्थितियों से शुरु की, बिलवार्ड का व्यवसाय चलाने वाले उनके पिता का देहांत

हो गया यही से उनके कंधो पर सारी जिम्मेदारी आ गयी तब सिर्फ 18 वर्ष के थे कहते है विपत्ति कभी अकेले नहीं आती है वैसा ही उनके साथ भी हुआ पिता की कंपनी कर्ज में डूबी थी लेकिन उन्होंने जैसे की हार न मानने की कसम खा ली थी। उन्होंने उस कंपनी को गिरवी रखकर एक टीवी स्टेशन खरीदा और फिर स्टेशन को गिरवी रखकर दो टीवी चैनल खरीद लिये आठ वर्ष के इस खेल में टर्नर 10 करोड़ डालर की संपत्ति के मालिक बन गये, लेकिन रूकना उन्होंने सीखा ही नहीं था और व्यावसायिक साहसिकता उनकी फितरत थी। इसलिये 24 घंटे के न्यूज चैनल सीएनएन की आधारशिला जब उन्होंने रखी थी तब इसकी विफलता की कई भविष्यवाणियों के बावजूद टर्नर चैनल को लोकप्रिय बनाने में सफल रहे इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि जिसका लक्ष्य अटल होता है उसे किसी भी प्रकार की परिस्थिति नहीं रोक पाती वह सारी मुसीबतों से लड़ता हुआ अपना लक्ष्य हासिल करता है। टेड टर्नर ने अपने पिता के सपनों को अपना लक्ष्य बनाया और अथक प्रयत्न करते हुये 3 वर्ष में 10 करोड़ डालर के मालिक बन गये। जब लोगो ने उनसे पूछा कि जब आपके पास विपत्ति आती थी, तो आप उस विपत्ति से अपने आप को कैसे उबारते थे ? उन्होंने कहा - "जब मेरे पास विपत्ति आती थी, मेरे लक्ष्य में कोई अवरोध आता था तब मैं अपने दिल पर हाथ रखता और अपने माता पिता को यादकर दुगनी चाल से एक आशा एवं विश्वास के साथ चल देता समस्या खुद ब खुद समाप्त हो जाती थी।" कहने का तात्पर्य यह है कि इंसान कें मन में जब किसी चीज की चाहत उत्पन्न हो जाती है अगर वह कर्मठ स्वभाव का है तो वह उसे जरूर प्राप्त कर लेता है और करना भी चाहिये क्योंकि मनुष्य का जन्म सबसे महत्वपूर्ण होता है। "लक्ष्य की ओर बढ़ने में कठिनाई सभी को होती है, प्रत्येक जगह पहुंचने में संघर्ष करना पड़ता है यह मैं मानता हूँ, परन्तु जो हिम्मत के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते है जीत उनकी जरूर होती है यह मैं जानता हूँ।"

लक्ष्य ऐसा हो जो प्राणी मात्र के प्रति खुद के लिये कल्याणकारी हो :-

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आपका लक्ष्य ऐसा हो जो किसी अन्य जीव

या मनुष्य को प्रभावित न करें, साथ ही आपका जीवन भी प्रभावित न हो अर्थात आपके शारीरिक, मानसिक, व्यवहारिक जीवन को किसी प्रकार से छति न पहुंचाये क्योंकि कहा भी जाता है कि 'जान है तो जहान है' कहने का मतलब यह है कि अगर व्यक्ति मानसिक, शारीरिक, सामाजिक रूप से स्वस्थ होता है तो उसका प्रत्येक काम अच्छा होता है और उसका मन भी उस काम में लगता है। हमेशा व्यक्ति को प्रकृति के अनुरूप ही काम करना चाहिये।

समाज में कभी कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि कुछ लोग कई लोगो की जिन्दगियों को प्रभावित करते है वह ऐसा सिर्फ इसलिये करते है क्योंकि उनकी धारणा बन जाती है कि आज के युग में बिना धोखाधड़ी के सफल नहीं हुआ जा सकता। लेकिन मैं इस प्रकार के लोगो से बिल्कुल सहमत नहीं हूँ क्योंकि ऐसी कामयाबी जितनी जल्दी दिखती है उतनी जल्दी खत्म भी होती है।

एक बार चार चोरी करने के लिये एक सेट के यहाँ जा रहे थे रास्ते में एक अन्य व्यक्ति भी मिल गया उसने पूछा 'आप लोग कौन हो ? कहां जा रहे हो ?'

चारो चोरो ने कहा - "हम चोर हैं और चोरी करने जा रहे हैं।" उस व्यक्ति ने कहा - "तुम्हारे साथ मैं भी चलता हूँ।" चारो चोरो ने कहा - ठीक है अब पांचो एक हवेली के पास पहुंचकर रुक गये। चोरो ने नये साथी से कहा - "हमें इसी हवेली में चोरी करनी है। यहां हर बार बहुत माल मिलता है।" उस व्यक्ति ने पूछा - "इस हवेली से बहुत आवाज आ रही, यहां पर क्या हो रहा है ?"

चोरो ने कहा - "इस हवेली में जश्न मनाया जा रहा है ढोल बज रहे है संगीत गाया जा रहा है।"

उस व्यक्ति ने कहा - मैं चोरी करने नहीं जाऊंगा।

चोरो ने कहा - 'क्यों ?' उस व्यक्ति ने कहा - "जिस हवेली में तुमने इतनी बार चोरी की है वहाँ आज भी ढोल बज रहा है जश्न मनाया जा रहा है परन्तु तुम इतना माल चुराने के बाद आज भी चोर के चोर ही हो।" इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि किसी को धोखा देकर अगर आप लक्ष्य प्राप्त कर भी लेते हैं तो भी आपका

नाम इतिहास में महान पुरुषों की सूची में न होकर कुख्यातों की सूची में ही होगा आप सिर्फ धोखेबाज के धोखेबाज ही रहेंगे और सामने वाला जैसा था वैसा का वैसा ही रहेगा। अब आप पर निर्भर करता है कि आप किस रूप में जाने जाना पसंद करेंगे।

किसी भी व्यक्ति को जोश में कोई काम नहीं करना चाहिये हमेशा दिल और दिमाग का सामंजस्य स्थापित कर ही कोई काम करना चाहिये।

“लक्ष्य ऐसा बनाओ जिसको पूरा करने में खुशी हो और जीवित रहने का मकसद हमेशा बना रहे।”

लक्ष्य प्राप्ति के तरीके :-

1. अपना स्वयं का रास्ता बनाये :-

एक महान कवि ने लिखा है :-

“लोक पर वो चले जिनके चरण दुर्बल और हारे है।

हमें तो जो हमारी यात्रा से बने, ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे है।”

इस कविता में कवि ने यह बताने की कोशिश की है कि दूसरो के पद चिन्हो पर वह चलते है जो जिंदगी हार चुके है जिनके पास कोई मकसद नहीं बचा, जो कायर होते है बहादुर को तो अपने रास्ते ही प्यारे होते हैं।

आखिर इंसान दूसरो के सहारे कब तक चलेगा उसे एक न एक दिन अपना खुद का रास्ता बनाना ही पड़ेगा। किसी ने क्या खूब कहा है – ‘गैर परो तक उड़ सकते है हद से हद दिवारो तक अंबर तो वही उड़ेगे जिनके अपने पर होंगे।’

मेरे कहने का मतलब है इंसान को अपना रास्ता स्वयं बनाना चाहिये अपनी मंजिल स्वयं निर्धारित करनी चाहिये। उसको कहाँ जाना है ? कैसे जाना है ? स्वयं निर्धारित करना चाहिये।

कई लोगो ने माउंट एवरेस्ट का दौरा किया पर क्या सभी एक ही रास्ते से गये? नहीं बिल्कुल नहीं, अगर उनने ऐसा किया होता तो शायद हम उन्हे कभी याद नहीं करते। उन्होने हमेशा अपने लिये कठिन से कठिन रास्तो का चुनाव किया

कभी कभी तो अपनी जान पर खेल गये।

लोग अतंरिक्ष की यात्रा में जाते है हर बार अपने तरीके से जाते हे अपनी जान जोखिम में डालते है लेकिन वे इस बात की परवाह नहीं करते।

नेपोलियन की हैसियत से सभी वाकिफ है वह जीवन के शुरूआत में क्या था? और अंत में क्या बन गया ? वह कहता था ‘मै जो बोलता हूँ वह कानून बन जाता है।’ क्योंकि मैं अपने पदचिन्हो पर चलता हूँ।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू एक बार इलाहाबाद में भाषण दे रहे थे गलती से उनने संबंधित घटना का सन् गलत उल्लेखित कर दिया तो वहीँ पर बैठे उनके प्रोफेशर ने सुधारने के लिये कह दिया तो उनने कहा – “आप शांत रहिये, आप इतिहास दोहराते है। मै इतिहास बनाने जा रहा हूँ।”

एक बार रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था – “मनुष्य का जीवन एक नदी के समान है जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में अपनी राह बना लेती है और यह सही भी है हमें अपनी राह स्वयं ही बनानी होगी और यह राह पूरी शक्ति और सामर्थ से बनानी होगी निर्भीक और निश्चित होकर आगे बढ़ना होगा।”

मैं मानता हूँ जब आप रास्ता बनाना प्रारंभ करेंगे तो उस पर खायी होगी, उसे आपको पाटना होगा, भीड़ होगी, हटाना होगा, इस काम में आपको अपना बहुत कुछ खोना पड़ेगा यश, कीर्ति, धन, धर्म, व्यक्तित्व, यहाँ तक कि आपको अपने भी पराये दिखेंगे। दोस्त दोस्ती छोड़ देगा, हवा पानी सब आपको रोकेंगे। उस समय आप अकेले होंगे। परन्तु जीतेंगे आप ही ये मेरा दावा है। जब आप अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेगे, आपके द्वारा बनाया गया रास्ता पूर्ण हो जायेगा तब उस रास्ते से गुजरने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपका नाम लेगा वहाँ का कण कण आपके नाम का गुणगान करेगा। अगर आप वहाँ पर होंगे तो जरूर हैरानी होगी बाइदबे आप वहाँ पर नहीं भी होंगे तब भी लोग आपका नाम लेकर कह रहे होंगे। ‘अगर वह व्यक्ति नहीं होता तो आज ऐसा नहीं होता।’

‘ आप अपना रास्ता मत छोड़ो दूसरो का अनुसरण करो मगर उसके उस

बात का जो आपको आपके रास्ते से गुमराह करने वाली न हो। “आप अपने ऊपर से नजर न उठाना वरना दुनिया की नजरे आपके उपर से उठ जायेगी और आपके जीवन का अस्तित्व मिट जायेगा।”

आप अपने परो से गगन चुंबियों को छुये, आप दूसरो के पथ प्रदर्शक बने, फूल बन कर रहे कांटे बनकर किसी को मत चुभे। लोग मुझसे अक्सर कहते है दुनिया जैसी चलती है वैसा चलना सीखो, तुम फलां व्यक्ति जैसा क्यों नहीं बनते ? सबके साथ चलना सीखो, उल्टी दिशा में क्यों चलते हों ? मैं उनसे कहता हूँ - “मे दुनिया की भीड़ में अपने आपको शामिल कर अपने आपको गुम नहीं करना चाहता और न ही मैं अपने सिर को हर दर पर झुकाना चाहता, यही मेरे उसूल है। जो बात मैं अपने लिये सोचता हूँ वही बात मैं आपके लिये भी सोचता हूँ मुझे आशा है कि आप भी वही करेंगे जो मेने कहने की कोशिश की है।”

2. अपने ऊपर विश्वास रखें :-

‘विश्वास मनुष्य की शक्ति को जगाता है और जीवन जीना सिखाता है। विश्वास वह चीज है जो मनुष्य का संबंध ईश्वरीय शक्ति स्रोत से जोड़ देता है। विश्वास न सोचता है और न ही अंदाज लगाता, विश्वास तो बस विश्वास करना ही जानता है और मनुष्य को सफलता के सही मार्ग पर बढ़ाता है विश्वास के जागृत होते ही आत्मा में छुपी हुई शक्तियां प्रस्फुटित हो उठती है। अपने प्रति अविश्वास से तो शक्ति के स्रोत सूक्ष्म हो जाते है और लोग दीन तथा दरिद्र ही बने रहते हैं।’

-अज्ञात

‘अगर हम किसी काम में असफलता के बारे में सोचेंगे तो अवश्य असफल होंगे।’

लक्ष्य प्राप्ति के लिये यह जरूरी है कि इंसान को अपने ऊपर भरोसा हो, उसे हर वक्त ऐसा लगना चाहिये कि मुझे इस काम को पूरा करने में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होगी क्योंकि कहा जाता है। ‘जैसी सोच वैसी सफलता।’

विपत्तियों के सताये एक व्यक्ति को किसी कारण बस सेल्स के काम में जुटना पड़ा जिसका उसके पास कोई प्रशिक्षण नहीं था उसका काम घर घर जाकर बैक्यूम क्लीनर बेचना था अपने काम के प्रति उसका नजरिया नकारात्मक था उसे विश्वास नहीं था कि वह यह काम कर सकता है वह जानता था कि वह असफल ही होगा इसलिये उसे किसी के घर के पास जाने में डर लगता था कि वह ऐसा नहीं कर पायेगा चाहे उस घर के लोगो ने बैक्यूम क्लीनर खरीदने के लिये डिमांडस्ट्रेशन का अनुरोध ही क्यों न किया हो ? नतीजन वह समान नहीं बेच पाता था अर्थात वह अधिकतर असफल हो जाता था एक दिन उसकी मुलाकात एक अन्य व्यक्ति से हुई उसने उसके सामने अपने शक्तिहीनता की पूरी कहानी कह डाली। उस व्यक्ति ने उसे धैर्य से सुना और फिर उसने कहा - “अगर आप किसी काम में असफलता की उम्मीद करेंगे तो असफलता ही मिलेगी और अगर आप सफलता की उम्मीद करेंगे तो आप पूर्णतः सफल होंगे और फिर उसने कहा मैं आपको एक फार्मूला देता हूँ जो आपके चिन्तन को नया रूप देगा और आपके लक्ष्य प्राप्ति में आपकी मदद करेगा उस फार्मूले को काम में जाने पहले दोहराये और उसमें विश्वास करें।” फार्मूला यह है - “अगर ईश्वर मेरे साथ है, तो कौन मेरे खिलाफ हो सकता है।” इस तरीके को अपनाने से आपके शक्ति मिलेगी, जिसकी आपको जरूरत है उस दिन के बाद वह शक्स उस फार्मूले का उपयोग करने लगा अब वह नकारात्मक के बजाय सकारात्मक परिणामों की उम्मीद रखने लगा साथ ही साथ जब से वह उसका उपयोग करने लगा उसके अन्दर नया साहस नयी आस्था और अपनी योग्यता में गहरा विश्वास होने लगा उसे महसूस होने लगा अब मैं कुछ भी कर सकता हूँ। और आगे चलकर वह महान मैनेजमेंट लीडर बन गया। इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि अगर आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करना है तो अपने ऊपर पूर्णतः विश्वास रखें मैं कही हार न जाऊँ ऐसा सपनों में भी न सोचे बस यही सोचे हर हाल में जीत हमारी होगी।

3. जुझारूपन लाये :-

“भाग्य के भरासे सोये रहने से भाग्य सोया रहता है स्वयं उठ जागने

से भाग्य भी जग उठता है ।”

“उठो जागो और संघर्ष करो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाय ।” स्वामी विवेकानन्द ने उन करोड़ों लोगों के परिप्रेक्ष्य में कहा था जो सदियों से सो रहे हैं जो संघर्ष करने मात्र का नाम सुनकर बहाने बनाकर जिंदगी में कुछ नहीं है ऐसा कहकर जीवन के बहुमूल्य उपहार को यू ही लुटा रहे हैं । दुनिया इतनी तीव्रता से आगे जा रही है परन्तु अफसोस की बात यह है कि आज भी 75% लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं या तो वह इस बारे में जानने की कोशिश ही नहीं करते या फिर जानते हुये भी नजरअंदाज कर देते हैं या फिर कठिनाईयों से लड़ने का साहस नहीं जुटा पाते इसका कारण है कि इन 75% लोगों में जुझारूपन नहीं होता है कोई जोखिम उठाने की कोशिश ही नहीं करते, बस अपने भाग्य के भरोसे सफलता का इंतजार करते हैं और फिर ऐसे ही व्यक्ति सफल व्यक्ति को देखकर ईर्ष्या, दोष रखते हैं मगर यह भूल जाते हैं कि सफल व्यक्ति अपने जीवन में कितना संघर्ष किया है कहाँ-कहाँ पर उसने अपने स्वाभिमान से समझौता किया है कितनी बार अपने आपको जोखिम में डाला है ।

एक बार एक कुत्ते को प्यास लगी थी वह पानी की तलाश में जंगल में भटक रहा था अंततः उसे उस जंगल में एक झील मिली, झील इतनी गहरी नहीं थी कि कुत्ता उसमें डूब जाता परन्तु वह कुत्ता जैसे ही पानी पीने जाता उस झील पर उसकी परझाई आ जाती थी वह डरकर वापस आ जाता क्योंकि उसे ऐसा लगता कि उस पानी में एक अन्य कुत्ता है जो उसके पानी पीते वक्त उसे पानी में खींचकर मार देगा दूसरी बार फिर वह कुत्ता पानी पीने के लिये गया परन्तु पूर्वतः स्थिति में पुनः लौट आया बार बार ऐसा करने के बाद वह हार कर बैठ गया और झील वाले कुत्ते की बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा । वही पर एक अन्य कुत्ता बैठा था जो बुद्धिमान और बूढ़ा था उसको देख रहा था और बोला - “भाई तू झील के पास जाता है और फिर तू वापस आ जाता है यह माजरा मेरे समझ में नहीं आया ।”

उस कुत्ते ने अपनी सारी दास्तान कह सुनायी । उसकी बातों को सुनकर

बूढ़ा कुत्ता कुछ सोचा और बोला - ‘भाई तू अगर पानी नहीं पियेगा तो भी मर जायेगा अगर दोनो स्थिति में मरना ही है तो उस पानी वाले कुत्ते से मुकाबला कर इस संघर्ष के दो ही परिणाम होंगे या तो तू जीतेगा या फिर हारेगा परन्तु तू सोच अगर तू जीत गया तो तेरा जीवन बच जायेगा ।’ इतना सुनकर उस कुत्ते में साहस आ गया और झील के पास जाकर जोर से दहाड़कर उस झील में स्थित परछाई रूपी कुत्ते के ऊपर कूद गया । इस प्रकार से उसकी प्यास भी बुझ गयी और एक नया साहस भी आ गया और उसकी जिंदगी भी बच गयी । मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि “परिस्थितियों को देखकर भागने के बजाय उनसे लड़ना चाहिये हार जीत तो बाद की बात है परन्तु पहले ही हार मान लेना आत्महत्या करने जैसा है ।”

“ दुनिया में दो रास्ते होते हैं या तो ‘भाग लो’ या ‘भाग लो’ इसके बीच का कोई दूसरा रास्ता नहीं होता । ”

-रेट रिले

एक बात तो है जिस व्यक्ति में जुझारूपन होता है वह अपने आत्मबल के दम पर स्वयं को स्थापित कर लेता है अपना मुकाम हासिल कर लेता है ।

1960 की घटना है यूरोप के भव्य ऐतिहासिक नगर तथा इटली की राजधानी रोम पर सारे विश्व की निगाहे 25 अगस्त से 11 सितम्बर तक होने वाले ओलंपिक खेलों पर टिकी हुई थी । इन्हीं ओलंपिक खेलों में एक बीस वर्षीय अश्वेत बालिका भी भाग ले रही थी । वह इतना तेज दौड़ी की वर्ष 1960 के ओलंपिक खेलों में तीन स्वर्ण पदक जीतकर सबसे तेज धाविका बन गयी । रोम ओलंपिक में लोग, 5346 खिलाड़ियों में से इस बीस वर्षीय बालिका का असाधारण पराक्रम देखने के लिये इसलिये उत्सुक नहीं थे कि बिल्मा रूडोल्फनामक यह बालिका अश्वेत थी बल्कि यह वह बालिका थी जिसे चार वर्ष की आयु में डबल निमोनिया और काला बुखार होने से पोलियो हो गया था परिणाम स्वरूप उसे अपने पैरों में ब्रेस पहननी पड़ी । बिल्मा रूडोल्फ ग्यारह वर्ष की उम्र तक चल फिर भी नहीं सकती थी लेकिन उसने एक लक्ष्य बनाया हुआ था कि उसे दुनिया की सबसे तेज धाविका बनना है । डॉक्टर

के मना करने के बावजूद बिल्मा रूडोल्फ ने अपने पैरो से ब्रेस उतार फेंकी और स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर अभ्यास करती रही उसने अपने हौसले को इतना उँचा कर लिया कि असंभव सी बात पूरी कर दिखलाई। एक साथ तीन स्वर्ण पदक हासिल कर इतिहास रच दिया। मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि जिनमें संघर्ष करने की आदत होती है तो शारीरिक विकलांगता भी उसकी राह में बाधा नहीं बन सकती।

“ जुझारू व्यक्तियों को ही उनका लक्ष्य मिलता है भगोड़ो को नहीं। ”

4. भविष्य-वाणियों पर विश्वास न करें :-

“ पीछे मुड़कर मत देखो भविष्य में क्या होगा ? मत सोचो सदा वर्तमान में जिंदा रहो। ”

एक आम इंसान की आदत होती है उसे भविष्यवाणियों पर बहुत भरोसा होता है और कभी कभी भविष्यवाणियों के चक्कर में अपना लक्ष्य ही बदल देता है जिसमें उसकी बहुत ज्यादा रूचि होती है परिणाम स्वरूप उसे अनचाहा लक्ष्य निर्धारित करना पड़ता है जिससे उसके मन के अनुरूप कोई काम नहीं हो पाता क्योंकि अनचाहे काम को करने में उसे तकलीफ होती है। कभी-कभी भविष्यवक्ता कुछ ऐसी भविष्य वाणियाँ भी कर देते हैं कि इंसान बर्बादी की ओर चला जाता है क्योंकि कहीं न कहीं उसके मन में यह भावना घर कर जाती है कि “कहीं ऐसा न हो जाय।” कहने का मतलब एक अनदेखा डर व्यक्ति के मन में बैठ जाता है जिससे व्यक्ति अपना संतुलन खो देता है और उसके प्रत्येक काम असंतुलित हो जाते हैं।

काफी समय पहले की बात है एक राजा के राज्य में ज्योतिषियों को बड़ा सम्मान मिलता था। राजा अत्यन्त बिलासी और डरपोक था। राज्य की छोटी छोटी समस्याओं के लिये ज्योतिषियों से परामर्श लिया करता था एक बार राज्य में एक ऐसा ज्योतिषी आया जो जिस किसी को भी कुछ बता देता वह सत्य होकर ही रहता था ऐसा वहाँ के लोगो का विश्वास था। राजा तक जब यह बात पहुंची तो उसने उस ज्योतिषी को पूरे मान सम्मान से राजमहल बुलाया। राजदरबार लगाया

गया वहाँ पर राजा की शान में अनेक बातें हो रही थी तभी राजा ने उस ज्योतिषी से एक प्रश्न किया – “ आप बताइये मैं कब तक राज्य करूँगा ? ” कुछ देर चुप रहने के बाद ज्योतिषी ने कहा – “ महाराज ! जान की मांफी चाहूँगा – आप इस राज्य का शासन मात्र चार महीने और करेंगे। ” यह सुनकर सारी सभा आवाक रह गयी। अब राजा का मन भी राजकाज में नहीं लगता था। उसे अब परलोक की चिंता सताने लगी। उसने दान पुण्य करना प्रारंभ कर दिया। जप तप में अपना समय बिताने लगा, जब भी कोई जरूरी काम होता और महामंत्री उसके पास जाता तो राजा का जबाब होता था जो जनहित में उचित हो वैसा ही काम कीजिये। अनेक प्रयास के बाद भी राजा दरबार में उपस्थित न हुआ।

एक दिन गुप्तचरों ने सूचना दी कि पड़ोसी राजा उमराव सिंह हमारे राज्य में आक्रमण की योजना बना रहा है, राजा को इस बात से अवगत कराया गया परन्तु राजा मारे डर के कोई ठोस निर्णय नहीं ले सका। सभी परेशान थे आखिर राजा का डर किस प्रकार दूर किया जाय ? तभी मंत्री ने उस भविष्यवाणी करने वाले को पुनः बुलाने का आदेश दिया। अगले दिन राज्यसभा लगायी गयी उस सभा में राजा भी उपस्थित हुये। मंत्री ने ज्योतिषी से पूछा – “अब आप पुनः गणना कर बताये कि महाराज का राज्य कितने दिनों का है ?”

ज्योतिषी बोला – “महाराज तीन माह दो दिन और राज्य करेंगे।”

मंत्री – “आपके पास इसका कोई प्रमाण है।”

ज्योतिषी – “ज्योतिषी भविष्य के लिये कथन होता है जो अभी हुआ ही नहीं उसका वर्तमान में कोई प्रमाण नहीं है।”

मंत्री – “मैं वर्तमान पर विश्वास रखता हूँ, जिसका प्रमाण होता है।”

ज्योतिषी – “ऐसा संभव नहीं, भविष्य का वर्तमान में कोई प्रमाण नहीं हो सकता है।”

मंत्री – “यह संभव ही नहीं अपितु अत्यन्त सरल है। राजा सहित सभा में बैठे सभी व्यक्ति आश्चर्य में पड़ गये आखिर महामंत्री जी करना क्या चाहते हैं ?”

मंत्री ने फिर ज्योतिषी से पूछा – “आपका जीवन अभी कितना शेष है।”

ज्योतिषी गणना कर बोला - "मुझे अभी 34 साल 8 महीने 4 दिन और जीना है।"

मंत्री - "इस भविष्यवाणी की सत्यता के लिये आपके पास कोई प्रमाण है।"

ज्योतिषी - 'नहीं'

मंत्री - "परन्तु मेरे पास वर्तमान में इसका प्रमाण है।" मंत्री ने राजा से आज्ञा लेते हुये अपना प्रमाण प्रस्तुत करने की बात कही। राजा आश्चर्यचकित होकर मंत्री से कहा - "बिना किसी भय के आप अपना प्रमाण प्रस्तुत कर सकते है।" मंत्री ने अपनी तलवार निकाली और बिना देरी किये हुये ज्योतिषी का सिर धड़ से अलग कर दिया। पूरी सभा में ब्रम्ह हत्या, ब्रम्ह हत्या की आवाज गूँजने लगी। राजा ने कहा - "मंत्री तुमने ठीक नहीं किया।" मंत्री - "राजन ! मैंने आप से पहले ही आज्ञा ले ली थी और जिस व्यक्ति को यह मालुम नहीं कि अगले पल उसकी मृत्यु होने वाली है वह कैसे कह सकता है ? कि आपका राज्य तीन महीने चार दिन का है ?" राजा की आँखे खुल गयी और अपने राजकाज में पुनः वापस आ गया और पड़ोसी राजा उमराव सिंह को पराजित कर अपने राज्य को एक खतरे से बचा लिया और भविष्य में किसी भी भविष्यवाणी पर विश्वास न करने की कसम खायी और ऐसा संदेश अपनी प्रजा को भी दिया।

निष्कर्ष :- कभी भी भविष्यवाणियों पर विश्वास कर अपने आप को समर्पित न करें, कभी भी ऐसा न सोचे कि अब बचा ही क्या है ? यह तो होगा ही। अब कोई काम करने से फायदा नहीं होगा। बस जितनी जिंदगी बची है आराम से काट ली जाय। परन्तु जरा सोचिये भविष्यवाणी तो बाद में होगी जिसका कोई प्रमाण नहीं है। सच होगी भी या नहीं भी होगी परन्तु आज से ही यह मान कर बैठ जाना कि ऐसा ही होगा, बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती है क्योंकि आज और कल के बीच का जो समय बचा है इस समय में भी आपको जीवित रहना है इस समय में भी आपके पास कुछ महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ हैं जिन्हे आपको हर हाल में निभाना है, इसके लिये आपको कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा।

लोग हाथ की लकीरे देखते है, चेहरे की बनावट देखते है, और उसके अनुसार

भविष्य बताते है परन्तु सोचो जरा किस्मत तो उनकी भी होती हैं जिनके हाथ नहीं होते हैं, एक बदसूरत व्यक्ति चाणक्य दुनिया का सफलतम व्यक्ति हुआ है। महान लोग कभी भी व्यर्थ की भविष्यवाणियों पर विश्वास नहीं करते वो सिर्फ वर्तमान पर विश्वास करते है साथ ही अपनी मेहनत पर, एक बार की घटना है भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री बचपन में खेल रहें थे तभी एक भविष्यवक्ता आया और कहा "यह लड़का आगे चलकर महान व्यक्तियों में गिना जायेगा। लोगो ने 'पूछा क्यों ? ऐसा क्या है इस लड़के में।' भविष्यवक्ता ने कहा "क्योंकि इसके दाँत अद्भुत है।" शास्त्री ने आव न देखा ताव झट से पत्थर उठाकर अपना दाँत तोड़ दिया और बोले अब तो मैं महापुरुष नहीं बनूँगाँ क्योंकि मैंने अपना अद्भुत दाँत तोड़ दिया।"

द्वितीय विश्वयुद्ध का जन्मदाता जर्मन तानाशाह हिटलर बचपन में घर-घर पेपर बाँटता था और कहता था मैं जर्मनी का तानाशाह बनूँगाँ उससे किसी ज्योतिषी ने बचपन में उसकी महत्वकांक्षा को देखकर कहा था " तुम्हारे हाथ में राजयोग की रेखा ही नहीं है।" तब हिटलर ने ब्लेड से अपने हाथ पर रेखा बना लिया था और बोला "अब तो मैंने अपने हाथ में राजयोग की ऐसी रेखा बना ली है जो दुनिया में किसी के पास नहीं होगी।"

मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ "इंसान अपने कर्मों से महान बनता है न कि दाँत, रेखा, चेहरे की बनावट, बालो के रंग से क्योंकि इनकी सत्यता के कोई प्रमाण नहीं है। यह एक तुलनात्मक एवं काल्पनिक तथ्य है जो व्यक्ति विशेष अपने सामाजिक आर्थिक, लाभ के लिये बनाता है और समाज में थोपता है। इसलिये व्यक्ति को भविष्यवक्ताओं के पास जाने के बजाय अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिये। इसी में अपना, समाज और देश का विकास निहित है।"

5. सकारात्मक सोच रखें :-

" सकारात्मक सोच हर पल जरूरी है यदि आप सकारात्मक नहीं है तो यकीन मानिये अब तक आप कई बार हार चुके है।"

सकरात्मक सोच वाला व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर सफलता खोज लेता है किसी प्रकार का कार्य उसे कठिन प्रतीत नहीं होता, प्रत्येक चुनौती को स्वीकार करने के लिये तत्पर रहता है और प्रत्येक काम को अलग ढंग से करने की सोचता है। हमेशा यही कहता है बस इतना सा काम है इसे मैं तो बड़ी आसानी से कर सकता हूँ उसके चेहरे पर कभी तनाव नहीं दिखता उसका चेहरा हमेशा खिलता हुआ होता है। एक सकरात्मक सोच का व्यक्ति कहता है -

“ अंबर टूटने लगे, धरा धंसने लगे

नदियां अपनी यौवन में हो, संसार डूबने लगे

गुलशन के घमन में आग लगी हो

खुशबू दागदार होने लगे

मेरी बगिया मुझाने लगे, आशियाना मेरा उजड़ने लगे

सूरज की किरणें मिटने लगे, चारो तरफ अंधेरा छाने लगे

सारी दुनिया मुझे पागल कहने लगे, हर एक ताना बुनने लगे

कदम मेरे लड़खड़ाने लगे, बैशाखी भी असहाय होने लगे

मेरे दिल की धड़कन रुकने लगे, सांसे मेरी थमने लगे

संसार से मेरी अंतिम यात्रा हो, मेरी अर्थी की तैयारी होने लगे

तब भी मुझसे अगर कोई पूछे, अब बता तेरा हौंसला क्या है ?

मैं बोलूँगा, मैं जीतूँगा और जरूर जीतूँगा ”

कहने का तात्पर्य है कि जो व्यक्ति सकरात्मक सोचता है वह सब कुछ खो देने के बाद भी एक चीज कभी नहीं खोता, वह है उसकी हिम्मत, उसका हौंसला, और जिसके पास ये दोनो चीजे होती है वह कभी नहीं हारता। एक बहादुर सैनिक सिर्फ अपनी सकरात्मक सोच और हौंसले के दम पर आगे बढ़कर लड़ता है और जब तक उसके शरीर में प्राण रहते हैं हजारों घाव लगने के बावजूद भी पीछे नहीं हटता हैं। क्योंकि उसका लक्ष्य किसी भी कीमत में अपनी सेना को, अपने देश को विजय दिलाना होता है।

“ दुनिया में उसे कोई नहीं रोक सकता जिसका अपने लक्ष्य के प्रति सकरात्मक नजरियां है। और उसकी कोई मदद नहीं कर सकता जिसका नजरियां गलत है। ”

-थामस जफरसन

6. दिमाग में बर्फ शरीर में आग और मन में प्यास रखें :-

“ जिस व्यक्ति का दिमाग एकाग्र होता है शरीर स्फूर्तीमान होता है मन में उमंगता एवं कुछ कर दिखाने का अरमान होता है वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना रास्ता बना लेता है। ”

-जार्ज वाशिंगटन

दिमाग में बर्फ से मतलब प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने दिमाग को शांत एवं एकाग्रचित रखना, किसी भी प्रकार से विचलित न होकर दिमाग को ठंडा रखते हुये उस परिस्थिति का सामना करना।

शरीर में आग से मतलब अपने आपको हमेशा स्फूर्तीमान बनाकर रखना आलस्य का शरीर के अंदर किसी भी प्रकार से स्थान नहीं होना चाहिये। हमेशा चलायमान रहना चाहिये जैसा कि मैंने पहले भी कहा है एक लम्बी रफ्तार के बाद ब्रेक की जरूरत होती है मगर ब्रेक सिर्फ थकावट दूर करने वाला हो आलस्य पैदा करने वाला न हो। आज का युग प्रतिस्पर्धा वाला युग है कोई भी जगह खाली नहीं है हर जगह प्रतिस्पर्धा है ऐसे समय में जो अपने लक्ष्य की ओर दौड़ता है वही आगे निकलता है इसलिये अगर इंसान को अपना लक्ष्य हासिल करना है तो स्फूर्ति के साथ दौड़ना पड़ेगा। अपने शरीर के अंदर आग पैदा करना पड़ेगा।

मन में प्यास से मतलब - मनुष्य की इच्छा शक्ति से है, बिना इच्छाशक्ति के इंसान एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता है। जिस प्रकार मनुष्य अगर प्यासा होता है तो पानी के लिये बेचैन हो जाता है और उसको तब तक चैन नहीं मिलता जब तक उसकी प्यास नहीं बुझ जाती परन्तु ऐसा नहीं होता कि एक बार प्यास बुझ जाने के बाद प्यास नहीं लगती। एक निश्चित अवधि के बाद इंसान फिर प्यासा हो

जाता है। ठीक इसी प्रकार इंसान को लक्ष्य प्राप्ति की प्यास अपने मन में रखना चाहिये कहने का मतलब अगर इंसान के मन में लक्ष्य प्राप्ति की प्यास मौजूद रहती है तो उसकी यह प्यास उसे बेचैन रखती है और उसके मन में प्रत्येक क्षण लक्ष्य की प्राप्ति की अजीब सी चाहत बरकरार रहती है और यही चाहत उसके आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करती है।

वॉल ऑफ क्रिकेट के नाम से मशहूर भारतीय क्रिकेटर राहुल द्रविड जब 2005 में क्रिकेटर ऑफ ईयर से सम्मानित हुये उस समय उनसे पूछा गया कि “आपकी सफलता का राज क्या है?” राहुल द्रविड ने कहा ‘जब मैं खेलता हूँ तो दिमाग को फ्रिज में शरीर को हाट ओवन में रखता हूँ साथ ही मन में रनों की प्यास हमेशा महसूस करता हूँ जिसके कारण दुनिया का कोई भी बालर बालिंग कर रहा हो मैं उसे बड़े आसानी से खेलता रहता हूँ’ राहुल द्रविड का यह कथन प्रत्येक इंसान को अपने मन में रखना चाहिये और अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिये।”

7. जिद करो और हद से ज्यादा करो :-

“ जिददीपन का ‘गुण’ जीवन में सफलता प्राप्त करने का एक बहुत बड़ा हथियार होता है क्योंकि सफलता उन्ही के हाथ आई है जिन लोगो ने अपने लक्ष्य प्राप्ति की जिद की है।”

आज के बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश में प्रत्येक व्यक्ति के मन में सफलता की चाहत होती है और इनमें से बहुत से लोग सफल भी होते हैं लेकिन इन सफल व्यक्तियों में 99% लोगो ने अपनी सफलता का श्रेय एक जूनून या जिद की ओर इंगित किया है। सन् 1996 में जब नेल्सन मंडेला जो दक्षिण अफ्रीका के तात्कालिन राष्ट्रपति थे से पूछा गया कि आप इस मुकाम तक कैसे पहुंचे ? जबकि आप एक अश्वेत थे तब उन्होंने कहा था “बस एक जिद और कुछ भी करने का एक उफनता हुआ जोश।”

वास्तव में जिददी शब्द एक नकरात्मक माना जाता है परन्तु मेरे हिसाब से समाज ‘जिद’ शब्द को चाहे जिस रूप में ले, लेकिन है यह एक प्रकार का उर्जा

स्रोत जो हमारे चेतन मन में मौजूद रहकर हमें लगातार एक प्रकार की ताकत देती है। कहीं न कहीं यह पावर सप्लायर भी है। आइंसटीन को लोग पसंद नहीं करते थे क्योंकि वह जिद्दी किरम के व्यक्ति थे उन्हे अपने सिवाय किसी और की बात अच्छी लगती भी नहीं थी। उनके जीवन की एक घटना, उनके इस गुण को प्रदर्शित करती है जब उन्होंने सापेक्षता का सिद्धांत दिया तो सारी दुनिया उनका विरोध करने लगी, उनके पास एक व्यक्ति दौड़ा दौड़ा आया “ सर आपका पूरी दुनिया में विरोध हो रहा है।” आइंसटीन ने कहा – “ तब तो मैं बिल्कुल सही हूँ क्योंकि अगर मैं गलत होता तो एक व्यक्ति ही मुझे गलत करने के लिये पर्याप्त था।”

‘जिद करना अच्छी बात है क्योंकि बिना जिद के साहस नहीं आता और बिना साहस के जुझारूपन नहीं आता।’

“ अध्यात्मक एवं सामाजिकता के क्षेत्र में तो जिद का अभाव हमारी मदद करता है। परन्तु विज्ञान एवं जिन्दगी के क्षेत्र में जिद का अभाव हमें लचर कमजोर ओर कही न कही हमें आराम पसंद बनाता है।”

परन्तु एक बात गौर करने वाली है जिस प्रकार क्रोध तभी अच्छा होता है जब वह गलत के प्रति किया जाय उसी प्रकार जिद तभी अच्छी होती है जब वह सही के लिये की जाय। बचपन से बच्चों को सिखाया जाता है जिद न करो और यही बात उसके मन में बैठा दी जाती है और वह फिर बड़ा होकर जिद का गलत अर्थ निकालने लगता है परन्तु मैं कहता हूँ जिद करो और इतनी करो कि वह जूनून बनकर बहने लगे। परन्तु एक बात प्रत्येक जिद्दी इंसान को ध्यान रखना चाहिये कि उसकी जिद हमेशा उचित, पवित्र एवं सही हो, जिद ऐसी कदापि न हो जो दूसरो की जिंदगी को तबाह करने के साथ खुद की जिंदगी तबाह कर दें।

1. एक व्यक्ति के अच्छी जिद ।

- ❖ एक प्रतिबद्धता हैं।
- ❖ एक आशा हैं।
- ❖ एक अदृश्य शक्ति हैं।

- ❖ एक दीपक जो घर में रोशनी पैदा करती है।
- ❖ एक दोस्त व रिश्तेदार है।
- ❖ मंजिल तक पहुंचने का रास्ता है।
- ❖ कर्मठ जुझारू व्यक्तित्व का निर्माता है।
- ❖ एक प्रेरणा है जो हमेशा व्यक्ति को उत्साहित करती है।
- ❖ एक कठोर साधना है जो इंसान के भाग्य को बदल देती है।

2. एक व्यक्ति के लिये बुरी जिद :-

- ❖ पतन का कारण है।
- ❖ एक क्रोध है।
- ❖ एक प्रकार की लड़ाई है जो या तो खुद को हानि पहुंचाती है या फिर दूसरों को।
- ❖ अनावश्यक विचार है जो किसी के लिये हितकर नहीं है।
- ❖ सामाजिक, आर्थिक, मानसिक छति का परिचायक है।
- ❖ एक प्रकार की कमजोरी जो हार का कारण बनती है।

ऊपर वर्णित परिणाम अच्छी और बुरी दोनों प्रकार के जिद के परिणाम हैं। यहाँ पर गौर करने वाली बात यह है कि अच्छी जिद अगर एक व्यक्ति द्वारा की जाती है। तो वह ऐतिहासिक परिवर्तन करा देती है परन्तु जो जिद बुरी होती है वह एक व्यक्ति से सिर्फ और सिर्फ विनाशक परिवर्तन ही कराती है। अब आपके उपर है आप किस प्रकार की जिद करते हैं ? आपकी जिद कैसी है ? आप कहें जाना चाहते हैं ?

8. तपने के लिये तैयार रहें :-

जब आप लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं। तब वही से शुरूआत होती है एक अन्देखी अपरिचित जंग की जिसका आपको अभास भी नहीं होता कि ऐसा भी हो सकता है किन्तु ऐसा होता है यह सफल व्यक्तियों का अनुभव रहा है जैसा कि मैंने पहले भी कई बार कहा है कि सफलता कोई बजारू वस्तु नहीं है जिसे मोलभाव

करके खरीदा जा सके बल्कि सफलता वह रत्न है जो हर हाल में बड़ी कीमत चाहती है। जरा विचार करिये एक किसान अगर चाहता है कि उसकी फसल लहलहाती हुई हो और उसके जीवन को खुशहाल बनाने वाली हो, तब उसे क्या करना पड़ेगा? जाहिर है उसको खेत की जुताई करनी पड़ेगी फिर बुवाई और इसके बाद उसमें उचित खाद समय-समय पर पानी एवं देख-रेख करनी पड़ेगी इसके बाद उसकी कटाई और सफाई करनी पड़ेगी तब जाकर फसल घर आयेगी और वह खुशहाल होगा। फसल बोने एवं घर लाने के दर्मियान किसान कितनी बड़ी कीमत चुकाता है इस कीमत का अनुमान शायद आप और हम नहीं लगा सकते इस कीमत को सिर्फ वह किसान ही बता सकता है। कोई भी वस्तु तभी बनती है जब उसे मशीनों से गुजरना पड़ता है। लोहा वांछित आकार तभी लेता है जब उसे गलाया जाता है। कभी आपने सोचा कि नर्मदा नदी में हिन्दु मान्यता के अनुसार शिवलिंग क्यों मिलते हैं ? इसका कारण सिर्फ एक ही है नर्मदा नदी का प्रवाह इतना तेज है कि वहाँ मौजूद पत्थर टोकर खा-खाकर ऐसे रूप में परिवर्तित हो जाते हैं कि वह सामान्य पत्थर न रहकर असामान्य शिवलिंग बनकर पूजे जाते हैं। कहने का तात्पर्य अगर आपको अपना लक्ष्य हासिल करना है तो आपको यथाउचित संघर्ष करना पड़ेगा और तपना भी पड़ेगा, ठोकरे भी खानी पड़ेगी। 'वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये संघर्ष को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।'

एक बार मिट्टी ने कुम्हार से कहा - "हे ! कुम्हार तुम मुझे ऐसे रूप में परिवर्तित कर दो जिसमें मैं अपने आप में शीतल जल भरकर पुण्य आत्माओं के होठों में लगकर शीतलता प्रदान करूँ।" कुम्हार ने कहा - "हे ! मिट्टी मैं तुझे इस रूप में ढाल दूँगा परन्तु मेरी एक शर्त है।"

मिट्टी ने कहा - "हे ! कुम्हार तुम अपनी शर्त बताओ।" कुम्हार ने कहा - " हे मिट्टी यह तभी संभव है जब तुम गैती की चोट सह सको, पैरो तले रौंदे जाना स्वीकार करों, चकरे पर घूमने को तैयार रहो, आग में तपाने पर आग की तपन को सह सको। मिट्टी मुस्कुराते हुये बोली "हे ! कुम्हार तुम्हारी शर्त मुझे स्वीकार है।"

तब कुम्हार ने उस मिट्टी को सुन्दर घड़े के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस कहानी से यह निष्कर्ष निकलता है कि अगर आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करना है, अगर आपको वांछित कामयाबी हासिल करना है तो लक्ष्य प्राप्ति के दौरान होने वाली प्रत्येक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष परीक्षाओं को पास करना होगा परीक्षायें कठिन भी हो सकती हैं और सरल भी हो सकती हैं परीक्षाओं का स्वरूप कैसा होगा ? यह तो काम शुरू करने के बाद ही पता चलता है परन्तु आपको हरहाल में कठिन से कठिन परीक्षा के लिये तैयार रहना पड़ेगा तभी आप कामयाबी की ओर बढ़ सकेंगे।

9. अपना काम व्यवस्थित करें :-

“ व्यवस्थित होने का मतलब है किसी काम को करने से पहले काम करना ताकि आप जब किसी अन्य काम को करे तो उलझन भरा न हो। ”

- क्रिस्टोफर रॉबिन

लक्ष्य प्राप्ति के लिये जरूरी होता है कि आपका प्रत्येक काम व्यवस्थित हो क्योंकि जो काम व्यवस्थित ढंग से नहीं किया जाता उस काम को पूरा करने में मेहनत ज्यादा किन्तु परिणाम कम मिलता है। साथ ही काम पूरा करने की पूरी प्रक्रिया तनावयुक्त रहती है। कहने का तात्पर्य है कि लक्ष्य प्राप्ति के लिये जो कार्य आपके द्वारा किया जाय वह पूर्णतः बुद्धिसंगत और सुनियोजित हो तभी कार्य बेहतर ढंग से पूरा होता है।

व्यवस्थित होने के मायने :-

- ❖ प्रत्येक काम को नियमित ठीक समय पर करना।
- ❖ अपने लक्ष्य की रूपरेखा तैयार कर उसके लिये जरूरी प्रत्येक वस्तु को क्रमबद्ध सामने रखना।
- ❖ एक काम को पूरा करने के बाद ही दूसरा काम शुरू करना। ऐसा नहीं करना चाहिये कि बीच में ही एक काम को छोड़कर दूसरे काम की शुरुआत कर दें।
- ❖ प्रत्येक दैनिक कार्य की समय सारणी बनाकर रखना और उसमें यथासंभव किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना।

- ❖ प्रत्येक काम को जो आपके लक्ष्य से जुड़ा हो या फिर आपके जीवन के किसी भाग से जुड़ा हो उसे बिना किसी तनाव के रुचिपूर्वक, पूरी क्षमता से क्रमबद्ध पूर्ण करना।
- ❖ अपनी उर्जा, विचार और बुद्धि को सिर्फ अपने लक्ष्य एवं काम पर केन्द्रित रखना।
- ❖ दूसरों के काम पर जबरदस्ती हस्ताक्षेप न करना।
- ❖ अपने प्रत्येक काम की सूची बनाकर उसका विधिवत होमवर्क करना।
- ❖ काम की शुरुआत शून्य से कर अनन्त की ओर ले जाना अर्थात् सरलता से कठिनता की ओर जाना।
- ❖ विद्यार्थियों को विषय सूची के अनुसार महत्वपूर्ण तथ्यों की नोटबुक बनाना और जरूरी विषयों को अलगकर विधिवत क्रमिक अभ्यास करना।

अव्यवस्थित होने से नुकसान :-

“ व्यक्ति का अव्यवस्थित होना ही उसकी असफलता का संकेत होता है। ”

अगर व्यक्ति अपना जीवन अव्यवस्थित तरीके से जीता है तो उसकी सफलता पर हमेशा प्रश्न चिन्ह लगता रहता है और व्यक्ति अपना लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं कर पाता। व्यक्ति अव्यवस्थित रहता है तो -

- ❖ वह हमेशा उलझनों में फंसा रहता है।
- ❖ तनावयुक्त जीवन व्यतीत करता है।
- ❖ मेहनत ज्यादा करता है, परिणाम छोटा पाता है।
- ❖ उसमें मानसिक अस्थिरता आ जाती है, उसके मन में एक बात हमेशा बनी रहती है। ‘मैं कुछ खो रहा हूँ।’
- ❖ उसका प्रत्येक कार्य अपूर्ण रहता है क्योंकि उसका मन बहुआयामी हो जाता है। परिणामस्वरूप उसका मन किसी काम में केन्द्रित नहीं रहता।
- ❖ उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है परिणामस्वरूप उसके पास लक्ष्य

प्राप्ति के समुचित साधन होने के बावजूद भी उसे संसाधनों की कमी महसूस होती है।

❖ अव्यवस्थित जीवन उसको लक्ष्य की ओर तो कभी नहीं ले जाता हां उसे सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक रूप से कमजोर जरूर बनाता है।

❖ अव्यवस्थित जीवन असफलता का द्योतक है।

मैंने ऊपर जितनी बातें लिखी हैं वह एक अव्यवस्थित जीवन का परिचायक है, अव्यवस्थित व्यक्ति चाहे कितना भी निपुण हो। वह हरहाल में हारता है। परन्तु जो व्यक्ति व्यवस्थित होता है वह चाहे कितना भी कमजोर हो एक न एक दिन समाज की प्रथम पंक्ति में जरूर पहुंच जाता है। कुल मिलाकर “व्यवस्थित रहो, व्यवस्थित लड़ो, व्यवस्थित जियो और प्रत्येक हारी हुई बाजी को जीत में परिणित करो।”

10. दृढ़ इच्छाशक्ति रखें :-

“ इच्छाशक्ति अन्तरात्मा से निकली हुई अदृश्य आवाज है जो इंसान को कुछ न कुछ करने के लिये प्रेरित करती है।”

“ हममें शक्ति की कमी नहीं होती बल्कि संकल्प शक्ति की कमी होती है।”

- विक्टर हागो

दृढ़ इच्छाशक्ति इंसान की ऐसी शक्ति होती है जो बड़े बड़े से बड़ा सृजनात्मक काम करवा लेती है, हारी हुई बाजी को जीत में परिवर्तित कर देती है।

दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति हर असंभव कार्य को संभव बना देता है, प्रत्येक जगह अपना रास्ता बना लेता है। दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी महान वैज्ञानिक, महान कवि बन सकता है। सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे व्यक्ति भी संविधान के निर्माता बन सकते हैं। उनकी इच्छा शक्ति कितनी प्रबल थी इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है। जब वह भारत के कानून मंत्री थे उनसे एक पत्रकार ने प्रश्न किया – “अम्बेडकर जी भारत के प्रधानमंत्री पं. नेहरू आराम से इस वक्त सो रहे हैं और

आप रात को दो बजे जग रहे हैं। अम्बेडकर जी ने कहा – जनाब पं. नेहरू जिस जगह पर हैं उनके आस पास मौजूद सारे व्यक्ति जग रहे हैं इसलिये उनको लगता है कि सरा देश जग रहा है मैं जिस स्थान पर हूँ यहाँ के सारे लोग सो रहे हैं इसलिये मुझे लगता है मेरा पूरा देश सो रहा है, इसलिये उनकी हिफाजत के लिये मैं रात रात भर काम करता हूँ। ताकि मेरे देश का प्रत्येक व्यक्ति अपनी हिफाजत करने योग्य हो जाये।

“ आप किसी भी व्यक्ति की दृढ़ संकल्प शक्ति को परास्त नहीं कर सकते, भले ही किसी विशाल सेना को परास्त कर लें।”

- कन्फ्यूशियस

2008 में तीरनदाजी में बीजिंग में इतिहास रचने वाले अभिनव बिन्द्रा जिसने भारत को 56 साल बाद एक मात्र स्वर्ण पदक दिलाया था से पूछा गया – “आप इस मुकाम तक कैसे पहुंचे ?” बिन्द्रा ने कहा – “हमारे मन में एक इच्छा थी मैं अपने देश के लिये कुछ करूँ मेरी यह इच्छा दिन प्रतिदिन दृढ़ होती गयी और मैं अपने अभ्यास को दिन प्रति बढ़ाता गया।”

प्रत्येक व्यक्ति के अंदर इच्छा जागृति होती है, काश मैं ऐसा हो जाऊँ, वैसा हो जाऊँ, मेरे पास भी सब कुछ हो, मैं भी हर मुकाम को प्राप्त करूँ, वगैरह- वगैरह। किन्तु सोचिये क्या इच्छा कर लेने मात्र से कुछ होता है ? बिल्कुल नहीं, यह तभी संभव है जब आप अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ व प्रबल बनाये, वरना ऐसी इच्छा तो दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति करता है और इच्छा करते करते ही दुनिया से चला जाता है।

“जिन इच्छाओं पर आम व्यक्ति नरम होता है कामयाब व्यक्ति उन्ही इच्छाओं पर दृढ़ होता है और जिन इच्छाओं पर आम व्यक्ति दृढ़ होता है कामयाब व्यक्ति उन्ही इच्छाओं पर नरम होता है इसलिये कामयाब व्यक्ति कामयाब होता है। और आम व्यक्ति आम होता है।”

दृढ़ इच्छा शक्ति रखने वाला व्यक्ति अगर असफल होता है तो उसकी इच्छा शक्ति प्रबल ज्वाला की तरह हो जाती है परिणामस्वरूप वह अपनी

असफलता को सफलता में परिवर्तित कर देता है।

“ सफलता, असफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आपके पास कितनी ताकत है, कितना ज्ञान है यह सिर्फ इंसान की इच्छा शक्ति पर निर्भर करती है।”

– बिंस लाम्बार्डी

11. लक्ष्य प्राप्ति के बाद ही जश्न मनायें :-

“ जश्न मनाना बुरी बात नहीं है परन्तु छोटी सी सफलता पा लेने के बाद ही जश्न मना लेना बुरी बात है क्योंकि सफलता अंतहीन है।”

अक्सर देखा जाता है कि इंसान जैसे ही छोटी सी कामयाबी पाता है जश्न मनाना शुरू कर देता है, विकासशील देशों में रहने वाले व्यक्तियों में इस प्रकार का गुण अक्सर देखा जा सकता है, यहाँ पर कई लोग ऐसे भी हैं जो काम शुरू होने से पहले ही जश्न मना लेते हैं, काम की शुरुआत में ही अपने आपको विजयी घोषित करने लगते हैं। वह अपना पूरा मन इसके प्रचार प्रसार में ही केन्द्रित कर देते हैं। परिणामस्वरूप जीती हुई बाजी अपने अहंकार से हार जाते हैं।

मनुष्य को अपने बनते हुये कार्य को देखकर खुशी तो होती है यह मानव का स्वाभाविक गुण होता है, परन्तु अतिखुशी, अतिउत्साह, अतिदुख तीनों ही विनाशक होते हैं क्योंकि इससे मनुष्य अपनी एकाग्रता को खो देता है परिणामस्वरूप अपने लक्ष्य से विचलित होकर लक्ष्य प्राप्ति की अंतिम लड़ाई हार जाता है।

एक बार कुछ दोस्तों ने अपने एक अन्य दोस्त से शर्त लगाया कि अगर तू इस नदी को पार कर गया तो तुझे मन चाहा पुरस्कार दूँगा, चूँकि वह व्यक्ति एक कुशल तैराक था इसलिये नदी में बाढ़ है इस बात को जानते हुये भी शर्त को बिना सोचे समझे स्वीकार कर लिया और नदी में कूद गया, वह किनारे तक पहुंचने ही वाला था कि अचानक उसके मन में जीत के प्रति अतिउत्साह उत्पन्न हो गया और इसके कारण उसका ध्यान नदी के जल स्तर पर न रहकर दोस्तों द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार की ओर चला गया, अचानक नदी का जल स्तर बढ़ गया और वह हमेशा

के लिये हार गया।

जिन्दगी में अक्सर होता है हम जब जीतने वाले होते हैं व लक्ष्य की अंतिम सीढ़ी पर पहुंचने वाले होते हैं तो अतिउत्साह के कारण धीमा चलने लगते हैं और वहीं पर कोई न कोई गलती कर बैठते हैं, जिस गलती का हमें एहसास भी नहीं होता जिसका परिणाम यह होता है कि यह छोटी सी गलती हमें अंतिम पड़ाव में भारी पड़ जाती है और हमारे द्वारा रात दिन की गयी मेहनत सस्ते दामों में खो जाती है। इसलिये **“ व्यक्ति को जश्न तभी मनाना चाहिये जब वह अपने लक्ष्य के केन्द्र बिन्दु पर खड़ा हो।”**

पाँचवा कदम समय का ख्याल रखें

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन एक निश्चित समय के लिये होता है और इसी निश्चित समय में ही उसे दुनिया की सारी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं साथ ही इसी निश्चित समयावधि में ही अपने आपको भी समाज के बीच सिद्ध करना पड़ता है।

समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता वह अपनी गति से बढ़ता रहता है उसे फर्क नहीं पड़ता कौन बीमार है ? कौन मजबूर ? कौन तैयार नहीं ? घड़ी का कांटा किसी का गुलाम नहीं होता वह तो सिर्फ बढ़ता है, और बढ़ता जाता है जिसको उसके साथ चलना हो चले वरना सोता रहे।

समय एक प्रवाहमयी नदी की धारा के समान है जो सिर्फ बहती है यहाँ तक किनारों को भी छोड़ती हुई चली जाती है और फिर कभी वापस नहीं आती, समाज में अक्सर सुनने को मिलता है अरे एक दिन में क्या हो जायेगा ? एक दिन काम में नहीं जाओगे तो कौन सा पहाड़ टूट जायेगा ? ऐसे लोगो की बात सुनकर हमें हंसी भी आती है और गुस्सा भी क्योंकि एक दिन में तो 24 घंटे होते हैं अरे जीवन में एक सेकण्ड भी मायने रखता है अरे एक सेकण्ड का महत्व पूछना हो तो उससे जाकर पूछो जो जीवन और मौत के बीच जूझ रहा हो, उस विद्यार्थी से जाकर पूछो जो पूरे एक वर्ष पढ़ाई करता है और परीक्षा के एक सेकण्ड पहले उसका एक्सीडेंट हो जाता है उस व्यापारी से जाकर पूछो जिसके माल डिलिवरी के एक सेकण्ड पहले उसके गोदाम में आग लग जाती है।

एक बार की एक घटना है एक व्यक्ति बहुत बीमार था। उसके पास दवाई करवाने के लिये पैसे नहीं थे वह अस्पताल में अपने जीवन के आखिरी दिन काट रहा था क्योंकि उसे अब बचने की उम्मीद नहीं थी। मगर उसका बेटा अपने पिता को बचाने के लिये हर संभव कोशिश कर रहा था। किसी प्रकार से उसने दवाई के लिये पैसे जुटा लिये और आवश्यक दवाई खरीदकर अस्पताल जा रहा था तभी

उसे रास्ते में दोस्त मिल गया। वह अपने दोस्त से बातें करने लगा और इस दर्मियान उसने पाँच मिनट खो दिये जैसे ही वह अस्पताल पहुँचा उसके पिता की मृत्यु हो गयी। डाक्टर ने कहा - “अगर यह दवाई दो सेकण्ड पहले आ जाती तो इसकी जिंदगी बचाई जा सकती थी। डॉक्टर की यह बात सुनकर कि उसके और उसके पिता की जिंदगी के बीच सिर्फ दो सेकण्ड का फासला था उसे बहुत बड़ा सदमा पहुँचा और जीवन भर अपने आपको माँफ नहीं कर सका।”

मेरे कहने का तात्पर्य जीवन में एक एक पल रहस्यमयी होता है, कौन सा पल इंसान को महत्वपूर्ण बना दे और कौन सा पल उसे गिरा दे ? इसलिये इंसान को समय का प्रत्येक पल माला की तरह गूँथ लेना चाहिये न कि छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटकर ढेर बना लेना चाहिये। आज का युग शार्टकट, स्मार्ट वर्क का है जो क्विक एवं परफेक्ट हो इसलिये समय का एक-एक सेकण्ड मायने रखता है ‘महान हस्तियाँ अपने जीवन का प्रत्येक पल जीते हैं इसलिये वह महान कहलाते हैं।’

अगर किसी भी प्रगतिशील सम्पन्न राष्ट्र या व्यक्ति को देखा जाय तो वहाँ सिर्फ एक ही चीज सामने आती है समय का सही उपयोग। लगभग सारे देश 1950 की दशक तक स्वतंत्र हो चुके थे मगर आज भी विकासशील कहलाते हैं। वही 1945 में बुरी तरह से तबाह जापान अपनी उस तबाही से ऊपर उठकर पुनः विकसित राष्ट्र बन गया। चीन में भयंकर क्रांति हुई थी वहाँ की पूरी अर्थव्यवस्था तबाह हो गयी थी परन्तु आज महाशक्तियों में शामिल होने जा रहा है। इसका एक ही कारण है यहाँ के लोगो ने समय का सही उपयोग करते हुये आगे बढ़ते चले गये। जहाँ एक ओर यहाँ के लोग अपने एक दिन के समय का 18 घंटे सृजनात्मक कार्य में लगाते हैं वही विकासशील देशो के व्यक्ति अपने एक दिन के समय का 18 घंटे अनैतिक चीजे सोचने में, करने में, व्यतीत करते हैं। इसी कारण विकसित राष्ट्र अमीर हैं और विकाशील देश गरीब हैं।

समय एक इंसान के लिये क्यों महत्वपूर्ण है ? :-

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है दुनिया की प्रत्येक चीज समय का सही पालन

एवं मेहनत करने वालों को ही प्राप्त होती हैं। समय प्रत्येक व्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण होता है चाहे वह प्रोफेशनल हो, विद्यार्थी हो, व्यापारी हो, या फिर कोई भी काम करने वाला हो। कहा जाता है कि "Prevention is better than cure" इस वाक्य का आशय हमेशा चिकित्सा एवं बीमारियों से लगाया जाता है। लेकिन मैं इस वाक्य का आशय अपने वाले भविष्य से लगाता हूँ मेरे कहने का मतलब अगर वर्तमान समय का सही उपयोग किया जाय तो भविष्य में आने वाली सभी प्रकार की परेशानियों से बचा जा सकता है।

गौर करने वाली बात ये है कि एक दिन में सिर्फ 24 घंटे ही होते हैं और इन्हीं चौबीस घंटों में स्वयं के सारे कार्य भी करने होते हैं और समाजिकता भी निभानी पड़ती है साथ ही कम से कम छः घंटे सोना भी जरूरी है, मनोरंजन भी जरूरी है और हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये ज्यादा से ज्यादा समय की भी जरूरत होती है ऐसे समय में ही हमारी बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की असली परीक्षा होती है जिसने समयोजन कर लिया वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और जो नहीं कर पाता वह आम व्यक्ति का आम व्यक्ति ही बना रहता है।

छणस्य त्यागे कुतो विद्या, अविद्यनस्ये कुतो धनम्।

अधनस्ये कुतो मित्रं, अमित्रस्ये कुतो सुखम् ॥

जो समय का दुरुपयोग करता है उसके पास प्रत्येक चीज की कमी रहती है और जिस व्यक्ति के पास कोई चीज न हो उसका समाज में कोई महत्व नहीं रहता।

आप अपने दैनिक जीवन में अनुभव करना, हो सकता है आपने अनुभव भी किया हो और नहीं किया तो एक बार जरूर करना, अगर आपके पास दौलत, ताकत और ऐश्वर्य है तो समाज का प्रत्येक व्यक्ति आपकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाने की कोशिश करेगा वही दूसरी ओर अगर आप किसी मुश्किल या परेशानी में हैं तो आपके अपने कहे जाने वाले भी आपसे दूर भागेंगे साथ ही आप पर रोब जमाने से भी नहीं चूकेंगे, यही सत्य है अगर विश्वास न हो तो एक बार अपने को, मित्रों को परख लेना। इसलिये मेरी दृष्टि में जो समय आपके पास है उसका दुरुपयोग करने

के बजाय अपने काम में लगाइये इसी में आपकी भलाई है। एक बात और जो मैंने इस समाज से अनुभव किया है जब व्यक्ति अपने समय का सही उपयोग करते हुये आगे बढ़ता है तो अपने आप लोगों की जमघट दिखायी देने लगती है। (ऐसा ज्यादातर विद्यार्थी जीवन में होता है) उस समय जो मित्र होते हैं उनमें से अधिकतर आपके पतन का कारण ही बनते हैं क्योंकि उनकी बाते इतनी ऊंची होती हैं कि आप न चाहकर भी विचलित हो जाते हैं और आप कोई न कोई गलती कर बैठते हैं जो आपकी असफलता के लिये पर्याप्त होती है। इसके बाद आपके पास न ही मित्र बचते हैं और न ही समय।

मैं दोस्ती की, रिश्तों की बुराई कर रहा हूँ, ऐसा किसी भी पाठक को लग सकता है और लगना भी स्वाभाविक है परन्तु मेरे सामने ऐसी तमाम बाते आयी हैं जो या तो मैंने खुद अनुभव की है या फिर किसी अन्य व्यक्ति ने किया है, बिना तथ्य के न मैं लिख रहा हूँ और न ही कल्पना कर रहा हूँ। यहाँ पर मैं एक जीवंत उदाहरण दे रहा हूँ जो हमारी जिंदगी से ही संबंधित है यह उस समय की बात है जब मैं कक्षा - 12 उत्तीर्ण करके पी.एम.टी. कोचिंग के लिये इन्दौर गया था। ईश्वर की कृपा से उस समय मेरे पास ज्यादा तो नहीं फिर भी किसी से कम प्रतिभा नहीं थी। थोड़ी ही समय में मेरे पास मित्रों की विशाल भीड़ हो गयी सभी मेरी इज्जत करते थे। इन मित्रों में मुख्यमंत्री के भतीजे से लेकर एक से एक दौलतमंद लोग थे। मैं भी खुश था क्योंकि शायद मैंने दुनिया नहीं देखी थी। यही से शुरूआत हुई मेरे पतन की कहानी। क्यों? क्योंकि मेरा पूरा समय यही दोस्त खा जाते थे। अंत क्या होना था? वही हुआ जो हर बुरे कर्म का होता है। मेरी छोटी सी गलती एक बहुत बड़ी असफलता को लेकर आ गयी। मेरे प्रिय मित्र जो कल तक आसमान से पताल तक शैर कराने का स्वप्न दिखा रहे थे वह हमेशा हमेशा के लिये विलीन हो गये। और मैं आज तक उस असफलता को नहीं भुला पाया क्योंकि यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी असफलता थी। मैं यह सब बाते एक लेखक बनने के लिये नहीं लिख रहा हूँ मैं उन मध्यवर्गीय लोगों के लिये लिख रहा हूँ जिनमें असीम प्रतिभा होने के बाद भी

कुछ शेष नहीं बचता। जब वह मंजिल के किनारे खड़े होते हैं और किसी कारणवश लड़खड़ाने लगते हैं तो सहारे के लिये कोई नहीं होता ऐसे लोगों को मेरी एक सलाह है - **“ जब आपके पास सहारे के लिये कोई न हो तब स्व:प्रेरणा सबसे बड़ी सहारा होती है। ”**

समय अमूल्य है उसे पहचानियें और उसका उपयोग करिये क्योंकि “ जो व्यक्ति समय से परे जाता है दुनिया उससे परे जाती है। ”

" If you want to every thing than can not keep any depression in your mind and always running behind your aim with your watch without any hagridden"

समय संचित नहीं किया जा सकता :-

समय को कभी भी संचित नहीं किया सकता सिर्फ उसका वर्तमान उपयोग किया जा सकता है, जितना उपयोग किया जाता है उतना हमारे काम आ जाता है बाकी अपनी गति से चला जाता है। एक बहुत बड़े विचारक ने लिखा है 'दुनिया में सिर्फ दो ही ऐसी सत्य चीजे हैं। जिन्हे किसी भी कीमत में रोका नहीं जा सकता और न ही उन्हें संचित करने के लिये कोई संरक्षित क्षेत्र बनाया जा सकता एक 'समय' दूसरी 'मृत्यु'।

समय अद्वितीय है :-

समय अद्वितीय है इसका पालन तो प्रकृति को भी करना पड़ता है। सूर्य एक निश्चित समय में डूबता है एक निश्चित समय में उगता है, वर्षा एक निश्चित समय में होती है सारी ऋतुओं का परिवर्तन एक निश्चित समय में होता है। जब कभी प्रकृति समय का पालन नहीं करती तो दुनिया का तारतम्य बिगड़ जाता है। संसार का प्रत्येक जीव व्याकुल हो उठता है। इसलिये जब समय का पालन प्रकृति को करना पड़ता है तो हम इससे कैसे बच सकते हैं ? किसी भी कीमत में हमें समय का पालन करना ही पड़ेगा वरना हमारी जिन्दगी का भी तारतम्य बिगड़ जायेगा। और जब हमारी जिन्दगी का तारतम्य बिगड़ेगा तो हम बेकारी, विभिन्न प्रकार की

बीमारियों से जूझेंगे और हमारा वजूद नष्ट हो जायेगा।

समय का पालन न करने से हम बीमार कैसे होते हैं ? इसका सीधा सा उत्तर है, हमारे सोकर उठने का, खाना खाने का तमाम दैनिक क्रियाओं का कोई कभी निश्चित समय नहीं होता। हम प्रत्येक काम में लापरवाही बरतते हैं और यही लापरवाही हमारी बीमारी एवं बेकौरी का कारण बनती है। एक व्यक्ति जिसका प्रत्येक काम निश्चित होता है और निश्चित समय में पूर्ण भी करता है वह न कभी बीमार होता है और न ही कभी बेकार बैठता है।

बहुचर्चित योगाचार्य रामदेव जी अप्रत्यक्ष रूप से लोगों से समय पालन ही तो करवाते हैं। यहाँ एक प्रश्न उठता है कैसे ? वह योग करने को बोलते हैं और कहते हैं नियमित समय में प्रतिदिन योग करने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है चूंकि वह योगाचार्य हैं इसलिये प्रत्येक व्यक्ति उनकी बात मानने को तैयार हो जाता है और वह योग करने के लिये पूरी दिनचर्या को व्यवस्थित कर लेता है। जिससे तमाम बीमारियों से मुक्त रहता है। इस बात को चिकित्सा विज्ञान भी मानती है कि नियमित दिनचर्या रखने एवं व्यायाम करने से इंसान स्वस्थ रहता है।

समय गुणवान बनाता है :-

जो व्यक्ति समय का पालन करता है। जिसका प्रत्येक कार्य समय पर होता है। वह तमाम प्रकार की शारीरिक, मानसिक, थकावट से दूर रहता है। इसका कारण है जब व्यक्ति अपने सारे कार्य निश्चित समय अवधि में पूर्ण कर लेता है तो उसके पास काम का भार नहीं रहता साथ ही सामाजिकता एवं परिवारिकता के लिये भी उसके पास पर्याप्त समय होता है जिससे वह समाज, परिवार एवं खुद की नजरों में महत्वपूर्ण एवं गुणवान हो जाता है।

अब्राहिम लिंकन, हेनरीफोर्ट, नेल्सन मंडेला जैसे तमाम महापुरुषों के समान दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति बनना चाहता है क्यों ? क्या यह सभी महापुरुष अवतारी फरिस्ते थे ? मेरी दृष्टि में तो नहीं। यह सभी सामान्य व्यक्ति थे परन्तु इन सभी महापुरुषों ने अपनी जिन्दगी का पल-पल जिया है चाहे वह खुद के क्षेत्र में हो या

सामाजिकता के क्षेत्र में हो या फिर अपने लक्ष्य के क्षेत्र में हो। उन्होंने प्रत्येक जगह अपने आपको सिद्ध किया। और अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करायी।

मैंने समाज में कुछ ऐसे लोगों को भी देखा है जो अपने आपको इतना व्यस्त प्रदर्शित करते हैं जैसे दुनिया का सारा भार इन्हीं के कंधों में आ गया हो। हमेशा कहते फिरते हैं मेरी भी इच्छा लोगों से मिलने की, उनसे बात करने की होती है मगर क्या करूँ? मुझे समय ही नहीं मिल पाता। घर का कोई व्यक्ति अगर ऐसे लोगों से कुछ कहता है कि फलौं काम कर लेना तो इनका जबाब होता है तुम्हीं कर लेना मेरे पास समय नहीं है। परन्तु अगर वास्तव में इनकी वास्तविक जिंदगी को देखा जाय तो इनके पास समय ही समय होता है बस इनके पास एक चीज नहीं होती 'सामाजिकता'। वास्तव में ऐसे लोग अपनी आदत से मजबूर होते हैं जो जबरदस्ती अपने आपको महत्वपूर्ण सिद्ध करना चाहते हैं।

मैंने एक बार अपने एक दोस्त से कहा 'यार मुझे बहुत जरूरी काम है अभी तुम खाली हो मुझे वहाँ तक छोड़ दो। उसने कहा - "अभी मेरे पास समय नहीं है, मुझे बहुत सारा काम निपटाना है तुम बस से चले जाओ।" मैंने उस समय उससे कुछ नहीं कहा और चुपचाप चला गया परन्तु वापस लौटने के बाद मैंने देखा जहाँ मैं उसको छोड़कर गया था वही पर चार लोगों के साथ गप्पे मारते हुये बैठा था। मैंने उससे कहा- "तुम्हारा काम निपट गया।" वह मेरी बात सुनकर झोप गया।

कहने का तात्पर्य जिसके पास वास्तव में समय नहीं है अगर वह कहता है कि मेरे पास समय नहीं है तो उसमें कोई बुराई नहीं है मगर जिसके पास गैर जरूरी चीजों के लिये समय है, लेकिन जब एक जरूरतमंद व्यक्ति उसका थोड़ा सा समय माँगता है और वह मना कर देता है तो इसमें बुराई है। इस प्रकार के लोग न ही कभी महत्वपूर्ण बनते और न ही गुणवान। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, कोई भी व्यक्ति अपने आपमें परिपूर्ण नहीं है इसलिये समाज में प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे की जरूरत पड़ती है। आज अगर सामने वाले को हमारी जरूरत है तो कल हमें भी सामने वाले की जरूरत पड़ सकती है मगर यहाँ पर गौर करने वाली बात ये है कि

आज हमारे पास सामने वाले के लिये समय नहीं है तो फिर हम कैसे आशा कर सकते हैं कि हमारी जरूरत के समय सामने वाले के पास समय होगा ही। इसलिये हमें तमाम व्यस्तम् कार्यों के बावजूद भी सामाजिकता के लिये थोड़ा सा समय जरूर निकालना चाहियें। जिससे आप हक के साथ कह सकें कि हाँ मैंने दूसरों के लिये समय दिया है जबकि मेरे पास समय नहीं था।

समय का सही उपयोग कम मेहनत में अधिक काम करवा लेता है :-

इस संसार में प्रकृति ने सबको समान समय दिया है, कोई व्यक्ति किस प्रकार से उस समय का उपयोग करता है। यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है।

एक देश को चलाने वाले व्यक्ति के पास भी 24 घंटे होते हैं, एक मेधावी छात्र के पास भी 24 घंटे हाते हैं और एक असफल छात्र के पास भी 24 घंटे होते हैं। एक उद्योगपति के पास भी 24 घंटे होते हैं, एक मजदूर के पास भी 24 घंटे होते हैं और एक भिखारी के पास भी 24 घंटे होते हैं। ऐसा दुनिया में कोई व्यक्ति नहीं है जो यह शिकायत कर सके कि भगवान ने उस व्यक्ति को ज्यादा समय दिया है और हमें कम समय दिया है। लेकिन फिर भी एक व्यक्ति देश चला रहा है और एक व्यक्ति भीख मांग रहा है। एक छात्र उसी परीक्षा में 99% अंक अर्जित करता है और एक छात्र उत्तीर्ण होने के लिये संघर्ष करता है आखिर ऐसा क्यों? इसका एक ही कारण है 'समय का सही मैनेजमेंट।' एक सफल व्यक्ति जहाँ एक ओर अपने लक्ष्य को प्राथमिकता देता है वही दूसरी ओर असफल व्यक्ति गैर जरूरी अनाप सनाप चीजों को प्राथमिकता देता है इसलिये सभी प्रकार की समानता रखते हुये भी एक व्यक्ति टॉप पर होता है दूसरा फुटपाथ पर।

प्रत्येक काम के लिये समय की जरूरत होती है :-

दुनिया का कोई भी काम हो चाहे वह व्यक्तिगत हो, सामाजिक हो, या फिर पारिवारिक हो हर काम को पूर्ण करने के लिये समय की जरूरत होती है। जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है और आप खुद भी जानते हैं कि एक व्यक्ति के पास एक दिन

में मात्र 24 घंटे होते हैं इन्हीं चौबीस घंटों में हमें सारे काम करने पड़ते हैं। इन्हीं चौबीस घंटों में हम आराम भी करते हैं। दैनिक क्रियाएँ भी करते हैं, मनोरंजन भी करते हैं, जीविका और विकास के कार्य भी करते हैं, और इन्हीं चौबीस घंटों के अंदर हमें सामाजिकता भी निभानी पड़ती है।

समय का सही उपयोग इंसान के दिमाग को ठंडा रखता है :-

जो व्यक्ति समय का महत्व समझता है और उसके अनुरूप चलता है उसके पास किसी प्रकार का तनाव नहीं आ सकता क्योंकि कोई भी इंसान तनाव में तभी रहता है जब उसके कार्य अपूर्ण रहते हैं। कार्य अपूर्ण होने से ही इंसान का मन चिड़चिड़ा होता है। किसी भी इंसान के लिये तनाव व चिड़चिड़ापन किसी भी दृष्टि से सही नहीं रहता है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी बनती है, वह अपने हिस्से के समय का सही उपयोग करें। और तमाम अनावश्यक मानसिक तनाव एवं थकावट से बचकर अपने दिमाग को ठंडा रखें।

समय का सही मैनेजमेंट कैसे करें ? :-

“ कलेन्डर में एक वर्ष में बहुत सारे दिन होते हैं उन दिनों का उपयोग व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है एक व्यक्ति पूरे वर्ष का उपयोग एक सप्ताह के बराबर करता है, वही दूसरा व्यक्ति एक सप्ताह को पूरे वर्ष के बराबर उपयोग कर लेता है। ”

— ‘चार्ल्स रिचर्ड’

“ एक सामान्य व्यक्ति समय को खर्च करने के बारे में सोचता है वही महान व्यक्ति समय का उपयोग करते हुये उसे बचाने के बारे में सोचता है। ”

— अज्ञात

मैंने अभी तक समय के महत्व के बारे में बताया है, अब मैं समय का सही उपयोग किस प्रकार किया जाय ? इस बारे में बताने जा रहा हूँ। लेकिन इस बात को लिखने से पहले मैं एक बात और बताना चाहूँगा। मैं सिर्फ इतना बता सकता हूँ कि आप अपने समय का पूरा उपयोग किस प्रकार कर सकते हैं ? बाकि पालन करना

या न करना आप पर निर्भर करता है क्योंकि पथप्रदर्शक सिर्फ रास्ता बता सकता है चलना तो पथिक को ही पड़ता है।

समय के सही उपयोग के 10 तरीके :-

1. अपने पूरे दिन के कार्यक्रमों की लिस्ट बनाये :-

प्रत्येक निश्चित समय में सोकर उठने के बाद अपनी दैनिक क्रियाओं को पूर्ण करें, थोड़ा व्यायाम करने के बाद कम से कम 15 मिनट शांत बैठकर अपने पूरे दिन का कार्यक्रम निर्धारित करें, कार्यक्रम ऐसा निर्धारित करें जिसमें आपको तनाव महसूस न हो। मानव शरीर कोई स्टील की बनी मशीन नहीं है इसलिये अपने प्रत्येक कार्यक्रमों के बीच थोड़ा सा समय आराम के लिये निकालें जिससे किसी भी काम को करने में थकावट न हो।

2. काम को शुरू करने से पहले उसका विधिवत होमवर्क करें :-

किसी भी बड़ा काम को शुरू करने से पहले उससे संबंधित किताबें पुराने अनुभव के विश्लेषण संबंधित फाइल, प्रेरणादायी प्रसंग, कविताएँ जरूर पढ़ें क्योंकि ये सभी चीजें आपको उर्जा प्रदान करने के साथ साथ काम करने की बारीकियों से रूबरू कराती हैं। इसके बाद अपने काम का होमवर्क करें, पिछली कमियों, अच्छाइयों का विश्लेषण करें और आज का काम किस प्रकार किया जाय कि कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा गुणवत्ता वाला हो इस पर विचार करें। इस प्रक्रिया में आपके 25 से 30 मिनट खर्च हो सकते हैं। लेकिन यह प्रक्रिया आपके कई घंटे बचा सकती है।

3. समय के विभाजन के समय काम की महत्ता को प्राथमिकता दें :-

जब आपके पास एक साथ बहुत सारे काम हों, अधिकांशतः ऐसा होता भी है तब आप अपने कामों को उसकी प्राथमिकता के आधार पर ग्रुप में विभाजित कर लें। उदाहरण के लिये सभी कामों को A,B,C,D ग्रुप में बांट लें।

ए ग्रुप :- इस ग्रुप में ऐसे काम रखें जो बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण हों जैसा कि आपकी

जीविका से संबंधित काम, मीटिंग, आपके स्वास्थ्य से संबंधित काम और अन्य काम जो आपको महत्वपूर्ण लगे। गुप ए के सारे कामों को पहली प्राथमिकता दें।

बी गुप :- इस गुप में ऐसे कार्य रखे जो महत्वपूर्ण तो है परन्तु अगर वर्तमान समय में पूर्ण न भी हो तो भी कोई नुकसान नहीं है। जैसे सामाजिकता से जुड़े कुछ काम या फिर अन्य काम जिसमें आपको लगे कि यह काम कल भी पूरा किया जा सकता है और इसमें खुद का और दूसरों का बहुत बड़ा नुकसान नहीं है।

सी गुप :- इस गुप में ऐसे कामों को प्राथमिकता दें जो महत्वपूर्ण तो है लेकिन न भी पूरे किये जाय तो भी आपके जीवन को प्रभावित नहीं कर सकते हैं जैसे – मनोरंजन, आपके काम से न जुड़े हुये लोगो से मिलना आदि – आदि।

डी. गुप :- इस गुप में ऐसे कामों को प्राथमिकता दे जो हमारे हिसाब से बिल्कुल जरूरी नहीं है मगर आपके हिसाब से महत्वपूर्ण हो सकते हैं। जहाँ तक मेरा विचार है इस गुप के कामों को प्राथमिकता न ही दे तो उचित होगा। जैसे – देर रात पार्टी में जाना, देर रात तक फिल्में देखना, घंटो घंटो तक नेट उपयोग करना, गैर जरूरी कामों के लिये सेल फोन का उपयोग करना अनावश्यक लोगो के साथ बैठना आदि-आदि। जिस प्रकार 24 घंटे के कार्यक्रम को प्राथमिकता के आधार पर प्रत्येक काम के लिये समय का निर्धारण करते हैं उसी प्रकार अपने मुख्य लक्ष्य को कई चरणों में विभाजित कर हर चरण की महत्वतता के आधार पर उसकी प्राथमिकता को तय करले। यह निश्चित करके कौन सा चरण सबसे महत्वपूर्ण है ? उसे पहली प्राथमिकता में रखें। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक चरण का निर्धारण कर लें। ऐसा करने से आप निश्चित रूप से कम से कम समय में अधिक गुणवत्ता वाला काम पूरा कर सकते हैं।

4. अपनी दिनचर्या को निश्चित रखें :-

दिनचर्या का मनुष्य जीवन में बहुत बड़ा महत्व होता है इसलिये हमें अपनी दिनचर्या को निश्चित रखना चाहिये। किसी पर्याप्त कारण के बिना उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना चाहिये। समय पर सोना, समय पर जगना समय पर

नित्य क्रियायें करना हमारी मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य के लिये बहुत महत्वपूर्ण है जैसा कि कहा भी गया है 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' और बिना अच्छे स्वास्थ्य के किसी भी कार्य को करना मुश्किल ही नहीं नमुमकिन है। अब मैं दिनचर्या के उचित समय, का निर्धारण बताने की कोशिश कर रहा हूँ।

सोने का समय और जगने का समय :-

अधिकतम व्यस्त व्यक्ति के लिये :-

सोना – बारह बजे रात्रि तक

जगना – छः बजे सुबह तक

व्यस्त व्यक्ति के लिये :-

सोना – ग्यारह बजे रात्रि तक

जगना – छः बजे सुबह तक

विद्यार्थियों के लिये :-

कक्षा-10 के समकक्ष विद्यार्थियों के लिये :-

सोने का समय – रात्रि 10 बजे तक

जगने का समय – सुबह 5 तक

कक्षा – 11 के उपर के विद्यार्थी :-

सोने का समय – रात्रि 12 बजे तक

जगने का समय – सुबह 6 बजे तक

❖ वैसे इंसान के जगने का सबसे सही समय सुबह 4.9 मिनट सुबह तक बताया गया है जो उचित भी है लेकिन आज कल की भागदौड़ की जिन्दगी में यह संभव नहीं है लेकिन हाँ सूर्योदय के पूर्व जगना सबसे ज्यादा लाभदायक होता है।

❖ दिन में सोने से व्यक्ति को हमेशा बचना चाहिये क्योंकि इससे आलस, सुस्ती उत्पन्न होती है।

❖ घर से निकलने से पहले स्नान करें और हल्का नास्ता ले। साथ ही जो चीज

आपको सबसे ज्यादा पसंद हो उसे देखे व पढ़े व सुने।

- ❖ काम से लौटने के बाद फ्रेश होकर कम से कम दस मिनट शांत बैठे और अपने काम का विश्लेषण करें इसके बाद दूसरा काम प्रारंभ करें। काम में जो कमी रह गयी है उसे सोचकर तनावयुक्त न हो बल्कि उसे दूसरे चरण में पूरा करने के बारे में सोचे।

5. एक स्थान से संबंधित अधिकतर कामों को एक साथ निपटाने की कोशिश करें :-

एक स्थान से संबंधित आपके पास जितने काम हो याददास्त के लिये उनकी लिस्ट बनाये चाहे वह महत्वपूर्ण हो या फिर महत्वपूर्ण न हो, चाहे आज करना जरूरी हो या फिर दो दिन बाद करना जरूरी हो, उस स्थान के सारे काम निपटाकर ही वापस आये। ऐसा करने से आपका समय और मेहनत दोनों बच सकते हैं।

6. ऐसे कार्यों की एक लिस्ट बनाये जो आपकी उपस्थिति के बिना हो सकते हो :-

इंसान के कुछ काम ऐसे भी होते हैं जो उसके न रहने, न जाने पर भी हो सकते हैं, ऐसे काम सेल फोन, ई-मेल या फिर अपने अधिनस्थ कर्मचारी को भेजकर पूरे किये जा सकते हैं।

किसी भी स्थान पर जहाँ घंटों पंक्ति बनाकर खड़ा रहना पड़ता है वहाँ पर जाने से बचे। चूंकि जीवन में इस काम का भी महत्व है इसलिये दस पचास रुपये खर्च कर किसी अन्य व्यक्ति से करा लें।

7. किसी अन्य व्यक्ति से मिलने के पहले उससे संपर्क करें :-

जब आप किसी दूसरे व्यक्ति से मिलने के लिये जा रहे हो उससे संपर्ककर मिलने का समय निश्चित करा ले। तभी उसके पास जाये और जो समय सामने वाले के द्वारा दिया गया है ठीक उसी समय में मिलने की कोशिश करें क्योंकि सामने वाले के पास भी आपके समान ही कई काम हो सकते हैं।

8. 'ना' कहना सीखे :-

अगर आपकी लिस्ट में बहुत सारे काम पूरा करने के लिये बाकी हैं तो आप किसी अन्य व्यक्ति से उसके काम को पूरा करने का वादा न करें और न ही किसी प्रकार का आश्वासन दें। किसी से उतना ही वादा करें। जितना पूरा करने में आपको परेशानी न हो। एक साथ बहुत सारे कामों को पूरा करने की जिम्मेदारी आपके महत्वपूर्ण कार्य को प्रभावित कर सकती है। इसलिये जीवन में 'ना' कहना भी सीखें।

9. लोगो के मिलने का समय निश्चित रखें :-

आप अपनी सुविधा के अनुसार आधा घंटे से एक घंटे तक अन्य लोगो से मिलने का समय निर्धारित करें क्योंकि वक्त बेवक्त समय में लोगो के मिलने से आपका काम प्रभावित हो सकता है। चाहे आपका कर्मचारी हो या दोस्त उससे विनम्रता पूर्वक कहें कि वह इस समय (जो आपके द्वारा निर्धारित किया गया हो) मिले, अगर वह ऐसा नहीं कर सकता तो आप उससे समय ले लीजिये और इंतजार करने को कहिये। मगर आप अपने काम के बीच में न मिले तो ही उचित होगा। काम के समय गैर जरूरी कॉल्स, ई-मेल अटेन्ड न करें। अगर ऐसा करना संभव न हो तो अपना सेलफोन बंद रखें।

महत्वपूर्ण जगह पर बैठने वाले व्यक्ति के पास दो प्रकार के सेल नं. होने चाहिये एक आम व्यक्तियों के लिये, दूसरा उसके महत्वपूर्ण व्यक्तियों के लिये आम व्यक्तियों के लिये उपयोग करने वाले सेलफोन को काम के समय बिल्कुल बंद रखना चाहिये दूसरे प्रकार के सेलफोन को उपयोग में रखे परन्तु जाने पहचाने कॉल्स को ही अटेन्ड करें वो भी काम के एक चरण को खत्म करने के बाद।

विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के दौरान अपना सेलफोन पूरी तरह से बंद रखें क्योंकि पढ़ाई के दौरान ऐसा कोई महत्वपूर्ण कॉल नहीं आ सकता जिसको अटेन्ड न करने से उनका बहुत बड़ा नुकसान हो जायेगा।

10. खाली समय का नाजायज उपयोग न करें :-

- ❖ वैसे किसी भी व्यक्ति के पास खाली समय होता ही नहीं क्योंकि जिंदगी ही इतनी छोटी है और इस छोटी सी जिन्दगी में बहुत सारी जिम्मेदारियां होती हैं जिनको किसी भी कीमत में पूरा करना ही पड़ता है। फिर भी अगर किसी को ऐसा लगता है कि उसके पास खाली समय है तो उसे आप सामाजिकता के क्षेत्र में खर्च कर सकते हैं या किसी अन्य काम में जो आपकी लिस्ट में बहुत दिनों से पेडिंग में पड़ा है।
- ❖ कुछ लोग समाज में ऐसे भी मिलते हैं जो अक्सर कहते रहते हैं मेरा समय नहीं कटता, मैं ऐसे लोगों से कहना चाहूंगा समय काटने की मत सोचो वरना समय आपको काँट देगा।
- ❖ आप खाली समय का उपयोग अपने परिवार, रिश्तेदार अधिनस्थ कर्मचारियों व अपने सहयोगियों के बीच कर सकते हैं।
- ❖ खाली समय में किताबें पढ़ें, प्रेरणादायक वीडियो देखें इससे आपका ज्ञान बढ़ेगा।
- ❖ जिनके पास कोई काम न हो वह अपने परिवार के व्यक्तियों के कामों में ही हाथ बटा लें। इससे आप परिवार की नजरों में भी अच्छे रहेंगे साथ ही आपका समय भी कट जायेगा।

विद्यार्थी अपने समय का उपयोग कैसे करें ? :-

आज का युग प्रतिस्पर्धा वाला युग है, आज के युग में सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण कर लेना बहुत सारी डिग्रियाँ प्राप्त कर लेना काफी नहीं है क्योंकि डिग्रियाँ आपको साक्षर तो बनाती हैं लेकिन महत्वपूर्ण जगह में सिर्फ आपका ज्ञान पहुंचाता है। इसलिये विद्यार्थियों को डिग्रियाँ लेते समय उस डिग्री का पूरा ज्ञान प्राप्त करना चाहिये उसके लिये समय का विधिवत उपयोग एवं उसका मैनेजमेंट करना चाहिये मैं आगे कुछ महत्वपूर्ण नुस्खे बताने जा रहा हूँ जो किसी भी विद्यार्थी के लिये महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

अपनी दिनचर्या नियमित करें :-

जिन विद्यार्थियों के पास पढ़ाई के अलावा अन्य कोई काम नहीं है उन्हें अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये क्योंकि उन्हें सिर्फ पढ़ाई करना है, स्कूल या कालेज जाना है, कोचिंग जाना है। लेकिन जो विद्यार्थी पढ़ाई के साथ साथ अपने परिवार का भी सहयोग करते हैं उन्हें दिनचर्या को थोड़ा व्यवस्थित करने में परेशानी हो सकती है परन्तु मैं एक बात कहना चाहूंगा इस प्रकार के विद्यार्थी ही जिन्दगी के सही मायने सीखते हैं।

अपनी दिनचर्या को नियमित कैसे करें ?

- ❖ सुबह जल्दी सूर्योदय के पहले उठना सीखें।
- ❖ अगले दिन के सारे कार्यक्रम की लिस्ट बना लें।
- ❖ सुबह उठकर नित्य क्रियाओं से निपटकर 15 मिनट व्यायाम करें फिर पिछले दिन के छूटे हुये होमवर्क को पूरा करें और आज कक्षा में क्या पढ़ाया जायेगा? उसको सरसरी निगाहों से देख ले जिससे जब कक्षा में वह अध्याय पढ़ाया जाय तो आपके समझ में आसानी से आ जाये।
- ❖ स्कूल या कॉलेज से लौटने के बाद फ्रेश होकर कम से कम पन्द्रह मिनट शांत भाव से एकांत में बैठें। इसके बाद कक्षा में पढ़ाये गये अध्याय को पढ़ें (अगर आपके पास कोई पारिवारिक काम नहीं है।)
- ❖ शाम को एक घंटा मनोरंजन में दे सकते हैं।
- ❖ मनोरंजन के बाद खाना खाकर अपनी पढ़ाई में जुट जायें।
- ❖ देर रात तक पढ़ने की कोशिश न करें।
- ❖ कम से कम 6 घंटे की पूरी नींद ले।
- ❖ आपके दिनचर्या का प्रत्येक काम निश्चित समय के लिये निर्धारित होना चाहिये। ऐसा करते करते यह आपकी आदत में शामिल हो जायेगा।

24 घंटे का विभाजन (स्कूल व कालेज के छात्रों के लिये) :-

एक घंटा	-	नित्यक्रिया, व्यायाम, भोजन इत्यादि
छः से सात घंटा	-	आराम
एक घंटा से दो घंटा-	-	मनोरंजन
तीन घंटे	-	परिवारिक काम या खुद के काम
छः घंटे	-	स्कूल व कालेज (आने जाने का समय समाहित है)
दो घंटे	-	कोचिंग (आप अगर लेते हैं)

19 घंटे

इन 19 घंटों में प्रतिदिन परिवारिक काम नहीं हो सकते प्रतिदिन स्कूल व कालेज नहीं हो सकता इसलिये इसमें से भी समय निकाला जा सकता है। इस समय का उपयोग आप अपने होमवर्क व रिवीजन में खर्च कर सकते हैं। 19 घंटों का उपयोग करने के बाद आपके पास पाँच घंटे बचते हैं जिनका अगर नियमित उपयोग किया जाय तो किसी भी विद्यार्थी को श्रेष्ठ विद्यार्थी बनने से कोई नहीं रोक सकता। किन्तु एक शर्त है ये पाँच घंटे की पढ़ाई प्रतिदिन हो ऐसा नहीं कि आज पाँच घंटा कल से दो घंटा तीसरे दिन 10 घंटा चौथे दिन एक भी नहीं।

- ❖ पाँच घंटे प्रतिदिन पढ़ाई में उपयोग करें अगर इसके ऊपर आपके अनुसार समय मिलता है तो उसका उपयोग रिवीजन में करें। मगर फालतू में समय बर्बाद न करें।
- ❖ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करने के लिये एक समय सारणी बना ले और उस समय सारणी को ऐसी जगह रखे जहाँ आपके सोकर उठने के बाद आपकी पहली निगाह जाती है।

24 घंटे का विभाजन (प्रतियोगी छात्रों के लिये) :-

एक घंटा	-	नित्यक्रिया, व्यायाम, भोजन इत्यादि
छः घंटे	-	आराम
एक घंटा	-	मनोरंज

एक घंटे	-	परिवारिक या खुद के काम
अधिकतम 4 घंटे	-	कोचिंग (आप अगर लेते हैं)
एक घंटे	-	न्यूज पेपर व न्यूज देखना

14 घंटे

14 घंटे का उपयोग करने के बाद आपके पास 10 घंटे शेष बचते हैं 10 घंटों में अगर हम दो घंटे और काट दे तो हमारे पास 8 घंटे बचते हैं। इन आठ घंटों का अगर नियमित उपयोग किया जाय तो भी आपके चयन को कोई नहीं रोक सकता।

- ❖ प्रतियोगी छात्रों से एक बात कहना चाहूँगा जो मैंने प्रतियोगी परीक्षा में चयनित लोगों के साथ बात करने में अनुभव की अधिकतर व्यक्ति पहले व दूसरे चान्स में सफल नहीं हुये लेकिन निराश नहीं हुये और लगातार नियमित मेहनत करते हुये अपने आपको निखारते हुये चयनित हुये हैं।
- ❖ मैंने 24 घंटों में शेष 10 घंटों में से दो घंटे घटा दिये थे वह दो घंटे हमने आपकी फालतू क्रियाकलापों के लिये नहीं बचाये बल्कि वह दो घंटे मैंने 'ग्रुप डिस्कसन' के लिये बचाया है जो किसी भी व्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण हो सकता है।
- ❖ 'ग्रुप डिस्कसन' खाली कक्षा में मनोरंजन के समय, कोचिंग में या फिर जो समय आपको खाली प्रतीत हो, अपने समकक्ष विद्यार्थी व अपने टीचर से, आपसे संबंधित किसी भी विषय पर कर सकते हैं। मेरा मानना है 'ग्रुप डिस्कशन' ऐसे विषय पर करे जो आपके समझ में न आ रहा हो, व जिसको पढ़ने में आपका मन न लगता हो व जो आपको कठिन प्रतीत होता हो।
- ❖ साक्षात्कार की तैयारी का सबसे अच्छा तरीका 'ग्रुप डिस्कशन' होता है।

पढ़ाई का कमरा व्यवस्थित एवं एकांत रखें :-

जिस प्रकार ईश्वर की पूजा एकांत में की जाती है, पूजा के समय किसी भी प्रकार व्यवधान उचित नहीं होता ठीक उसी प्रकार अध्ययन भी एक पूजा व साधना है इसलिये इसमें भी किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिये। वरना ज्ञान रूपी

देवता (आप जिस रूप में मानते हो) रूठ सकता है। आप जिस प्रकार ईश्वर की पूजा साफ सुथरी जगह में करते हैं। उसी प्रकार विद्या अध्ययन का कमरा भी साफ सुथरा रहना चाहिये। इसका कारण है अगर पढ़ाई का कक्ष साफ सुथरा रहेगा तो आपका मन भी पढ़ाई में लगेगा। इस बात को विज्ञान भी मानता है।

❖ पढ़ाई का कमरा एकांत में क्यों रखना चाहिये ? इसका कारण यह है कि एकांत में कमरा होने से आपकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न नहीं होगा। जिससे आपका बहुत सारा समय बचेगा।

अपनी पढ़ाई की प्राथमिकता निश्चित करें :-

❖ किसी भी विद्यार्थी का पहला काम पढ़ाई होता है। इसलिये अपनी लिस्ट में पहली प्राथमिकता पढ़ाई को दे इसके बाद अन्य कामों को।

❖ अपनी पढ़ाई को A,B,C,D चरणों में बांट लें।

ए चरण – ए चरण को पहली प्राथमिकता दे, इसमें याद करने का विषय रख सकते हैं, कठिन विषय रख सकते हैं, स्कूल व कोचिंग में होने वाले टेस्ट को रख सकते हैं इत्यादि।

बी चरण – स्कूल व कालेज जाना, होमवर्क करना

सी चरण – कोचिंग करना, रिवीजन करना

डी चरण – राइटिंग, ग्रुप डिस्कसन व अन्य काम जो आपके लिस्ट में हो लेकिन आप उसे पूर्ण न कर पाये हो।

इस प्रकार से प्राथमिकता के आधार पर अपनी पढ़ाई का पूरा कार्यक्रम निर्धारित कर सकते हैं।

❖ हमेशा अपनी पढ़ाई की शुरुआत कठिन अध्याय व विषय से करें क्योंकि शुरुआत में आपका दिमाग बड़ी आसानी से उसे समझ सकता है इसका कारण है जब इंसान पढ़ाई शुरू करता है उस समय वह बिल्कुल फ्रेस दिमाग रखता है। एक बात ध्यान रखे सारे काम सरल से कठिन की ओर बढ़ते हुये करें मगर पढ़ाई कठिन से सरल की ओर बढ़ते हुये करें।

अध्ययन के समय सिर्फ अध्ययन करें :-

जो समय आपने पढ़ाई के लिये निर्धारित किया है उस समय किसी अन्य काम को करने की कोशिश न करें और न ही उसके बारे में सोचें।

आपका सेलफोन आपको बार-बार डिस्टर्ब कर सकता है इसलिये उसे बंद रखें। पढ़ाई के समय किसी व्यक्ति से न मिलें और अगर ऐसा न कर सकते हो तो सिर्फ काम की बातकर विनम्रता पूर्वक उससे विदाई लेकर अपने अध्ययन कक्ष में चले जायें।

'ना' कहना सीखें :-

'ना' कहना 'ना' सुनना दोनों ही बातें प्रत्येक व्यक्ति के लिये कठिन हो सकती हैं। लेकिन जिंदगी में कभी-कभी कहना भी पड़ता है और सुनना भी पड़ता है इसलिये व्यक्ति को इसके लिये हमेशा तैयार रहना चाहिये।

अगर आपकी दो दिन बाद परीक्षा शुरू होने जा रही है परीक्षा वार्षिक हो, अर्द्धवार्षिक हो या फिर स्कूल के द्वारा ली जाने वाली किसी भी प्रकार की परीक्षा सभी महत्वपूर्ण होती हैं और आपका दोस्त या संबंधी आपसे आकर कहता है चलो यार आज कहीं घूमकर आते हैं। तो बेसक आपका जबाब 'ना' होना चाहिये चाहे वह परीक्षा महत्वपूर्ण हो व न हो।

अगर आपका होमवर्क पूरा नहीं है अगर उस समय आपसे कोई किसी भी प्रकार की मांग करता है तो आपका जबाब 'ना' होना चाहिये। अगर आप अपनी पढ़ाई के समय 'ना' कहते हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन एक बात ध्यान रखें 'ना' कहे मगर विनम्रता पूर्वक।

स्कूल की खाली कक्षा का सही उपयोग करें :-

स्कूल में जब आपकी कक्षा खाली हो उस खाली समय का उपयोग अपने होमवर्क व डिस्कसन में खर्च करें न कि तर्कविहीन बाद विवाद व किसी अन्य प्रकार की गतिविधि में।

समय-समय पर विषय को दोहराये :-

किसी भी व्यक्ति को अपने ज्ञान को बराबर बनाये रखने के लिये उस विषय में हमेशा जुड़े रहना चाहिये जिस विषय के ज्ञान प्राप्ति के लिये वह प्रयासरत है। उसे हमेशा ताजा करते रहना चाहिये।

इंसान के दिमाग में दो प्रकार की याददास्त केन्द्र होते हैं।

- ❖ शार्ट टर्म मिमोरी
- ❖ लांग टर्म मिमोरी

जब इंसान किसी भी विषय को पढ़ता है व सुनता है वह याद हो जाती है मगर कुछ समय पश्चात (एक दिन व एक सप्ताह बाद) इंसान उस विषय को भूलने लगता है। इसका एक ही कारण है वह विषय शार्ट टर्म मिमोरी में ही रह जाती है किन्तु अगर इस विषय को एक निश्चित समय पश्चात पुनः पढ़ लिया जाय तो इस प्रक्रिया से वह विषय लांग टर्म मिमोरी में चली जाती है और आसानी से नहीं भूलती है।

इसलिये प्रत्येक विद्यार्थी को समय-समय पर अपने विषयों को दोहराते रहना चाहिये इसके लिये सप्ताह में एक दिन निश्चित कर सकते हैं। मेरे हिसाब से सबसे अच्छा दिन रविवार होता है क्योंकि रविवार छुट्टी का दिन होता है रविवार के दिन आपके पास 24 में से 12 घंटे खाली रहते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन करें :-

किसी भी विषय को कम समय में ज्यादा समय तक याद रखने का सबसे अच्छा तरीका तुलनात्मक व काल्पनिक अध्ययन होता है।

तुलनात्मक अध्ययन :- दो या तीन चैप्टर की तुलना कर उसका अध्ययन करे। दोनो चैप्टर्स में देखे कौन सा तथ्य दोनो में समान है और कौन सा तथ्य दोनो में अलग है। जो दोनो में समान हो उसे ध्यान में रखिये और जो तथ्य दोनो में अलग है उसे याद कर लीजिये।

काल्पनिक अध्ययन :- किसी भी तथ्य को किसी वस्तु व किसी उपकरण व किसी व्यक्ति (अगर मानव से संबंधित विषय है) से काल्पनिक तुलना करें इस

प्रक्रिया से उस तथ्य को आसानी से याद रखा जा सकता है।

जो तथ्य बार-बार भूलता हो मगर आपके लिये महत्वपूर्ण है उसको लिखकर अपने अध्ययन कक्ष में, दिवाल व अध्ययन टेबिल में चिपका दें। जिससे वह तथ्य आपकी नजरों में बार-बार आयेगा और आप उसे याद रख पाओगे।

“ पढ़ाई तब करो, जब दूसरे सो रहे हो काम तब करो जब दूसरे घूम रहे हो, जब दूसरे खेलने में अपना समय बिता रहे हों, तब तैयारी करो और सपने तब देखो जब लोग उसे देखने के बारे में सोच रहे हो। ”

– विलियम एडवर्ड

क्या कहता है एक सफल छात्र ? :-

जब मैं एक आई.ए.एस. में सफल छात्र से मिला तो उसका कहना था – ‘मैं सुबह 5 बजे प्रतिदिन सोकर उठता था। नित्य क्रियाओं से फुर्सत होकर 90 मिनट व्यायाम करता था। इसके बाद चाय लेकर आगामी चैप्टर जो कोचिंग में पढ़ाया जाने वाला होता था उसको सरसरी निगाहों से पढ़ता था। फिर स्नानकर नास्ता लेता था। इसके बाद सुबह 8 से 10 बजे कोचिंग करता था। कोचिंग से लौटने के बाद न्यूज पेपर, पत्रिका आदि पढ़ता था।’

- ❖ 12 बजे खाना खाता था और आधा घंटे आराम कर अपनी पढ़ाई में जुट जाता था, कभी-कभी व्यक्तिगत काम होने से थोड़ा सा अपने इस नियम में परिवर्तित करता था। वरना शाम पाँच तक पढ़ता रहता था। सायं 5 बजे चाय नास्ता लेकर 6 से 8 तक कोचिंग चला जाता था।
- ❖ कोचिंग से आकर फ्रेश होता था ओर 15 मिनट आराम करता था। इसके बाद भोजन लेकर रात्रि 12 व 1 बजे तक पढ़ता था।

मैंने पूछा – “आप पढ़ाई का सबसे अच्छा तरीका क्या मानते हैं ? ”

उसने कहा – “महत्वपूर्ण तथ्य व अध्याय की नोटबुक बना लेना चाहिये और उसको समय-समय पर दोहराते रहना चाहिये। समाजिकता के क्षेत्र में कम से कम भाग ले। अपना व्यवहार अपने समकक्ष विद्यार्थियों से रखे बाकि अन्य व्यक्तियों से

हाय हेलो तक सीमित रहे। एक बात और जिस समय आप किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे होते हैं उस समय आपको मानसिक तनाव व हतोत्साहित करने वाले कई लोग मिल सकते हैं उनसे आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है आप सिर्फ पूरी ईमानदारी एवं मेहनत के साथ अपनी पढ़ाई करें। देर हो सकती है परन्तु सफलता जरूर मिलेगी।”

मैने पूछा – “ आप बचपन से मेधावी छात्र थे या सामान्य छात्र।”

उसने (मुस्कुराते हुये) कहा – “ मैने अपनी पढ़ाई गांव की स्कूल से की है मैं हमेशा औसत दर्जे का छात्र था।”

मैने पूछा – “ आपने आई.ए.एस.की तैयारी करना कब से शुरू किया।”

उसने कहा – “जब मैने कालेज में दाखिला लिया उस समय मैने इसके बार में सुना समझा और सोचा और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।”

मैने पूछा – “गुप डिस्कसन का कितना महत्व है ?”

उसने कहा – “गुप डिस्कसन महत्वपूर्ण होता है उससे हमें बारीकियां सीखने को मिलती है लेकिन यह तभी अच्छा होता है जब सामने वाला व्यक्ति होशियार व बुद्धिमान हो, जो अपनी विषय में परिपूर्ण हो व आपके समकक्ष का विद्यार्थी हो हवा में बात करने वालों से डिस्कसन न करें क्योंकि वह किसी भी अच्छी बात को तथ्यहीन बहस की ओर ले जा सकते हैं। इससे आपका समय बर्बाद होगा।”

मैने पूछा – जब आप पढ़ते पढ़ते थक जाते थे तो क्या करते थे ?

उसने कहा (मुस्कुराते हुये) – “जब लक्ष्य सीने पर होता है तो इंसान कभी नहीं थकता बल्कि वह और तेजी से काम करता है। परन्तु हां जब कभी मुझे ऐसा लगता था कि मेरा दिमाग थक चुका है तो मै एतिहासिक सीरियल देखता था, न्यूज सुनता था। फिर कोई पत्रिका उठा लेता था या फिर अपने परिवार के बीच बैठकर बातें कर लेता था या फिर अपने दोस्त के पास चला जाता था जोकि मेरे साथ तैयारी करता था और उससे किसी गंभीर विषय पर चर्चा करने लगता था।”

मैने पूछा – “आप अपने वाली पीढ़ियों से क्या कहेंगे ?”

उसने कहा – “अगर आप अपनी माता की कोख एवं पिता की परवरिश का कर्ज उतारना चाहते हो तो उनकी यह इच्छा कि मेरा बेटा व बेटा प्रथम पंक्ति में बैठे, को पूरी ईमानदारी के साथ कठिन परिश्रम करते हुये जरूर पूरा करना।”

“अंत में मैं इतना कहना चाहूंगा समय का पल-पल उपयोग करो और अपने जीवन को सफल बनाओ।”

एक बात मैने समाज में देखी है लोग किसी भी काम के लिये मुहुर्त निकलवाते हैं, पूछते हैं, कौन सा कार्य ठीक होगा ? कौन सा व्यक्ति मेरा अच्छा सहयोगी होगा? तो मै इस प्रकार के लोगो से एक ही बात कहूंगा “जो काम आत्मा के द्वारा बताया जाय वही सबसे अच्छा कार्य है, जो तुम्हारे साथ है वही सबसे बड़ा सहयोगी है और जो समय वर्तमान में है वही सबसे अच्छा मुहुर्त है। क्योंकि ‘जब जाग जाओ तभी सवेरा होता है।”

अपने बीते हुये कल की समीक्षा करें :-

“ इंसान अनुभव से जल्दी सीखता है, शैक्षणिक योग्यता के मुकाबले व्यवहारिक ज्ञान उसे जिंदगी के सही मायने सिखाता है।”

“ अनुभव से सीख लेने से ज्यादा दुखद सिर्फ एक ही बात होती है वह है अनुभव से कुछ न सीखना है।”

– मैकलीश

दुनिया का हर व्यक्ति कहता है पीछे मुड़कर मत देखो जो बीत गया सो बीत गया अब आगे देखो, मैं भी यही कहता हूँ। मगर मैं सिर्फ ऐसा इसलिये कहता हूँ कि पीछे मुड़कर देख-देख कर उसी असफलता के बारे में मत सोचो बल्कि असफल होने के बाद पुनः खड़े होकर चलो और पीछे मुड़कर जरूर देखो लेकिन असफलता को नहीं बल्कि उस असफलता के लिये जिम्मेदार कारक एवं गलतियों को और उन गलतियों की पुनरावृत्ति भविष्य में मत होने दो।

❖ जरा आप थोड़ी देर के लिये अपने बीते हुये कल पर जाइये और विचार करिये आपने आज तक अपनी बुद्धि ज्ञान एवं कौशल से क्या क्या कीर्तिमान

स्थापित किये है ? और नहीं किये तो क्यों नहीं किये ?

- ❖ आपने आज तक जितने काम किये क्या आपकी इच्छा के अनुसार सफलता मिली है ? और नहीं मिली तो क्यों नहीं मिली ?
- ❖ आपने आज तक कौन कौन सी गलतियाँ की है, और अगर की है तो उसके सुधार के लिये क्या किया है ?
- ❖ आज तक आप गुमनाम की जिन्दगी जी रहे है इसके पीछे क्या कारण है ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर वस्तुतः आपके अन्दर छिपा है बस आपको उन पर थोड़ा विचार करने की जरूरत है ।

“ गलती का अहसास होना ही आदर्श बनने की दिशा में पहला कदम

होता है क्योंकि यही एहसास हमें समुचित सुधार की दिशा में प्रवृत्त करता है और गलतियों को सुधारने से जीवन आदर्श बनता है ।”

जो व्यक्ति सफल होता है उसमें तीन गुण होते है :-

1. वह कभी गलती ही नहीं करता है ।
2. वह दूसरों की गलतियों से सीख ले लेता है ।
3. अपनी पिछली गलती से सीख ले लेता है ।

असफल व्यक्ति में तीन अवगुण होते है -

1. बार-बार गलती करता है ।
2. सिर्फ चाँस लेने के लिये काम करता है ।
3. अपनी असफलता का दोष किसी दूसरे के उपर व ईश्वर के उपर आसानी से मढ़ देता है ।

हम इंसान भी अजीब होते है । अपनी सफलताओं का श्रेय तो हम पूरा लेना चाहते है लेकिन असफलता के भागीदार नहीं बनना चाहते । जब हम जीतते है तो पूरी दुनिया को इसके बारे में बताना चाहते है । स्वाभाविक है कि हम लोगो के मुंह से यह सुनना चाहते है, यही वह शख्स है, जिसने इतना बड़ा काम किया है ।

जब हम असफल होते है अपनी असफलता का श्रेय किसी दूसरे के मत्थे मढ़

देते है । जब समान नहीं बिकता तो सेल्समैन ग्राहको को दोष देते है । अफसरो का तो स्वभाव ही होता है कि गलत काम होने पर अधिनस्थ कर्मचारियों व दूसरे अफसरो को दोषी बताते है । घरेलू समस्याओं के लिये पति अपनी पत्नी को दोष देते है। और पत्नियां अपने पति को ।

यह सच है कि इस जटिल संसार में दूसरे लोग हमें धक्का मारकर गिरा सकते हैं लेकिन ये भी सच है कि ज्यादातर हम खुद ही अपने आपको गिराते है । हम अपनी व्यक्तिगत कमियों व व्यक्तिगत गलतियों के कारण हारते है । अगर हम अपनी गलतियों को स्वीकार करें, पहचाने और उन्हें समझे तो हमारे जीवन की राह काफी हद तक आसान हो जायेगी ।

सफलता के लिये अपने आपको एक टेस्ट ट्यूब में रखकर निष्पक्ष दृष्टि से खुद का व अपनी स्थिति का मूल्यांकन करें अपने आप में विश्लेषण करे कि कहीं आपके अंदर ऐसी कोई कमजोरी तो नहीं है जो बार बार आपकी असफलता का कारण बनती है । अगर ऐसी कोई कमजोरी है तो उसका मूल्यांकन करे और यथासंभव उसे दूर करने की कोशिश करें । क्योंकि जीवन में सुधार की प्रक्रिया सतत् चलती रहती है । एक बात ध्यान रखें अपनी असफलता का दोष दूसरे के उपर लगाकर इंसान कभी सफल नहीं हो सकता । वह सिर्फ समाज की नजरों में दोषमुक्त हो सकता है लेकिन दोष मुक्त तभी तक रह सकता है जब तक लोग उसके बारे में नहीं जानते है ।

एक बात तो बिल्कुल तय है जो व्यक्ति अपनी गलतियों को नहीं देखता वह कभी सुधार की भी नहीं सोच सकता और जब तक कोई, व्यक्ति अपनी पूर्व गलतियों को नहीं सुधारता, वह भविष्य में कभी सफल भी नहीं हो सकता । जब बच्चा बहुत छोटा होता है तो उसे दुनिया की किसी भी चीज के बारे में पता नहीं होता, कौन सी चीज बुरी है कौन सी चीज अच्छी है ? वह बार बार गलती करता है लेकिन उसी गलती को कभी नहीं दोहराता और गलतियां करते करते ही समझदार बन जाता है।

कोई भी प्रयोग एक या दो बार में सफल नहीं होता क्योंकि प्रयोग करने वाला

वैज्ञानिक कहीं न कहीं गलती करता है। लेकिन अपनी इन्हीं गलतियों से सीख लेते लेते एक दिन अपने प्रयोग को सफल बना देता है।

कोई भी सफल व्यापारी अपने व्यापार के शुरूआती दिनों में घाटा उठाता है क्योंकि शुरूआत में वह बहुत सारी गलतियां करता है परन्तु बाद में वही घाटा उठाने वाला व्यक्ति सफल व्यापारी हो जाता है।

सचिन तेन्दुलकर के बारे में कहा जाता है कि जिस शॉट पर वह एक बार आउट हो जाते थे उस शॉट को दोबारा नहीं खेलते थे। कहने का तात्पर्य है कि सफल व्यक्ति हमेशा अपने बीते हुये कल की समीक्षा इसलिये नहीं करते कि उन्हें पिछली असफलता का खेद है बल्कि इसलिये करते हैं कि उन्होंने पिछले दिनों कौन सी गलती की थी और अब उस गलती को कैसे सुधारा जा सकता है ?

जीवन में हमसे कई बार गलतियाँ होती हैं क्योंकि हम कोई फरिस्ते नहीं हैं बल्कि मानव हैं और मानव से ऐसा होना स्वाभाविक भी है लेकिन उसी गलती को बार-बार करना स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता है इसे सिर्फ बेवकूफी ही कहा जा सकता है।

“ मैं मानता हूँ गलतियाँ करना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है परन्तु बार-बार गलतियाँ करना बड़ी बात है ? ”

व्यक्ति का जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है उसकी आयु बढ़ती नहीं बल्कि घटती जाती है एक दिन खोने का मतलब जिंदगी का एक दिन खोना। इसलिये आज से तय कर लीजिये कि हमने जितना पिछला जीवन जिया, जितनी हमने गलतियाँ की हैं, जितनी हममें कमियाँ रही हैं उन सभी को दरकिनार कर अब नये जीवन की शुरूआत करेंगे जितना संभव हो सकेगा कोई गलती नहीं करेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

मेरे पहचान का एक छात्र था उसके पास भगवान की कृपा से बहुत ही अच्छी मिमोरी थी लेकिन वह किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में सफल नहीं हो पा रहा था उसने एक दिन मुझसे अपनी परेशानी को बताया।

मैंने पूछा – “ तुमने पहली बार तैयारी किस प्रकार की ? ”

उसने कहा – “ सुबह उठकर कोचिंग चला जाता था, लौटने के बाद खाना बनाकर खाता था दोपहर में दो तीन घंटे सोता था शाम को फिर कोचिंग चला जाता था लौटकर दोस्तों के साथ घूमने चला जाता था फिर खाना बनाकर खाता था फिर पढ़ाई करता था। ”

मैंने फिर पूछा – “ पिछली बार तुमने कैसी तैयारी की ? ”

उसने कहा – “ पहले के ही समान ” मैं समझ गया और मैंने उसे पूरी दिनचर्या एक कागज में (उसी के समय के अनुसार) बनाकर दी। इस दिनचर्या में मैंने उसके छः घंटे बचा दिये और हिदायत दी दोस्तों के साथ घूमना तुम्हारी कमजोरी है इसे दूर करो, दोपहर में सोना और रात को देर तक जगना तुम्हारी कमी है इसमें सुधार करो साथ ही नियमिति बनो और अगले वर्ष मुझसे जरूर मिलना। वह लड़का अगले वर्ष तो मुझसे नहीं मिला मगर दो वर्ष बाद जरूर मिलने आया लेकिन अब वह छात्र नहीं था और न ही दुखी था बल्कि पुलिस विभाग का डी.एस.पी. था। यहाँ पर ध्यान देने वाली बात यह है कि जब तक उसने अपनी कमियों एवं कमजोरियों के बारे में मूल्यांकन नहीं किया तब तक एक साधारण क्लर्क भी नहीं बन पाया लेकिन जब उसने अपनी सारी कमियों को दूर कर दिया तो महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया।

छठवाँ कदम अनुशासन में रहे

“ अनुशासन इंसान को महान बनाता है ” :-

“इस संसार में जो व्यक्ति अनुशासित व संयमित जीवन जीता है उसके लिये कोई भी कार्य असंभव नहीं होता है, वह प्रत्येक कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण करता है।”

इस दुनिया की सारी व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलाने के लिये प्रकृति द्वारा व खुद मानव (अपने बुजुर्गों) द्वारा कुछ नियम बनाये गये हैं जिनका पालन करना इंसान की जिम्मेदारी है जो व्यक्ति अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करता उसे इंसानों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है फिर महान पुरुषों की श्रेणी तो उस व्यक्ति के लिये बहुत दूर की बात है।

इस दुनिया में जितने भी महापुरुष हुये सभी ने अनुशासन में रहकर ही बड़े बड़े कार्यों को पूर्ण किया है इन्होंने हमेशा संयमित जीवन जिया है और हमेशा मर्यादा में रहे हैं। मैं अक्सर अपने समाज में देखता हूँ लोग नियमों को तोड़कर कितना खुश होते हैं और बड़े गर्व के साथ कहते हैं मैंने आज अमुक काम किया और अमुक व्यक्ति मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाया। मैं इस प्रकार की मानसिकता रखने वाले व्यक्तियों से कहना चाहूँगा “ ठीक है आज आपने एक छोटे से नियम को तोड़कर आये हैं और सामने वाला व्यक्ति आपको बर्दाश्त कर गया लेकिन इसमें आपकी बहादुरी नहीं है बल्कि सामने वाले की बुद्धिमानी है क्योंकि आपके द्वारा तोड़ा गया नियम उसकी दृष्टि में कोई बहुत बड़ा नियम नहीं था और न ही इसमें किसी को नुकसान था अगर इसमें किसी का नुकसान था तो अप्रत्यक्ष रूप से आपका था। जिसका परिणाम भविष्य में आपको कभी भी कही भी मिल सकता है।”

एक बार मैं रेलवे स्टेशन दिल्ली में बैठा था वही मेरे बाजू में एक पत्रकार महोदय और एक सज्जन बैठे थे दोनों में नियम तोड़ने व न तोड़ने से होने वाले फायदे व नुकसान पर गर्मा गर्म बहस चल रही थी। पत्रकार महोदय इस पक्ष में थे कि नियमों

में चलना चाहिये परन्तु दूसरे सज्जन इस पक्ष में थे नियमों में चलकर कोई व्यक्ति कामयाब नहीं हुआ। पत्रकार महोदय का कहना था “नियमों को तोड़कर आप छोटी मोटी कामयाबी हासिल कर सकते हैं कोई बड़ी कामयाबी नहीं जबकि उस सज्जन का कहना था – ‘नियमों में चलकर छोटी मोटी कामयाबी मिलती है बड़ी कामयाबी तो उन्ही को मिलती है जो नियमों को तोड़कर आगे बढ़ते हैं।’ और बहुत सारे तर्कों के माध्यम से वह सज्जन अपनी बात को सिद्ध करने की कोशिश कर रहे थे। मैं काफी देर से उनकी बातें सुन रहा था मुझसे रहा नहीं गया मैंने उस सज्जन से कहा – “भाई साहब अगर आपकी तरह ही संसार का प्रत्येक व्यक्ति मानसिकता रखने लगे तो शायद एक दिन भी नहीं लगे जब दुनिया अस्त व्यस्त हो चुकी होगी और आप अभी नियम तोड़ने की बात कर रहे हैं उस समय आप ही कहोगे नहीं प्रत्येक व्यक्ति को नियम में चलना चाहिये क्योंकि दुनिया में आपसे भी ज्यादा ताकत एवं बुद्धि रखने वाले लाखों लोग हैं जिनके सामने आप असहाय महसूस करोगे।” वह सज्जन बिल्कुल शांत हो गया और पूरी की पूरी बहस वही से समाप्त हो गयी। गौर करने वाली बात यह है कि नियमों में व अनुशासन में चलने से दुनिया का समंजस्य बनने के साथ साथ हमारे जीवन में जीवित रहने का समंजस्य भी बना रहता है और हम कम से कम कठिनाई में अच्छे से अच्छा काम कर सकते हैं और अन्य लोगों की प्रशंसा का पात्र भी बन सकते हैं।

जब हम छोटी उम्र में होते हैं उस समय हमें न अनुशासन के बारे में पता होता और न ही किसी नियम के बारे में क्या बुरा है ? क्या अच्छा है ? कौन सा व्यक्ति सही है ? कौन सा व्यक्ति बुरा है ? हमें क्या करना चाहिये ? क्या नहीं करना चाहिये ? इन सब प्रश्नों के उत्तर हमारे पास नहीं होते हे उस समय हमारे अभिभावकों एवं आसपास के व्यक्तियों की जिम्मेदारी होती है कि हमें इन प्रश्नों के उत्तरों से अवगत कराये। अभिभावकों का कर्तव्य बनता है कि खुद अनुशासित रहे और बच्चों की पहली गलती पर ही उन्हें रोक दे।

एक बार एक व्यक्ति को कोर्ट में सजा सुनायी गयी, उस व्यक्ति ने जज से

कहा - “आप मुझे सजा दे रहे हैं मुझे स्वीकार है मगर आपसे एक प्रार्थना है कि मेरे साथ मेरे मां बाप को भी सजा दें क्योंकि जितना अपराध मेरा है उससे कहीं ज्यादा अपराध मेरे मां बाप का है, जब मैं छोटा था तो मैंने अपने सहपाठी की पिटाई की थी जिसकी शिकायत मेरी टीचर ने मेरे मां बाप से की थी, उस समय मेरे मां बाप ने मेरी टीचर को भला बुरा कहकर भगा दिया था। दूसरी घटना जब मैं स्कूल के अनुशासन की धज्जियाँ उड़ा रहा था तो मेरे पिता जी ने अपने प्रभाव के दम पर मुझे कोई सजा नहीं होने दी ऐसी बहुत सारी घटनायें हैं जब मैंने कही न कही का अनुशासन तोड़ा है और मेरे माता पिता ने इस बारे में मुझसे कभी कुछ नहीं कहा और अगर कभी कुछ कहा भी तो शिकायतकर्ता को कहा। इससे मेरा मनोबल बढ़ता रहा और आज मैंने एक घिनौना अपराध कर डाला। काश ! मेरे माता पिता ने उस समय ही मुझे रोक दिया होता जब मैंने अपने सहपाठी की पिटाई की थी तो आज मैं इस कोर्ट में सजा नहीं सुन रहा होता।”

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्ति को अगर उसकी पहली गलती में ही रोक दिया जाये तो वह भविष्य में कोई गंभीर अपराध नहीं करता है।

माता पिता किसी बालक के प्रथम गुरु होते हैं इसलिये सबसे पहला कर्तव्य उनका बनता है कि वह खुद अनुशासन में रहे। अगर आप जीवन में कुछ करना चाहते हैं तो अनुशासन रहित व्यक्तियों से बराबर दूरियाँ बनाये रखे तभी आप बेहतर जिंदगी के हकदार हो सकते हैं।

अनुशासित व्यक्ति और गैर अनुशासित व्यक्ति में अंतर :-

- ❖ अनुशासित व्यक्ति का जीवन बिलकुल व्यवस्थित होता है गैर अनुशासित व्यक्ति अव्यवस्थित होता है।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति की बातों में दृढ़ता झलकती है गैर अनुशासित व्यक्ति की बातों में दुर्बलता होती है।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति का चेहरा खिलता हुआ दिखायी देता है। गैर अनुशासित व्यक्ति का चेहरा मायूश होता है।

- ❖ अनुशासित व्यक्ति व्यक्तित्ववान होता है गैर अनुशासित व्यक्ति व्यक्तित्व विहीन होता है।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति प्रेरणास्वरूप होता है गैर अनुशासित व्यक्ति की प्रेरणा भी अनुशासन विहीन होती है।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति कहता है मैं इस काम को पूरा करूँगा, गैर अनुशासित व्यक्ति कहता है अगर समयमिला तो मैं इस काम को जरूर करने की कोशिश करूँगा।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति समय का दास नहीं होता है गैर अनुशासित व्यक्ति के पास समय की हमेशा कमी रहती है।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति नियम बनाता है गैर अनुशासित व्यक्ति नियम तोड़ता है।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति प्रत्येक काम को तत्पर्यता से करता है गैर अनुशासित व्यक्ति के पास बहाने एवं तर्क होते हैं।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति के उठने बैठने चलने बाते करने, सोचने में ही प्रतिबद्धता झलकती है जबकि गैर अनुशासित व्यक्ति के सभी क्रियाकलापों में कमजोरी झलकती है।

अनुशासित व्यक्ति महान व्यक्तित्व के साथ महान व्यक्ति पैदा करता है :-

एक बार रूस के एक स्कूल के संचालक मरियम थामसन जो बहुत विद्वान एवं अनुशासित जीवन जीते थे, से मिलने के लिये एक व्यक्ति ने समय मांगा। थामसन ने उसे मिलने के लिये सुबह 8.45 AM का समय दिया। अगले दिन वह व्यक्ति किसी काम से उनके निवास की ओर गया उसने सोचा यहाँ तक आया हूँ तो थामसन जी से मिल लूँ। वह 8 बजे ही उनके घर पहुँच गया किन्तु थामसन जी ने उस व्यक्ति से मिलने के लिये मना कर दिया और 8.45 PM बजे ही आने को कहा।

वह महाशय 8.48 AM में मिलने के लिये पहुँचा तब भी थामसन जी ने यह

कहते हुये वापस कर दिया कि "You are three minute late" और कल आने के लिये कहा। महाशय जी दूसरे दिन बिल्कुल 8.45 AM पर ही मिलने के लिये पहुँचे। थामसन जी ने उन्हें बैठने को कहा उस व्यक्ति ने थामसन जी से बड़े उत्सुक भाव से पूछा "मिस्टर थामसन जब मैं कल आपसे मिलने के लिये आया तो आपने दोनो बार मिलने से क्यों मना कर दिया ? क्या आप किसी विशेष कार्य में व्यस्त थे।"

थामसन ने कहा - "जब तुम सुबह मिलने आये तो मैं कुछ किताबें पढ़ रहा था और जब तुम शाम को मिलने आये तो मैं अपने बच्चों के साथ खेल रहा था।" व्यक्ति - आपकी बातों से लगता है कि आप किसी विशेष कार्य में व्यस्त नहीं थे फिर भी आपने मिलना नहीं चाहा।

थामसन - (बड़े गंभीरता से) - "श्रीमान ! प्रत्येक दिन का मेरा प्रत्येक काम व समय निर्धारित रहता है मैं अपनी इस दिनचर्या के किसी भी काम को छोटा व बड़ा नहीं समझता और न ही आसानी से अव्यवस्थित करता। कृपया आप अपने आने का प्रयोजन बतायें।"

उस व्यक्ति ने बड़े ही आदर पूर्वक झुककर प्रणाम किया और बोला "मिस्टर थामसन अब आप मुझे चलने की इजाजत दीजिये जो मैं यहां लेने आया था वह मुझे मिल गया।"

उस दिन के बाद वह व्यक्ति अपनी जिंदगी को अनुशासित तरीके से जीने लगा और आगे चलकर रूसी क्रांति का पुरोधा लेनिन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मेरे कहने का मतलब व्यक्ति न उँची बातों से और न मजदूरों के समान काम करने से महान बनता बल्कि विनम्रता पूर्वक अनुशासित काम करने से महान बनता है।

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि किस प्रकार से एक अनुशासित व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति का प्रेरणास्त्रोत बनता है और उससे अपने से भी ज्यादा महान कार्य करवा लेता है। अनुशासित व्यक्ति कभी हार नहीं मानता हमेशा आत्मविश्वास से भरा रहता है उसमें परिवर्तन की क्षमता होती है वह प्रत्येक काम अपने ढंग से

आसपास के व्यक्तियों से करा लेता है चाहे सामने वाला व्यक्ति उसके विचारों से सहमत न हो। जो व्यक्ति अनुशासित नहीं होता है लोग उसका अनुशरण नहीं करते। दर असल आत्म अनुशासित संप्रेषित करने वाले व्यक्तियों के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित होते हैं इसका बहुत बढ़िया उदाहरण रूस की एक घटना से देखा जा सकता है जहाँ तख्ता पलटने की कोशिश की गयी थी सेना के टैंकों ने उस सरकारी इमारत को घेर लिया जिसमें राष्ट्रपति बोरोस येल्टसिन और उसके प्रजातंत्र समर्थक थे। शीर्ष सैनिक अधिकारी ने टैंक कमांडर को ओदश दिया कि वह गोलाबारी करे और येल्टसिन को मार दें। जब सेना अपनी जगह तैनात हो गयी तो येल्टसिन इमारत से बाहर निकले एक टैंक पर चढ़े, कमांडर के आँखों में आँखे डाली और प्रजातंत्र के पक्ष में आने का धन्यवाद दिया। बाद में कमांडर ने यह स्वीकार किया कि उसका येल्टसिन का समर्थन करने का कोई इरादा नहीं था परन्तु येल्टसिन इतने नियंत्रित नजर आ रहे थे कि उनके जाने के बाद सैनिकों ने आपस में विचार विमर्श किया और उनका समर्थन करने का फैसला किया एक बात तो बिल्कुल तय है कि परिस्थितियाँ कैसी भी हो सबसे सफल व्यक्तियों में आत्म नियंत्रण और आत्म अनुशासन हमेशा रहता है।

अनुशासित व्यक्ति को अपना परिचय बताने की जरूरत नहीं होती :-

अनुशासित व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति से बताने की जरूरत नहीं होती है कि वह कौन है ? वह जिस व्यक्ति के साथ बातें करता है, बैठता है, उसका परिचय अपने आप हो जाता है अनुशासित व्यक्ति न ही कभी किसी से सम्मान के लिये कहता है और न ही ध्यान देता है कि उसके सामने लोग अपने आप झुकते हैं।

दार्शनिक फीजीसियों एक बार नगर भ्रमण के लिये निकले रास्ते में उनसे एक व्यक्ति मिला उनके चेहरे के तेज को देखकर उस व्यक्ति ने प्रणाम किया और पूछा - "क्या आप कोई महान दार्शनिक हैं ?"

फीजीसियों - "आप मुझे जानते हो, क्या पहले भी मुझसे मिल चुके हो ?"

व्यक्ति - "मैं आपका नाम नहीं जानता और न ही इससे पहले कभी आपसे मिला, मगर आपके हाव भाव एवं बात करने के तरीके से मुझे लगता है आप कोई साधारण पुरुष नहीं हो।"

फीजीसियों मुस्कराये और बोले - "आप बहुत बुद्धिमान इंसान हो।"

व्यक्ति - "महाशय मैं कोई बुद्धिमान इंसान नहीं हूँ मैं अनपढ व्यक्ति हूँ आपको देखकर आपसे बाते कर कोई भी व्यक्ति आपके गणुं के बारे में बता सकता है। कृपया आप बताये आप कौन है ? और इस गुण का राज क्या है ?"

फीजीसियों ने (कुछ देर शांत रहने के बाद) अपना परिचय दिया और अनुशासन की महत्ता का व्याख्यान दिया।

ऐसा माना जाता है कि फीजीसियों ने सिद्धांत एवं नियमों पर आधारित एक पुस्तक लिखी थी जो बाद में फिजिक्स (भौतिकी) के रूप में परिणित हो गई।

आत्म अनुशासन :-

हम उस मालिक व प्रकृति के नियमों, राजा, या किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के नियमों का पालन करने की कोशिश करते हैं क्योंकि हमें पता है कि अगर मालिक व राजा के नियमों का पालन नहीं करूँगा तो किसी मुशीबत में फँस जाऊँगा। स्कूल के नियम नहीं मानूँगा तो पढ़ाई में व्यवधान आयेगा। इस प्रकार के व्यक्ति हम में से 90% होते हैं जो जिन्दगी बिताने के लिये किसी न किसी डर के कारण अनुशासन का पालन करते हैं लेकिन इस प्रकार के अनुशासन को मैं अनुशासन की प्रथम श्रेणी में नहीं रखता। क्योंकि इस प्रकार अनुशासन सिर्फ दिखावा होता है अन्य लोगो की नजरों में अपने आपको प्रदर्शित करने का तरीका होता है आत्म अनुशासन के बिना इस प्रकार का अनुशासन अधूरा है।

जो व्यक्ति सिर्फ लोगो को दिखाने के लिये अनुशासन में रहते हैं कभी न कभी उनकी यह असलियत लोगो के सामने आ ही जाती है तब लोग कहते हैं। जो व्यक्ति बुरा है कम से कम वह लोगो के सामने अपनी बुराई तो स्वीकार करता है परन्तु देखो यह व्यक्ति कितना घटिया है, आज तक बड़ा देवता बना फिरता था

वगैरा वगैरा। समाज में देखा जाता है कि कुछ लोग धर्म के नाम पर शिक्षा के नाम पर किस प्रकार लोगो को बेवकूफ बनाते हैं इन्हे देखकर ऐसा लगता है मानो कितने अनुशासन प्रिय है लेकिन अगर इनके अन्दर तक जाकर देखा जाये तो इनसे अच्छा तो अनुशासन हीन व्यक्ति होता है कम से कम किसी को धोखा तो नहीं देता।

आत्मअनुशासित व्यक्ति अपने जीवन को अच्छी प्रकार से जीने के लिये खुद नियम बनाता है और अपने आत्मनियमों के अनुसार अपने सारे काम पूर्ण करता है। आत्मअनुशासित व्यक्ति प्रकृति व अन्य लोगो द्वारा बनाये गये नियमों के पालन के साथ साथ अन्य लोगो की भावनाओं की कद्र करता है उनको समझता है, उनकी बातों को सुनता है।

आत्म अनुशासित व्यक्ति अपनी जिंदगी को सवांरने के साथ साथ अन्य लोगो की जिन्दगियों को भी सवाँरता है सभी लोगो का प्रेरणास्रोत बनता है और एक आदर्श जिंदगी जीता है।

आत्म अनुशासित व्यक्ति जब तक संसार में रहता है कुछ न कुछ आने वाली पीढ़ियों के लिए रचनात्मक काम करता रहता है और जब इस संसार से जाता है तो लोगो ने आँखो को आँसू देकर जाता है।

परन्तु दुर्भाग्य से हमारा समाज आत्म अनुशासन के बजाय तत्कालिक संतुष्टि चाहता है। चूँकि आत्म अनुशासन से तत्काल सफलता नहीं मिलती और हम तत्काल के चक्कर में आसान राह से आत्मसंतुष्टि कर लेते हैं।

हाइजर हॉवर ने कहा था - " सफलता सस्ते दामों में नहीं मिलती वह हमसे कुर्बानी और त्याग चाहती है।"

जॉन सी मैक्सवेल ने अपनी 'लीडर्स' नामक बुक में लिखा है - आत्मअनुशासन के क्षेत्र में लोग दो चीजों में से एक का चुनाव करते हैं।

1. अनुशासन का दर्द जो त्याग और विकास से उत्पन्न होता है।
2. या फिर पश्चाताप का दर्द जो आसान राह और खोये हुये अवसर से उत्पन्न होता है।

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति इन दोनों में से एक को चुनता है। इस बात पर जेम्स रॉन ने कहा था “अनुशासन का दर्द कुछ औंस होता है जबकि पश्चाताप कई टन भारी होता है।”

मैं मानता हूँ आत्मअनुशासन का पालन करने में थोड़ी कठिनाई आ सकती है लेकिन वह कुछ समय के लिये ही होती है। दुनिया का कोई भी अच्छा काम करने में (चाहे वह काम कितना भी छोटा हो) कठिनाई तो आती है लेकिन मुनष्य की इच्छा शक्ति के सामने सारी कठिनाईयाँ अपने आप दूर होती चली जाती है।

फ्रांस के जनरल ने एक बार अपने सैनिकों से कहा – “हमें तब तक अपने आपको मनुष्य कहलाने का हक नहीं है जब तक कि हम अपने आप में दुनिया की हर मुसीबत पर विजय प्राप्त करने की क्षमता हासिल नहीं कर लेते हैं।”

“ अगर आप चाहते हैं कि मैं कामयाब व्यक्ति बनूँ तो सबसे पहले आत्म अनुशासित बनिये ।”

“ आत्म अनुशासन समाज के उन सभी व्यक्तियों के लिये जरूरी होता है जो चाहते हैं, मैं दुनिया में कुछ रचनात्मक कार्य करूँ, मैं प्रकृति द्वारा प्रदत्त संपूर्ण उपहार का उपभोग करूँ, मैं अन्य लोगों के आत्मीय प्रेम को प्राप्त करूँ ।”

“ जिस व्यक्ति के पास आत्मअनुशासन व आत्म सम्मान नहीं होता वह दुनिया का सबसे गरीब व्यक्ति होता है ।”

-लैबेलिजर

अनुशासित कैसे बनें :-

मैंने ‘समय का ख्याल रखे’ नामक अध्याय में कुछ बातें समझाने की कोशिश की है जो अनुशासित व्यक्ति के जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है और अनुशासन का अहम हिस्सा भी है। अनुशासित बनने के लिये कोई बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं करना है अपितु जो आज तक करते आ रहे हैं उसी में थोड़ा सुधार करना है -

- ❖ अपने चंचल मन को किसी भी प्रकार से स्थिर रखना।
- ❖ इन्द्रियों को नियंत्रित करना।
- ❖ समय के महत्व को समझना एवं उसका सही विभाजन करना।
- ❖ अनुशासित व्यक्ति व महापुरुषों के पद चिन्हों का अनुसरण करना।
- ❖ जिम्मेदारी लेने के लिये हमेशा तैयार रहना।

यह सब कैसे होगा ? इसके लिये सिद्धांत मैं बताता हूँ कोशिश आपको करनी है।

1.अपने आप में नियंत्रण रखे :-

हमारा मन इतना चंचल होता है कि बिना किसी कारण के बैठे-बैठे कहीं से कहीं चला जाता है, हम कोई अन्य काम कर रहे होते हैं और मन कहीं और जाने के लिये बेताब रहता है परिणामस्वरूप हम अपने काम की मुख्य धारा से हट जाते हैं इसलिये हमारा पहला काम किसी भी प्रकार से मन को नियंत्रित करने का होना चाहिये क्योंकि कहा भी जाता है ‘मन के जीते जीत है मन के हारे हार।’

आप अपने वर्तमान काम में अपने मन को इस प्रकार से नियंत्रित कर सकते हैं :-

- ❖ अपने काम के प्रति समर्पित रहे।
- ❖ अपने प्रत्येक काम को पूरा करने में पूरी रूचि दिखायें।
- ❖ जिस काम को आप कर रहे हैं उस काम को इस भावना के साथ करें कि यही वह काम है जो हमें कामयाबी दिलायेगा और ऐसा मौका हमारी जिंदगी में दुबारा नहीं आयेगा।
- ❖ मुझे काम करने का जो मौका मिला है इसमें मुझे सिद्ध करना है कि मुझमें जिम्मेदारी निर्वहन की क्षमता है। इन सब बातों को सोचकर आप अगर कोई काम करते हैं तो मन अपने आप नियंत्रित हो जायेगा और वह आपके काम में आकर स्थिर हो जायेगा।

“ मन को नियंत्रित रखने से हमारी शक्तियाँ एकाग्र हो जाती हैं और हमारे अन्दर कठिन से कठिन काम को करने की उर्जा जागृत हो उठती है और हम

किसी भी काम को सफलता पूर्वक कर लेते है।''

-अज्ञात

इंद्रियों को इस प्रकार रोका जा सकता है - हमारे शरीर में विभिन्न प्रकार की इंद्रियाँ हैं, यह इंद्रियाँ समय समय पर हमें अपने अनुसार काम करने के लिये विवश करती है और हम न चाहते हुये भी उसके अधीन हो जाते है। इंद्रियों के नियंत्रित करने के तरीके -

- ❖ जब भी हमारी इंद्रि किसी अनावश्यक वस्तु व चीज की ओर आकर्षित होने के लिये बाध्य करें तुरंत हमें अपने लक्ष्य को याद कर लेना चाहिये।
- ❖ विचार करे जो चीज हमें आकर्षित कर रही है हम उसे बाद में भी प्राप्त कर सकते है। क्योंकि लक्ष्य प्राप्त कर लेने के बाद प्रत्येक आकर्षक चीज हमसे मिलने के लिये हमारे दरवाजे के सामने बेताब खड़ी रहती है। यह इस संसार का नियम है।
- ❖ जब किसी भी कीमत में अपने आपको नियंत्रित न कर पा रहे हो तब आप अपने ईष्ट का मन में ध्यान करें और उससे मन ही मन प्रार्थना करें, हे ! मालिक मुझे सत्मार्ग की ओर ले चल। वह आपकी जरूर मदद करेगा।
- ❖ अपने माता पिता को दिल से याद करें और उनकी आँखों में आपके लिये देखे गये सपनों को याद करें।
- ❖ लक्ष्य प्राप्ति के बाद मिलने वाले दूरगामी परिणाम एवं उससे मिलने वाले लाभ एवं हानि पर विचार करें और विश्लेषण करें।

उपर लिखी सारी बाते आपकी इंद्रियों को नियंत्रित करने में मदद करेगी।

एक बार जब मनुष्य अपने मन एवं इंद्रियों को अपने बस में कर लेता है तो 50% सफलता प्राप्त कर लेता है फिर उसके आस पास का वातावरण उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाता। किसी भी प्रकार का वाह्य वातावरण उसको प्रभावित नहीं कर पाता। उसकी स्थिति ठीक उसी प्रकार हो जाती है जिस प्रकार कछुआ जब अपने बाहरी कोट का आवरण ढक लेता है तब उसका शरीर पत्थर जैसी कोट के आवरण

से ढक जाता है और फिर उसके शरीर की कोई भी बाहरी चोट प्रभावित नहीं कर पाती और वह प्रत्येक बाहरी चोट से सुरक्षित रहता है।

2. मार्गदर्शक चुने :-

मार्गदर्शक कैसा हो :-

जीवन को सही रास्ते में चलाने के लिये एवं कम समय में अधिकतम कामयाबी हासिल करने के लिये किसी भी व्यक्ति के लिये एक मार्ग दर्शक जरूरी होता है वह मार्गदर्शक किसी भी रूप में हो सकता है। मार्गदर्शक के चुनाव के समय निम्न बातों का ध्यान रखें -

- ❖ मार्गदर्शक शुद्ध आचरण एवं व्यवस्थित जीवन शैली वाला होना चाहिये।
- ❖ मार्गदर्शक की बातों में प्रतिबद्धता झलकती हो।
- ❖ मार्गदर्शक आत्म अनुशासित, बुद्धिमान होने के साथ साथ एक अच्छा इंसान भी हो जो आपकी भावनाओ को समझता हो।
- ❖ जहाँ तक हो सके मार्गदर्शक आपके लक्ष्य क्षेत्र से संबंधित हो और अपने क्षेत्र की प्रथम पंक्ति का व्यक्ति हो।
- ❖ मार्गदर्शक इस बात की पूरी जानकारी रखता हो कि आपके लक्ष्य प्राप्ति में कौन कौन सी कठिनाईयाँ आ सकती है ? किन-किन चीजों की जरूरत पड सकती है कितना समय लग सकता है और कितनी जानकारी की जरूरत पड़ेगी और काम करने का तरीका क्या होना चाहिये ?

मार्गदर्शक व खुद के बीच अहम को न आने दें :-

मार्गदर्शक की बातों व बताये गये सुझाव का पालन करना आपके लिये महत्वपूर्ण है लेकिन साथ ही एक बात हमेशा ध्यान रखें अपने से बड़े व ज्यादा अनुभवशाली व्यक्ति की बातों को भी सुनें व समझें अपने अहम के कारण उसका अपमान न करें वरना आप श्रेष्ठ जिंदगी के हकदार नहीं बन सकेगें चाहे आप कितना भी धन व दौलत कमा लें। धन व दौलत से कोई महान नहीं होता, महान तो सिर्फ अपनी जीवन शैली व श्रेष्ठ व्यक्तित्व से होता हैं।

मेरे कहने का तात्पर्य अपने बड़ों से कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिये क्योंकि उनके पास एक सबसे बड़ी धरोहर होती है वह है 'जीवन का अनुभव' साथ ही उनकी दुआयें व आशीर्वाद जो आपकी जिंदगी में कहीं भी उपयोगी हो सकती है। अपने मार्गदर्शक से कुछ सीखते समय हमेशा अपने आप को खाली रखें अपने ज्ञान को प्रदर्शित न करें अज्ञानी बनकर कुछ सीखें तभी आप सामने वाले से कुछ ले सकेंगे मान लीजियें एक वर्तन है उसमें आप तब तक कोई दूसरी चीज नहीं रख सकते जब तक वह पूर्णतः खाली न हो। हम मनुष्य भी एक वर्तन के समान ही हैं जब तक हम अपने आप में खाली महसूस नहीं करेंगे तब तक हम अन्य चीजों को ग्रहण नहीं कर सकेंगे।

एक व्यक्ति बहुत ही विद्वान और दुनिया के सारे ग्रंथों का ज्ञाता था परन्तु वह दुखी रहता था उसके पास सब कुछ होते हुये भी ईश्वर तक पहुंचाने वाला गुरु नहीं था। एक दिन उसने निर्णय लिया वह अब अपना अधूरा काम पूरा करेगा और वह इस काम को पूरा करने के लिए निकल पड़ा। रास्ते में उसे एक तपस्वी दिखा जो प्रभु की तपस्या में लीन था। उस तपस्वी को देखकर उस व्यक्ति ने निर्णय लिया कि वह अब इन्हीं को अपना गुरु बनायेगा। वह व्यक्ति उस तपस्वी के पास जाकर अपनी इच्छा को जागृति किया।

तपस्वी ने कहा – “बेटा तुम्हारे पास जितना ज्ञान है उस ज्ञान को लिख लाओ।” एक महीने के बाद उस व्यक्ति ने अपने पूरे ज्ञान को लिखकर एक पेटी में रख लाया और तपस्वी के पास रख दिया।

तपस्वी ने कहा – “बेटा मुझे दिखायी कम देता है इसलिये अपने ज्ञान को कुछ कम शब्दों में लिखकर लाओ।”

वह व्यक्ति पन्द्रह दिन बाद अपने पूरे ज्ञान को एक किताब के रूप में लिख लाया। परन्तु तपस्वी ने कहा – “बेटा मैं इसे पढ़ने में सक्षम नहीं हूँ तुम इसे और छोटे भाग में लिखकर लाओ, वह व्यक्ति तपस्वी की बातें सुनकर वापस चला गया और अब वह उस पूरे ज्ञान को सारांश में लिखकर लाया।”

तपस्वी ने कहा – “बेटा मैं बहुत बिमार हूँ तुम जितना जल्दी हो सके अपने ज्ञान को लिखकर बताओ वरना तुम्हारी इच्छा अधूरी रह जायेगी। वह व्यक्ति दौड़कर खाली कागज ही उठा लाया और तपस्वी को दे दिया।”

तपस्वी ने उस व्यक्ति से कहा – “बेटा तू आज से मेरा शिष्य हो गया तू जो चाहता है सब पूरा होगा। मेरा आशीर्वाद एवं दुआयें तेरे साथ रहेगी।”

इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि मार्गदर्शक से कुछ भी सीखते समय अपने अहम को आड़े न आने दें क्योंकि अगर मार्गदर्शक को हम अपने ज्ञान और योग्यता के आधार पर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं तो इससे हम दोनों के बीच का अहम टकरायेगा और हम जो लेना चाहते हैं उसे नहीं ले पायेंगे और न ही मार्गदर्शक हमें कुछ दे पायेगा।

मार्गदर्शक से प्राप्त सीख को तुरंत जीवन में उतारें :-

आप जो भी अपने मार्गदर्शक व गुरु से सीखें उसे तुरंत जीवन में उतारने की कोशिश करें और उसका विश्लेषण कर तुरंत अपने लक्ष्य की ओर बढ़ जायें।

“इंसान तभी सफल हो पाता है जब वह दूसरों से प्राप्त ज्ञान व अनुभव को अपनी वास्तविक जिंदगी में उतारता है।”

अगर वास्तव में आप किसी से कुछ सीख रहे हैं तो उसे बिना देरी किये हुये अपने जीवन में उतारें क्योंकि जो ज्ञान व सीख आप प्राप्त करते हैं उसके लिये समय व पैसा दोनों खर्च करते हैं और साथ ही आपके गुरु व मार्गदर्शक ने भी अपना समय आपके लिये खर्च किया होता है और उसके पास जितनी क्षमता होती है पूरी मेहनत के साथ आपको ज्ञान देने की कोशिश करता है। और अगर आप उस ज्ञान व सीख का सही समय में उपयोग नहीं करते तो सीखना, सिखाना दोनों निरर्थक हो जायेगा।

“जियो ऐसे जैसे कल ही अंत हो, सीखो ऐसे जैसे जीवन अनंत हो”

मार्गदर्शक को एहसास दिलायें कि जो वह सिखा रहा है उसे आप रूचि पूर्वक सीख रहे हैं :-

“मार्गदर्शक की सिखाने की रूचि आपके सीखने की रूचि पर निर्भर करती है।”

अगर आप वास्तव में मार्गदर्शक के बताये गये अनुभव व सीख को रूचिपूर्वक ग्रहण करते हैं तो मार्गदर्शक आपको दुगनी प्रसन्नता एवं क्षमता के साथ अपना ज्ञान देने की कोशिश करेगा और आपकी सफलता के लिये कामना करेगा। क्योंकि न्यूटन का तीसरा नियम वास्तविक जिंदगी में भी लागू होता है। “प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया उसी के बराबर एवं विपरीत दिशा में होती है।”

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार से आप सीखने की कोशिश करेंगे उसी प्रकार मार्गदर्शक आपको सिखाने की कोशिश करेगा जब आप मार्गदर्शक के द्वारा दिये गये ज्ञान का उपयोग कर सफलता प्राप्त करते हैं तो अपने मार्गदर्शक को धन्यवाद जरूर दें आपका ऐसा करना मार्गदर्शक के लिये एक पुरस्कार होता है और खुद का गौरव बढ़ता है।

एक बात हमेशा ध्यान रखें आपके मार्गदर्शक व गुरु की हमेशा इच्छा होती है कि मेरा शिष्य मुझसे ज्यादा उंचाइयों तक पहुंचे और सफलतम व्यक्तियों में शामिल हो। इसलिये आपका धर्म बनता है कि अपने गुरु व मार्गदर्शक से विनम्रता पूर्वक सीखे व पेश आये। उसे एहसास दिलायें कि वह आपकी सफलता का सर्वश्रेष्ठ अस्त्र है व पथप्रदर्शक है एवं आपके लिये महत्वपूर्ण व्यक्ति है।

मार्गदर्शक का सम्मान करें परन्तु भगवान न मानें :-

अपने मार्गदर्शक का सम्मान करें उसकी बातों को अपनी जिंदगी में उतारे परन्तु कभी कभी अपने स्वाविवेक का उपयोग करने की कोशिश करें। हमेशा अपने मार्गदर्शक की बातों और सीख का विश्लेषण करें क्योंकि कभी कभी मार्गदर्शक गलत हो सकता है। ऐसा करने से आपका मानसिक स्तर भी सुधरेगा एवं आपकी स्वनिर्णय की क्षमता भी बढ़ेगी। लेकिन किसी भी हालत में अपने मार्गदर्शक को एहसास न होने दे कि वह गलत है। उसका सम्मान बराबर करें क्योंकि कभी कभी

एक सर्वगुण संपन्न, बुद्धिमान व्यक्ति से भी गलती हो जाती है आखिर वह मार्गदर्शक भी तो इंसान ही है भगवान नहीं है। इसलिये आप भी उसे भगवान न समझे। इसका कारण है अगर आप अपने मार्गदर्शक को भगवान समझने लगेंगे तो आपसे कुछ न कुछ गड़बड़ी हो सकती है। जब आप अपने मार्गदर्शक को भगवान मानने लगते हैं तो उस पर आपका अंधविश्वास हो जाता है परिणामस्वरूप आपको सही गलत के बीच का अंतर पता नहीं चल पाता। एक तरह से आप मार्गदर्शक पर पूर्ण रूप से आश्रित हो जाते हैं और स्व:निर्णय की क्षमता खो देते हैं।

“किसी पर आश्रित होना अपने आपको गुमनाम करना है।”

“किसी पर आश्रित रहना अपने स्वभामिान एवं आत्मसम्मान को जड़ से मिटा देना होता है।”

3. लक्ष्य का होमवर्क करें :-

किसी भी काम के प्रति जिज्ञासा जगाने, अपने मन और इन्द्रियों को लक्ष्य के प्रति समर्पित करने एवं मार्गदर्शक चुनने के बाद अब जो बात सामने आती है वह है लक्ष्य का होमवर्क। यहाँ पर मैं एक बात ध्यान दिला दूँ लक्ष्य के बारे में मैंने विधिवत व्याख्यान ‘तीसरे कदम’ नामक अध्याय में किया है। यहाँ पर मैं सिर्फ लक्ष्य के होमवर्क के बारे में बात करूँगा।

लक्ष्य के होमवर्क से मतलब विधिवत विश्लेषण से है। हमें प्रतिदिन अपने लक्ष्य का होमवर्क करते रहना चाहिये। आपने जो लक्ष्य बनाया है उसे हमेशा सामने रखिये प्रतिदिन उठते ही लक्ष्य को याद करें अपना प्रत्येक छण उस लक्ष्य की प्राप्ति में ही लगाये, हमेशा विचार करें कि क्या आप लक्ष्य प्राप्ति के समीप जा रहे हैं या नहीं। अभी तक लक्ष्य तक पहुंचने के लिये कितना प्रयास किया और कितना प्रयास करना पड़ सकता है? दूसरी बात अगर लक्ष्य के समीप नहीं पहुंच पा रहे तो क्यों नहीं पहुंच पा रहे? इन सभी प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने की कोशिश करें। इन्हे बाहर ढूढ़ने की जरूरत नहीं है इनके उत्तर आपके पास ही हैं।

लक्ष्य के स्वरूप, उसमें लगने वाले समय और संसाधनों की जरूरत के साथ

ही जरूरी संसाधन कहाँ से मिलेंगे ? और कैसे मिलेंगे ? इन सब चीजों का विश्लेषण करना चाहिये और अगर आपको समझ में न आये तो अपने मार्गदर्शक से सलाह ले सकते हैं याद रखे मार्गदर्शक से सलाह ले उसे अपनाने की कोशिश भी करे परन्तु कमजोर न बने, अपने आप से सफलता दूढ़ने की कोशिश करें क्योंकि सफलता का पूरा का पूरा रहस्य आपके अंदर विद्यमान है ।

4. प्लानिंग बनाये :-

(योजनाबद्ध तरीके से काम करें)

‘विजेता नहीं होता है , जो सर्वश्रेष्ठ प्लानर होता है ।’

- लियो हेनरी

किसी भी काम को योजनाबद्ध तरीके से करना बुद्धिमानी कही गयी है अगर व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करना है तो उसके लिये प्लानिंग बहुत जरूरी होती है ।

जीवन का कोई भी काम हो छोटा हो या बड़ा । उसे योजनाबद्ध तरीके से ही करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से काम करने में गलती होने की गुंजाइश न के बराबर रहती है साथ ही कम मेहनत में काम भी आसानी से पूरा होता है । इसलिये लक्ष्य निर्धारित करने के बाद उसकी पूरी प्लानिंग बनाये और फिर उसका अंतिम रूप दें क्योंकि -

" Action without Planning is Fatal

Planning without action is Fruitile"

एक बार एक व्यक्ति चीन के एक महान संत के पास गया और बोला "महाराज । मैं दिन दिन भर मेहनत करता हूँ" लेकिन वांछित कामयाबी नहीं प्राप्त कर पा रहा हूँ कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिये, जिससे मैं कामयाब हो जाऊँ।

संत ने कहा - "बेटा : मैं तुम्हे आशीर्वाद जरूर दूँगा लेकिन तुम्हे इससे पहले मेरा एक काम करना होगा ।"

उस व्यक्ति ने कहा - "भगवन : आदेश करें ।"

संत ने कहा - "आज से दो दिन बाद मुझे नगर भोज का कार्यक्रम रखना है उसकी

तैयारी की पूरी जिम्मेदारी तुम्हारी होगी ।"

वह व्यक्ति पूरी क्षमता से इस काम में लग गया लेकिन तैयारी पूर्ण करने में असफल रहा । तब संत ने अपने एक शिष्य को इस काम की जिम्मेदारी दी । शिष्य ने पूरे कार्यक्रम की तैयारी दिन के आधे पहर में ही पूर्ण कर ली ।

जब भोज का कार्यक्रम संपन्न हो गया तो संत ने उस व्यक्ति को बुलया और कहा - "बेटा : तुम मेहनत करते हो इसमें कोई शक नहीं है परन्तु तुम्हारे काम करने का तरीका सही नहीं है तुम प्रत्येक काम बिना योजना बनाये ही करते हो । इसलिये तुम्हे काम का अंतिम रूप देने में कठिनाई होती है । नगर भोज के कार्यक्रम में तुमने भी काम किया और मेरे शिष्य ने भी किया लेकिन तुम उस काम को डेढ़ दिन में भी नहीं कर सके जबकि मेरे शिष्य ने उसी काम को दिन के आधे पहर में ही कर दिया और अगर देखा जाय तो तुमने शिष्य से ज्यादा मेहनत की है, इसमें कोई शक नहीं है तुम दोनो में अंतर सिर्फ इतना है कि तुमने सिर्फ मेहनत की जबकि उसने एक योजना के साथ मेहनत की ।"

उस व्यक्ति ने कहा - "आज मुझे पता चला कि मैं क्यों हारता था ।" वही व्यक्ति आगे चलकर चीन का सफलतम उद्योगपति बना कहने का तात्पर्य सफल होने के लिये सिर्फ मजदूरों की तरह दिन रात मेहनत की जरूरत नहीं होती बल्कि योजनाबद्ध मेहनत की जरूरत होती है ।

'प्रत्येक काम को योजनाबद्ध तरीके से काम करने वाला व्यक्ति कम समय में कहीं ज्यादा प्राप्त कर लेता है ।'

अपने प्रत्येक काम को एक पूर्व नियोजित योजना बनाकर अंजाम देना चाहिये। व्यक्ति के पास प्रत्येक दिन की योजना होनी चाहिये और प्रत्येक दिन जितना काम किया गया हो उस काम का विश्लेषण करना चाहिये इसके बाद अगले दिन का पूरा प्लान तैयार कर लेना चाहिये ।

प्रत्येक रात में सोने से पहले आने वाले दिन का पूरा प्लान होना जरूरी होता है और पूरी क्षमता के साथ उस योजना पर अमल के लिये प्रतिबद्ध रहना

चाहिये ।

“ सभी कार्यों में सफलता, पूर्व तैयारी पर निर्भर करती है, पूर्व तैयारी के बिना निश्चित रूप से असफलता ही हाथ लगती है ।”

—कन्फ्यूशियस

“ सफलता के लिये सिर्फ प्रतिभा जरूरी नहीं है बल्कि यह भी जरूरी है कि आपके काम करने का तरीका क्या है ?”

—हर्नी डब्लू. लॉग फालो

5. नियमितपन लाये :-

मैंने नियमित शब्द का इस्तेमाल कई बार किया है इसका कारण है नियमित शब्द इंसान की सफलता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है ।

इंसान को लक्ष्य प्राप्त करने के लिये अपने जीवन को नियमित बनाना चाहिये प्रत्येक काम को बिना किसी ठहराव के पूरा करना बुद्धिमानी कहा जाता है । हाँ कभी कभी मैं मानता हूँ कि एक लम्बी स्पीड के बाद थोड़े ब्रेक की जरूरत होती है किन्तु ब्रेक सिर्फ इतना होना चाहिये कि जिससे लक्ष्य प्राप्ति में प्रतिरोध पैदा न हो। नियमित ढंग से किये गये कार्य की पहचान अलग होती है और सफलता प्राप्ति की गुंजाइश पक्की होती है ।

“ कभी भी इंसान काम की अधिकता से नहीं बल्कि उसे बोझ समझकर अनियमित रूप से करने में थकता है ।”

कहने का तात्पर्य जब हम किसी काम को करने के लिये सोचते हैं तो उस काम की अधिकता के बारे में पहले सोच लेते हैं और घबराकर अनियमित रूप से करने लगते हैं परिणाम स्वरूप शारीरिक एवं मानसिक कमजोरी का सामना करते हैं और काम भी बहुत बड़ा महसूस होता है । ऐसे में हमारे मन में एक उलझन सी उत्पन्न हो जाती है काम पूरा होगा या नहीं होगा मन में कई डरावने ख्याल आते हैं। अगर वास्तव में देखा जाय तो जिस काम को हम इतना बड़ा समझते हैं जिसके लिये इतना परेशान रहते हैं वह काम इतना बड़ा होता नहीं है जो पूरा करने योग्य न

हो अगर नियमित ढंग से पूरा किया जाय ।

जब मैं मेडिकल कालेज में पड़ता था उस समय मेरे साथ एक लड़का रहता था । वह बहुत चंचल प्रवृत्ति एवं बतूनी इंसान था । इधर उधर घूमना फिरना उसकी आदत में शामिल था साथ ही एक बहुत बड़े सामाजिक संगठन में भी काम करता था मैं यह सब बाते इसलिये नहीं बता रहा हूँ कि वह बहुत अच्छा काम करता था लेकिन इन सब बुराइयों के बाद उसमें एक बहुत बड़ी अच्छाई थी, जिस अच्छाई के सामने उसकी सारी बुराइयों दब जाती थी । उसकी सबसे बड़ी अच्छाई यह थी कि वह अपने मुख्य काम में हमेशा अक्वल रहता था । वह अपनी पढ़ाई के परिणाम से सबको आश्चर्य चकित रखता था कोई भी व्यक्ति व छात्र उसके इस परिणाम को पचा नहीं पाता था । सभी मानते थे इसके पास असाधारण प्रतिभा है । एक दिन एक जूनियर छात्र उसके पास आया और बोला – “सर ! अब आप जाने वाले है आपकी पढ़ाई पूरी हो गयी है, जाते जाते मुझे भी कुछ गुरुमंत्र दे जाओ ।”

उसने कहा – “अपनी जिंदगी को नियमित कर लो ।”

वह जूनियर छात्र असंतुष्ट भाव से खड़ा रहा तब उसने उसे भांपते हुये कहा – “ बेटा तुम व अन्य लोग मेरे बारे में जैसा सोचते हैं मैं वैसा हूँ नहीं, मैं भी तुम्हारे ही जैसा सामान्य प्रतिभा वाला विद्यार्थी हूँ । हाँ मैं मानता हूँ कि मैं समाज की प्रत्येक गतिविधि में शामिल रहता हूँ, लोगो से मिलना उनसे बाते करना मुझे पसंद है लेकिन जब मैं अपने कमरे में आता हूँ तो सारी दुनिया को अपने कमरे के बाहर छोड़कर आता हूँ और प्रतिदिन नियमित चार घंटे बिना किसी व्यवधान के अपनी पढ़ाई जरूर करता हूँ । बस यही चार घंटे लोगो की नजरों में मुझे असामान्य प्रतिभाशाली बना दिये और लोग मुझे मेधावी छात्र मानने को मजबूर हो गये ।”

इस कहानी से यही निष्कर्ष निकलता है कि अगर इंसान नियमित काम करे तो सामान्य प्रतिभा रखते हुये भी असाधारण काम कर जाता है । प्रत्येक असंभव कार्य को संभव बना लेता है जिसमें उसे किसी भी प्रकार का मानसिक तनाव व उलझन महसूस नहीं होता साथ ही अपने पूरे जीवन में एन्ज्वाय भी करता है ।

6. विनम्रता रखें :-

कहा जाता है - "फलदार वृक्ष की डालिया हमेशा झुक जाती है।" जिंदगी में इंसान को हमेशा "डाउन टू अर्थ" रहना चाहिये जिस प्रकार से पेड़ पर फल लगने से लेकर फल बड़े होने तक पेड़ लगातार झुकता है और अंत में जब पेड़ पूर्णतः फलो से धनवान हो जाता है तो वह अपने आप झुक जाता है उसी प्रकार विद्वान व सफल व्यक्ति भी विनम्र रहता है। विनम्रता सफल अनुशासित व्यक्ति का आभूषण होता है यही विनम्रता सफल व्यक्ति को समाज की नजरों में उंचा उठाती है और आदर्श व्यक्तित्व में शामिल होने का रास्ता प्रशस्त करती है।

वैसे देखा जाय तो दुनिया में बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो पैसा भी कमा लेते हैं, समाज में रूतबा भी कायम कर लेते हैं लेकिन वह आदर्श व्यक्ति कभी नहीं कहलाते जब उनकी इस संसार से विदाई होती है तो लोग आँसू तो बहाते हैं लेकिन वह आँसू दुःख के नहीं अपितु खुशी के आँसू होते हैं।

इंसान के बोलने, चलने, उठने, बैठने से पता चल जाता है कि वह व्यक्ति कितना सफल और विद्वान है। मैं बचपन में एक कहानी पढ़ा करता था।

एक बार मैकल राज्य के राजा शिकार करने के लिये जंगल में गये उनके साथ मंत्री, सेनापति और सिपाही थे तूफान के कारण सभी लोग रास्ता भटक गये जब तूफान थमा तो एक दूसरे को ढूँढते हुये जंगल में इधर उधर भटकने लगे तभी सिपाहियों को एक सन्यासी दिखा सिपाहियों ने उस सन्यासी से पूछा - "बाबा! राज्य की ओर जाने वाला रास्ता कौन सा है?"

सन्यासी ने इशारा किया : कुछ देर पश्चात वहाँ पर सेनापति आया और पूछा - "सन्यासी जी : यहाँ से कोई गुजरा है।"

सन्यासी ने कहा - "हाँ अभी अभी राज्य के कुछ सिपाही राज्य की ओर गये हैं।" सेनापति चला गया।

कुछ देर पश्चात वहाँ राज्य का मंत्री आया और उसने पूछा - "महात्मा जी ! क्या यहाँ से कोई गुजरा है।"

सन्यासी - "हाँ अभी-अभी राज्य के कुछ सिपाही और सेनापति राज्य की ओर जाने वाले मार्ग से गुजरे हैं।"

कुछ देर पश्चात भटकते हुये वहाँ पर राजा आया और वह सन्यासी को देखकर अपने घोड़े से उतरकर उस सन्यासी को प्रणाम किया और पूछा - "संत जी ! कृपाकर मुझे यह बताये कि क्या यहाँ से कोई गुजरा है?"

सन्यासी ने कहा - "हाँ राजन ! कुछ देर पहले यहाँ से राज्य के सिपाही, सेनापति, मंत्री राज्य की ओर गये हैं।" राजा उस सन्यासी को प्रणाम करके आगे बढ़ गया। जब दूसरे दिन राज्य का दरबार लगा तो उस सन्यासी के बारे में जिक्र हुआ तब राजा ने कहा - "वह सन्यासी हम लोगो को पहचाना कैसे ? जबकि वह अंधा था।" राजा ने आदेश दिया - "पूरे सम्मान के साथ उस तपस्वी को राज दरबार में लाया जाय अब वही सन्यासी हमारी जिज्ञासा का समाधान करेंगे।"

जब सन्यासी राज दरबार में आया तो राजा ने विधिवत आदर पूर्वक सन्यासी से अपनी जिज्ञासा के समाधान के लिये प्रार्थना की।

सन्यासी ने कहा - "हे ! राजन जब मेरे पास राज्य के सिपाही आये थे तब उनने जिस भाषा का व वाणी का उपयोग किया उस भाषा में अधिकार तो था पर सहजता नहीं बल्कि रौब था। जब मेरे पास सेनापति जी आये उनकी वाणी में अधिकार के साथ साथ राज्य के राजा की सुरक्षा की चिंता साफ झलक रही थी साथ में सहजता थी।"

"जब मंत्री जी मेरे पास आये तो उनकी भाषा में मधुरता तो थी परन्तु वाणी के शब्दों से राज्यमद झलक रहा था।"

"जब राजन आप आये तो आपका सालीन व्यवहार, वाणी में विनम्रता आदर एवं अधिकार के साथ साथ पूरे राज्य की चिंता साफ दिखायी दे रही थी। इस प्रकार मैंने आप लोगो की बातों के आधार पर आप सबकी पहचान की।"

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि जो जितना महत्वपूर्ण व्यक्ति व नाम वाला व्यक्ति होता है वह उतना ही विनम्र व उतना ही सहज होता है।

जिसके पास जितनी शक्ति होती है वह उतना की सहनशील एवं विनम्र होता है। जिस प्रकार समुन्दर हमेशा शांत होता है और छोटी मोटी नदी व नाले वर्षात का पानी पाकर उफान में रहते हैं।

अनुशासित सफल व्यक्ति समुन्दर की तरह धीर एवं शांत तथा गैर अनुशासित सफल व्यक्ति छोटी नदी व नाले के समान उफान में रहता है।

“विनम्रता सफल अनुशासित व शक्तिशाली व्यक्ति का आभूषण होता है जबकि रौद्र एवं रोष असफल गैर अनुशासित व कमजोर व्यक्ति की आदत होती है।”

असफल व्यक्ति अपनी कमी को छुपाने के लिये क्रोध व झूठ व रौब का सहारा लेता है और ऐसा कर समाज को दिखाना चाहता है कि वह कमजोर, असफल नहीं बल्कि सफल व ताकतवर है जबकि वह खुद की नजरों में असफल व कमजोर व्यक्ति होता है।

7. दूसरों पर उगली उठाने के बजाय अपने आपको देखें :-

अक्सर देखा जाता है कि इंसान अपनी तरफ देखने के बजाय दूसरो पर ज्यादा ध्यान देता है। यह एक औसत मानव का स्वाभाविक गुण होता है। इसी गुण व प्रवृत्ति के कारण वह ऐसा करता है। एक बात हमेशा ध्यान रखे न कभी किसी की बुराई करे और न ही कभी किसी की बुराई सुने और अगर ऐसा संभव न हो तो एक कान से सुने और दूसरे कान से निकाल दे उसी में आपकी और आपके व्यक्तित्व की भलाई है।

एक महान व्यक्ति ने कहा है - “ आप वहाँ देखिये जहाँ आपको जाना है, अन्यथा आप वहाँ चले जायेगे जहाँ आप देख रहे है दूसरो की बुराई करने व सुनने में समय बर्बाद करने के बजाय उस समय का उपयोग अपने आत्म उत्कर्ष में लगायें, जब आप किसी की बुराई करते हैं व सुनते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से अपना व्यक्तित्व खोते हैं।”

एक बात ध्यान रखे जिस व्यक्ति से बुराई करके आप अपनी आत्म संतुष्टि

करते हैं वह व्यक्ति आपका हमेशा दोस्त नहीं रह सकता परिणाम स्वरूप आप उलझनों में तो फंसते ही हैं साथ ही अपने व्यक्तित्व को भी गिराते हैं। वही दूसरी ओर अगर आप किसी की बुराई सुनते हैं और उसमें टिप्पणी करते हैं तब भी वह आपके लिये नुकसानदायक ही हैं क्योंकि जो व्यक्ति दूसरो की बुराई आपसे कर सकता है। वह आपकी बुराई भी दूसरों से कर सकता है। इस प्रकार का व्यक्ति किसी का दोस्त नहीं होता, अगर दोस्त होता भी है तो भी वह अपनी आदत से मजबूर होता है। कहा भी जाता है “व्यक्ति सब कुछ छोड़ सकता है लेकिन अपनी आदत नहीं।”

अगर आप सफल, अनुशासनशील, कामयाब जिंदगी जीना चाहते हैं तो फिर अपने दिमाग को सिर्फ अपने लक्ष्य पर केन्द्रित रखियें। अन्य सभी प्रकार की बातों को भूल जाइयें। सिर्फ अपने काम व आचरण का मूल्यांकन करें किसी अन्य व्यक्ति का मूल्यांकन करने में अपना दिमाग व समय बर्बाद न करें। आप अपने उम्र दृष्टिपात करें और हमेशा सावधान रहे कि कहीं कोई बुराई तो आप पर हावी नहीं हो रही, आप कुछ खो तो नहीं रहे हैं।

मेरे बड़े भाई साहब (विजयशंकर जी) अक्सर कहा करते थे - “ मैं अपनी तुलना अपने आप से करता हूँ लोग मेरी तुलना मेरे परिणाम से करते है।” वास्तव में वह ऐसे थे भी जब तक दुनिया में रहे सफल व अनुशासित जिंदगी जिये। हमेशा अपने आप में खुद की कमी दूढ़ते थे, कभी किसी के ऊपर दोषारोपण नहीं करते थे जब हम लोगो से गलती हो जाती थी तो अपने ऊपर ले लेते थे और जब कोई काम बन जाता था तो पूरा श्रेय हम लोगो को दे देते थे। उनकी प्रत्येक बात में महानता झलकती थी, वह हमारे प्रेरणास्त्रोत रहे उनका साथ तो हमें बहुत कम मिला लेकिन वह आज भी कई लोगो के प्रेरणास्त्रोत है। जब भी लोगो (उनको जानने वाले) के बीच नैतिकता की बात होती है, लोग उनकी मिशाल देते है और आज मैं जो भी हूँ उन्ही की बदौलत हूँ।

अनुशासित जीवन जीने वाला व्यक्ति सिर्फ अपने आपको देखता है अपना

विश्लेषण करता है वह कभी भी किसी के दिल पर लगने वाली बात नहीं करता और न ही दूसरों के दोषों को देखता, कभी भी अपनी कमी को छुपाने के लिये दूसरों पर दोषारोपण नहीं करता क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि “दूसरे व्यक्ति में इतनी क्षमता नहीं होती जो उसका कुछ बिगाड़ सके अगर खुद के इरादे बुलंद हैं।”

प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के मूल्यों का फल भोगता है क्योंकि

“ आप वह है जो आपकी गहन इच्छा है । जैसी आपकी इच्छा है ।

वैसी आपकी आकांक्षा है ,जैसी आपकी आकांक्षा है ।

वैसा आपका कर्म है । जैसा आपका कर्म है वैसा आपका भाग्य है ।”

-अज्ञात

कहने का तात्पर्य यह कि प्रत्येक व्यक्ति को विनम्रता पूर्वक व्यवहार करना चाहिये क्योंकि इस प्रकार के व्यवहार से हानि तो कभी कभी होती है लेकिन लाभ हमेशा होता है ।

“दूसरों की भलाई करना अच्छा है लेकिन अपनी बुराई दूढ़कर उसे दूर करना और भी अच्छा है ।”

8. मन, वचन, कर्म तीनों से दृढ़ रहे :-

इंसान को हमेशा मन, वचन, कर्म तीनों से दृढ़ रहना चाहिये । अगर वह तीनों प्रकार की बातों में से एक में भी कमजोर है तो वह आत्म अनुशासित व्यक्ति कभी नहीं बन पायेगा । क्योंकि व्यक्ति का मन चलायमान, मुंह बचाल व शरीर आलस से युक्त रहता है ।

थोड़ी देर के लिये विचार करिये अगर मन चलायमान रहेगा, मुंह बचाल रहेगा व शरीर आलस से युक्त रहेगा तब हमारी स्थिति क्या होगी, हमारा काम कैसा होगा ? लोगो के बीच हमारा व्यक्तित्व कैसा रहेगा, कौन हम पर भरोसा करेगा? हम अपने आपको समाज में कैसे सिद्ध कर पायेंगे ? आदि-आदि

“मन, वचन और कर्म से जो व्यक्ति संयमित होता है दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति का कृपापात्र व प्रशंसा का पात्र हो जाता है ।” कहने का तात्पर्य मन को नियंत्रित

रखियें, किसी से बात बरते वक्त नपे तुले शब्दों में अपनी बात रखे ऐसा संप्रेषण कभी न करे जिससे बाद में पश्चताना पड़े । किसी से कुछ बोलते समय पूर्णतः विचार करले और फिर बात करें । क्योंकि ‘बन्दूख से निकली गोली और जबान से निकली बोली कभी वापस नहीं आती ।’ कोई भी काम करते वक्त कभी न सोचे ‘चलो हटाओ यार’ ‘बल्कि सोचे’ मैं इस काम को पूर्ण करके ही दम लूँगा ।’

सातवाँ कदम आत्मविश्वासी बने

“ आत्मविश्वास हमारी सफलता के लिये संजीवनी है ”

—अज्ञात

जिस व्यक्ति के पास आत्मविश्वास नहीं होता वह किसी भी कार्य के बारे में टोस निर्णय नहीं ले पाता क्योंकि उसका मन संदेह से भरा रहता है उसे यह विश्वास नहीं होता कि वह जिस काम को करेगा उसमें सफलता प्राप्त होगी। इन्हीं विचारों में उलझकर वह कोई कार्य आरंभ नहीं करता।

जिन्दगी में प्रत्येक क्षण इंसान को आत्मविश्वास बनाये रखना चाहिये। सफलता प्राप्त करने के लिये जितनी जरूरी अन्य गतिविधियां हैं उतना ही जरूरी आत्मविश्वास का होना है। अगर आपको इस जीवन संग्राम में विजयी होना है तो आत्मविश्वास बनाये रखें।

“ आपका सारा ज्ञान, सारी योग्यताएँ, आत्मविश्वास के बिना व्यर्थ है, आत्मविश्वास के अभाव में वह आपका कही भी साथ नहीं दे सकती और न ही आप इनका लाभ उठा सकते ”

आत्मविश्वास की सबसे बड़ी दुश्मन दुविधा होती है :-

दुविधा एकाग्रता को नष्ट करती है और आदमी की शक्ति को बांट देती है। इंसान दुविधा व संशय के कारण खंडित हो जाता है। उसका आधा मन इधर आधा मन उधर रहता है और इधर उधर के चक्कर में सफलता की राह से विचलित हो जाता है।

एक गांव में एक किसान रहता था वह बहुत ही महत्वकांक्षी था वह अपनी महत्वकांक्षा को पूरा करने के लिये हमेशा प्रयासरत रहता था। उसने एक दिन विचार बनाया कि अब वह बेहतर खेती करेगा इसके लिये उसने चेकबंदी के लिये अन्य किसानों से जमीन की अदला बदली की जिस प्रक्रिया में उसने अपनी उपजाऊ

जमीन खो दिया। अब उसके मन में विचार आया इस जमीन की सिंचाई के लिये कुंआँ खुदवा लेते हैं और यहाँ पर एक सुन्दर बगीचा लगाते हैं इससे मेरी आमदनी दो गुनी हो जायेगी उसने वैसा ही किया। और उसने परिणाम भी अच्छे प्राप्त किये।

परन्तु इसी बीच उसको व्यापार के बारे में किसी ने बताया। अब वह व्यापार के बारे में विचार करने लगा और उसने इस काम को अंजाम देने के लिये एक लकड़ी की मील लगवायी और उस काम में पूरी क्षमता के साथ जुट गया। उसका ध्यान अपने इस काम में होने के कारण खेतों की ओर से हट गया परिणामस्वरूप उसका बगीचा उजड़ गया। लेकिन व्यापार बहुत बढ़िया चल रहा था। इसी बीच कुछ लोगों के कहने पर वह राजनीति की दुनिया में प्रवेश कर गया कुछ दिनों तक सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा लेकिन राजनीति तो राजनीति ही होती है वह सियासी दुनिया में इतनी बुरी तरह उलझ गया कि उसका सब कुछ बर्बाद हो गया। उसके पास न बगीचा बचा और न मील बची साथ ही साथ वह कर्ज में भी डूब गया और सारे लोगों की हंसी का पात्र हो गया।

कहने का तात्पर्य है कि इंसान के अन्दर महत्वकांक्षा तो होनी चाहिये जो अच्छी बात है लेकिन उसके साथ आत्मविश्वास होना और भी अच्छी बात है। मैं यह कभी नहीं कहता कि जिंदगी में सिर्फ एक ही काम करें लेकिन मैं ये भी नहीं कहता कि एक काम को बिना परिणाम तक पहुंचाये दूसरा काम शुरू कर दो। जैसा कि किसान ने किया था।

उस किसान ने एक बहुत अच्छी बात थी वह थी महत्वकांक्षा लेकिन उसमें एक बहुत बड़ी कमी थी आत्मविश्वास का न होना अगर उसमें महत्वकांक्षा के साथ आत्मविश्वास भी होता तो शायद वह इतने सारे कामों में से किसी एक काम को पूर्ण करके ही कामयाब व्यक्ति बन सकता था। लेकिन अफसोस वह इधर उधर के चक्कर में फंसकर प्रत्येक जीती हुई बाजी को हारता चला गया।

“ महत्वाकांक्षा ,आत्मज्ञान, आत्मविश्वास और आत्मसंयम केवल यही चार चीजे जीवन को परमशक्ति सम्पन्न बना देते है ।”

-टेनीसन

“ मन जिस समय संदेहग्रस्त होता है वह उस समय निर्माण का कार्य प्रभावशाली ढंग से नहीं कर पाता अतः सर्वप्रथम हमें भय व संदेह का त्याग करना होगा ।”

आत्मविश्वास व्यक्ति को दुगुनी शक्ति प्रदान करता है :-

“दुनिया से हारे हुये व्यक्ति को अगर आत्मविश्वास रूपी दवा दे दी जाय तो वह उसमें मौजूद शक्ति से कही ज्यादा शक्ति से कार्य करने लगता है ।”

महाभारत में कृष्ण ने सबसे बड़ा काम यह किया था, पाण्डवों के मन में आत्मविश्वास पैदा कर दिया था क्योंकि वह अपने कार्य के महत्व के बारे में जानते थे । जिस अर्जुन ने आत्महीनता के कारण अपने हथियारों को त्याग दिया था वही अर्जुन उस आत्म विश्वास के बल पर एक से बढ़कर एक महारथी का बिना किसी प्रकार का नुकसान उठाये बड़ी आसानी से मुकाबला किया ।

जब सुभाषचन्द्र बोस आई.सी.एस. की प्रतियोगिता में बैठे तो एक अधिकारी ने सुभाषचन्द्र बोस से घूमते हुये पंखे की ओर इशारा करके पूछा - “ क्या इसकी पंखुड़िया गिनी जा सकती है ?” सुभाषचन्द्र बोस ने तुरंत पंखा बंद कर दिया और बोले - “जी हां सुगमता पूर्वक ।” परीक्षक प्रसन्न हो गया लेकिन उसने उन्हे एक बार और परखने की कोशिश की और अपनी अंगूठी उनके पास रखकर पूछा - “क्या इसमें से सुभाषचन्द्र बोस निकल सकता है ?” सुभाषचन्द्र बोस ने अपना बिजटिंग कार्ड निकाला और मोड़कर उस अंगूठी से पार कर दिया और बोले हां इस प्रकार । कहने का तात्पर्य यह है कि जिसके पास अटूट आत्मविश्वास होता है । वह कभी फेल नहीं हो सकता ।

दूसरे लोग हम पर भरोसा कैसे करते हैं ? :-

दूसरे व्यक्ति हम पर भरोसा करें, हमारी क्षमता के बारे में बात करें और हमारी सफलता को निश्चित मानें, इससे जरूरी है कि हमें अपनी क्षमता व सफलता पर अखण्ड विश्वास हो, हमारे अंदर किसी प्रकार का भय,शंका, निराशा जैसी चीज मौजूद न हो, जो हमारे प्रति दूसरों में अविश्वास को पैदा करें ।

हमेशा हमारे अंदर आत्मविश्वास रूपी दीपक जलते रहना चाहिये । कभी-कभी हम सिर्फ इसलिये मुकाम तक नहीं पहुंच पाते क्योंकि हमें अपने काम के प्रति विश्वास नहीं होता कि यह काम सफल होगा या फिर नहीं होगा और हम अपने काम के प्रति कठिनाई महसूस कर निराश हो जाते हैं । परिणामस्वरूप सामने वाले काम को पूरा करने के बजाय उससे समझौता कर लेते हैं । और हम खुद की नजरों व समाज की नजरों में अविश्वसनीय हो जाते है ।

“ दूसरे लोग हमारे आत्मविश्वास को देखकर न चाहते हुये भी हम पर भरोसा करने लगते है ।”

एक आत्मविश्वासी व्यक्ति व एक अहंकारी व्यक्ति में अंतर :-

- ❖ आत्मविश्वासी जितना सत्य के निकट है अहंकारी उतना ही दूर अर्थात मिथ्या का पर्यावाची है ।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति बातचीत में बार बार अपने लक्ष्य की आवृत्ति इसलिये करता है जिससे प्रत्येक क्षण उसके लक्ष्य का स्पष्टतम चित्र प्रकट होता रहे जबकि अहंकारी व्यक्ति दूसरों को नीचा दिखाने के लिये ऐसा करता है ।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति दूसरों से न के बराबर अपेक्षायें रखता है जबकि अहंकारी दूसरों से ही अपेक्षा रखता है ।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति का सम्मान हो व अपमान उसे इस चीज का कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि उसे खुद पर भरोसा होता है जबकि अहंकारी का अगर अपमान हो जाता है तो इसे वह बर्दाश्त नहीं कर पाता है ।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति में आंतरिक दृढता होती है जबकि अहंकारी व्यक्ति

में सिर्फ बाहरी दृढ़ता होती है।

- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति दूसरों के लिये उतना ही नरम होता है जितना अपने लिये कठोर जबकि अहंकारी व्यक्ति दूसरों के लिये सिर्फ कठोर होता है।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति प्रत्येक काम व चुनौती को तत्परता से स्वीकार करता है जबकि अहंकारी व्यक्ति काम व चुनौती को तो स्वीकार करता है मगर उस पर कायम नहीं रहता।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने प्रत्येक छोटे व बड़े काम को खुद करने की सोचता है जबकि अहंकारी व्यक्ति छोटा काम करने में अपने शान के खिलाफ समझता है और प्रत्येक छोटे बड़े काम के लिये दूसरों की ओर देखता है।
- ❖ आत्मविश्वासी दिखावा कम काम ज्यादा करता है अहंकारी व्यक्ति काम कम परन्तु दिखावा ज्यादा करता है।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति दूसरों की बातें भी सुनता है और उन्हें समझने की कोशिश भी करता है जबकि अहंकारी व्यक्ति को सिर्फ अपनी बातें अच्छी लगती हैं उसे दूसरा व्यक्ति व उसकी बातें तुक्ष्य महसूस होती हैं।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी असफलता को स्वीकार करता है और उसमें कमी को ढूँढ़कर दुबारा प्रयत्न करता है जबकि अहंकारी कभी भी अपनी गलती को स्वीकार नहीं करता है। बल्कि अपनी असफलता के लिये परिस्थितियों व दूसरों को जिम्मेदार ठहराता है।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति के मन में द्वेष, ईर्ष्या, भय, क्रोध जैसी चीज कभी नहीं होती जबकि अहंकारी में द्वेष, ईर्ष्या, भय, क्रोध यह सभी चीजें कूट-कूट कर भरी होती हैं।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति सभी का सम्मान करता है अहंकारी व्यक्ति सभी से सम्मान चाहता है लेकिन हमेशा दूसरों का उपहास करता है।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति सर्वगुण संपन्न होने के बावजूद भी अन्य व्यक्तियों से कुछ न कुछ सीखने की कोशिश करता है जबकि अहंकारी व्यक्ति अपने से

बुद्धिमान, चतुर सर्वगुण सम्पन्न किसी अन्य व्यक्ति को नहीं समझता।

- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति हमेशा सृजन की ओर बढ़ता है जबकि अहंकारी हमेशा विनाश की ओर बढ़ता है।
- ❖ आत्मविश्वासी व्यक्ति मन, वचन, कर्म तीनों से धनवान होता है जबकि अहंकारी तीनों से गरीब होता है।

“अहंकारी व्यक्ति केवल अपने ही महान कार्यों का वर्णन करता है और दूसरे के केवल बुरे कर्मों का।”

– स्पिनोजा

उपरोक्त बातें दर्शाती हैं कि आत्मविश्वासी व्यक्ति कैसा होना चाहिये ? और अहंकारी व्यक्ति कैसा होना चाहिये ?

“ प्रत्येक व्यक्ति को आत्मविश्वास युक्त रहना चाहिये लेकिन अहंकार प्रेरित नहीं।”

“ प्रत्येक व्यक्ति को सोचना चाहिये, मैं यह काम कर सकता हूँ यह मेरा आत्मविश्वास है, बस मैं ही यह काम कर सकता हूँ यह मेरा अहंकार है।”

–अज्ञात

“ कोई भी व्यक्ति अगर अपने लक्ष्य की पुनरावृत्ति बार-बार करता है तो वह अहंकार प्रेरित होकर ऐसा नहीं करता बल्कि वह इसलियें करता है जिससे उसका संकल्प और बलिष्ठ हो जाय और धैर्य के साथ अपने लक्ष्य की ओर गतिशील बने रहने की प्रेरणा प्राप्त करता रहें।”

आत्मविश्वासी व्यक्ति के गुण :-

आत्मविश्वासी व्यक्ति में निम्न गुण होने चाहिये –

आत्म विश्वासी व्यक्ति निडर होता है –

“जो शान से जीता है वह सिर्फ एक बार मरता है किन्तु जो शान से नहीं जीता वह बार-बार मरता है जब तक उसके प्राण न निकल जायें।”

कितनी अजीब बात है हमारे अंदर आत्मविश्वास न होने कारण हम कितना

डर-डर के चलते हैं प्रत्येक आने वाले पल को शंका की निगाहों से देखते हैं और इसी अन्देखे डर के कारण हम कोई भी काम तत्परता से नहीं कर पाते। हम प्रत्येक पल हारते रहते हैं और विजेता बनने का मौका खो देते हैं लेकिन जब हमारे अंदर आत्मविश्वास होता है तो हम किसी भी काम को बड़ी आसानी से कर जाते हैं।

हम जिंदगी में कई जगह आत्मविश्वास दिखाते हैं लेकिन कई जगह हम अपने आत्मविश्वास को खो देते हैं।

जरा सोचिये जब हम साइकिल गाड़ी व कार चलाते हैं तो हम कभी नहीं सोचते हैं कि अगले पल हम गिर सकते हैं हमारी दुर्घटना हो सकती है, हमारे चोट लग सकती है, हम अपनी जिंदगी खो सकते हैं। हम सब कुछ जानते हुये भी ऐसा करते हैं क्योंकि इसके बिना हमारा काम रुक जाता है इसलिये हम अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा कर लेते हैं और सोचते हैं कि दुनिया की दुर्घटना हो जाय लेकिन मेरी नहीं हो सकती है। परिणाम स्वरूप हम इस काम को बड़ी आसानी से करते हैं दूसरी ओर जब हम अपने लक्ष्य के लिये कार्य करते हैं तो थोड़ी सी मुसीबत में ही हम अपना विश्वास खो देते हैं और आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं करते क्यों ? क्योंकि हम डरकर मैदान छोड़कर भागने की कोशिश करते हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार जब रावण की पत्नी मंदोदरी राम को समझा रही थी कि “मुझे डर लग रहा है कही आप हार न जाओ, कही राम की वानर सेना आपको पराजित न कर दें, मेरे मन में बार-बार भय आ रहा है कहीं कोई अनहोनी न हो जाये स्वामी ! राम कोई साधारण आदमी नहीं है। स्वामी : आप उनसे युद्ध न करियें।

मंदोदरी की इस प्रकार की बातें सुनकर रावण बोला - “देवी ! तुम यह मत भूलो कि तुम्हारा पति महाबली है, जिसको आज तक कोई योद्धा पराजित नहीं कर पाया। रही बात मरने जीने की तो मरना जीना तो संसार का नियम है जिसने जन्म लिया है उसकी एक दिन मौत भी होगी। किन्तु मौत के डर से एक वीर युद्ध न करें, यह वीरो को शोभा नहीं देता, मैं युद्ध जरूर करूँगा और पूरी क्षमता के साथ लड़ूँगा।

जिससे आगे आने वाली पीढ़ियाँ यह न कह सके कि मौत के डर से महाबली रावण कायरो की तरह राम के सामने हथियार डाल दिया था। वैसे तो मुझे पूरा भरोसा है कि मैं ही जीतूँगा फिर भी वाइचांस अगर मैं हारा भी और युद्ध मैदान में लडते लडते मारा गया तब भी भविष्य में मैं महाबली ही कहलाऊँगा। इसलिये तुम सारी चिंता को छोड़ हमारी जीत के लिये दुआ करो। एक बात और ध्यान रखना मुझे संसार के मालिक के शिवाय दुनिया का कोई मानव नहीं मार सकता है। अगर वास्तव में राम मालिक का (ईश्वर का) रूप है तो मैं मरकर भी अमर हो जाऊँगा जब तक राम की कीर्ति रहेगी रावण जिंदा रहेगा।

“ वीर मरकर भी अमर रहता है क्योंकि कीर्ती कभी नहीं मरती। ”

इस कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि जिस व्यक्ति के अन्दर आत्मविश्वास होता है उसके मन में भविष्य की किसी भी होनी व अनहोनी का डर नहीं रहता।

एक बात तो निश्चित है “ इंसान डरता तभी है जब उसका आत्मविश्वास डगडमाता है, जब उसका आत्मविश्वास डगडमाता है तो इंसान लड़खड़ाता है और जब लड़खड़ाता है तभी वह गिरता भी है। ”

हमें अपने मन में आत्महीनता कभी नहीं लानी चाहिये, आत्महीनता हमें आगे नहीं बढ़ने देती।

कभी-कभी हम एक काम में सफल नहीं हो पाते उस समय हमें हिम्मत के साथ काम लेना चाहिये। हमेशा दिमाग में रखना चाहिये कि शायद संसार का मालिक हमें इस काम के लिये नहीं भेजा अपितु हमसे इससे भी अच्छा कोई दूसरा काम कराना चाहता है।

आत्मविश्वास हारी हुई बाजी को जीत में परिवर्तित कर देता है :-

“ जिस व्यक्ति के पास आत्मविश्वास रूपी यंत्र होता है वह प्रत्येक हारी हुई बाजी को भी जीत में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है। ”

एक विजेता के अंदर आत्मविश्वास की वह उर्जा होती है जो उसे बार-बार

हारने के बाद भी आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करती है। वह जितना हारता है उसकी आत्मविश्वास रूपी उर्जा उतनी ही तीव्र होती जाती है परिणामस्वरूप वह जीत के लिये उतना ही दृढ़ हो जाता है।

आत्मविश्वासी व्यक्ति बार बार यही कहता है देखना एक दिन मैं अपना लक्ष्य जरूर प्राप्त करूँगा, समाज वाले आज मेरा मजाक उडा ले कल यही समाज वाले मुझ पर नाज करेंगे। यही समाज वाले कहेंगे यार यह व्यक्ति पहले से ही ऐसा कहता था।

आत्मविश्वासी व्यक्ति हर पल जीतने के लिये उत्सुक रहता है किसी कारण बस वह हार भी जाय तो वह नये रास्तों की खोज करने लगता है और पूरे आत्मविश्वास के साथ नये रास्ते की ओर बढ़ता है।

“ सफलता का एक द्वार बंद होने पर तुरंत दूसरा द्वार खुल जाता है लेकिन कई बार हम उस द्वार की ओर इतनी तल्लीनता से ताकते रहते हैं कि जो हमारे लिये दूसरा द्वार खुल गया होता है भयवश व निराशावश हम उसे नहीं देख पाते।”

—हेलेन केलर

बहुत पुरानी कहानी है एक राज्य का राजा युद्ध में पराजित हो गया। राजा एवं उसकी महारानी को जेल में कैद कर दिया गया। जिस जेल में राजा को रखा गया था उसमें बत्तीस दरवाजे थे राजा बहुत बहादुर व आत्मविश्वासी था इसलिये जेल के अंदर रहने के बावजूद पूरी कोशिश कर रहा था कि किसी प्रकार वह जेल से आजाद हो जाय इसलिये वह प्रत्येक दरवाजे को धक्का मारकर खोलने की कोशिश कर रहा था ऐसा करते-करते बीस दरवाजों तक पहुँच गया लेकिन कोई कामयाबी नहीं मिली और वह हिम्मत हारकर एक जगह बैठ गया। महारानी सब कुछ देख रही थी उसने जैसे ही देखा कि राजा हिम्मत हार चुका है तब वह राजा के पास जाकर बोली – “महाराज ! आप बहादुर हैं और बहादुर इतना जल्दी हिम्मत नहीं हारता है अभी भी आपके पास बारह दरवाजे हैं।” महारानी की बातों को सुनकर राजा अपने

खोये हुये आत्मविश्वास को पुनः प्राप्त कर लिया और पूरी क्षमता के साथ अपने काम में लग गया। परन्तु इक्तीसवें दरवाजे तक उसको कोई कामयाबी नहीं मिली तभी रानी आधीर होकर बोली – “महाराज ! हमारा भाग्य ठीक नहीं है अब हमारे पास आजाद होने का कोई रास्ता नहीं बचा।” रानी को आधीर देख राजा ने कहा “महारानी ! अभी भी हमारे पास एक रास्ता बाकी है।” राजा पूरे आत्मविश्वास व उत्साह के साथ बत्तीसवें दरवाजे की ओर बढ़ा और एक ही धक्के में दरवाजे को खोल दिया। इस प्रकार राजा रानी को आजाद होने का रास्ता मिल गया और राजा आजाद होकर एक बार पुनः अपनी सेना को संगठित कर अपना खोया हुआ राज्य व सम्मान प्राप्त कर लिया।

कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे तो जो व्यक्ति अनुशासित होता है वह प्रत्येक मुसीबत का समाधान ढूँढ लेता है लेकिन जब कभी वह निराश होने लगता है तो उसे थोड़ी प्रेरणा की जरूरत होती है कभी-कभी जब एक ऐसा इंसान हिम्मत हारता है जिसके पास प्रेरणा देने वाला कोई नहीं होता उस समय व्यक्ति को स्वःप्रेरणा लेनी चाहिये।

‘सही मायने पर आत्मविश्वासी योद्धा वही होता है जो स्वः प्रेरणा लेकर विजेता बनें।’

मैं ये नहीं कहता कि जो दूसरों से प्रेरणा लेकर सफल होता है वह विजेता नहीं होता व योद्धा नहीं होता। योद्धा तो वह भी कहलाता जो संघर्ष करता है और युद्ध के मैदान में बहादुरों की तरह लड़ते हुये हार जाता है।

आत्मविश्वास लड़ता है झुकता नहीं :-

यहाँ पर मैंने लड़ने का मतलब किसी की पिटाई करना व किसी को तंग करने से नहीं किया बल्कि यहाँ पर लड़ने से तात्पर्य संघर्ष करने में है और न झुकने से तात्पर्य न रुकने से है। अर्थात् व्यक्ति को न झुकते हुये हमेशा संघर्षरत रहना चाहिये और इस प्रकार का गुण आत्मविश्वास के द्वारा ही उत्पन्न होता है।

आत्मविश्वासी व्यक्ति सिर्फ लड़ना जानता है उसको इस बात से कोई फर्क

नही पड़ता कि सामने क्या है ? कौन सी मुश्किल आ सकती है ? वह सिर्फ अपना कर्तव्य निभाता है उसका अंतिम रास्ता लक्ष्य के अंतिम पड़ाव में ही जाकर रुकता है। वह अपने आत्मविश्वास के दम पर अपनी कमजोरी को ही ताकत बना लेता है।

एक लड़का सेल्स एक्जक्यूटिव की नौकरी के लिये एक कंपनी में गया वह हकलता था उसे प्रत्येक शब्द बोलने के लिये संघर्ष करना पड़ता था। वह कंपनी में मैनेजर के सामने खड़ा होकर बोला मैं मैं नौकरी के लिये आया हूँ। उसकी बात सुनकर मैनेजर को गुस्सा आ गया परन्तु मैनेजर थोड़ा ठंडा होकर हमदर्दी के कारण सोचा कोई प्रश्न इस युवक से पूँछ लिया जाय ताकि मैं कोई बहाना बना सकूँ कि मैं उसे नौकरी पर क्यों नहीं रख सकता ? चर्चा के दौरान मैनेजर ने देखा कि वह युवक काम का था। उसमें बुद्धि थी, आत्मविश्वास था लेकिन इसके बावजूद भी उस तथ्य को मैनेजर नहीं पचा पाया कि वह हकलता था मैनेजर ने आखिरी सवाल किया आपने यह कैसे सोचा कि आप इस जॉब में सफल हो पायेंगे।

उसने उत्तर दिया – मैं तेजी से सीख सकता हूँ मैं मैं सोचता हूँ कि आपकी कंपनी अच्छी है और मैं मैं मैं पैसे कमाना चाहता हूँ अभी मे मे मेरे पास हकलाने की समस्या है, परन्तु उससे मु मु मुझे कोई परेशानी नहीं है इसलिये मु मु मुझे लगता है इसमें किसी और को भी कोई परेशानी नहीं होगी। उसके आत्मविश्वास को देखते हुये मैनेजर ने उसे अपनी कंपनी में मौका देने का फैसला कर लिया और आगे चलकर वही युवक एक सफल सेल्समैन बना कहने का तात्पर्य यह है कि 'अगर आपके पास आत्मविश्वास है बुद्धि है तो शारीरिक कमजोरी भी आपकी सफलता की राह में बाधा नहीं बन सकती।'

–डेबिट–जे–श्वाट्स

'रूको नही झुको' नही, हमेशा संघर्षरत रहो, सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी।'
आत्मविश्वास खुद का नेतृत्व करता है :-

जब कभी हमें कोई काम लीड करने के लिये दिया जाता है तो सबसे पहले हमारे दिमाग में यह बात आती है कि इस काम को करने के लिये हमारा लीड मॉडल

कौन हो सकता है ? हममें से ज्यादातर लोगो का दिमाग इस ओर जाता ही नहीं कि जिसे लीड करने की सबसे ज्यादा जरूरत है वह हम खुद है। इसी कारण बस हम किसी और शख्स को काम करने का जिम्मा सौंपते है और अगर वह उसे पूरा नहीं करता तो हमें काफी गुस्सा आता है। लेकिन हम यह नहीं सोचते कि काम को लीड करने का दायित्व किस पर था ? लीड मॉडल बनाने को किसने कहा था ? जब आप खुद का नेतृत्व नहीं कर सकते तो दूसरों से अपेक्षा क्यों करते हैं ?

आत्मविश्वासी व्यक्ति रोल मॉडल तो बनाता है पर लीड मॉडल किसी को नहीं बनाता है जब कभी उसे लीड करने का मौका मिलता है तो सबसे पहले उस काम के प्रति अपने आपको लीड करता है क्योंकि वह जानता है कि बदलाव की प्रक्रिया बाहर से शुरू नहीं होती उसे सबसे पहले स्वयं से शुरू करना पड़ता है और इसी गुण के कारण ही उस व्यक्ति का काम गति पकड़ लेता है और बड़ी आसानी से पूरा भी होता है। इसलिये इंसान को सबसे पहले खुद का नेतृत्व करना चाहिये इसके बाद ही अपेक्षायें रखनी चाहिये।

एक बार दो दोस्त जंगल में घूमने के लिये गये रास्ते में उन्हें भेड़िया दिख गया जो उनकी तरफ ही आ रहा था।

एक दोस्त ने कहा – “मुझे बचा ले भाई वह भेड़िया हमें मार डालेगा।”

दूसरे दोस्त ने कहा – “डरो मत हम इसका मुकाबला करेंगे।”

पहले दोस्त ने कहा – “मुझमें इतनी क्षमता नहीं है कि मैं इसका मुकाबला कर सकूँ, दया करके मुझे बचाओ।”

उसने कहा – “ठीक है तुम चिंता मत करो मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूँगा।” जैसे ही भेड़िया पास आया दूसरा दोस्त जिसने अपने दोस्त को बचाने का वचन दिया था तुरंत पेड़ पर चढ़ गया और उसका दोस्त नीचे ही खड़ा रहा। जब भेड़िया वहाँ से चला गया तो वह पेड़ के नीचे आया और अपने दोस्त से बोला – “चलो आगे चलते है।”

पहला दोस्त (क्रोधित होकर) :- “अब मैं तुम जैसे दगाबाज दोस्त के साथ एक कदम भी आगे नहीं चल सकता। उस भगवान का लाख लाख शुक्रिया जिसने आज

मुझे बचा लिया वरना आज मैं मारा जाता और मेरी मौत के जिम्मेदार तुम होते।”
दूसरा दोस्त - (शांत भाव से)- “मैंने तुम्हें कोई धोखा नहीं दिया बल्कि मैं तुम्हें
जीवन में जीने के लिये जरूरी सीख से अवगत कराना चाहता था।”

पहला दोस्त - “ऐसी कौन सी सीख थी। जिसे बताने के लिये तुमने मेरे जीवन को
ही दाँव में लगा दिया।”

दूसरा दोस्त - “पहली सीख किसी दूसरे व्यक्ति पर भरोसा कर अपना अपना
सबसे महत्वपूर्ण कार्य उस पर नहीं छोड़ना चाहिये इसके लिये खुद पहल करना
चाहिये।”

दूसरी सीख - “मुसीबत के समय आत्मविश्वास के साथ उसका मुकाबला करना
चाहिये क्योंकि आत्मविश्वास के कारण हम जिंदा रहते हुये भी जिंदा नहीं रहते।

तीसरी सीख - “किसी चीज के बारे में बिना जाने पहचाने उसके बारे में पूर्व धारणा
नहीं बनानी चाहिये। क्योंकि जिसे तुम भेड़िया समझ रहे थे वह जंगली कुत्ता था।”

“अगर इंसान को लीड मॉडल बनाने की जरूरत पड़े भी तो यह सिर्फ मदद तक ही
सीमित रहना चाहिये काम की पहल तो खुद करनी चाहिये।”

आत्मविश्वासी व्यक्ति वास्तविकता में जिंदा रहता है :-

आत्मविश्वासी व्यक्ति हमेशा वास्तविकता में रहकर प्रत्येक काम करता है
वह कल्पना के सागर में गोते नहीं लगाता, हमेशा जो भी काम करता है उस कार्य
की वास्तविकता को समझ कर करता है, वह उतना ही बोलता है या फिर उतना ही
काम करता है जितना वास्तव में वह खुद कर सकता है। उसके मन में किसी प्रकार
का न ही भटकाव होता और न ही ठहराव होता है। वह प्रत्येक काम अपनी क्षमता के
अनुसार करता है।

वह ऐसा सिर्फ इसलियें करता है जिससे वह अपने प्रत्येक काम खुद लीड
कर सके किसी दूसरे पर आश्रित न रहें क्योंकि उसे भलीभांति पता होता है। कि
जब वह अपना काम खुद लीड करेगा तभी दूसरे लोग पूरे मन से उसका साथ देगे
और ऐसा करने से काम पूरा होने की संभावना प्रबल हो जाती है इसका कारण यह

है कि काम पूरे उत्साह एवं विश्वास से किया जाता है।

आत्मविश्वासी व्यक्ति गलतियाँ स्वीकार करता है :-

जिस व्यक्ति के पास आत्मविश्वास होता है वह अड़ियल प्रवृत्ति का नहीं
होता, वह हमेशा अपनी गलती को स्वीकार करता है, कभी भी वह नहीं कहता
इसमें मेरी कोई गलती नहीं है शायद ईश्वर ही ऐसा चाहता था, वह कभी नहीं
कहता इसमें मेरी मजबूरी थी वह हमेशा कहता है हाँ मेरी गलती थी मैं उसे स्वीकार
करता हूँ और आगे कोशिश करूँगा कि अब कोई गलती न हो।

आत्मविश्वासी व्यक्ति आशावादी होता है :-

**“वही व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है जो आशावादी होता है
जब तक किसी व्यक्ति के मन में आशा नहीं होगी वह कोई काम नहीं कर
सकेगा।”**

- हेलन

वास्तव में आशावाद में वह शक्ति होती है जो किसी भी व्यक्ति की रचनात्मक
कार्यशक्ति और उसका आत्मविश्वास जागृत कर देता है। जो व्यक्ति आशावादी
होते हैं उनकी रचनात्मक क्षमता बहुत बड़ी होती है। वे जो भी कार्य करते हैं उसमें
प्रसन्नता अनुभव करते हैं, किन्तु जो व्यक्ति निराशावादी होते हैं। उनकी शक्ति
और उर्जा दोनों ही सोई रहती हैं वे हर समय सोचते हैं कि उन्हें सफलता
मिलेगी ही नहीं उनके चेहरे उदास रहते हैं। आगे बढ़ने या काम करने में भी उनका
मन नहीं लगता।

हम बड़ी से बड़ी परीक्षा दे, व बड़ी बड़ी कार्ययोजना हाथ में ले यदि हमारे
अंदर उसे पूरा करने का विश्वास है तब हम उसे अवश्य ही पूरा करेंगे ऐसे लोग
जीवन में जो भी करते हैं उसमें सफलता मिलती है।

**“मैंने जिन व्यक्तियों को सफलता प्राप्त करते देखा है वे हमेशा
प्रसन्नचित और आशावान रहा करते थे किसी भी काम को आरंभ करते
समय उनके मुख पर जो मुस्कान खेलती रहती थी व पौरुष की जिस चमक**

से उसका चेहरा दमकता था उसी कारण वह अवसर का लाभ उठाते गये और सफलता प्राप्त करते गये । उन्होंने कठोरता को कठोर बनकर सहन किया और कोमलता के प्रति अंदर से सदा कोमलता दिखायी ।”

- चार्ल्स फिसले

“ मनुष्य की सारी उन्नति, जीवन की सफलता और सृष्टि की चरितार्थता आशावाद में प्रतिष्ठित है ।”

आशावाद वह शक्ति है जो जीवन को विश्वास देती है, उर्जा देती है और जीवन संघर्ष में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। आशा और निराशा जीवन के दो पहलू हैं। आशावादी मनुष्य में साहस कार्यक्षमता और आत्मविश्वास की कमी नहीं होती, वास्तव में ऐसे लोगों को आत्मविश्वास ही उनमें साहस सामर्थ्य और शक्ति का संचार करता है, उन्हें निरंतर प्रयत्न करते रहने की प्रेरणा देता है उसी के सहारे वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। परन्तु निराशावादी व्यक्ति हमेशा संदेहशील और आंशकित रहता है उसके दिल व दिमाग में भरा संदेह उसे कायर बना देता है। उसकी देखने व सोचने, समझने की ताकत छीन लेता है। वह सामने स्थित सुगम मार्ग को भी नहीं देख पाता।

एक लेखक ने लिखा है “ जब आप हमेशा किसी महान कामों में सफल होने की आशा करते रहते हैं तो आपका स्वभाव बन जाता है, हर काम के पूरा होने की आशा मन में बनी रहे और यह स्वभाव आपके भीतर छिपी समस्त शक्तियों और उसके उदगम को खोज डालता है तब संसार के सामने आपके विश्वास का दिव्य रूप प्रकट होता है। जो भगवान की प्रेरणा से भेजा गया होता है वह आपमें आत्मविश्वास पैदा करता है और आप उस आत्मविश्वास से सही रास्ते पर चलते रहते हैं परिणामस्वरूप आप अपना लक्ष्य हासिल करते हैं।”

हमें सोचना चाहिये कि जीवन में निराशाओं से मुक्ति किस प्रकार प्राप्त हो? जीवन में आशाएँ किस तरह प्राप्त हो, उल्लास कैसे आये वास्तव में हम अपने आत्मविश्वास, सूझबूझ तथा परिश्रम से ही निराशाओं से मुक्ति पा सकते हैं। इसलिये

आवश्यक हैं हृदय में आशाये जगाये और प्रयास करें। अगर आपका मन अच्छी शिक्षा व वस्तु के प्रति आकर्षित होता है तो बस एक आशा व आत्मविश्वास जगाने की जरूरत है क्योंकि “ आप उसे पा सकते हैं” ऐसा विश्वास मन में जगाकर आगे बढ़े और प्रयास करें।”

किसी ने कहा है - “किसी वस्तु को पाने की केवल कामना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना महत्वपूर्ण उसके संबंध में गंभीरता से विचार करना।” कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आप आशा एवं आत्मविश्वास के साथ सफलता एवं सुख समृद्धि की कामना करेंगे और उन्ही के संबंध में सोचते विचारते रहेंगे और उसे प्राप्त करने का प्रयास करते रहेंगे तो एक न एक दिन आप उसे प्राप्त ही कर लेंगे।

‘प्रयास’ बहुत महत्वपूर्ण है। इसी में छिपी होती है किसी वस्तु को पाने की प्रक्रिया। किसी भी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की प्रक्रिया, किसी भी लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग।

आत्मविश्वासी का प्रत्येक काम ताश के खेल के समान होता है :-

जिस प्रकार से ताश के खेल में पत्ते बाँट दिये जाने के बाद उन्ही पत्तों से इंसान खेलता है जो पत्ते उसके हिस्से में आते हैं। ठीक उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य बनता है कि जो भी काम उसके हिस्से में आये उसे उत्साह पूर्वक करें। और एक आत्मविश्वास से युक्त व्यक्ति ऐसा करता भी है।

जरा सोचिये कि अगर ताश के पत्ते बंटने के बाद कोई व्यक्ति यह कहने लग जाय कि मैं इन पत्तों से नहीं खेलूँगाँ मुझे दूसरे पत्ते चाहिये और पत्ते फेंक दे तो खेल का मजा क्या होगा? अगर सभी व्यक्ति अपनी पसंद के पत्ते लेने लगे तो उस खेल में हारजीत में ताली कौन बजायेगा? बस ठीक इसी प्रकार एक आत्मविश्वासी व्यक्ति को चाहे जैसे भी पत्ते मिले वह उन्ही पत्तों में उत्साहपूर्वक खेलते हुये अपनी जीत को तलासता है।

कहने का तात्पर्य आत्मविश्वासी व्यक्ति को जो काम मिला है कठिन हो व सरल बस उसका ध्येय सिर्फ उसे पूरा करने का होता है और उसी में अपनी जीत

तलाशता है।

आत्मविश्वासी व्यक्ति बंदर की तरह काम करता है :-

जिस प्रकार बंदर एक डाली से दूसरे डाली में कूदता है तो इस दर्मियान वह कभी-कभी गिर भी जाता है और उसके चोट भी लगती है। परन्तु इस चोट की पीड़ा से वह उछलकूट कभी बंद नहीं करता बल्कि अगले ही पल पुनः इस काम में लग जाता है ठीक उसी प्रकार एक आत्मविश्वास से युक्त व्यक्ति गिरता है उसे चोट भी लगती है परन्तु अगले ही पल सभी प्रकार के दुख दर्दों को भूलकर अपने काम में लग जाता है। उसे किसी अन्य व्यक्ति व परिस्थिति से कोई शिकायत नहीं रहती। वह जितनी भी चोटे सहता है उतना ही दृढ़ हो जाता है।

“ दोष गिरने में नहीं है, गिरकर न उठने में है। ”

आत्मविश्वासी व्यक्ति कर्मठ होता है :-

एक बार विधाता के मन में अपनी सृष्टि को देखने की इच्छा जागी जब वह धरती पर पहुंचे ही थे कि उन्होंने हाथ में कुदाल लिये किसान को एक विशाल पर्वत को खोदते देखा। उसके इस दुःसाहस को देखकर विधाता को हंसी भी आयी और अचरज भी हुआ। उन्होंने उस किसान के पास आकर पूछा - “भाई ! तुम यह क्या कर रहे हो ? किसान ने कहा - “मैं इस पहाड़ को यहां से हटा रहा हूँ। इसके कारण बादल इस पार आकर मेरे खेतों में पानी नहीं वरषा पाते। इससे टकराकर वे उस पार ही खाली हो जाते हैं।

विधाता ने पूछा - “लेकिन क्या तुम इसे हटा सकोगे ?”

किसान ने दृढ़ स्व में उत्तर दिया - “क्यों नहीं ? मैं तो इसे हटा कर ही दम लूँगा।”

विधाता ने उस किसान का उत्तर सुना और मुस्कराकर आगे बढ़ गये तभी वह कुछ दूर ही गये होंगे तभी स्वयं पर्वतराज ने उनके आगे हाथ जोड़कर कहा - “प्रभु ! मेरी रक्षा करें मुझे और कही शरण दें।”

विधाता ने कहा - “अरे क्या तुम सचमुच किसान से डर गये ?”

पर्वतराज - “मेरा डर सही है प्रभु : किसान के अन्दर जो आत्मविश्वास है वह मुझे

उखाड़कर ही दम लेगा, अगर अपने जीवन काल में यह मुझे नहीं उखाड़ पाया तो इसके बेटे, पोते, परपोते मुझे जरूर उखाड़ फेंकेंगे। आत्मविश्वास की जड़े बहुत लम्बी एवं गहरी होती हैं प्रभु।”

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर आत्मविश्वास से युक्त व्यक्ति जो काम ठान लेता है उसे पूराकर ही दम लेता है इसीलिये ऐसा व्यक्ति कर्मठ कहलाता है।

एक विद्वान कहता है - “जिस क्षण व्यक्ति दृढ़ता पूर्वक किसी कार्य के संपन्न करने का निश्चय कर लेता है, तो समझना चाहिये कि उसका आधा कार्य पहले ही पूर्ण हो गया। दुर्बल प्रवृत्ति के लोग शेख चिल्ली के समान कोरी कल्पनाएँ मात्र किया करते हैं, किन्तु मनस्वी व्यक्ति अपने संकल्पों को कार्यरूप में परिणित कर दिखाते हैं।”

“ असफलता के अंधेरे में जो व्यक्ति प्रकाश की रेखा के दर्शन करता है, वही सफलता के पथ पर अग्रसर होने का अधिकार प्राप्त करता है, आशान्वित रहते हुये हम विश्वास रखे कि रात्रि के अंधकार के बाद प्रातः का प्रकाश आना अनिवार्य है। ”

आत्मविश्वास प्राप्त करने के तरीके :-

आत्मविश्वास किस प्रकार प्राप्त किया जाय इसके लिये मैं कुछ महत्वपूर्ण नुक्सों का विवरण दे रहा हूँ। जिनको अगर जिंदगी में अपनाया जाय तो एक निराशावादी जीवन से बचा जा सकता है।

1. निरंतर अभ्यास :-

कहा भी जाता है कि अभ्यास करते-करते एक मूर्ख भी विद्वान हो जाता है जिस प्रकार अगर रस्सी बार बार किसी पत्थर से गुजरती है तो उस पत्थर पर अपने आप निशान पड़ जाता है। जिस रास्ते से लोग निकलना शुरू कर देते हैं उस रास्ते की घास अपने आप सूख जाती है और वहाँ से एक रास्ता बन जाता है उसी प्रकार अगर निरंतर अभ्यास किया जाय व फिर किसी काम को बार-बार किया जाय तो व्यक्ति के अंदर अपने आप आत्मविश्वास आने लगता है और फिर रास्ते की

प्रत्येक बाधाएँ अपने आप समाप्त हो जाती हैं ।

किसी भी काम के प्रति व्यक्ति को आत्मविश्वास तभी आता है जब वह उस काम को करने का बार बार प्रयास करता है । अगर कोई व्यक्ति अपने कार्य में पूर्णतः दक्ष है लेकिन उस कार्य को कुछ समय के लिये करना छोड़ दे कुछ समय बाद पुनः अपने उस कार्य को प्रारंभ करता है तो वह उतने आत्मविश्वास से उस कार्य को नहीं कर पाता है जितने आत्मविश्वास से वह पहले उस काम को करता था । इसलिये निरंतरता जरूरी होती है ।

एक बार भयंकर अकाल पड़ा दूर-दूर तक पानी गिरने की कोई उम्मीद नहीं थी इस सूखे को देखकर सभी किसान अपने अपने घरों में चुपचाप आकाश की ओर देखते बैठे थे । वही पर उसी गाँव में शॉन नामक किसान रहता था वह भी सूखे के कारण अपने घर में बैठा था एक दिन उसके मन में एक विचार आया कि अकाल तो प्रकृति की देन है परन्तु इसके कारण अगर मैं घर में बैठा रहूँगा तो कहीं ऐसा न हो कि मैं हल चलाना ही भूल जाऊँ जिसका खामियाजा बाद में हमें भुगतना पड़े । शॉन ने सोचा पानी गिरे व न गिरे मैं तो अपना काम करूँगा और उसने ऐसा ही किया उसको देखकर अन्य व्यक्ति हंसते थे कि यह कितना मूर्ख है कि सूखे खेतों में हल चला रहा है परन्तु वह किसी की परवाह किये बिना अपना काम करता रहा । उस किसान को देखकर बादलों को भी बड़ा आश्चर्य हुआ और बादलों ने किसान को कहा - " हे ! किसान मैं तो अभी सात वर्ष तक वर्षा नहीं करने वाली फिर तुम परेशान क्यों हों । किसान ने कहा - "अगर मैं सात वर्ष तक हल नहीं चलाऊँगा तो हल चलाना भूल जाऊँगा इसलिये मैं हल चला रहा हूँ । किसान की बातों को सुनकर बादलो ने विचार किया कि अगर मैं सात वर्ष तक वर्षा नहीं करूँगा तो कहीं हम वर्षा करना ही न भूल जाय । इसलिये हमें वर्षा करनी चाहिये । परिणामस्वरूप अच्छी वर्षात हुई और चारों ओर खुशहाली छा गयी ।

कहने का तात्पर्य अगर आप चाहते हैं कि हम अपने काम में निपुण बने रहे या फिर हमारा आत्मविश्वास उस काम के प्रति बना रहे तो आपको निरंतर अभ्यास

करते रहना होगा क्योंकि सीखने की कोई सीमा नहीं होती ।

अगर आपके पास ऐसा काम है जिसके पूरा होने की उम्मीद सभी छोड़ चुके हैं अगर उसे भी निरंतर किया जाय तो अपने अंदर उस काम के पूरा होने का आत्मविश्वास तो आता ही है । साथ ही अन्य व्यक्तियों के मन में भी उस काम के प्रति आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाता है ।

“ खाली बैठने से अच्छा है कुछ काम करना क्योंकि इंसान का खालीपन उसका सबसे बड़ा दुश्मन होता है । ”

2. स्वालंबी बने :-

हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि स्वालंबीपन व्यक्ति के अंदर आत्मविश्वास पैदा करने का एक महत्वपूर्ण कारक होता है जो व्यक्ति स्वालंबी होता है वह प्रत्येक काम खुद करने की कोशिश करता है जिससे उसके मन में वह प्रत्येक काम कर लेगा जैसा विचार एक विश्वास के साथ समाहित हो जाता है परिणामस्वरूप वह जिंदगी के किसी भी क्षेत्र में असफल नहीं होता और कभी कभी तो वह ऐसा काम भी कर देता है जिसके बारे में आम इंसान सोच भी नहीं सकता और उसका यह कार्य समाज के मायने ही बदल देता है ।

ऐसा माना जाता है और सत्य भी है कि अकेले दौड़ने वाला इंसान कभी सफल नहीं होता, उसको सफल होने के लिये लोगो की सहायता की जरूरत पड़ती है। लेकिन यह भी अकाट सत्य है कि अन्य व्यक्ति तभी हमारा सहयोग करते हैं जब वह देखते हैं कि सामने वाला व्यक्ति दौड़ रहा है ।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी व्यक्ति आपका सहयोग करने के लिये सामने तभी आता है जब वह महसूस कर लेता है कि आप अपना काम पूरी क्षमता से कर रहे हैं ।

आपके आसपास चार प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं जिनसे आप आपेक्षायें करते हैं -

1. आपके काम की शुरुआत में ही आपका सहयोग करने लगते हैं ।

2. कुछ दिन आपको काम करते हुये देखते हैं और फिर आपका सहयोग करते हैं।
3. जब आपको सफल होते हुये देखते हैं तो स्वार्थवश आपके सहयोगी के रूप में आपके साथ आ जाते हैं ऐसे व्यक्ति सिर्फ अवसरवादी होते हैं।
4. जो आपका सहयोग तो कभी नहीं करते उल्टे आपके प्रत्येक काम में कमी दूढ़ते हैं अर्थात ईर्ष्या से प्रेरित रहते हैं और जिन्दगी भर आपको देखते रहते हैं।

यद्यपि इस प्रकार के व्यक्ति सहयोग तो करना चाहते हैं परन्तु वह आपकी इतनी आलोचना कर चुके होते हैं कि खुद की नजरों में गिर जाते हैं और वह आपके सहयोग करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते क्योंकि मनुष्य की प्रवृत्ति होती है कि वह अपनी गलती इतनी आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता है और जिंदगी भर आपकी आलोचना करना ही उचित समझता है। वैसे इस प्रकार के व्यक्ति भी आपके अप्रत्यक्ष सहयोगी ही होते हैं। क्योंकि ऐसे व्यक्ति आपकी कमी से अवगत कराते हैं साथ ही आपकी आलोचना करके आपको आगे बढ़ने के लिये और दृढ़ बनाते हैं। कहा भी जाता है **“ एक अच्छा शासन तभी चलता है, जब एक अच्छा विपक्ष होता है क्योंकि विपक्ष काम की बारीकियाँ दूढ़ कर आपके सामने लाता है। ”**

जैसा कि मैंने पहले कहा है जो व्यक्ति आत्मविश्वासी होता है वह किसी भी व्यक्ति से अपेक्षाएँ नहीं करता लेकिन हाँ अगर कोई उसका सहयोग करता है तो उसे वह नजर अंदाज भी नहीं करता है बल्कि आदर के साथ उसका स्वागत करता है।

एक बार बूढ़ा आदमी समान ढोने वाली गाड़ी लेकर जा रहा था रास्ते में एक नाला आ गया उसकी गाड़ी उसमें फंस गयी वह बूढ़ा आदमी उसे बार बार निकालने की कोशिश कर रहा था लेकिन वह उस गाड़ी को निकालने में कामयाब नहीं हो पा रहा था वही पर एक लड़का खड़ा था जो बूढ़े को देख रहा था। उस बूढ़े व्यक्ति के प्रयास को देखकर उसकी मदद करने का निश्चय किया। उस लड़के की मदद से उस बूढ़े की गाड़ी निकल गयी।

उस लड़के ने उस बूढ़े व्यक्ति से पूछा – “दादा आपके बच्चे नहीं हैं जो आपको इस उम्र में ऐसा काम करना पड़ रहा है।”

बूढ़े ने कहा – “ बच्चे तो हैं लेकिन बच्चे अपना काम करते हैं और मैं अपना काम करता हूँ।”

थोड़ा उत्सुकतावश उस लड़के ने फिर पूछा – “आपकी गाड़ी फंस गयी तो आप यह जानते हुये भी कि बिना मदद के आपकी गाड़ी नहीं निकल पायेगी फिर भी आपने किसी से मदद नहीं मांगी।”

बूढ़े व्यक्ति ने कहा – “बेटा: जब मैं अपने बच्चों से मदद की अपेक्षा नहीं रखता जो हमारे ही अंश है तो फिर मैं अन्य व्यक्ति से मदद की उम्मीद क्यों रखूँ ? रही बात नाले से गाड़ी निकालने की तो मुझे पूर्ण विश्वास था कि मैं इस गाड़ी को निकाल लूँगा और ऐसा हुआ भी क्योंकि तुम्हारे मन में मेरे प्रयास को देखकर मेरी मदद करने की इच्छा जागृति हो गयी जिससे मेरा काम आसान हो गया। इसके लिये शुक्रिया।”

लड़के ने फिर कहा – “आपकी बात मैं मानता हूँ लेकिन फिर भी आपको इस उम्र में इतने मेहनत का काम नहीं करना चाहिये।”

बूढ़े व्यक्ति ने कहा – “जो व्यक्ति स्वालंबी होता है उसके मन में सदा आत्मविश्वास रहता है और जो व्यक्ति आत्मविश्वासी होता है उसके लिये उम्र मायने नहीं रखती, आदमी कमजोर व बूढ़ा हो सकता है लेकिन उसका हौसला नहीं। एक कम उम्र का व्यक्ति जो काम अपने बचपन में कर लेता है वही काम बड़ी उम्र का अनुभवी व्यक्ति भी नहीं कर पाता और जो काम एक बूढ़ा आदमी कर लेता है कभी कभी वही काम एक जवान व्यक्ति भी नहीं कर पाता। बुढ़ापा या बचपना सिर्फ व्यक्ति के मन का फेर होता है जीतने वाला व्यक्ति कभी भी अपनी उम्र का रोना नहीं रोता वह तो पूरे आत्मविश्वास के साथ अपना कर्तव्य करता है।”

3. जहाँ आप जा चुके हैं उससे आगे जाने की कोशिश करियें :-

हम जिस स्थान पर जा चुके हैं हमेशा हमें उस स्थान से आगे जाने की

कोशिश करनी चाहिये। पीछे जाने के बजाय हमेशा आगे जाने की कोशिश करनी चाहिये। इस प्रकार से हमारे मन में विश्वास पैदा होता है और जैसा कि हमने कई बार कहा है कि यही विश्वास हमें जीत की ओर ले जाता है।

“ आत्महीन व्यक्ति वही होता है जिसे कुछ खो देने का भय होता है जबकि जो सोचता है मेरे पास खोने को है ही क्या ? उसके अंदर आत्मविश्वास भी होता है और हिम्मत भी।”

मेरी बातों को पढ़कर अगर कोई कहे कि प्रत्येक व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है और कौन नहीं चाहता कि वह कामयाब व सफल व्यक्ति बने ? मैं भी इस तर्क से पूर्णतः सहमत हूँ। मैं भी मानता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह कोई ऐतिहासिक काम करें, वह भी समाज में सम्मान का हकदार बनें। लेकिन कैसे ? इस प्रश्न का जबाब उसके पास नहीं होता वह अपना कदम भी बढ़ाता है लेकिन अगले ही पल किसी अनदेखी मुसीबत का अभास कर आत्महीनता के कारण अपने कदमों को रोक लेता है। जबकि वह यह भी जानता है कि एक डर के बाद ही जीत होती है।

आत्महीनता से अगर छुटकारा पाना है तो अपने कदमों को बिना किसी ठहराव के आगे बढ़ाइयें, कभी भी किसी भी स्थिति में अपने कदमों को वापस मत मोड़िये जहां से आप निकले थे।

बराक ओबामा नवम्बर 2008 में दुनिया के सबसे ताकतवर राष्ट्र के राष्ट्रपति बने। अमेरिकी इतिहास में यह पहली बार हुआ था कि एक अश्वेत व्यक्ति श्वेत भवन में पहुंचा हो इनकी यह कहानी एक काल्पनिक उपन्यास से कम नहीं थी और किसी ने ऐसा सोचा भी नहीं था कि अमेरिका जैसे देश में ऐसा हो सकता है। परन्तु ओबामा ने अपनी सूझबूझ व मेहनत के दम पर सिद्ध कर दिया कि ऐसा भी हो सकता है।

बराक ओबामा अप्रवासी केन्याई पिता की संतान थे उनके जन्म के दो साल बाद ही मां बाप का तलाक हो गया। फिर पिता की मृत्यु के बाद अमेरिका छोड़कर

स्पेन चले गये। फिर अमेरिका आये। उनकी जिंदगी में यह कोई चमत्कार एक दिन में नहीं हुआ था। बल्कि वर्षों की अथक मेहनत का परिणाम था। तमाम विकट परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना मैदान नहीं छोड़ बस आगे बढ़ते गये और आगे बढ़ते बढ़ते उन्होंने अमेरिकी इतिहास के पन्नों एक नया अध्याय जोड़ दिया।

एक बार की घटना है एक नदी के बीचो-बीच एक प्राचीन मंदिर था उस मंदिर में हीरे-मोती के भंडार थे। प्रत्येक व्यक्ति मंदिर में पहुंचना चाहता था। परन्तु एक समस्या थी पुरानी किवदन्ती के अनुसार जो व्यक्ति उस मंदिर पर जाने की कोशिश करता था उसकी नदी में डूबने से मृत्यु हो जाती थी। इस प्रकार की खबर आसपास के प्रत्येक गाँव में फैली हुई थी। वही दूर गांव में आरिफ नामक एक युवक रहता था। जो बुद्धिमान होने के साथ-साथ आत्मविश्वासी था जब उसे इस घटना की खबर लगी। तो उसने निश्चय किया कि वह मंदिर में जरूर जायेगा। जब लोगो को उसके निश्चय के बारे में पता चला तो लोगो ने समझाया व रोका भी, कि वह ऐसा न करें। परन्तु आरिफ के दृढ़ निश्चय के सामने किसी की एक न चली। आरिफ नदी में कूद गया लेकिन जैसे ही बीच मझधार में पहुंचा उसे वह किवदन्ती याद आ गयी जिससे वह घबराकर वापस आ गया। चूंकि वह आत्मविश्वासी था इसलिये वह इतना जल्दी हार भी नहीं मानने वाला था इसलिये उसने लगातार पांच बार इस प्रकार की कोशिश किया परन्तु नदी पार न कर सका। वह निराश हो गया उसे लोगो की बातें सत्य लगने लगी। वहीं पर एक विकलांग व्यक्ति बैठा - उसने कहा “ काश मैं तैर सकता।”

आरिफ ने पूछा - “अगर तुम तैर सकते तो क्या करते ?”

विकलांग व्यक्ति ने कहा - “मैं मंदिर तक जरूर जाता।”

आरिफ ने पूछा - ‘कैसे ?’

विकलांग व्यक्ति ने कहा - “नदी के मझदार तक पहुंचने के बाद वापस आने के बजाय मैं नदी के उस किनारे की ओर बढ़ता जहाँ हमारी मंजिल थी।” विकलांग व्यक्ति की बातों को सुनकर आरिफ के मन में पुनः विश्वास आ गया और अब सारी

पुरानी बातों को भूलकर नदी में कूद गया और लोगों के देखते ही देखते वह नदी की जलधारा से मंदिर पर था।

कहने का तात्पर्य हमें पीछे आने के बजाय आगे बढ़ना चाहिये क्योंकि पीछे आने से हम आगे के रास्तों के बारे में कभी नहीं जान पायेंगे। फिर कामयाबी तो अलग बात है।

4. अपनी प्रतिभा का उपयोग निःसंकोच करें :-

“ अच्छे व्यक्तित्व के लिये अधिक सुनना एवं कम बोलना नितान्त जरूरी है परन्तु सिर्फ सुनते रहना कुछ न बोलना अपने आपको पिंजड़े में डालने के बराबर है। ”

मनुष्य को अपनी प्रतिभा का उपयोग पूरी क्षमता के साथ बिना किसी संसय के करना चाहिये उसको दिमाग में इस प्रकार की भ्रांतियां नहीं पालनी चाहिये काम होगा या नहीं होगा लोग काम को पसंद करेंगे या नहीं करेंगे मैं जो कहने या करने जा रहा हूँ क्या लोग उसे हाथों हाथ लेंगे ? या फिर नहीं लेंगे।

हमारे दिमाग में बस एक बात होनी चाहिये मैं तो अपना कर्त्तव्य करूंगा लोग पसंद करें अथवा न करें यह लोगों पर निर्भर करता है वैसे एक बात मैं बताना चाहूंगा लोगों की फितरत होती है वह एक ही व्यक्ति को कई रूपों में देखता है। आपके प्रति उसकी जैसी भावना होती है वह आपको वैसा ही महसूस करता है। रही बात आपके कार्य के पसंद व नापसंद की तो मनुष्य जैसी सोच रखता है। वह उसी प्रकार का कार्य व बातें पसंद करता है। कहने का तात्पर्य “ इस संसार के प्रत्येक व्यक्ति को खुश रखना नामुमकिन है। ” इसलिये हमारा ध्यान सिर्फ अपने काम में होना चाहिये किसी भी बनावटीपन ढंग से अपने आपको हमें लोगों के सामने प्रस्तुत नहीं करना चाहिये क्योंकि किसी भी प्रकार का बनावटीपन हमारी प्राकृतिक प्रतिभा को कम कर देता है और हम पीछे रह जाते हैं। जबकि हमारे पास उस काम को पूरा करने की प्रतिभा थी।

अमेरिका में एक बहुत अच्छी गायिका थी। वह अपने गले से इतना बढ़िया

प्रभाव डालती थी कि लोग उसके गीतों को सुनकर मंत्र मुग्ध हो जाते थे। एक बार उसे एक बहुत बड़े कार्यक्रम में हिस्सा लेने का मौका मिला। उसने उस कार्यक्रम की बहुत बढ़िया तैयारी की। लेकिन वह कोई खास प्रस्तुति नहीं दे पायी। इसका कारण था उसकी आत्महीनता जब वह कार्यक्रम की प्रस्तुति दे रही थी उस समय उसके मन में यह भावना उत्पन्न हो गयी कि वह सुन्दर नहीं है उसका एक होंट बड़ा है इसलिये लोग उसे पसंद नहीं करेंगे और वह अपने होंट को छिपाने के चक्कर में अपनी प्रस्तुति को बिगाड़ बैठी परिणामस्वरूप उसे प्रतियोगिता से बाहर होना पड़ा। कार्यक्रम स्थल पर एक प्रोफेसर बैठा हुआ था जिसने उस गायिका के कई कार्यक्रम देखे थे। उसने महसूस किया कि उसका परफारमेंस उसकी योग्यता के अनुसार नहीं था और वह परफारमेंस में कमी के कारण को भी भांप गया था। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद सीधा वह गायिका के घर पहुंचा और उससे बोला – आज आपका परफारमेंस ठीक नहीं रहा आपको ऐसा नहीं करना चाहिये था क्योंकि वहां पर लोग आपकी सुन्दरता व शरीर की बनावट को देखने नहीं आये थे बल्कि आपकी कला को देखने के लिये आये थे जिसे आपको पूरी क्षमता व पूरे खुलेपन से दिखानी चाहिये थी। एक बात ध्यान रखियेगा इंसान की सबसे बड़ी सुन्दरता उसकी कला व गुण होता है।

उस प्रोफेसर की बात उस गायिका पर इतना प्रभाव पड़ा कि आगे चलकर वह अमेरिका की सबसे बड़ी गायिका बनी।

सम्प्रेषण (बातचीत) में कई लोग परेशानी अनुभव करते हैं ऐसा नहीं है कि वह अपनी बात को अच्छी तरह से कह नहीं सकते, कह सकते हैं और बेहतर ढंग से कह सकते हैं परन्तु उनके मन में एक संकोच होता है एक झिझक होती है वह सोचते हैं कि सामने वाला व्यक्ति हमें कहीं गलत न समझ जाय या फिर सामने वाला हमसे ज्यादा बुद्धिमान है उसके सामने बात करना ठीक नहीं है। जबकि हर वक्त ऐसा नहीं होता है कि सामने वाले को हमारी बात अच्छी न लगे। या फिर सामने वाला हमसे ज्यादा बुद्धिमान है।

हाँ मैं मानता हूँ कि समाज में कुछ ऐसे लोग जरूर हैं जो अपने से बुद्धिमान किसी को नहीं मानते और उनकी हमेशा हसरत रहती है कि सिर्फ उनकी ही बात सुनी जाय। और सिर्फ उनके ही कार्य की तारीफ की जाय।

वास्तव में इस प्रकार के लोगो को किसी का काम किसी की बात पसंद नहीं आती। इस स्थिति में ऐसे लोगो की चिंता न ही करे तो उचित है क्योंकि इन लोगो का काम ही यही है आप निःसंकोच अपनी बात कहे। हो सकता है सामने वाला व्यक्ति आपसे बहस करने लगे तब आप अपनी बात पूरी कर अपने काम में लग जाय बहस करने का मौका ही न दे। क्योंकि तर्कसंगत बात करना तो उचित है लेकिन बहस करना निहायत बेवकूफी है।

“ अपनी बात कहने में कोई परहेज नहीं करना चाहिये आप न ही किसी का अपमान कर रहें और न ही किसी को नुकसान पहुंचा रहें हैं आप सिर्फ अपनी बात कह रहे हैं जो उचित है। ”

जब आप किसी मंच में जाते हैं और वहां से आपको कोई बात कहनी होती है तो आपको एक प्रकार की परेशानी महसूस होती है। कहा भी जाता है “ अगर दुनिया में मौत के बाद इंसान को किसी चीज का डर होता है वह है मंच से बोलने का। ”

वैसे आप आपस में चाहे कितनी भी बातें कर लो मगर जब आप मंच में जाते हो तो आपके हाथ पैर कांपने लगते हैं जो बात आप कहने वाले होते हैं उसे भूल जाते हैं। आवाज लड़खड़ाने लगती है आदि-आदि।

इस स्थिति में आपको चाहिये कि आप मंच में बोलने से पहले शीशे के सामने खड़े होकर अभ्यास करिये। इसके बाद अपनी बात को अपने दोस्तों के सामने बोलकर अभ्यास करिये। जब आप मंच पर बोलने के लिये जाये तो हमेशा इस बात का ध्यान रखे कि जो आप बोलने जा रहे हैं वही सत्य है और यह मानकर बोले कि सामने कोई भी मौजूद नहीं है। और अगर कोई सामने उपस्थित भी है तो उन सभी से श्रेष्ठ मैं हूँ क्योंकि मुझे मंच मिला है।

एक बात हमेशा ध्यान रखें – “दुनिया में मंच सफल व बुद्धिमान व्यक्ति को ही मिलता है असफल व मूर्ख को नहीं।”

अगर असफल कायर व मूर्ख व्यक्ति मंच में खड़े होकर बोले तो मंच की स्थिति क्या होगी ? यह दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को पता है इसलिये तनिक भी अपने मन में यह भावना न लाये कि आप श्रेष्ठ व बुद्धिमान नहीं हैं। आपकी बात किसी को अच्छी नहीं लगेगी।

है ! कर्मवीर मनुष्य निंदा की चिंता छोड़कर आत्मकल्याण के मार्ग पर निरन्तर चलता रह क्योंकि –

यह नहीं आज की बात अतुल , बिल्कुल यह बात पुरानी है ।

यों निंदा और प्रशंसा की, ऐसी ही एक कहानी है ॥

जो लोग यहाँ चुप रहते हैं, उनकी भी होती है निन्दा ।

जो मानव ज्यादा कहते हैं, उनकी भी होती है निन्दा ॥

जो अल्प बोलने वाले हैं, वे जन भी निन्दित होते हैं ।

ऐसे नर नहीं जगत में जो निन्दा से विरहित होते हैं ॥

जो पूरा निन्दित व जिसकी सम्पूर्ण प्रशंसा करें सभी ।

ऐसा नर न था, न है, एवं होगा भविष्य में नहीं कभी ॥

(धु.ब.गाथा 227-228)

5. चिंता से मुक्त रहे :-

“ चिंता चिंता के समान होती है, जिस प्रकार चिंता मृत व्यक्ति को जलाती है उसी प्रकार चिन्ता जीवित व्यक्ति को मृत्युमय बना देती है । ”

मात्र चिंता करने से आज तक कोई व्यक्ति किसी भी समस्या का उपचार नहीं कर पाया, चिन्ता भीतर ही भीतर खोखला बनाती है। कहा जाता है कि चिन्ता एक ऐसी सर्पणी है जो अदृश्य रूप से व्यक्ति को सताती रहती है। चिंता को दूर करने के अनेक उपाय बताये गये हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण उपाय सकारात्मक विचार को बताया गया है। सकारात्मक विचार से चिंता स्वतः कुंठित हो जाती है और एक नये

आत्मविश्वास का जन्म होता है और एक नयी आशा का संचार होता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति प्रत्येक घटना व वस्तु को भावनात्मक रूप से देखने लगता है।

“ व्यक्ति काम करने से नहीं मरता, बल्कि काम न करने की चिंता उसे मार डालती है। ”

-बीचर

जब चुनौतिया आती है तो प्रायः हम चिंतित होते हैं। चिंतित होने की यह प्रवृत्ति सहज और स्वाभाविक है। लेकिन चिंता हमारे लिये घातक भी बन जाती है और सहायक भी यदि आप आई हुई चुनौतियों से डर गये और चिंता को लेकर परेशान है कि अब क्या होगा ? तो निश्चित मानिये यह चिंता आपको पराजय का मुख दिखायेगी लेकिन अगर आप चिंता करते हैं कि अब क्या करें ? और चुनौती का मुकाबला करने का प्रयत्न करते हैं तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

हम अगर इतना सुनिश्चित कर ले कि हम चिंता के आगे घुटने नहीं टेकेंगे तो हमारी यह सोच हमें हर कठोर परिस्थितियों में साहस प्रदान करेगी और अधिक सशक्त बना देगी। मैं मानता हूँ कि प्रत्येक विपत्ती, प्रत्येक विषमता, प्रत्येक विपरीत परिस्थिति हमारे वास्तविक सफलता में सहयोग करने के लिये ही आती है। हमारे अंदर जो अपार शक्ति और समर्थ है उसके द्वारा हम चिंतामुक्त रहकर परिस्थितियों से लड़ सकते हैं।

“ मानव समाज का बहुत बड़ा समूह नित्यप्रति चिंता के सम्मुख आत्मसमर्पण करता है। ”

चिंता के कारण व्यक्ति को अपनी मानसिक शक्ति के भण्डार की अनुभूति नहीं होती और वह अपने आप को अशक्त अनुभव करने लगता है इसके मुख्य कारण निम्न हैं।

- ❖ प्रत्येक व्यक्ति हर परिस्थिति, हर गतिविधि में सिर्फ कमियों को देखता है।
- ❖ सदा यह धारणा लिये रहता है उसके साथ अन्याय ही अन्याय हुआ है तथा भगवान ने उसे कुछ नहीं दिया जिसके लिये वह योग्य था।

❖ हमेशा अपने आप में दीनहीन व हेय समझता है।

आत्मविश्वास के लिये अपने अन्दर की समस्त दुष्प्रवृत्तियों का त्याग करना आवश्यक है, साथ ही सकारात्मक चिंतन जरूरी है, आत्मविश्वास के लिये इस प्रकार सोचना चाहिये 'आई एम ग्रेट' अर्थात् मैं दिव्य हूँ। मैं ईश्वर का भेजा हुआ दूत हूँ मैं दुनिया में सबकुछ कर सकता हूँ।

“चिंता से मुक्त होकर सिर्फ अपने काम में ध्यान दें जो बीत गया वह आपका गुजरा हुआ कल था। जो आयेगा वह आपका आने वाला कल है परन्तु जो आज है वही सत्य है। आज के लिये ही प्रयत्नरत रहे। और पूरी क्षमता के साथ प्रयत्नरत रहे।”

6. मानसिक शक्ति का संचय करें :-

“ मानसिक शक्ति भावनात्मक पक्ष का निर्माण करती है और व्यक्ति को आत्मविश्वास प्रदान करती है जिससे आलस का विनाश होता है और विकास की अनुभूति होती है। ”

मनुष्य की प्रत्येक क्रिया मानसिक शक्ति द्वारा संचालित एवं नियंत्रित होती है। विचार एवं कर्म के अनुसार इन समस्त शक्तियों का उत्कर्ष एवं पतन होता रहता है। कर्म द्वारा मनुष्य अपनी शक्तियों का विकास करता है। उसी के अनुसार उसके चरित्र का निर्माण होता रहता है।

प्रकृति ने जीवों को अनेक मौलिक प्रवृत्तियां प्रदान की है समस्त जीवन एवं वनस्पति जगत के जीव प्रजनन एवं आत्मरक्षा में अपनी उर्जा का प्रयोग करते रहते हैं और इसी में अपनी सारी शक्ति को व्यय कर देते हैं। परन्तु मनुष्य के पास इन दोनों प्रकार की संतुष्टि के बाद जो उर्जा बचती है उसे हम मानसिक शक्ति कहते हैं यही शक्ति मनुष्य की विशेषता और प्रकृति का वरदान भी है। मनुष्य प्रजनन और आत्मरक्षा की प्रवृत्तियों में जितना कम अपनी उर्जा खोता है उसी के अनुपात में उसके पास मानसिक शक्ति संचित होती रहती है। दुनिया का प्रत्येक रचनात्मक कार्य इसी मानसिक शक्ति का परिचायक होता है।

यदि मनुष्य अपनी नकारात्मक दुष्प्रवृत्तियों को नियंत्रित नहीं करता तो उसकी

मानसिक शक्ति का हास होता है और रचनात्मक कार्य बाधित होते हैं। जिस प्रकार पानी की टंकी चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो ? अगर उसमें एक छोटा सा छिद्र भी हो जाय तो टंकी का सारा पानी धीरे धीरे बह जाता है।

अगर हम चाहते हैं कि हमारे अन्दर शक्ति व मानसिक शक्ति सदा बनी रहे तो प्रयत्नपूर्वक उन गतिविधियों को पहचाने जो हमें क्षीण कर रही हैं कुछ ऐसे कारण हैं जो विचारणीय हैं :-

- ❖ अपने विवेक के अनुकूल कार्य व आचरण न कर पाने पर व्यक्ति के अंदर आत्मग्लानी होना।
- ❖ अभाव एवं इच्छा की पूर्ति न होने से उत्पन्न क्रोध।
- ❖ हमारे कारण कोई आगे न बढ़ जाय व फिर वह मुझसे आगे कैसे बढ़ गया ? जैसी प्रवृत्ति से उत्पन्न ईर्ष्या।
- ❖ वह हमसे उँचा है, नीचा है, अमीर है, गरीब है, सुन्दर व बदसूरत है जैसे विचार से उत्पन्न द्वेष भावना।
- ❖ मेरे साथ ही भगवान ऐसा क्यों करता है ? जैसी चिंता
- ❖ वह ताकतवर है, वह बुद्धिमान है, वह मुझे मार देगा जिस काम को मैं करने जा रहा हूँ वह कठिनाई भरा है जैसे विचार से उत्पन्न भय।
- ❖ मजबूरी
- ❖ दैवी विपत्ति
- ❖ एकाकीपन
- ❖ नकारात्मक विचार प्रणाली

ऊपर लिखे गये सारे कारण मनुष्य की मानसिक शक्ति का हास तो करते ही हैं साथ ही उसके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं अगर उनसे सजग न रहे तो अल्पकाल में ही शरीर अनुपयोगी बन जाता है।

कहने का तात्पर्य मनुष्य को अपनी मानसिक शक्ति का संचय करना चाहिये।

इससे सभी प्रकार की नकारात्मक पहलुओं में लड़ने की क्षमता आती है और मनुष्य के मन में आत्मविश्वास आता है।

7. किसी के दबाव में रहकर काम न करें :-

कभी भी किसी के दबाव में रहकर काम न करें। वरना आप अपनी वास्तविक पहचान खो देंगे साथ ही आप जिस काम को करने वाले हैं उस काम को अपनी क्षमता के अनुरूप नहीं कर पायेंगे। जब भी कोई काम करें, हम ढंग से करने की कोशिश करें।

किसी भी काम को करते वक्त यह विचार मन में कतई न लाये कि जो काम मैं कर रहा हूँ वह इसलिये कर रहा हूँ क्योंकि उसने या फलां व्यक्ति ने कहा है या फिर वह स्वयं कर रहा है। ऐसा सोचकर काम न करे कि अगर मैं यह काम नहीं करूंगा या फिर उसका कहना नहीं मानूंगा या फिर सामने वाले व्यक्ति के अनुसार काम नहीं करूंगा तो सामने वाला व्यक्ति हमसे नाराज हो जायेगा। इससे आपके गुणवत्ता प्रभावित होगी। प्रत्येक व्यक्ति के काम करने का अपना अपना तरीका होता है हो सकता है आपके काम करने का तरीका लक्ष्य तक पहुंचने के लिये पर्याप्त हो।

दूसरे के दबाव में काम करने या फिर दूसरों के अनुसार काम करने से गलतियां होने की गुजांइश ज्यादा होती है क्योंकि इंसान का मन उस समय द्विआयामी होता है परिणामस्वरूप उसका आत्मविश्वास खो जाता है।

जैसा कि मैंने कई बार कहा है कि मनुष्य उन्हीं चीजों को पसंद करता है उन्हीं विचारों का सम्मान करता है, काम करने का वही तरीका उसे रास आता है जैसा उसके मस्तिष्क में विचार होता है। दबाव के कारण थोपे गये विचार, काम करने का तरीका प्रत्येक व्यक्ति को बोज़ लगता है परिणामस्वरूप वह पूरे मन एवं आत्मविश्वास के साथ काम को अंजाम तक नहीं पहुंचा पाता और वह हार जाता है।

8. जिस काम में सबसे ज्यादा डर लगे उसी काम को करें :-

जिस काम से आपको डर लगता हो उसे बार-बार करने की कोशिश करें

क्योंकि जितना आप उस काम से डरेंगे, वह डर आप परउतना ही हावी होगा परिणामस्वरूप आप निराशावादी हो जावेंगे और आपके दूसरे काम भी प्रभावित होंगे।

अगर आपको लोगो के बीच में जाकर बातें करने में डर लगता हो तो बार-बार आप लोगो के बीच जाये। और उनसे बातें करें और अगर आपको ऐसा लगे कि सामने वाला व्यक्ति आप पर रुचि नहीं ले रहा तो पूरे आत्मविश्वास से बातों की शुरुआत की पहल खुद करें।

अगर आपको किसी विषय से डर लगता है तो उस विषय को बार बार पढ़ें और ज्यादा से ज्यादा उसके बारे में जानने की कोशिश करें। अगर आपको गाड़ी चलाने से डर लगता है तो बार-बार गाड़ी चलायें।

कहने का तात्पर्य जिस चीज का डर आपको लगे उसे पूरी क्षमता के साथ करे एक दिन आयेगा जब आपका डर खुद व खुद समाप्त होने लगेगा और आप में एक नया आत्मविश्वास आ जायेगा।

जब 1952 में माउंट एवरेस्ट पर पहलीबार एडमन्ड हिलेरी ने जाने का फैसला किया तो वह असफल हो गये, ऐसा नहीं था कि वह सफल नहीं हो सकते थे। वह अपने लक्ष्य से कुछ फिट ही दूर थे लेकिन उनका डर उन्हें हरा दिया। जब उन्हें पता चला कि वह अपने लक्ष्य से बेहद करीब थे तो उन्हें काफी दुख हुआ। जब उनके इस प्रयास से प्रभावित होकर इंग्लैंड में एक कार्यक्रम में स्वागत किया जा रहा था उस समय उन्हें बोलने के लिये बुलाया गया। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच हिलेरी मंच पर पहुंचे मगर उनके मन में अपनी हार की ग्लानी थी। इसलिये वह माइक को छोड़कर मंच पर घूमने लगे और माउंट एवरेस्ट की तस्वीर की ओर इशारा करते हुए तूने मुझे पहली बार तो हरा दिया लेकिन अब दूसरी बार मैं तुझे हराऊंगा। तुझे जितना बढ़ना था तू बढ़ चुका अब बढ़ने की मेरी बारी है। और 29 मई 1953 में एडमन्ड हिलेरी ने वास्तव में माउंट एवरेस्ट को हराकर माउंट एवरेस्ट में चढ़ने वाले पहले व्यक्ति बन गये।

किसी ने खूब कहा है - **“ ये हार तू मुझे कब तक हरायेगी, एक दिन आयेगा जब तू मुझसे खुद हार जायेगी। ”**

“ वह कितने गरीब है जिनके पास धैर्य नहीं है । ”

-शेक्सपीयर

धैर्य का मतलब विपरीत परिस्थितियों में भी अपने आपको सिद्ध करना कि मैं विजेता हूँ।

जिस व्यक्ति के पास धैर्य होता है वह प्रत्येक परिस्थिति का मुकाबला शांत मन-मस्तिष्क से करता है।

धीरज, धरम, मित्र व नारी। आपातकाल परखियों चारी ॥

कहने का तात्पर्य धैर्य, धर्म, मित्र व स्त्री को आपत्ति के समय परखना चाहिये। विपत्ति व विषम परिस्थिति ऐसी अवस्था होती है जहां मानव अपने स्वभाववश धैर्य को खो देता है जिससे उसका बचा-कुचा भी समाप्त हो जाता है। जबकि अगर वह अपने धैर्य को बनाये रखे तो कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी अपने बस में कर सकता है। और भविष्य के लिये सही व हितकारी फैसला ले सकता है।

पूरे जीवन भर समय एक समान नहीं रहता। इसलिये जीवन में उतार चढ़ाव आना स्वाभाविक है और इस स्वाभाविक प्रक्रिया का मुकाबला हमें धैर्य पूर्वक शांत मन मस्तिष्क से करना चाहिये। इसमें हमारी भलाई है।

एक प्रसिद्ध व्यापारी था। उसके व्यापार में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो रही थी। इसलिये वह दान धर्म करता था। कभी धर्मशालाएं, स्कूल, अस्पताल बनवाता तो कभी गरीबों व भिक्षुओं को भोजन करवाता, अपंगों के लिये निःशुल्क उपचार तो निर्धन व अनाथ बच्चों की शिक्षा दीक्षा व आवास भोजन की व्यवस्था में भी वह अग्रणी रहता था पूरे देश में उस व्यापारी की ख्याति थी। एक दिन उसके विषय में किसी समाचार पत्र में कटु अलोचना और निंदाजनक बातें प्रकाशित हो गईं। उस व्यापारी ने जब उन बातों को पढ़ा तो क्रोध में तमतमाकर हाथ में समाचार

पत्र की प्रति लिये अपने एक मंत्री मित्र के घर जा पहुंचा और उससे बोला - “लानत है तुम पर। मैं तुम्हारा मित्र हूं फिर भी अखबार वाले मेरे विषय में उटपटांग लिख रहे हैं। तुम मेरे साथ अदालत चलो।”

मंत्री जी ने कहा - “तुम अदालत जाकर क्या करोगे?”

व्यापारी ने तमककर जबाब दिया - “उस अखबार के संपादक के खिलाफ मान हानि का दावा करेंगे।”

अखबार में प्रकाशित समाचार को पढ़ने के बाद मंत्री जी ने मुस्कराते हुये पूछा - “तुम्हारे लिये अदालत तो क्या, मैं नर्क में भी चलने को तैयार हूं। किन्तु पहले शांतचित्त होकर मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो। इस समाचार पर तुम्हारी दृष्टि स्वयं गई थी या किसी अन्य ने इसकी सूचना तुम्हें दी?” व्यापारी बोला - “किसी और ने यह समाचार बताया।” मंत्री ने शांति से कहा - “विश्वास करो मित्र। सुबह यह अखबार मैंने भी पढ़ा था, किन्तु मेरी नजर भी इस समाचार पर नहीं गई इसलिये हमें इसकी चर्चा भी किसी से नहीं करनी चाहिये क्योंकि हो सकता है कि हमारी तरह ही आधे से अधिक पाठको ने इस समाचार को देखा ही न हो। जिन्होंने देखा भी होगा, उनमें से आधे लोगो ने पढ़ा न होगा जिनने पढ़ा होगा, उनमें से आधे लोगो ने समझा नहीं होगा और जिन्होंने समझा होगा, उन्होंने इसे सत्य नहीं माना होगा। व्यापारी को मित्र की बात समझ में आ गयी और अपने क्रोध को छोड़कर अपने काम में जुट गया।

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर कोई बात आपके खिलाफ हो तो अपने आप में धैर्य रखें और शांत भाव से खत्म करने की कोशिश करें क्योंकि “किसी बात को तूल देने से बात बहुत दूर तक जाती है और जिसको यह बात पता नहीं होती उसे भी पता चल जाती है।” जिससे प्रत्यक्ष रूप से नुकसान आपका ही होता है। सामने वाले का नहीं क्योंकि सामने वाला तो चाहता ही था कि उसका नाम आपके नाम के साथ जुड़ जाय और आपकी प्रसिद्धि के साथ वह भी प्रसिद्ध हो जाये।

कुछ लोग हमारे रास्ते पर इसलिये आकर खड़े होते हैं कि हम अपना धैर्य खोकर कोई गलत कदम उठा ले और अपने रास्ते से भटक कर उन्ही के समान उन्ही की पंक्ति में जाकर खड़े हो जाय और हम भी बेकारी व लाचारी से जूझने लगे। इसलिये ऐसे लोगो पर हमें ध्यान न देते हुये चुपचाप बगल से निकल जाना चाहिये।

“दमन चक्र जितना ही प्रबल होगा, हमारा लक्ष्य उतना ही निकट हो जायेगा, यदि जीवन में धैर्य का अस्तित्व मिट जायेगा तो जीवन का अस्तित्व मिट जायेगा, धैर्य का दीप जलाए रखने वाले व्यक्ति अपनी नैया को बेरोक-टोक पार ले जाते हैं।”

जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें :-

“ उतावलापन और अधीरता बहुत बड़ी बाधा सिद्ध होती है बीज के अंकुर होते ही अगर उसके वृद्धि की गति का ज्ञान करने के लिये उसके जड़ की परीक्षा करने लगे तो हम अंकुर से भी हाथ धो बैठेंगे।”

“पुस्तक पढ़ने के पहले ही उसके अंतिम पृष्ठ को देखने की उत्सुकता ऐसी है जैसे गाड़ी रुकने के पहले ही उतरने की कोशिश करना।”

दुनिया में जितने भी महापुरुष हुये उन सभी की अगर जीवनी उठाकर देखी जाय तो उनके जीवन के किसी भाग में जल्दबाजी दिखाई नहीं देती है। सभी ने धैर्य रखते हुये सही समय का इंतजार किया और सफलता प्राप्त की और जिन्होंने उतावलापन दिखाया वह हमेशा असफल ही रहे हैं।

मैं यहाँ पर सबसे सफल व्यक्ति नेपोलियन की चर्चा कर रहा हूँ नेपोलियन बहादुर तो था ही साथ ही धैर्यवान भी था जब उसे सर्वोच्च सेनापति बनाया गया तो उसे उसी समय तानाशाह बन जाना चाहिये था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, इटली अभियान के बाद भी उसने ऐसा नहीं किया जबकि फ्रांस की जनता उसके पक्ष में थी। नेपोलियन ने धैर्य रखते हुये सिर्फ सही वक्त का इंतजार किया फिर उसने क्या किया ? सारी दुनिया जानती है।

कहने का तात्पर्य यह उतावलेपन के कारण कोई निर्णय नहीं लेना चाहिये हमेशा शांत भाव से बिना किसी प्रकार की जल्दबाजी किये हुये सही वक्त में सही निर्णय लेना चाहिये । ऐसा करने से हम सही रास्ते की ओर बढ़ते है ।

हम भी कितने अजीब होते है कभी-कभी तो इतना जल्दी निर्णय ले लेते है जो हमारे लिये उचित नहीं था और कभी-कभी हम इतनी देरी से निर्णय लेते है जबकि वहां पर निर्णय लेना उचित था । कुल मिलाकर इंसान को निर्णय अनुकूल परिस्थिति व समय के अनुसार लेना चाहिये ।

“ जो व्यक्ति जल्दबाजी में निर्णय लेता है वह ज्यादातर मुसीबत में ही फंसता है । क्योंकि जल्दबाजी में किया गया निर्णय हमेशा सही नहीं होता । ”

धैर्य से काम लेने पर देर हो सकती है परन्तु सफलता जरूर मिलती है :-

“ वर्तमान स्थिति से पस्त होकर धैर्य खो देने का अर्थ है स्वयं को पराजित मान लेना क्योंकि कोई ऐसी परिस्थिति नहीं होती जिसे नियंत्रित न किया जा सके । ”

धैर्य खो देने से व्यक्ति अपने लिये विषम व प्रतिकूल वातावरण का निर्माण कर लेता है और निराश होकर अपने लक्ष्य से विमुख हो जाता है ।

भगवान बुद्ध जब तपस्या कर रहे थे, उन्हें तपस्या करते करते बहुत दिन बीत गये लेकिन उन्हें कोई ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ । भगवान बुद्ध निराश हो गये और वहां से कपिलवस्तु की ओर चल दिये । रास्ते में प्यास लगी तो एक झील के पास पानी पीने के लिये रुके । वहाँ पर भगवान बुद्ध ने देखा एक गिलहरी पानी पर जाती है और फिर आकर रेत पर लोटती है और बार- बार वह ऐसा कर रही है, भगवान बुद्ध ने उस गिलहरी से इसका राज पूछा - “ गिलहरी तुम बार बार पानी में जाकर रेत पर क्यों लोटती हो । ” गिलहरी बोली - “ इस झील ने मेरे परिवार को डुबोकर मार डाला है इसलिये मैं इसे सुखा रही हूँ और जब तक मैं इसे सुखा नहीं देती तब तक मेरे मन की बदले की आग मिट नहीं सकती और मैं ऐसा करके रहूंगी । ”

भगवान बुद्ध ने गिलहरी की बात को शांत भाव से मनन किया और पुनः तपस्या कर परम ज्ञानी बनें ।

कहने का तात्पर्य यह है कि लगातार धैर्यपूर्वक काम करते रहने से असंभव कार्य भी संभव किये जा सकते हैं ।

एक बात तो बिल्कुल तय है एक दिन व दो दिन में , एक महीने व दो महीने में एक प्रयास व दो प्रयास में कोई भी व्यक्ति न ही कुछ सीख पाया और न ही कोई महान कार्य संपादित कर पाया । सभी को कोई भी काम को पूरा करने में वर्षों लगे है। आजादी की लड़ाई लगातार दो सौ वर्षों तक लड़ी गयी थी तब जाकर भारत देश स्वतंत्र हुआ था ।

मिराब्यू ने अपना ग्रंथ पूरा करने के लिये 40 वर्ष तक लगातार संघर्ष किया था । इसका परिणाम यह हुआ कि उसने सारे फ्रेंच साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था । माइकल एर्जेन्लो ने वर्षों की मेहनत से रोम में एक गिरजे की साज सज्जा की थी। सेक्सपीयर ने वर्षों समुद्र किनारे बैठकर अपने नाटको को लिखा था । जॉन मिल्टन ने ‘पैराडाइज लास्ट’ झाडियों के सामने बैठकर लिखी थी । दुनिया में ऐसे बहुत लोग है जिन्होंने धैर्य और परिश्रम से उँचा मुकाम हासिल किया है । मुझे दुनिया में ऐसा एक भी इंसान दिखायी नहीं देता जिसने बिना धैर्य व संघर्ष के उंचे मुकाम को हासिल किया हो ।

एक बार किसी प्रसिद्ध मैकेनिक से एक धनी व्यक्ति ने अपनी कार सुधारने के लिये कहा मैकेनिक ने कार सुधारकर दो हजार रूपये का बिल दे दिया धनी व्यक्ति ने कहा - “आपने तो इस काम में केवल दस मिनट ही लगाये है और इतने से काम की आप इतनी बड़ी रकम माँग रहे है । ” उसकी बात पर मैकेनिक ने कहा - “ हाँ आपकी बात मैं मानता हूँ लेकिन ऐसे काम को दस मिनट में किस प्रकार किया जाता है इसके लिये मुझे 40 वर्ष तक सीखने के लिये परिश्रम करनी पड़ी है । ”

“ वास्तव में ऐसे ही लोगो की जरूरत है जो किसी भी काम को धैर्य

पूर्वक सीखें और उसे पूरा करने के लिये वर्षों का श्रम न्यौछावर कर सकें और उसका उचित परिणाम पाने के लिये प्रतीक्षा कर सकें ।”

– स्वेट मार्डन

काम की शुरुआत करें तो उसका अंत भी करें :-

“ काम की शुरुआत हुई और अच्छे परिणाम भी आ जाय यह असंभव है क्योंकि प्रत्येक काम की शुरुआत बच्चे के पालने के सामन होती है । जिस प्रकार पेड़ लगाते ही फल नहीं देता, बच्चा पैदा होते ही माँ बाप की सेवा नहीं करता है उसी प्रकार प्रत्येक काम का फल भी अपने नियत समय में ही मिलता है ।”

समाज में अक्सर देखा जाता है कि लोग काम की शुरुआत बड़े उत्साह पूर्वक करते हैं उस काम को पूरा करने के लिये अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं परन्तु कुछ समय पश्चात उस काम को छोड़कर दूसरा काम प्रारंभ कर देते हैं फिर उनकी कहानी ठीक वैसी ही रहती है । जैसे कि आधी छोड़ एक को धावें ऐसा डूबे थाह न पावे । और वह किसी भी काम में सफल नहीं हो पाता । अगर ऐसे लोगो से पूछा जाय कि तुमने उस काम को बंद क्यों कर दिया ? तो उसका जबाब होता है अरे यार उस काम को करने से कोई फायदा नहीं है या फिर काफी परेशानी वाला है या फिर इस काम को करने के लिये समय नहीं है या फिर इसमें मेहनत ज्यादा है फायदा कम है। इस प्रकार के व्यक्तियों से सिर्फ एक ही सवाल है आपने जिस काम को इतने उत्साह एवं जोश से जुरू किया बिना उसके तह तक पहुंचे उसे चंद दिनों में परख भी लिया और निर्णय भी ले लिया कि इस काम में कोई सफलता नहीं है कोई दूसरा काम करते हैं लेकिन एक बात ध्यान रखियेगा कि अगर आप पहले वाले काम को नहीं कर पाये तो आप दूसरा काम भी नहीं कर पाओगे क्योंकि दुनिया का कोई भी काम छोटा व बड़ा नहीं होता प्रत्येक काम में कामयाबी मिलती है बस उसे पूर्ण करने के लिये धैर्य की जरूरत होती है ।

कहने का तात्पर्य हमारे पास जो काम हो उसे पूरे धैर्य के साथ महत्वपूर्ण

बनाने की कोशिश करें, वह काम कैसे अच्छा बन सकता है ? इसकी ज्यादा से ज्यादा जानकारी इकट्ठी करे उसके बारे में सीखें ।

“ गाय खरीदने के साथ दूध की कामना न करें , एक व्यक्ति जो अपने काम से प्यार नहीं करता बल्कि पैसों के लिये काम करता है वह न ही पैसा कमा पाता और न ही खुश रह पाता ।”

– चार्ल्स श्वाब

किसी भी काम को लगातार धैर्य पूर्वक करे जैसा कि मोहम्मद गजनबी ने किया था, मोहम्मद गोरी ने किया था, शिवाजी ने किया था, नेपोलियन बोनापार्ट ने किया था व अन्य विजेताओं ने किया था ।

एक बार नेपोलियन बोनापार्ट से पूछा गया – अब आप तो फ्रांस के सम्राट बन गये हो आप को स्वयं युद्ध करने की क्या जरूरत है ?

नेपोलियन ने जबाब दिया – “ राजा महाराजा तो खानदानी थे इसलिये जनता उनके लिये अपना प्रेम कभी भी कम नहीं कर सकती है मगर मैं युद्ध से पैदा हुआ हूँ जनता ने मुझे युद्ध से स्वीकार किया है अगर मैं युद्ध करना बंद कर देता हूँ तो शायद सम्राट नेपोलियन नहीं कहलाउंगा और मेरा अस्तित्व समाप्त हो जायेगा इसलिये जब तक मेरी सांसे चलेगी मैं युद्ध करता रहूंगा ।”

मुश्किल समय को शांति पूर्वक हल करें :-

“इंसान की जिंदगी में मुश्किल परिस्थितियां आती हैं । उस समय हमें कुछ समझ में नहीं आता कि अब हम क्या करें ? उस समय बिना किसी उद्धवेद के शांतिपूर्वक निर्णय लें ।”

एक बार किसी एयरपोर्ट पर वर्जिन एयरलाइंस की उड़ान रद्द कर दी गई थी और एक अकेली अटेंडेंट परेशान यात्रियों की री-बुकिंग कर रही थी । अचानक क्रोध से फुंफकारता एक शख्स यात्रियों को धकेलते हुये डेस्क पर पहुंचा और अपना टिकट फेंकते हुये बोला – मुझे फ्लाइट में स्थान दिया जाय और वह भी फर्स्ट क्लास में । इस पर अटेंडेंट बोली “सर मैं माफी चाहूंगी , मुझे आपकी मदद करके

खुशी ही होगी, लेकिन पहले मैं इन यात्रियों की समस्या का समाधान कर दूँ। मुझे विश्वास है कि हम किसी न किसी हल तक पहुंच जायेंगे।”

अटेंडेंट की विनम्रता का यात्री पर कोई असर नहीं पड़ा और अपने पीछे खड़े यात्रियों को सुनाने के लिये चीखते हुये बोला – तुम्हें मालूम है कि मैं कौन हूँ? यह सुनते ही अटेंडेंट ने यात्रियों को संबोधित करने के लिये रखा माइक अपनी तरफ खींचा और बोला ‘महोदय’ मैं आपका ध्यान चाहती हूँ। कृपया मेरी बात गौर से सुने। उसकी आवाज अब टर्मिनल में गूंजने लगी थी। हमारी डेस्क 14 के पास एक सज्जन खड़े है जिन्हें नहीं मालूम की वे कौन है? यदि कोई उनकी पहचान खोजने में उनकी मदद कर सकता है तो कृपया डेस्क 14 पर तशरीफ ले आएँ।

यह सुनते ही उस शख्स के पीछे खड़े यात्री हंसने लगे और उस क्रोधित यात्री ने आगबबूला होते हुये अटेंडेंट को भद्दी सी गाली दे डाली। गाली सुनकर भी वह अटेंडेंट मुस्कुराते हुये बोली – महोदय कृपया आप एक बार फिर मुझे माफ करें। इसके लिये भी आपको लाइन में आना होगा।

कहने का मतलब जब हम किसी परिस्थिति को देखकर अपनी समस्त शक्तियां एकाग्र कर धैर्यपूर्वक मनन करते हैं तो उसका हल अपने आप हो जाता है। क्योंकि ईश्वर भी उन्ही की मदद करता है जो स्वयं की रक्षा करते हैं।

हिम्मत से काम लें :-

जिस प्रकार जब हमारे शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र खराब होता है तभी जीवाणु व विषाणु हमारे शरीर को प्रभावित करते हैं और हम बिमार होते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे वास्तविक जिंदगी में भी होता है कभी कभी हमारे सामने ऐसी स्थिति निर्मित हो जाती है कि हम डगमगा जाते हैं। कुछ ऐसी ही स्थितियों के बारे में मैं जिक्र करने जा रहा हूँ और ऐसी स्थितियों से हम कैसे उबर सकते हैं? उसके बारे में भी मैं जिक्र करूँगा।

1. जब कोई विपत्ती व मुसीबत आ जाए :-

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि विपत्तियां व मुसीबतें इंसान के पास आती

ही है क्योंकि वह एक समाजिक प्राणी है और समाज में रहते हुये सब कुछ झेलना पड़ता है। क्योंकि इंसान को समाज में रहने के लिये बहुत सारी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता है।

“ अग्नि सोने को परखती है, आपत्ति वीर पुरुष को ”

-सेनेका

हमें हमेशा एक सोच रखनी चाहिये। अगर मुश्किल नहीं आयेगी तो हमें बाकी के खुशनुमा दिनों का एहसास कैसे होगा? जो भी मुश्किल आयी है वह मेरे ही कारण है और इस मुश्किल का हल भी मैं ही करूँगा, मैं इससे दृढतापूर्वक लड़ूँगा। आज जो मुश्किल आयी है वह हमें कुछ न कुछ शिक्षा जरूर देकर जायेगी। यह भी हो सकता है आज जो मुश्किल हमारे पास आयी है वह किसी पूर्वार्ध का परिणाम हो जिसे हमें आज भुगतना पड रहा है (अगर आप पूर्वार्ध पर विश्वास रखते हैं तो) हो सकता है प्रकृति हमारी परीक्षा ले रही हो।

कभी भी आपत्ति विपत्ति के सामने अपने आपको समर्पित नहीं करना चाहिये। न ही काम बिगड़ने व न ही आने जाने वाले व्यक्ति की चिंता करनी चाहिये। जो वस्तु व व्यक्ति जब तक हमारे पास है तब तक हमारी और जब हमसे दूर चली गई तब से हमारा अधिकार उससे खत्म हो जाता है। जो हमारे पास है या जो हमें मिला है सब कुछ नाशवान है यहाँ तक की हमारा शरीर भी। फिर विपत्तियों से क्यों डरे? बस जो शेष रहता है वह है हमारा नाम, हमारा काम, जो हमारे इस संसार से जाने के बाद भी अमर रहता है इसलिये हमें कभी भी अपनी विपत्तियों को लेकर नहीं बैठना चाहिये और न ही अपने चेहरे पर किसी प्रकार का भाव आने देना चाहिये कि हम दुखी हैं व हमारे पास विपत्तियाँ हैं।

किसी दूसरे व्यक्ति से (सामान्य व्यक्ति से) अपने विपत्तियों के बारे में बताना भी उचित नहीं होता क्योंकि दुनिया का कोई भी व्यक्ति हमारी मदद नहीं कर सकता। बस हमें इतना मानकर चलना चाहिये कि जो भी दुःख के क्षण आये हैं उनसे मुझे ही मुकाबला करना है।

महात्मा स्वामी विवेकानन्द जब शिकागो में सर्वधर्म सभा को सम्बोधित करने के लिये गये। तब उन्हें बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा था उनके पास पैसे खत्म हो गये थे तो उन्हें पूरी रात कचरे के डिब्बे में आराम करना पड़ा था। चूंकि भारत के विभिन्न गुटों की तरफ से कई लोग इस सम्मेलन में भाग लेने के लिये आये थे उन्होंने स्वामी जी को तिरस्कृत किया क्योंकि उन्हें स्वीकार्य नहीं था कि इतने कम उम्र का व्यक्ति उनके बराबर पर बैठे। उनका नाम भी बोलने वालों की सूची में नहीं था। बहुत मेहनत व शिफारिश के बाद उन्हें सिर्फ शून्यकाल में बोलने के लिये मौका मिला उन्होंने इस मौके को ऐसा भुनाया कि “एक बार फिर-एक बार फिर-एक बार फिर” के नारे चारों ओर गूंजने लगे और उन्होंने पूरे तीन दिन तक सिर्फ शून्य पर बोला और सिर्फ उन्हें सुनने के लिये लोग वहां पर आते थे।

स्वामी जी खुद लिखते हैं जब मैं सिर्फ बीस वर्ष का था तो मेरे ऊपर एक भयंकर विपदा टूट पड़ी पिता की मृत्यु और परिजनों के द्वारा सम्पत्ति से बेदखल करने का मुकदमा, मेरी माँ व भाई बहनो की जिम्मेदारी और उपर से मेरी इस स्थिति में दोस्तों तक के दरवाजे बंद हो गये थे। आज मेरी सहायता करने के लिये कोई तैयार नहीं था। जो कल तक मेरे प्रशंसक थे सभी मुझसे दूर हो गये थे। मैंने दुखी होकर भगवान से मुँह मोड़ लिया था। परन्तु कुछ समय बाद मेरी आत्मा एवं गुरु के आशीर्वाद ने मुझे शक्ति दी और मैं दक्षिणेश्वर रामकृष्ण परमहंस के चरणों में चला गया।

गौर करने वाली बात यह है अगर स्वामी जी भी तत्कालिक स्थिति में उलझ गये होते तो आज विश्व के प्रेरणास्रोत नहीं होते।

“ आपत्ति मनुष्य बनाती है और सम्पत्ति ‘राक्षस’ बनाती है। ”

- बिल्टर ह्युगो

बाधाएँ एवं विपत्तियाँ ही महापुरुष की उत्पत्ति करती हैं क्योंकि सामान्य व्यक्ति तो तात्कालिक कठिनाइयों से अपना रास्ता बदल देता है या फिर उस काम को यह कहकर छोड़ देता है कि यह काम मेरे बस का नहीं है या फिर यह मेरा काम

नहीं है। लेकिन असाधारण व पौरुषवान व्यक्ति को विपत्तियाँ जितनी रोकती हैं वह उतना ही खतरनाक होता जाता है। वह अपने आपको मुश्किल समय में भी समाज के सामने इस प्रकार पेश करता हैं मानो उसके पास सुख ही सुख है विपत्तियाँ व मुश्किलें तो उसने देखी ही नहीं। हमेशा आत्मविश्वास से भरा रहता है दुर्बलता निरीहता व कमजोरी अपने मन में कभी नहीं आने देता है। कहा भी जाता है -

“ विपत्तियों की अभेद्य दीवारों में मार्ग बना लेना ही बुद्धिमानी है। ”

भारत रत्न सरदार बल्लभभाई पटेल एक बार कोर्ट में जिरह कर रहे थे तभी उनके हाथ में एक पत्र आया उन्होंने उसे पढ़ा और जेब में रख लिया। बहस खत्म हो गई वह केश भी जीत गये परन्तु बाहर निकलते ही उनके आँसू आ गये। पत्रकारों ने पूछा “ सरदार जी आप केश जीत गये हैं आपको खुशी मनाना चाहिये लेकिन हम आपके आँखों में आँसू देख रहे हैं क्यों ? ” बल्लभभाई ने कहा केश तो मैं जीत गया हूँ लेकिन मैंने अपना जीवनसाथी खो दिया है जिसकी सूचना हमें तीन घंटे पहले ही मिल गयी थी बस इसीलिये। ” इन्हीं खूबियों के कारण सरदार बल्लभभाई पटेल लौह पुरुष कहलाते हैं।

कहने का तात्पर्य प्रत्येक महापुरुष के पास विपत्तियाँ आई परन्तु उनमें ऐसा दर्शाया जैसे कुछ हुआ ही नहीं है। क्योंकि उनके लक्ष्य, धैर्य व आत्मविश्वास के सामने ऐसी विपत्तियाँ बहुत छोटी थी और यह विपत्तियाँ उनके अनुशासन, चरित्र व धैर्य को न हिला सकी परिणामस्वरूप वह महापुरुषों की श्रेणी में आकर सभी के प्रेरणास्रोत बने। उनका शरीर तो आज नहीं है परन्तु उनका नाम व काम आज भी है और जब तक दुनिया चलेगी तब तक रहेगा। मैंने यहाँ पर एक व दो महापुरुषों का जिक्र किया है अगर देखा जाय तो दुनिया के सारे महापुरुषों के जीवन में चढ़ाव फिर उतार और फिर चढ़ाव आया है, लेकिन वे उससे कभी घबराये नहीं तभी तो वह महापुरुष हैं।

2. जब भावनात्मक संबंध सामने आये :-

जब इंसान के ऊपर भावनात्मक संबंध प्रभावी होने लगते हैं तब मनुष्य का

हृदय और बजूद कांपने लगता है उसका धैर्य टूटने लगता है आत्मविश्वास डगमगाने लगता है ऐसा होता है मैं इस चीज से सहमत हूँ परन्तु ऐसे ही समय इंसान की वास्तविक परीक्षा होती है। इस समय इंसान कहता है मैं अपना दुःख तो खुशी-खुशी सहन कर सकता हूँ। लेकिन मुझसे अपनो का दुख नहीं देखा जाता। मैं हर मुसीबत से लड़ सकता हूँ। मगर अपनो के आंखों में आंसू किसी कीमत में नहीं देख सकता।

यह एक ऐसा समय होता है जब व्यक्ति के पास तीन रास्ते बचते हैं -

1. भावनात्मक संबंधों से बेअसर होकर अपना कर्त्तव्य करें।
2. भावनात्मक संबंधों में उलझकर अपने आपको समाज से खत्म कर लें अर्थात् सारे सामाजिक दायित्वों से मुंहमोड़कर कर्त्तव्य मार्ग से विमुख हो जावे।
3. भावनात्मक संबंधों में उलझकर हिन्सक प्रवृत्ति धारण कर लें ज्यादातर लोग तीसरे मार्ग पर चलना पसंद करते हैं। जो न ही उनके स्वयं के लिये हितकर होता है और न ही उनके अपनों के लिये और साथ ही खुद अपने को और अन्य लोगों को भी नई मुसीबत में फंसा देते हैं। परिणामस्वरूप अपने साथ साथ अन्य लोगों की बर्बादी का कारण बनते हैं।

मैं मानता हूँ इस समय इंसान को इन तीनों रास्तों में से सिर्फ पहले रास्ते को ही अपनाना चाहिये क्योंकि दुनिया का प्रत्येक महापुरुष पहले रास्ते में ही चलकर महान बना है।

मैं उन लोगों से एक बात कहना चाहूँगा जो पहले वाले रास्ते छोड़कर अन्य दो रास्ते की ओर चलने की कोशिश करते हैं। भावनात्मक प्रवाहमयी धारा में बहने के बजाय उससे बचना चाहिये क्योंकि जो इसमें बहा है वह हमेशा हारा है इतिहास गवाह है हारा वही है जो भावनात्मक संबंधों में उलझा है।

नेपोलियन बोनापार्ट भावनात्मक भाव के ही कारण हारा उसका एक स्त्री से प्रेम एवं परिवार से प्रेम उसे इतना तोड़ दिया कि उसे जायज व नाजायज बाते समझ में ही नहीं आती थी जो उसके हार का कारण बना और अंत में असंभव को

संभव कर दिखाने वाले नेपोलियन के लिये संभव काम भी असंभव हो गया।

सम्राट अशोक को दुनिया का कोई योद्धा नहीं हरा सकता था परन्तु कलिंग विजय ने उसे भावनात्मक रूप से कमजोर कर दिया परिणामस्वरूप उसने अपने हथियार डाल दिये। पृथ्वीराज चौहान संयोगिता जैसी भावना के कारण हारे। सिकन्दर महान संतो की बातों को सुनकर भावनात्मक रूप से कमजोर होकर हारा। रूडोल्फ हिटलर का अपने धर्म के प्रति अधिकतम झुकाव हार का कारण बना। ऐसी तमाम कहानियों से इतिहास भरा पड़ा है जिसमें हार का कारण सिर्फ भावना थी।

कहने का तात्पर्य है कि जिसे जीत की ओर बढ़ना होता है उसे अपने मन को कठोर करना ही पड़ता है ऐसा करने से कोई भी रिश्ता व चीज आपको कमजोर नहीं कर सकती। जरा सोचिये जो व्यक्ति सफल है, व जो व्यक्ति महापुरुष बना। क्या उनके मन में भाव नहीं जगते रहे होंगे ? क्या उनके परिवार को कभी कष्ट से नहीं गुजरना पड़ा होगा ? जरूर उनके साथ भी ऐसा रहा होगा क्योंकि वह भी इंसान थे कोई जड़ व पत्थर नहीं थे। लेकिन उनने अपने मंजिल के सामने इन तात्कालिक भावनाओं को नहीं आने दिया बल्कि दूर का सोच कर चले और सफल होकर अपने आसपास के सारे रिश्तों को भी सफल बना दिया। अगर वह ऐसा नहीं करते बल्कि उसी वर्तमान स्थिति में उलझे रहते तो क्या होता ? क्या मिलता ? असफलता बर्बादी, दरिद्रता या फिर लोगों की हंसी के पात्र। इसके सिवाय शायद कुछ नहीं।

इसलिये हमारा दायित्व बनता है कि हम अपनी भावना रूपी रूकावट को हटाने का प्रयास करें और अगर हमें भावना रखनी भी है तो ऐसी रखे कि हम अपने परिवार, देश व दोस्तों को कुछ देने लायक बने। सफल होकर उनका कल्याण करें मैनै यहाँ पर भावनात्मक सोच से परे जाने को कहा है अपने मन को कठोर करने को कहा है लेकिन मानवता भूलने को नहीं कहा। अगर आपके लिये भावनाओं को नियंत्रित करना कठिन हो रहा हो तो एक काम करें। उसे अपने चेहरे व हावभाव पर किसी कीमत पर न आने दे जिससे आप दूसरों को कमजोर प्रतीत हो। और आपका

काम प्रभावित हो ।

“ भावना एक ऐसी बला है जो हमारे धैर्य, आत्मविश्वास व लक्ष्य को कमजोर करती है ।”

3. जब हमारा वातावरण हमारे प्रतिकूल हो :-

हमारे आस-पास के वातावरण हमें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है हमारे चारों ओर का रहन सहन, अचार-विचार हमें प्रभावित करता है हम जिस वातावरण में रहते हैं हम उसी के अनुरूप ढल जाते हैं उसी प्रकार के विचार हमारे मन में आते हैं ऐसा होना मानवीय स्वाभाविक प्रक्रिया होती है । जो प्रत्येक आम इंसान के जीवन में लागू होती है । हमारे मन को प्रतिकूल वातावरण तभी प्रभावित करता है जब हमारी सोच व सपने कमजोर होते हैं और हमारी दुनिया वही तक प्रतीत होती है जहां हम रहते हैं जिस प्रकार मेढक को कुआँ ही समुन्दर प्रतीत होता है ठीक उसी प्रकार जहां हम रहते हैं वही हमें सारा संसार प्रतीत होता है लेकिन जब हमारी सोच व सपने उच्च होते हैं ,तो हमारे आसपास का वातावरण हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाता । और हम प्रतिकूल वातावरण व निम्नतम वातावरण में भी कामयाब बन जाते हैं ।

जिस प्रकार कमल कीचड़ में खिलता है, मोती कचड़े में उगता है उसी प्रकार महान पुरुष की उत्पत्ति भी विपरीत वातावरण में ही होती है विपरीत वातावरण में प्राप्त की गयी सफलता ही महानता को दर्शाती है । जीवन की उंचाईयाँ तो सभी देखते हैं परन्तु जिसने गहराईयाँ देखी है वही असली जिंदगी जीता है ।

इसलिये हमें वर्तमान वातावरण के अनुसार नहीं चलना चाहिये बल्कि अपने लिये खुद के अनुकूल वातावरण का निर्माण करना चाहिये । अब आप अगर सोचे कि ऐसा कैसे हो सकता है ? कि हम अपना वातावरण स्वयं निर्मित करें । हो सकता है क्योंकि मानव के लिये कुछ भी असंभव नहीं है ।

“ हमें परिस्थितियों का दास नहीं होना चाहिये बल्कि परिस्थितियों को अपना दास बनाना चाहिये ।”

❖ सबसे पहले हमें अपने मन को एकाग्र करना चाहिये । आस पास के वातावरण पर ध्यान नहीं देना चाहिये । बल्कि उसे अपनी शक्ति बनाकर उससे जो उर्जा मिले अपनी सफलता में लगाना चाहिये ।

❖ लोग क्या करते हैं ? क्या कहते हैं उस पर परेशान नहीं होना चाहिये बल्कि उसे शक्ति बनाकर उससे जो उर्जा मिले अपनी सफलता में लगाना चाहिये।

❖ हमारी एक सोच होनी चाहिये कि प्रकृति हमारी परीक्षा ले रही है और आस-पास के वातावरण व लोगो को परीक्षक के रूप में नियुक्त किया गया है वह प्रकृति जानना चाहती है कि मेरा बंदा कितना धैर्यवान व दृढ़ है । ऐसे करने से हमारे आस-पास का वही वातावरण हमारे अनुकूल हो जाता है ।

महात्मा सुकरात दुनिया के बहुत बड़े दार्शनिक थे लेकिन उनकी पत्नी उन्हें हमेशा भलाबुरा कहती रहती थी और सुकरात हमेशा चुपचाप सुनते रहते थे कभी भी उसे प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ नहीं कहते थे फिर भी उनकी पत्नी उनके घर आने के साथ ही भला बुरा कहना शुरू कर देती थी । एक बार महात्मा सुकरात अपने शिष्यो के साथ अपने घर पर आये तो उनकी पत्नी अपनी आदत के अनुसार महात्मा सुकरात को भला बुरा कहने लगी धूर्त, मूर्ख, निकम्मा जैसे शब्दो का उपयोग करने लगी परन्तु सुकरात कुछ नहीं बोले, फिर भी उसका जी नहीं माना और एक बाल्टी पानी लाकर महात्मा सुकरात के ऊपर लाकर डाल दिया । तब महात्मा सुकरात मुस्कराते हुये बोले “ हे ! देवी आज तक बादल गरजते थे लेकिन अब वह बरसने भी लगे ।” तभी सुकरात के एक शिष्य ने कहा – “यह देवी नहीं कुल्टा है जो नाजायज आपको परेशान करती है ।”

तब सुकरात ने कहा – नहीं बेटा तुम गलत कहते हो मेरी पत्नी वास्तव मे देवी है वह मेरी परीक्षा ले रही है कि मेरे सुकरात मे प्रतिकूल वातावरण से लडने की क्षमता है या नहीं है । मेरा सुकरात कही बर्फ के ढेर से तो नहीं बना जो थोड़ी सी गरमी से पिघल जाय ।

कहने का तात्पर्य यह है कि परिस्थितियाँ व वातावरण कैसा भी हो अगर हम

अपनी नजरियों से देखे तो वह वातावरण हमारे अनुसार ही हो जाता है और हम सफल रहते हैं और ऐसी सफलता अन्य लोगों के लिये भी प्रेरणादायक होती है और हम आने वाली पीढ़ियों के आदर्श कहलाते हैं।

रहीमदास ने कहा है -

जो रहीम उत्तम प्रगत का कर सकत कुसंग । चंदन विष व्यापय नही लिपटे रहत भुजंग ॥

अर्थात् जो व्यक्ति सद्चरित्र बुलंद हौसले वाला होता है उस पर किसी भी प्रकार की बुरी प्रवृत्तियाँ असर नहीं कर पाती हैं जिस प्रकार चन्दन पर बहुत सारे विषधारी सांप निवास करते हैं लेकिन चंदन कभी भी विषयुक्त नहीं होता। मेरे कहने का तात्पर्य जीतने वाले तो जीतते हैं चाहे वह कितने भी गंदे वातावरण में ही क्यों न रहे हो क्योंकि जीतने वाला हार शब्द ही नहीं जानता है।

एक झुग्री झोपड़ी का व्यक्ति भी दुनिया के अमीरों की सूची में आया है। कृषि कार्य करने वाला व्यक्ति भी महान वैज्ञानिक बना है। झारखंड जैसी जगह से भी महान क्रिकेटर का जन्म हुआ है। फुटपाथ पर पढ़ाई करने वाला व्यक्ति भी महानतम शासक बना है। ऐसे तमाम लोगों का जन्म प्रतिकूल परिस्थितियों में ही हुआ है।

4. युवा -अवस्था के 15 से 25 वर्ष के बीच का समय :-

यह समय मनुष्य जीवन का ऐसा समय होता है जब वह तीव्रता से दुनिया में कदम रख रहा होता है। इस समय उसे दुनिया के प्रत्येक रूप को देखने व समझने का मौका मिलता है क्योंकि इस समय वह समझने लगता है कि अब वह बच्चा नहीं है। वह प्रत्येक चीज समझ सकता है व सकती है। वह जो भी काम करेगा व करेगी सब सही है। इसके पास निर्णय लेने की क्षमता है और उसका प्रत्येक निर्णय सही है वह कोई भी काम गलत नहीं कर सकता व कर सकती।

मैं मानता हूँ कि स्व: निर्णय की क्षमता इंसान में होनी चाहिये लेकिन प्रत्येक निर्णय दूरदर्शिता को ध्यान में रखते हुये लेना चाहिये। ऐसा कोई निर्णय नहीं लेना

चाहिये जो हमें भविष्य में सोचने के लिये मजबूर कर दें। काश उस समय ऐसा न किया होता तो आज मेरी स्थिति ऐसी न होती।

समाज में ऐसा देखा जाता है जैसे ही लड़के लड़कियाँ पन्द्रह सोलह की देहलीज पर होते हैं कुछ ऐसे कदम उठा लाते हैं जो भविष्य में दुःखदायी होते हैं। वह अपने इस निर्णय से कई लोगों को प्रभावित करते हैं और अपने साथ कई लोगों को समस्या में उलझा देते हैं। आजकल एक जो समस्या बनती जा रही है 'वह है प्यार' मैं मानता हूँ प्यार करना कोई गुनाह नहीं है परन्तु जब यह दिशाहीन हो तो गुनाह ही है। जैसे ही कुछ लोग पन्द्रह सोलह दिवाली देखते हैं उन्हें प्यार हो जाता है और भावनात्मक रूप से इतना कमजोर हो जाते हैं कि उन्हें अपने लक्ष्य व माता पिता के सपनों की परवाह नहीं रहती। उन्हें अपने प्रेम के अलावा कुछ भी नजर नहीं आता वह भूल जाते हैं कि प्रेम से पेट नहीं भरता पेट अन्न से ही भरता है और अन्य तभी प्राप्त होता है जब कोई काम व मेहनत की जाती है।

इतनी कम उम्र में जब सोचने समझने की क्षमता का विकास हो रहा होता है उसी नाजुक छण में इतना बड़ा निर्णय लेना भविष्य के लिये मुसीबत को न्यौता देना होता है क्योंकि इस उम्र में इंसान न ही दुनिया देख पाता और न ही दुनिया के असली रूप को समझ पाता उसे नहीं पता होता कि दुनिया में कितनी कठिनाईयाँ आती हैं। इस समय किया गया प्रेम आकर्षक मात्र है। मैंने देखा है व प्रतिदिन समाचार पत्रों में पढ़ता रहता हूँ कुछ लोग तो अति ही कर देते हैं उन्हें लोगों की व अभिभावकों की बातें इतनी बुरी लगती हैं कि वह उनके ही खिलाफ उठ खड़े होते हैं। लेकिन जब उन्हें होश आता है तब बहुत ही देर हो चुकी होती है और जिन्दगी भर पछताने के अलावा उनके पास कोई चारा नहीं बचता। खास बात तो लड़कियों के बारे में कहूँगा वह जब इस उम्र में ऐसी गलती करती है तो वह कुछ ज्यादा ही भावुक होकर प्रेमी के झूठे वादों में फँस जाती है और उनका यह एक बुरा कदम उन्हें जीवन भर के लिये मुसीबत पैदा कर देता है। उनकी स्थिति फिर वैसी ही रहती है 'धोबी का कुत्ता न घर का घाट का।' उनके पास दो ही रास्ते बचते हैं।

1. आत्महत्या 2. बदहाली की जिंदगी

अक्सर समाचार पत्रों में पढ़ने को मिल जाता है फलां लडकी ने आत्महत्या कर ली, फलां लडके ने आत्महत्या कर ली। उस लडके ने अपनी प्रेमिका को मार दिया। उस लडके ने अपने दोस्त को मार दिया। यानि आज किसी का जीवन लेना व अपना जीवन मिटा देना लोगो को कितना सस्ता व हल्का लगने लगा है। यह जीवन कितनी कठिनाई से मिला है इसका महत्व आज न लोगो को पता है और न ही समझ है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है इस प्रकार के निर्णय लेने वाले व्यक्तियों को अपने अभिभावको की प्रत्येक बात बुरी लगती है उन्हें ऐसा लगता है जैसे अभिभावक उनको जहर पिला रहे हो। वह यह भूल जाते है कि अगर अभिभावक आपका बुरा चाहते तो शायद आपके जन्म के समय ही मार देते लेकिन उनने ऐसा नहीं किया। क्योंकि प्रत्येक माता पिता अपने बच्चो को ही प्राण समझते है और आप व हम अपनी छोटी सी खुशी के लिये उनके पूरे जीवन का मान सम्मान दांव में लगा देते है। कभी कोई सोचता भी नहीं कि हमारे इस निर्णय से उनके दिल पर क्या गुजरती होगी ? और अंत में इन लोगो से (प्यार करने वालो से) एक बात कहूंगा -

“ प्यार बाद में भी किया जा सकता लेकिन कैरियर बात में नहीं बनाया जा सकता इसलिये पहले कैरियर पर ध्यान दे इसके बाद प्यार मोहब्बत करें। ”

दूसरी समस्या दौलत का नशा :-

मैं मानता हूँ सेल्फ डिपेन्ड होना अच्छी बात है लेकिन कैसे ? आखिर किस प्रकार से ? चोरी करने या फिर किसी को धोखा देकर व फिर किसी की जान मारकर या फिर अपने कैरियर को दांव में लगाकर इस प्रकार की दौलत कमाने वाले व्यक्ति का अंत बहुत बुरा होता है। वह कभी सुप्रसिद्ध नहीं कहलाता। और न ही लोगो के प्रेम का भागीदार होता। उसे हमेशा घृणा मिलती है। अगर वास्तव में आप इस कम उम्र में धनी बनने का सपना देख रहे है तो मेहनत करिये कोई ऐसा रास्ता निकालियें जो आपके अमीर बनने का सपना भी पूरा कर सके और दूसरों को नुकसान भी न पहुंचायें और ऐसा दुनिया के कई व्यक्तियों ने किया भी है। बिल गेट्स ने सोलह वर्ष

की उम्र में शेयर मार्केट में उतरकर काम शुरू किया था। ऐसे कई व्यक्ति है जिनने इसी उम्र में बहुत सारा धन कमाया है मगर किसी से धोखा, चोरी व झूठ बोलकर नहीं बल्कि अपनी मेहनत व सूझ बूझ के दम पर।

जब मैं भोपाल रहने के लिये आया था तो वहाँ पर मेरी मुलाकात एक लडके से हुई जिसकी उम्र तकरीबन 22 वर्ष के आसपास थी जो अभी कालेज का विद्यार्थी था। उसके हाव-भाव से ऐसा लग रहा था कि वह किसी रहीस परिवार से ताल्लुक रखता है। उसकी बातों से ऐसा लग रहा था कि वह बहुत उंची सोच रखता है इसलिये उस पर दिलचस्पी लेना मेरे लिये जरूरी बन गया था। जब मैंने उससे बात की तो पूरे दो घंटे तक अपनी बाते सुनाता रहा और मैं बिना कुछ बोले उसकी बाते सुनता रहा। बातचीत के दर्मियान मुझे पता चला कि वह जिस तेरह चौदह लाख की गाड़ी से चलता है वह उसकी खुद की कमाई से है। सम्प्रेषण के दौरान उसने एक बहुत रोचक बात कही - “ सर : मैं बचपन से अपने आपको लोगो के सामने बड़ा मानकर पेश करते आ रहा हूँ मैंने अपने आपको कभी छोटा नहीं समझा, मैं जो अपने हाथ में काम लेता हूँ उसे पूरा करके ही दम लेता हूँ। ” वह म.प्र. के बेहतरीन नेटवर्कर्स में से एक है। मैंने इसके कई कार्यक्रम देखे है वास्तव में उसके पास दौलत के साथ साथ वह सब कुछ है जिसकी कल्पना एक आम इंसान करता है।

इस कहानी से यही निष्कर्ष निकलता है कि इंसान चाहे तो बिना किसी शार्टकट के भी कम उम्र में भी दौलत कमा सकता है और लोगो के बीच सम्मान का बराबर हकदार बन सकता है क्योंकि दुनिया में अवसरों की कमी नहीं है।

मेरे कहने का तात्पर्य है कि इस उम्र में दौलत कमाइयें, दौलत कमाना कोई बुरी बात नहीं है, बड़ा बनने का सपना देखना कोई बुरी बात नहीं है। परन्तु शार्टकट से नहीं। ऐसी दौलत की कामना मत करिये जो भविष्य में आपके लिये मुसीबत लेकर आये। बल्कि ऐसी दौलत की कामना करिये जो भविष्य में खुशियां लेकर आयें। और आपके माता-पिता का सिर गर्व से ऊँचा उठ जाय। लोगो के बीच आप चर्चा के विषय बन जाय।

तीसरी समस्या :-

युवा वर्ग का नशे की दुनिया में तीव्रता से कदम रखना आज के युग में देखा जाय तो सरकार को सबसे अधिक टैक्स आबकारी विभाग से मिलता है आखिर क्यों ? इस प्रश्न का जबाब अगर ढूँढ़ा जाय तो पता चलता है कि हमारी युवा पीढ़ी इस ओर तीव्रता से कदम रख रही है। समाज का लगभग 70% युवा इस ओर अपना कदम बढ़ा चुका है और अपने मूल्यवान शरीर को प्रतिदिन दांव में लगाते हैं। उन्हें शायद एहसास नहीं है कि वह किस ओर जा रहे हैं।

“ नशीले चीजों के सेवन से फायदा कभी नहीं होता लेकिन नुकसान हमेशा होता है। ”

- ❖ नशीली वस्तुयें शरीर में विकृति पैदा करती हैं जो हमारी मानसिकता का विनाश करती हैं।
- ❖ नशे से इंसान का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन नष्ट होता है। साथ ही लक्ष्यहीन, दिशाहीन, व्यक्तित्व का विकास होता है।

इस प्रकार की बुराई की शुरुआत बहुत ही छोटी गलती से होती है, आपके बिगडैल दोस्त आपको अपनी कसम देकर या फिर दोस्ती की कसम देकर या फिर ऐसा तर्क देकर कि अभी जिन्दगी में एन्जाय कर लो फिर तो घर गृहस्थी के चक्कर में पडकर जिंदगी के मजे नहीं ले पायेंगे वगैरह वगैरह। और यह मेरे लिये से, आपके लिये कब बन जाता है पता ही नहीं चलता परिणामस्वरूप आप एक भयानक काल जाल में फंस जाते हैं जिससे ताउम्र आपको छुटकारा नहीं मिलता। इसलिये दोस्ती हमेशा चरित्रवान व्यक्तियों से करना चाहिये क्योंकि मनुष्य पर (आम मनुष्य पर) आसपास के व्यक्तियों का कुछ न कुछ प्रभाव जरूर पड़ता है।

“ चरित्रहीन, कायर व्यक्ति से दोस्ती विषधर नाग की दोस्ती के समान होती है। ”

एक दिन एक राजा रथ पर सवार होकर घूमने निकला। अनजाने में वह चोरो की बस्ती में जा पहुंचा। वह जब चोरो की बस्ती के पास एक सरोवर के किनारे

आराम कर रहा था, तभी वहाँ बैठा एक तोता चिल्लाने लगा “अरे कोई है ?” इस आदमी के पास बहुत सारा धन है। यह गले में मोतियों और हीरों की माला पहने हुये है। यह सोया है। इसकी गर्दन दबाकर मोतियों की माला निकाल लो और लाश को झाड़ियों में गाड़ दो। किसी को पता नहीं चल सकेगा। तोते को मनुष्य के समान बोलते हुये देख राजा उठा। और अपने रथ पर बैठकर आगे की ओर चल पड़ा। राजा रथ को दौड़ाता हुआ पर्वत के नीचे ऋषियों के आश्रम में गया। वहाँ पर कोई नहीं था। राजा रथ से उतरकर इधर उधर देख ही रहा था तभी एक दूसरे तोते ने कहा – “आइए राजन बैठिये। सभी ऋषि व मुनि भिक्षाटन के लिये गये हैं। आश्रम में शीतल जल है। प्यास लगी हो तो ठंडा पानी पीजिए और यदि भूख लगी हो तो फल खाइए।” राजा चकित दृष्टि से तोते की ओर देखने लगा। राजा तोते से बोला मैं एक बात पूछना चाहता हूँ। यहाँ से कुछ दूर सरोवर के किनारे एक वृक्ष की डाल पर भी एक तोता बैठा हुआ था। वह रूप-रंग में बिल्कुल तुम्हारे समान था परन्तु उसमें तुम्हारे समान गुण नहीं थे। तुम प्रेम व सेवा की बात कर रहे हो, किंतु वह जान से मार डालने व लूटने की बात कर रहा था। तोते ने कहा – “हां राजन, वह मेरा सगा भाई है। हम एक ही वृक्ष पर रहते थे, एक बार भीषण आंधी तूफान आया और हम अलग हो गये। वह चोरो की बस्ती में जा पहुंचा और मैं ऋषियों के आश्रम में। उसने चोरो की बात सीख ली और मैंने ऋषियों के आश्रम में रहने के कारण ऋषियों की बात सीख ली है।” दरअसल जो जिस तरह की संगति में रहता है उसका प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। तोते की बात सुनकर राजा के मुख से निकल पड़ा “वास्तव में संगति का प्रभाव अनिवार्य रूप से मन पर पड़ता है।”

कहने का मतलब दोस्त ऐसे बनाओं जो आपको सही रास्ते की ओर ले जाये जो दिशावान हो, जिनके पास कोई लक्ष्य हो। ज्यादा से ज्यादा उन्ही के संपर्क में रहना सीखो और अनुभव करो आखिर इस व्यक्ति में ऐसी कौन सी खास बात है जो इसे सफल बना रही है।

15 से 25 वर्ष के बीच सम्भल कर क्यों चले :-

15 से 25 वर्ष के बीच का समय मनुष्य जीवन का ऐसा समय होता है जब इंसान के शरीर के अंदर तरह तरह के बदलाव आते हैं। एक जो सबसे बड़ा बदलाव होता है वह है हार्मोनिक परिवर्तन, इस समय हम जैसा भी देखते हैं, सोचते हैं उसी प्रकार का संदेश तंत्रिका तंत्र के द्वारा हमारे मस्तिष्क में जाता है और हाइपोथैलमस उसी प्रकार की सोच के लिये पिट्यूटरी ग्रंथि को सक्रिय कर देता है और हमारी सोच के अनुसार हारमोन स्रावित होने लगते हैं और जब हम बार बार किसी वस्तु को देखते हैं या सोचते हैं तो एक स्थिति ऐसी आती है कि अधिकतम हारमोन स्रावित होने लगता है और हम स्थिर होकर उसी प्रकार के विचारों में फंस जाते हैं जिनसे चाहकर भी मुक्त नहीं हो पाते हैं। इसलिये हमेशा अच्छे विचार मन में लाने चाहिये।

इस उम्र में शरीर सबसे ज्यादा ऊर्जावान होता है साथ ही इसी उम्र में मानसिक शारीरिक सामाजिक तीनों प्रकार के विकास होते हैं।

चूंकि इस उम्र में सर्वाधिक उर्जा होती है, जोश होता है कुछ कर गुजरने की क्षमता होती है इस समय ऐसी उर्जा होती है जो कोई भी उलट-पलट करने की क्षमता रखती है, इसलिये इस उर्जा का उपयोग सही जगह, सही समय में सही दिशा में इस्तेमाल करना चाहिये। कहने का तात्पर्य " जो भी व्यक्ति 15 से 25 वर्ष के बीच के जीवन में जैसा काम करता है उसका परिणाम उसके आने वाली पूरी जिंदगी में झलकता है अब आपको कैसा काम करना है यह आप पर निर्भर करता है। अगर आपका काम अच्छा व दिशावान होता है तो आपकी जिंदगी भी दिशावान होगी। अगर आपका काम दिशाहीन व बुरा है तो आगे की जिंदगी भी दिशाहीन व बर्तार ही होगी यह मेरी कल्पना नहीं अपितु मेरा अनुभव है।"

" बीस वर्ष की आयु में संकल्प शासन करता है, तीस वर्ष में बुद्धि, चालीस वर्ष में विवेक।"

-फ्रें कलिन

बच्चों की इस उम्र में अभिभावकों का दायित्व :-

कही न कही बच्चों का भविष्य अभिभावकों के ऊपर निश्चित रूप से निर्भर करता है। कहा जाता है - "जइसन कस बाप महतारी वैसन कस लरिका, जइसन कस घर दुआर वैसन कस फरिका।" अर्थात् जिस प्रकार से अभिभावक होते हैं उसी प्रकार के गुण बच्चों में आते हैं जैसे अगर घर अच्छा होता है तो उसके सामने का मैदान भी अच्छा ही होता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया होती है। इसलिये अभिभावकों को अपने दायित्व का पूरा ध्यान रखना चाहिये।

जिस प्रकार पेड़ लगाने के बाद उस पर खाद पानी देने के साथ साथ उस पर समुचित ध्यान देने की जरूरत होती है जब तक की वह वृक्ष के रूप में न आ जाय ठीक उसी प्रकार बच्चों पर भी समुचित ध्यान देने की जरूरत होती है जब तक कि वह खुद सही रास्ते पर चलने लायक न हो जाय। इसके लिये जरूरी है -

- ❖ अपना चरित्र उत्तम रखे क्योंकि वह सब कुछ आपसे सीखने की कोशिश करता है इसका कारण है आम इंसान की आदत होती है वह जिसको दिल से चाहता है उसी का अनुकरण करता है जिस वातावरण में रहता है वैसा ही उसपर प्रभाव होता है, जैसा सुनता है वैसा बोलता है, जैसा सीखता है वैसा ही चलता है, इसलिये अभिभावकों का फर्ज बनता है, बच्चों की क्रिया कलापो पर ध्यान देने के साथ-साथ अपने क्रियाकलापों पर भी ध्यान दे, साथ ही बच्चों की बुराइयों के बारे में उनको अवगत कराते रहे लेकिन सब कुछ प्यार से।
- ❖ अभिभावकों को चाहिये कि घर में महापुरुषों की, सफल व्यक्तियों की चर्चा करने के साथ उनकी तस्वीर घर पर रखें। अच्छी अच्छी प्रेरणादायक किताबें रखें। बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिये प्रेरित करें। अपने अनुभव व दुनिया की सच्चाई के बारे में विधिवत उदाहरण देकर बतायें।
- ❖ अपने तनाव व अपनी नकामयाबी को बच्चों के सामने प्रदर्शित न होने दें क्योंकि इससे आपके प्रति गलत तस्वीर बनती है और बच्चों का मनोबल

कमजोर होता है।

- ❖ अपने अन्दर की कमियों को बच्चों के सामने न आने दे जैसे कि आप सिगरेट पीते हैं व तम्बाकू खाते हैं व अन्य कोई कमी आपमें है। माना आप सिगरेट पीते हैं बच्चा उसे देखता है और उसके बारे में जानने की कोशिश करता है और फिर उसका प्रयोग शुरू कर देता है जो बाद में उसकी आदत में शामिल हो जाती है। यह सिर्फ एक छोटा सा उदाहरण है ऐसी बहुत सारी गलतियाँ आप करते हैं जिसका आपको एहसास भी नहीं होता है और बच्चा सीखता चला जाता है।
- ❖ बातों ही बातों में अपने ज्ञान को (सामान्य ज्ञान को) बच्चों को बताइये।
- ❖ बच्चों को शून्य से 12 वर्ष तक जी भर के प्यार दे 13 से 18 वर्ष तक उसे निर्णय लेने की छूट दे परन्तु उस पर ध्यान बराबर रखें। 18 वर्ष के बाद उसे मित्रवत मिले, उसके प्रत्येक निर्णय का दिल से स्वागत करें, लेकिन उसके निर्णय की समीक्षा कर उसके दूरगामी परिणाम से जरूर अवगत कराये।
- ❖ अपनी व्यस्तता के बीच कुछ समय बच्चों के लिये निकाले उनके पास बैठे और उनके क्रियाकलापों के बारे में जानने की कोशिश करें बातों ही बातों में उनकी दिनचर्या व उनकी पढ़ाई के बारे में बातें कर सकते हैं। अपने निर्णय व किसी सफल व्यक्ति की उलाहना देकर अपनी बातें जबरदस्ती थोपने की कोशिश न करें। बल्कि प्यार से उसको अपने निर्णय के बारे में बताये साथ ही उसके दूरगामी परिणाम से भी अवगत कराये। जब किसी बात से बच्चा घबरा जाय उसका नाजुक हृदय कांपने लगे तो उसे प्रेरणा दें मानवीय शक्ति के बारे में बताये उसे कठिनाई से निपटने का रास्ता बतायें।
- ❖ बच्चों के हर अच्छे काम की खुले दिल से उनके सामने तारीफ करें इससे उनका मनोबल व आत्मविश्वास बढ़ता है। साथ ही ऐसा करने से उसकी गलत धारणाओं को भी रोक सकते हैं।
एक छोटा बच्चा था वह बहुत शैतान था इसलिये उसे अपने माता पिता से

बहुत डांट सुननी पड़ती थी। परंतु एक दिन उसके मन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया उसने तय किया कि अब वह कोई शैतानी नहीं करेगा और उसने पूरा दिन अपने इस निर्णय पर बहुत ज्यादा ध्यान दिया और एक भी हरकत नहीं किया जिसकी वजह से उसे डांट पड़े। उस रात जब मां ने उसे बिस्तर पर लिटाया और वह सीढ़ियाँ उतरने लगी तभी उसे लडके के सुबकने की आवाज सुनाई दी। उसे सुन वह ठिठक गई पीछे मुड़कर उसने अपने बेटे को तकियों के नीचे सिर छुपापकर रोते पाया। वह उसके पास गई, तो सुबकते सुबकते लडके ने पूछा “क्या आज मैं अच्छा बच्चा नहीं था?” यह सवाल मां के सीने में चाकू की तरह उतर गया, क्योंकि जब बच्चा गलती करता था तो उसे सुधारने में तो वह बिल्कुल देर नहीं करती थी लेकिन जब उसने अपना व्यवहार सुधारने की कोशिश की तो उसने इस तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया और बिना तारीफ का एक शब्द कहे उसे बिस्तर पर सुला दिया।

दरअसल व्यावहारिक जीवन में होना, यह चाहिये कि अगर हम किसी को उसकी गलती पर डांटते हैं, दंडित करते हैं तो उसके द्वारा किये अच्छे कार्यों की प्रशंसा भी करें। प्रशंसा व दंड किसी भी इंसान के लिये विपरीत प्रभाव पैदा नहीं करता बल्कि वह उसे गंभीरता पूर्वक लेता है क्योंकि मानव स्वभाववश अप्रत्यक्ष रूप से अपनी प्रशंसा चाहता है।

अंत में मैं इतना कहूंगा कि इस उम्र में व्यक्ति को बुराइयाँ अपनी ओर आकर्षित करती हैं वह बाहर से बहुत खूबसूरत दिखायी देती हैं लेकिन अंदर से खोखली होती हैं इसलिये इनकी तरफ आकर्षित न होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। यह थोड़ा मुश्किल काम हो सकता है लेकिन कल्याणकारी होता है।

5. जब व्यक्ति की कमजोरी सामने आ जाय :-

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ कमजोरी होती है जिसके सामने आते ही बहादुर से बहादुर व्यक्ति भी कायर बन जाता है अपनी छोटी से छोटी लड़ाई भी हार जाता है। यह कमजोरी ज्यादातर भावनात्मक ही होती है शारीरिक न के बराबर ही होती है। कभी कभी इंसान सामाजिक व आर्थिक कमजोरी के

सामने भी अपने आपको आत्मसमर्पित कर देता है। इतिहास गवाह है जब किसी व्यक्ति को किसी पर फतह करना होता था तब वह सामने वाले की कमजोरी ढूढ़ता था और उसकी उस कमजोरी को ध्यान में रखते हुये जीत हासिल करने की कोशिश करता था। हम अक्सर अपनी कमजोरी के कारण हारते हैं क्योंकि हमारी कमजोरी सामने वाले का विजयी हथियार बन जाता है और हम बेबस होकर उस हथियार से हार जाते हैं जबकि उस हथियार के प्रतिकार करने के लिये हमारे पास हजारो गुनी क्षमता थी। इसलिये जीवन में अपनी कमजोरी को किसी के सामने प्रदर्शित न करें चाहे वह आपका कितना भी बड़ा शुभचिंतक ही क्यों न हों ? क्योंकि इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन दोस्त ही होता है।

बहुत प्राचीन समय की बात है स्पेन में गैरी बिल्डन नामक सेनापति था वह बहुत बहादुर एवं समझदार था वह जिस युद्ध का नेतृत्व करता था जीत उसी की होती थी उसके दुश्मन उसके नाम से खौप खाते थे। लेकिन उसकी एक कमजोरी थी 'क्रोध' जब उसे क्रोध आता था तो अपनी सारी सहनशीलता खो देता था और क्रोध के फिरकत में इतनी बुरी तरह आ जाता था कि उसे कुछ भी समझ में नहीं आता था बस उसे किसी भी कीमत में सामने वाले की मौत दिखती थी। इस दर्मियान उसका कोई भी निर्णय बुद्धि संगत नहीं रहता था। दुश्मनों ने सोचा आखिर बिल्डन को कैसे रोका जाय ? तब उनने एक योजना बनायी। इस योजना के अनुसार सबसे पहले बिल्डन की व्यक्तिगत कमजोरी के बारे जानकारी इकट्ठी की उनने पाया कि बिल्डन की सबसे बड़ी कमजोरी उसका 'क्रोध' है। योजना के तहत उसे क्रोध दिलाया और फिर उसे वहां तक ले गये जहां उसे मारा जा सकता था परिणामस्वरूप बिल्डन मारा गया। इस प्रकार के दुनिया में हजारों उदाहरण हैं जिन्हे वास्तव में पराजित करना असंभव था लेकिन वह पराजित हुये। जिनके पराजय का एक ही कारण था वह थी उनकी व्यक्तिगत कमजोरी।

समाज में कई व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हे खुद की तारीफ बहुत अच्छी लगती है और इस चीज का सामने वाला फायदा कब उठा ले जाता है उसको पता भी नहीं

चलता और आप मुसीबत में फंस जाते हैं। ऐसी तमाम प्रकार कमजोरियां व्यक्ति की होती हैं जिनका फायदा अवसरवादी उठा ले जाते हैं। और आपके व्यक्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा जाते हैं। आप अपने रास्ते से भटक जाते हैं परिणामस्वरूप आप अपनी मानसिक, सामाजिक व आर्थिक जिंदगी का संतुलन खो देते हैं और आपको कुछ समझ में नहीं आता अब क्या करना चाहिये ?

कहने का तात्पर्य यह है कि अपनी कमजोरी को अपनी ताकत बनाये उसे दूसरे का हथियार न बनने दें हमेशा विजयी मुद्रा में रहे चापलूसों से सावधान रहें। अवसरवादियों को अपने करीब न आने दें। अपना प्रत्येक काम स्वयं करें। अगर आपको ऐसा लगता है कि सहयोगी की जरूरत है तो सहयोगी हमेशा सोच समझकर किसी सज्जन व्यक्ति को बनाये। राय सबकी ले परन्तु काम अपनी आत्मा व दिमाग द्वारा करें। अपनी कमजोरी को अपने जीवन का हिस्सा न बनायें।

6. असफलता से घबरा जाना :-

इंसान एक व दो बार असफल हो जाने के बाद फिर से किसी काम को शुरू करने से घबरा जाता है। वह यह मान जाता है कि वह सफल नहीं हो सकता व उसके पास काबिलियत नहीं है।

अमरीका के 16वें राष्ट्रपति लिंकन को सभी जानते हैं एक बेहद गरीब के घर में पैदा हुये थे उनके पिता बढई का काम करते थे एक दिन वह व्हाइट हाउस के पास से अपने पिता के साथ लकड़ियों का गट्टल लेकर जा रहे थे। वह व्हाइट हाउस की तरफ इशारा करते हुये अपने पिता से बोले - पिता जी : देखना मैं एक दिन इस घर में रहने के लिये आऊँगा। अब्राहम लिंकन की बात को सुनकर उनके पिता ने उनके गाल पर जोर से थप्पड़ मारा और कहा 'बेटा : दिन में सपने क्यों देख रहे हो, तुम्हारी तबियत तो ठीक है।' मगर बालक लिंकन अपने पिता की इस बात को एक शर्त के रूप में लिया और पूरे दिन अपने पिता के काम में हाथ बंटाते थे और रात में अपने सपनों के लिये काम करते थे। वह अपनी जिंदगी में कई बार हारे पर प्रत्येक हार को एक ताकत के रूप में लिया इसलिये अमेरिका के सफलतम राष्ट्रपतियों में

गिने जाते हैं।

25 वर्ष की उम्र में उन्होंने व्यापार किया और असफल रहे 30 वर्ष की उम्र में स्थानीय राजनीति में आये और स्थानीय निकाय का चुनाव हार गये, उन्होंने फिर व्यापार किया परन्तु वह फिर असफल रहे। 35 वर्ष की उम्र में सीनेट का चुनाव लड़ा और हार गये। 40 वर्ष की उम्र में उपराष्ट्रपति का चुनाव लड़े लेकिन फिर हार गये। इतनी सारी असफलताओं के बाद आम आदमी की तरह लिंकन भी हिम्मत हार चुके थे और दुखी मन से घर में बैठे थे तभी उनके बूढ़े पिता उनके पास आकर बोले – अब्राहम : चलो अब लकड़ी का काम फिर से शुरू करते हैं। पिता की बात लिंकन को अच्छी तो नहीं लगी परन्तु उनके पास दूसरा रास्ता भी नहीं था। इसलिये वह अपने बूढ़े पिता के साथ चल दिये। उनके पिता लिंकन को व्हाइट हाउस की ओर जाने वाले रास्ते की ओर ले गये लिंकन दुखी मन से उनके साथ चलते रहे। थोड़ी दूर बाद उस बूढ़े पिता ने रुककर कहा – “बेटा उधर देखो (व्हाइट हाउस की ओर इशारा करते हुये) बहुत पहले की बात है जब मैं यहाँ से निकला करता था तो मेरे मना करने के बावजूद भी मेरे साथ चलने वाला दस वर्ष का बच्चा यहां पर दो मिनट के लिये रुकता था और उधर देखकर कहता था कि एक दिन मैं यहां रहने आऊंगा और घर पहुंच दुगुनी कर शक्ति के साथ काम करता था। मगर आज मैं देख रहा हूँ वही दस साल का बच्चा उसी स्थान पर खड़े होकर कुछ भी बोलने से डर रहा है जबकि अब वह दस साल का नहीं बल्कि 45 वर्ष का है। जिसमें दुनिया से टकराने की क्षमता है।” पिता की बात सुनकर लिंकन के मन में हिम्मत की तरंगें दौड़ने लगी और उनने कहा – “पिताजी आज से 45 वर्ष का हारा हुआ व्यक्ति यही दफन हो चुका है और उसने पुनः जन्म ले लिया है जो अब कभी नहीं हारेगा।” लिंकन पूरे जोर शोर से अगले चुनाव की तैयारी में जुट गये और इस बार उन्होंने राष्ट्रपति का चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। और अमेरिका के सबसे मुश्किल (जब वहां शीत युद्ध छिड़ा था) समय के सफल राष्ट्रपति बने।

कहने का तात्पर्य सफलता उन्हीं को मिलती है जो सफलता की चाह रखते

हैं युद्ध वही जीतते हैं जो युद्ध क्षेत्र में जाते हैं।

“ असफलता सही मायने पर सफलता की पहली सीढ़ी होती है। ”

इंसान को एक व दो बार असफल होने के बाद धैर्य नहीं खोना चाहिये। एक आशा उत्साह एवं उम्मीद के साथ पुनः अपने काम की शुरुआत करनी चाहिये। अपनी हिम्मत को नहीं हारना चाहिये कहीं न कहीं मंजिल तक पहुंचने वाला रास्ता जरूर नजर आयेगा। बिस्टल चर्चिल द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री थैं। एक पत्रकार ने पूछा कि हिटलर के नाजी साम्राज्य के खिलाफ उनके देश का सबसे बड़ा हथियार कौन सा है ? बिना रुके उन्होंने जबाब दिया वही जो हमेशा से इंग्लैंड का सबसे बड़ा हथियार रहा है। ‘आशा’ एक ‘उम्मीद’ जिस पर सारी दुनिया टिकी है। आशा एवं विश्वास रूपी हथियार को इंसान को अपने साथ रखना चाहिये। आशा हमेशा इंसान का मनोबल व उसकी शक्ति को बढ़ाती है, उसमें एक नयी उर्जा का प्रवाह करती है। एक महानतम व्यक्ति ने कहा है – “कोई भी परिस्थिति निराशाजनक नहीं होती अपितु इंसान ही निराशाजनक हो जाता है।” कहने का तात्पर्य अगर आप एक आशा के साथ आगे बढ़ने के बारे में सोचते हैं तो बीच में आई असफलता का एहसास आपको कभी नहीं होगा और आप अपने आपको हमेशा तरोताजा महसूस करेंगे।

“ जिसके पास उम्मीद है वह लाख बार भी हारकर नहीं हारता। ”

जीवन में आशा के साथ साथ उत्साह की भी जरूरत होती है अगर आशा को उत्साह का सहारा न मिले तो आशा आपको कब तक प्रेरित करेगी। प्रेरणा तभी महत्वपूर्ण होती है जब उसके अनुसार कर्म किया जायें और कर्म तभी किया जा सकता है जब उत्साह बना रहे साथ ही सफलता की चाहत हो। इस कड़ी का अगर एक भी हिस्सा खराब हुआ तो पूरा तंत्र बिगड़ जाता है। प्रेमचंद्र ने कहा है – **“ आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालन शक्ति है बशु आवश्यकता इसी की है कि निष्ठापूर्वक कर्म किया जाय। उत्साही पुरुष के लिये संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं**

है।”

समाज में कुछ लोग ऐसे भी मिलते हैं जो कहते हैं कि मैंने कोशिश तो खूब की है, मैंने फला काम को बहुत अच्छे तरीके से किया था मैंने उस काम को करने के लिये रात दिन एक कर दिया था लेकिन फिर भी मैं सफल नहीं हुआ। अब बस मैं हार गया मेरी किस्मत ही खराब है। इस काम को पूरा करने की मुझमें शक्ति नहीं है। इस प्रकार की सोच रखने वाले व्यक्तियों को मैं एक ऐसे व्यक्तित्व से मिलवाना चाहूँगा जो एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि 99 बार हारा था। उसका नाम एडीसन था जिसने दुनिया में कृत्रिम रोशनी देने का काम किया था अर्थात् बल्ब का आविष्कार किया था। उन्होंने अपनी सफलता के बाद कहा था “ यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जो सौ चरणों में पूरी होती है।” मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक असफलता का पूरे दिल व मन से स्वागत करो और उससे प्राप्त उर्जा व सीख को काम के अगले चरण में लगाओ और पूरी प्रक्रिया को अपनी मंजिल तक जाने का रास्ता समझो।

“ अगर तात्कालिक कठिनाई को देखकर रूक गये तो फिर सफलता कभी नहीं आयेगी। क्योंकि सफलता छति व कीमत चाहती है। जो आपको हरहाल में चुकानी ही पड़ेगी।”

एक बार की घटना है एक व्यक्ति बहुत बड़ी नदी को बांधने का प्रयास कर रहा था लेकिन बार बार वह बांध नदी के प्रवाह में बह जाता था उस स्थिति को देखकर उनके साथी हंसकर कहते ‘तुम पांच बार इस नदी को बांधने की कोशिश कर चुके हो और कितनी बार बांधने का इरादा है। मेरी तो सलाह है कि तुम इस काम को न ही करो तो उचित होगा।’ वह व्यक्ति मुस्कुराते हुये बोला – अभी तक तो मैंने सिर्फ पांच प्रयोग किये हैं अभी मेरी जिंदगी इतनी बाकी है कि इस दर्मियान कई प्रयोग किये जा सकते हैं। वह महान व्यक्ति अन्ततः उस नदी को बांधने में कामयाब रहा। ऐसा महान व्यक्तित्व रखने वाला वह व्यक्ति अन्य कोई नहीं बल्कि भारत के महान इंजीनियर जिन पर पूरे भारत को नाज है। बिस्वेस्वरैया थे।

कहने का तात्पर्य **“ परिस्थितियों का पंजा संकल्पवान व्यक्ति को**

अपनी मुट्ठी में दबोच नहीं सकता। ऐसे व्यक्तियों के लिये संसार स्वयं रास्ता छोड़ देता है।”

कुछ लोगो की जिंदगी में अक्सर शिकायत होती है मैं बहुत कमजोर हूँ। मेरे पास बैक ग्राउंड नहीं है, मेरा आधार कमजोर है, मेरे साथ भगवान ने न्याय नहीं किया उसने मुझे हर मोड़ पर हराया है। अब इस दुनिया में जीना कितना मुश्किल हो गया है। वे शायद इसलिये कहते हैं क्योंकि उनके पास अनेक समस्यायें हैं, उन्हें कदम कदम पर कठिनाई झेलनी पड़ती है। किन्तु यह कोई नयी बात नहीं है जो आज हो रही है पहले भी लोग ऐसा कहते थे और आज भी ऐसा कहते हैं। दरअसल यह मानव स्वभाव है। वह कभी संतुष्ट नहीं होता। लेकिन जीवन को जटिल, कमजोर, व कठिन समझकर दूर भागना व फिर उसे नष्ट करना तो कायरता है। जीवन कठिन भी होगा व जटिल भी होगा। यदि सरल होता तो आप कितना जल्दी ऊँच जाते। एक सा भोजन करके आदमी ऊँच जाता है इसलिये बदल-बदल कर भोजन करता है।

दुनिया में मैंने ऐसे बहुत सारे लोगो को देखा व सुना है जिनके पास न कोई बैक ग्राउंड था और न ही कोई आधार था यहां तक कि कुछ लोगो के पास हाथ व पैर ही नहीं थे फिर भी वह अपने पौरुष, मनोबल के दम पर टॉप पर पहुंचे।

जब सन् 1976 में चंद्रा नामक लडकी ने डाक्ट्रेट की उपाधि से नवाजा गया तो पूरे दीक्षांत समारोह में आये लोगो ने खड़े होकर उसका अभिवादन किया। लोगो ने ऐसा इसलिये नहीं किया कि वह किसी सम्मान जनक परिवार से संबंधित थी बल्कि लोगो ने ऐसा इसलिये किया क्योंकि वह बचपन से अपंग थी उसे व्हील चेयर पर बैठाकर कक्षाओं में ले जाया जाता था। डॉ. चंद्रा भारत की प्रथम अपंग स्त्री व पुरुष में डॉक्ट्रेट पाने वाली शख्स थी।

ऐसी एक घटना अमेरिका की है वहाँ पर एक छोटा सा परिवार रहता था, माता-पिता और दो बच्चे। चारो प्रेम से रहते थे। सर्दियों के मौसम की बात है। दोनो बच्चे घर में अकेले थे ठंड की अधिकता ने दोनो को अंगीठी सुलगाकर तापने

के लिये प्रेरित किया। दोनों छोटे थे इसलिये एक गलती कर बैठे अंगेठी सुलगाने के प्रयास में मिट्टी के तेल के स्थान पर पेट्रोल डाल दिया पेट्रोल की आग एक दम भड़क उठी जिसमें एक बच्चा तो तत्काल मर गया और दूसरा बहुत अधिक जल गया। उसे अस्पताल पहुँचाया गया। वह लंबे समय तक अस्पताल में रहा और ठीक भी हो गया, लेकिन अब वह पूर्व की तरह सामान्य दिखाई देने वाला बच्चा नहीं रहा। वह बेहद कुरूप और अपंग हो गया था उसके दोनों पैर लकड़ी की तरह सूख चुके थे। पहियेदार कुर्सी पर बैठकर जब वह घर लौटा तो माँ फफक-फफककर रो पड़ी। पिता भी निराशा के गहन अधंकार में डूबे थे। किसी को आशा नहीं थी कि वह फिर कभी चल सकेगा। किंतु उस बच्चे ने हिम्मत नहीं छोड़ी वह अपने वर्तमान से अधिक बेहतर स्थिति पाने के लिये निरंतर प्रयास करता रहा। खिन्न होने के स्थान उसने प्रतिकूलताओं को चुनौती के रूप में लिया और उसे अनुकूलता में बदलने के लिये अपनी बुद्धि, पौरुष और कौशल को दांव पर लगाता रहा। उसने वैसाखी के सहारे न केवल चलने में बल्कि दौड़ने में भी सफलता पाई और अनेक पुरस्कार जीते। अपना अध्ययन जारी रखते हुये एम.ए. और पी.एच.डी. उत्तीर्ण की और विश्वविद्यालय के निदेशक जैसे महत्वपूर्ण पद पर आसीन हुआ और साहस की अदभुत बानगी पेश करते हुये द्वितीय विश्वयुद्ध में मोर्चे पर भी गया।

जब वह निदेशक पद से निवृत्त हुआ तो अपनी जमापूँजी से उसने अपंगों को स्वावलंबन देने वाली एक संस्था खोली, जिसमें हजारों अपंगों के रहने, पढ़ने और कमाने का सुव्यवस्थित प्रबंध था। ऐसे दृढ़ संकल्पवान और वीर पुरुष का नाम था। ग्रेट कनिंघम जिन्हे अमेरिका में देवता की तरह पूजा जाता है।

कहने का तात्पर्य दृढ़ इंसान का बैक ग्राउंड कमजोर हो सकता है, शरीर कमजोर हो सकता है, बुद्धि कमजोर हो सकती है लेकिन दृढ़ व पौरुषवान इंसान की एक चीज कमजोर नहीं हो सकती वह है हिम्मत व हौंसला। इसी हिम्मत व हौंसले के कारण वह दुनिया की सारी कठिनाइयों से लड़कर अपने आपको सफलतम इंसान के रूप में स्थापित करता है।

रॉबर्ट एच. शुलर कहते हैं - "मैंने ऐसे कई परिवार देखे हैं, जिन्होंने इतने बुरे अनुभव झेले हैं, जिनसे एक आम व्यक्ति टूट जाता है, इन परिवारों में से एक था एड वॉन एलन परिवार। एड एवं जीन दोनों पति पत्नी थे अब इस दुनिया में नहीं है। वे कम उम्र में ही गुजर गये। एड वॉन एन की मृत्यु तब हुई जब वे साउथ पैसिफिक मिशन स्टेशन तक एक नया हवाई जहाज ले जा रहे थे। वह हवाई जहाज कभी होनोलूलू नहीं पहुंच पाया। जैसे ही एड की मृत्यु हुई जीन को कैंसर हो गया। जीन को बताया गया कि उसकी बीमारी अंतिम अवस्था में है। उसके पास जीने के लिये ज्यादा समय नहीं था। हारी हुई लड़ाई को बहादुरी से लड़ते हुये उसने आखिरी समय में अचानक दीपसिखा की तरह तेज रोशनी दी। उसने कुछ अदभुत काम किये तथा समाज कल्याण में योगदान दिया। मृत्यु शैय्या पर मैंने उससे पूछा, जीन, तुम्हे इतनी शक्ति कहां से मिली, जिसकी वजह से तुमने पिछले कुछ सप्ताहों में कई महत्वपूर्ण काम किये? तीन महीने पहले तो तुम लगभग मर चुकी थी। उसने कहा, पहले मैं यह सोचने लगी थी कि मैं आखिरी अवस्था में हूँ। अब समय आ गया है कि मैदान छोड़ दूँ और हार मान लूँ। परन्तु तभी मैंने ईश्वर से प्रार्थना की और मेरे मन में ये विचार आए अगर मैं हार मान लेती हूँ तो दो संगठनों को लाभ होगा - मुर्दाघर और कब्रिस्तान परन्तु अगर एक दो महीने तक जिंदा रहती हूँ तो मैं अपने परिवार व समाज के लिये कुछ बेहतर कर सकती हूँ। इसलिये मैंने खुद से कहा मा फिर से कमर कसकर बाहर निकलूँगी और टेलीफोन पर काम करूँगी न्यू होप टेलीफोन काउंसिलिंग का काम कम से कम एक दिन या दो घंटे। फिर मैंने उन सैकड़ों कामों के बारे में सोचा, जो मैं करना चाहती थी मैं बस करती रही। जीन ने निराशा के अनुभवों के सामने हार नहीं मानी उसने इस सिद्धांत का पालन किया कि इस जिंदगी को जीवन के दुखद अनुभवों के हवाले न करें।"

मैं समाज के इस प्रकार की सोच रखने वाले व्यक्तियों से कहना चाहूँगा जो अपने आपको कमजोर, बुद्धिहीन और लाचार मान कर एक कमरे में अपने आपको कैद कर बैठे हैं। अगर आप दिल से, हिम्मत से, धैर्यपूर्वक उस कमरे से बाहर

निकलने की कोशिश करते हैं तो आप एक दिन जरूर निकल सकते हैं बस जरूरत है एक उम्मीद के साथ उस कैदखाने से बाहर निकलने की। यह कोई कठिन काम नहीं है बस देरी है तो सिर्फ एक शुरुआत की।

बिल गेट्स कहते हैं – “**इंसान शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक कमजोरी के कारण नहीं हारता बल्कि वह अपनी हिम्मत खो देने की वजह से हारता है।**” वह आगे कहते हुये लिखते हैं “**अगर इंसान चाहे तो बड़ी-बड़ी मुसीबतों से भी लड़ सकता है बस अगर वह दिल से चाहता हो कि मैं जीतू।**”

मैं मानता हूँ कि वास्तविक जिंदगी में ऐसा करना बहुत कठिन हो सकता है लेकिन कोशिश तो करनी चाहिए क्योंकि बिना कोशिश करें यह कहना कि मैं ऐसा नहीं कर सकता मेरा जीवन बेकार है मूर्खता है। आप प्रतियोगिता में दौड़िये तो सही, दौड़ने से पहले ही यह कैसे कह सकते हैं? कि आप जीत नहीं सकते। माना कि आप दौड़ने के बाद भी जीत पाये तब भी क्या यह कम संतोष की बात है कि आप दौड़ना तो सीख गये। कैसे काम की शुरुआत करे जब आप वास्तव में लाचार हो?

- ❖ अपने मन में हिम्मत लाइये, एक उम्मीद जगाइये।
- ❖ अपने मन से पूछिये आपको आगे क्यों बढ़ना है? क्योंकि बिना पर्याप्त कारण के इंसान के मन में हिम्मत का आगवन नहीं होता। जब उसे पता होता है कि उसे क्यों आगे बढ़ना है? तो उसके पास कोई लाचारी नहीं बचती है। और वह प्रत्येक औरोधो को चीरते हुये आगे निकल जाता है।
- ❖ सर्वप्रथम कछुए की चाल धीरे-धीरे चलना शुरू करे फिर अपनी स्पीड को तेज करें। जैसे ही आपके मन में आत्मविश्वास आने लगे तो अपनी गति को और तेज कर दे और फिर पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं है।

“ विकलांग वह नहीं होता जो वास्तव में विकलांग है विकलांग वह होता है जो दुनिया के साथ कदम से कदम मिला कर न चल सके अंधा वह नहीं होता जो वास्तव में अंधा है, अंधा वह होता है जो दुनिया में होने वाले परिवर्तन को

देख न सकें।”

7. व्यक्ति अपनी असफलता से नहीं घबराता बल्कि आसपास के लोगो से घबराता है :-

कुछ लोग अपनी असफलता से नहीं घबराते बल्कि इस बात से ज्यादा घबराते हैं कि आसपास के व्यक्ति क्या सोचेंगे? अगर मैं असफल हो गया तो लोग हमें कमजोर कहेंगे या फिर हंसेंगे। मुझ पर ताने कसेंगे। और लोग ऐसा करते भी हैं मैं इस बात को मानता हूँ क्योंकि मैं भी समाज में रहता हूँ। लेकिन क्या आपने गौर किया? इस प्रकार के व्यक्तियों के पास क्या है? इन व्यक्तियों ने आज तक क्या किया है? इनकी पहुंच कहां तक है? सोचना और गौर करना जब इन का उत्तर मिल जाय तो अपने आपसे पूछना इन हंसने वालों और सफल व्यक्तियों में क्या अंतर होता है? आप पाओगे दूसरों की असफलता पर हंसने वाला व्यक्ति, सफल व्यक्ति को देखकर रोता भी है और जलता भी है किन्तु सफल व्यक्ति सिर्फ ताउम्र मुस्कुराता है। हंसने वाला सिर्फ हंसेगा क्योंकि उसका यही काम होता है, ताने देगा आप पर तरस भी खायेगा। आपको समझायेगा भी और कहेगा भी जिद मत करो, पागल मत बनो इसके अलावा कोई दूसरा काम कर लो, यह काम तुम्हारे बस का नहीं है ऐसे तमाम प्रकार के तर्क आपको देगा। जहां तक उसका बस चलता है आपको रोकने का प्रयास करता है अगर आप इन हंसने वालों व समझाने वालों की बातों में आ गये तो उन हंसने वालों की मुराद पूरी हो जायेगी और आप उन्हीं की पंक्ति में जाकर खड़े हो जायेंगे। लेकिन अगर आप इनकी बातों में न आकर आगे की ओर बढ़ते हैं तो ऐसे लोग तो आपको वही मिलेंगे जहां पर वह खड़े थे लेकिन आप इनके दूढ़ने पर भी नहीं मिलेंगे। क्योंकि आप इतने आगे जा चुके होंगे कि वहाँ तक इनके पहुंचने की क्षमता ही नहीं होगी। जब आप सफल हो जायेंगे, कामयाब हो जायेंगे तो यही लोग आपकी चर्चा अपने सबसे करीबी रिश्तेदार के रूप में करेंगे। यही हंसने वाले आपके सामने कुछ याचना करते हुये खड़े होंगे वह प्रकृति का नियम है और मानव स्वभाव भी है।

इसलिये आप सिर्फ आगे बढ़ो अपने आपमें किसी भी प्रकार की घबराहट विकसित मत करो। हमेशा अपने मन में एक बात रखों मैं तो अकेला ही निकल चुका हूँ और मुझे अकेला ही चलना है पीछे देखोगे तुम्हारा कारवा बढता ही चला जायेगा और आप अपनी मंजिल पर खड़े होगे। एक सीख तो हम मौसम से ले सकते है - **“ मौसम कभी अलोचनाओ पर ध्यान नही देता कोई कुछ भी कहता रहे वह तो अपने आप ही अपने अनुसार बदलता रहता है ।”**

गिरता वही है जो चलने की कोशिश करता है वह कैसे गिरेगा जो कभी चला ही नही। **“ सफलता व असफलता अपने हाथ में नही है लेकिन बाजी खेलना तो अपने हाथ में है ।”** कहने का तात्पर्य आप सिर्फ बाजी खेलते चलो।

कुछ लोग यह भी कह सकते है कि आप पागल हो गये हो लेकिन एक बात ध्यान रखना **“जब लोग किसी व्यक्ति को पागल कहते हैं समझ लो उसकी सफलता उसके करीब है।”** इस दुनिया में जब भी कोई बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है उस परिवर्तन का नायक एक पागल ही रहा है वह अपने काम के प्रति इतना पागल था कि एक बहुत बड़ा परिवर्तन ही कर डाला। उसने दुनिया को अपने बारे में सोचने के लिये मजबूर कर दिया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार को मुझे एक बार पढ़ने का मौका मिला उन्होंने एक कल्पना की थी इस हिन्दुस्तान में इतनी जातियाँ है इतनी भाषा है इतने मजहब है, इनको किस प्रकार से एक समीप खड़ा किया जाय तब उनके दिमाग में जो बात आयी उसे कर दिखाने के लिये अपने आस पास के व्यक्तियों से बात की लेकिन किसी ने उनका साथ नही दिया अन्ततः उन्होंने बच्चों के साथ ही मिलकर खेल-खेल में यह काम शुरू कर दिया। जब वह मोहल्ले से गुजरते थे तो लोग कहते थे केशव पागल हो गया। एक अच्छा डाक्टर होकर अपनी प्रेक्टिस नही करता अपने माता पिता की इकलौती संतान है शादी नही करता। 35 वर्ष का हो गया बच्चों के साथ खेलता है और कहता है मैं हिन्दुस्तान को बदल दूँगा। इस प्रकार बच्चो के साथ खेलने से हिन्दुस्तान बदल जाता तो कब

का बदल गया होता। परन्तु उन्होंने अपनी विचारधारा पर सिर्फ हिन्दुस्तान को नही बल्कि दुनिया के कई देशो को सोचने पर मजबूर कर दिया।

गैलीलियो ने जब कहा कि सूर्य स्थिर है पृथ्वी उसके चारो ओर घूमती है तब सिर्फ दुनिया वालों ने उसे पागल ही नही कहा सिर्फ उस पर हंसे ही नही बल्कि उसे पागलखाने में भी डाल दिया। जह वह अपनी बातों पर अडिग रहे तब उन्हे जेल पर डाल दिया गया और उनकी आंखे निकाल ली गयी लेकिन बाद में सारी दुनिया को उनकी बात माननी पड़ी।

उपर वर्णित दोनो महापुरुषों को पागल कहा गया लेकिन उनने कुछ ऐसा कर दिखाया कि लोगो की सारी गलत धारणायें हिल गयी उनने यह सिद्ध कर दिखाया कि उनको पागल कहने वाले ही वास्तव में पागल थे। कोई आपको क्या कहता है ? आपके बारे में क्या सोचता है ? उसकी चिंता न करें क्योंकि इस दुनिया के लोग भगवान तक को भी नही छोड़ते फिर हम तो मानव है।

एक बार भगवान शिव और पार्वती जी नगर भ्रमण के लिये निकले रास्ते में एक व्यक्ति ने जब उन्हे बैल पर सवार देखा तो उससे रहा न गया और उसने कहा - “ देखो उस कमजोर बैल पर दोनो किस प्रकार सवारी कर रहे है।” उस व्यक्ति के इस टिप्पणी को सुनकर पार्वती जी ने उस बैल से नीचे उतरकर पैदल चलने लगी, कुछ दूर जाने के बाद फिर कुछ लोगो ने कहा - “वह आदमी कितना बेकार है स्वयं तो बैलपर बैठा है और फूल सी औरत को पैदल चला रहा है।” तब भगवान स्वयं उतरकर पार्वती जी को उसमें आसीन कर स्वयं पैदल चलने लगे। कुछ दूर आगे ही गये थे कि कुछ लोगो ने फिर कहा - “औरत कितनी बेवकूफ है पति परमेश्वर को पैदल चला रही है और स्वयं बैल पर बैठी है।” ऐसा सुनकर भगवान शंकर और पार्वती दोनो पैदल चलने लगे। “ ऐसा देख नन्दी ने कहा- “ भगवान आप मुझे सिर पर बैठा ले शायद लोग खुश हो जाय” भगवान के सबकुछ समझ में आ गया और बिना किसी परवाह के आगे निकल पडे।

कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को किसी की परवाह नही करनी चाहिये

बल्कि बिना किसी की परवाह किये हुये आगे बढ़ते रहना चाहिये । अगर आपके कार्यक्षेत्र के बारे में कोई टीका टिप्पणी करता भी है तो उसे एक उर्जा के रूप में ले । और अगर अभी तक आपके मन में अपने लक्ष्य के प्रति चिन्गारी थी तो लोगो के टिप्पणी के बाद अपने मन में आग पैदा कर दीजिये । इस सोच के साथ बढ़िये कि अब चाहे जो हो मैं तभी रूकूँगा जब मेरा लक्ष्य पूर्ण हो जायेगा । एक महान कवि ने लिखा है :-

पथ भूल न जाना पथिक कही,

पथ में कांटे तो होंगे ही

दुर्बलता,सरिता, सर होंगे ।

सुन्दर गिरि-वन-वाणी होंगे

सुन्दर-सुन्दर निर्झर होंगे

सुन्दरता की मृग तृष्णा में, पथ भूल ना जाना पथिक कहीं ।

जब कठिन कर्म पगडंडी पर

राही का मन उन्मन होगा

जब सपने सब मिट जायेंगे

कर्त्तव्य मार्ग सम्मुख होगा ।

तब अपनी प्रथम विफलता में पथ भूल ना जाना पथिक कहीं ॥

अपने भी विमुख पराये बन

आंखो के सम्मुख आएंगे,

पग-पग घोर निराशा के काले बादल छा जायेंगे

तब अपने एकाकीपन में पथ भूल ना जाना पथिक कहीं

रहभेदी सुन-सुन विदा-विदा

जब सैनिक पुलक रहे होंगे

हाथो में कुम कुम थाल लिये

जलकण कुछ कुढ़क रहे होंगे ।

कर्त्तव्य प्रेम की उलझन में पथ भूल न जाना पथिक कहीं ॥

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे

जब महाकाल की माला में

माँ माँग रही होगी आहूति

जब स्वतंत्रता की ज्वाला में ॥

पल भर भी पड़ असमंजस में, पथ भूल न जाना पथिक कहीं ॥

नौवां कदम ईमानदारी के साथ चले

आज के बदलते परिवेश का वातावरण में जहाँ पल-पल धोखा हो जहाँ भ्रष्टाचार, अनैतिकता, शोषण, उत्पीड़न ठगी व विश्वासघात का बोलबाला हो वहाँ पर ईमानदारी से जीना कितना मुश्किल काम है मैं जानता हूँ और समझ भी सकता हूँ लेकिन इससे भी कठिन काम एक महान व आदर्श व्यक्ति बनना है, एक नया परिवर्तन करना है। अपने विचारों के बारे में लोगों को सोचने के लिये विवस करना है। इसलिये इस दृष्टि के आधार पर ईमानदारी से चलना कोई कठिन काम नहीं है। ऐसा मेरा मानना है जो सही भी है।

कहा जाता है **“ ईमानदारी सबसे बड़ी नीति होती है जो सारी नीतियों पर भारी पड़ जाती है। ”**

किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन के प्रत्येक पहलू, प्रत्येक रूप में, जीवन के प्रत्येक, भाग में, पूरी ईमानदारी का परिचय देना चाहिये। क्योंकि जिदंगी में आगे बढ़ने के दो ही रास्ते होते हैं।

- ❖ पहला – ईमानदारी का, जिसमें शुरुआत का रास्ता कांटो भरा होता है पल-पल में कठिनाई आती है लेकिन रास्ते का अंत बहुत सुखद होता है।
- ❖ दूसरो – बेईमानी का, जिसमें शुरुआत का रास्ता फूलों भरा होता है लेकिन रास्ते का अंत कांटो की झाड़ियों से भरा होता है जो काफी तकलीफ देता है। जो पहले रास्ते को चुनता है वह दुनिया के लिये आदर्श बनता है और जो दूसरा रास्ता चुनता है वह कुत्ते की मौत से भी बदतर मौत मरता है।

मैं आगे मनुष्य जीवन के प्रत्येक भाग में ईमानदारी के बारे में लिखूँगा –

1. अपने घर व परिवार के प्रति ईमानदारी :-

घर व परिवार वह होता है जहाँ हम छोटे से बीज से वृक्ष का रूप धारण करते हैं जहाँ हमें दुनिया की प्रत्येक आपदा से बचाया जाता है जहाँ हमारी माँ गीले में

सोकर हमें सूखे में सुलाती है, जहाँ हमारे पिता दुनिया की चोटे सहकर हमें अपनी छाया में छुपा लेते हैं, जहाँ हमारे ही हम उम्र के भाई बहन हमें अपने कंधों में लेकर चलते हैं। जहाँ हमें वह सारी खुशियाँ देने की कोशिश की जाती है, जो हमारे परिवार की क्षमता से बाहर होती है। लेकिन अफसोस हम वृक्ष बनने के बाद उस परिवार को छाया नहीं दे पाते, बल्कि कभी-कभी उसे, छाया देने के बजाय सुखाने की कोशिश करते हैं और समाज में हम में से कुछ लोग उसे सुखा भी देते हैं। अर्थात् हम उनके साथ कितनी बड़ी बेईमानी करते हैं। 18 सितम्बर 2009 की घटना है हरियाणा के एक कस्बे में एक लड़की अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने परिवार (माता-पिता, दादी, भाई बहन) के सात लोगों की हत्या कर देती है। ऐसी ही एक घटना ग्वालियर की है जहाँ लड़की अपने घर का सारा नगदी समान लेकर प्रेमी के साथ भाग जाती और पकड़े जाने के डर से अपने पिता के ऊपर यौन उत्पीड़न का मामला दर्ज कराती है। नेपाल के राज घराने की घटना जगजाहिर है जहाँ पूरे परिवार की हत्या राजकुमार द्वारा ही कर दी जाती है। दुनिया की ऐसी तमाम घटनायें हैं जो हो चुकी हैं या हो रही हैं जिनके बारे में अगर उल्लेख किया जाय तो कम से कम सौ से ज्यादा किताबें लिखी जा सकती हैं। जब मैं इस प्रकार की घटनाओं को सुनता हूँ, पढ़ता हूँ तो मेरा हृदय कांप उठता है और मेरा दिल कहता है अगर ऐसी संतानें होती हैं तो फिर किसी को संतानें ही न हो।

मैं अपने आस पास देखता हूँ कुछ लड़के लड़कियाँ किस प्रकार से अपने घर वालों को बेवकूफ बनाते हैं उनके साथ छल करते हैं ? लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि जिसे वह बेवकूफ बना रहे हैं वह किस प्रकार खुद आधी रोटी खाकर तुम्हें पूरी रोटी देने की कोशिश करते हैं। वह तुम्हें वह सब कुछ देने की कोशिश करते हैं जो उनसे कभी देखी भी नहीं होती। फिर भी तुम उनके साथ अपनी छणिक खुशी के लिये कितना बड़ा धोखा करते हो। उनके साथ इतनी बड़ी बेईमानी करते हो। मैं इस प्रकार के व्यक्तियों से एक बात कहना चाहूँगा तुम इस प्रकार व्यवहार कर कोई तीर नहीं मार रहे बल्कि अंजाने में तुम अपना ही बहुत बड़ा नुकसान कर रहे हो।

उनका क्या है ? उनकी तो जिन्दगी कट गयी उन्हें जो हासिल करना था उनने हासिल कर लिया जो खोना था खो दिया आप अपना सोचो ।

“ माता-पिता घर परिवार के महत्व के बारे में अगर आपको जानना है तो उनसे जाकर पूछिये जिनके पास ये सब नहीं है ।”

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर आपको दुनिया की सारी खुशी पाना है अपनो का प्यार एवं आशीर्वाद हमेशा पाते रहना है तो अपने परिवार मां-बाप से झूठ मत बोलो उन्हें धोखा मत दो । कितनी अजीब बात है जब हम छोटे होते हैं तब हमारी आंखो को देखकर हमारे माता पिता हमारी भावनाओ को समझ जाते हैं और पूरी ईमानदारी केसाथ हमारी भावनाओं को पूरा करते हैं और जब हम अपने पैरो में चलने लगते हैं और उनके पैर असहाय हो जाते हैं तब हम उनकी डबडबाती आंखो की आँसुओं को भी देखकर उनकी भावनाओं को नही समझ पाते, समझते भी है तो अनदेखी कर देते हैं । जिनने हमें चलना सिखाया दौड़ना सिखाया हम उनके साथ कितना बड़ा धोखा करते हैं । शायद हम ऐसा इसीलिये करते हैं कि हमें पता होता कि हम उनको चाहे जितना बड़ा धोखा दे, हम चाहे उनके बारे मे जो भी सोचे लेकिन वे हमें मांफकर देंगे क्योंकि जो व्यक्ति जिस वृक्ष को लगाता है उसे सींचता है उसके फल न देने पर भी वह अपने हाथो से नही काटता । अंत में मैं सिर्फ इतना लिखना चाहूंगा कि अगर आप ईमानदारी पूर्वक अपने माता पिता परिवार की सेवा करते हैं, उनकी भावनाओं को समझते हैं तभी आप सही मायने पर जिंदगी जीते हैं। और भविष्य में आपको इसका बहुत बड़ा लाभ होगा वरना चाहे आप जितने कामयाब हो जाये आपका दर्जा वनमानुष के बराबर ही रहेगा ।

2. अपने दोस्तो के प्रति ईमानदारी :-

सुदामा चरित्र में लिखा गया है “ गुरु से कपट मित्र से चोरी या होय निर्धन या होय कोढ़ी ।” अर्थात गुरु व मित्र के साथ कभी छल नही करना चाहिये जो व्यक्ति आप पर भरोसा करता है आपके प्रति ईमानदारी बरतता है उससे छल व धोखा करना गुनाह है इससे आपके जीवन का मूल्य गिर जायेगा और आप

विश्वसनीय नही रह पाओगे । अन्य लोग यही कहेंगे । वह जब उसका नही हो पाया तो हमारा क्या होगा ? मान लीजिये अगर आपका दोस्त सक्षम है तो आपका धोखा व बेईमानी आप पर भारी भी पड़ सकती है बाइदवे आपका दोस्त सक्षम नही है तो भी आपका अनजाने में बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है ।

“ जब अपनों के द्वारा सताया हुआ व्यक्ति रोता है तो उसके आँसु सागर का रूप धारण कर लेते हैं और उस सागर की लहरों से कोई नही बचा पाता ।”

हम मानव भी बहुत अजीब हैं अपने स्वार्थ के लिये किसी से भी दोस्ती कर लेते हैं और जैसे ही हमारा स्वार्थ निकल जाता है हमें उसे भूलने में दो दिन भी नही लगता । और फिर उससे मिलने में, बाते करने में भी परेशानी अनुभव करते हैं ऐसा मुख्यतः इज्जतदार व्यक्तियों द्वारा किया जाता है मैने इस प्रकार के हजारो उदाहरण देखे हैं, सुने हैं और मैने खुद अपनी जिंदगी से अनुभव किया है लेकिन वही अगर कोई दूसरा व्यक्ति हमारे साथ ऐसा करता है तो हम धोखेबाज, छली कहते हैं । उसे एहसान फरामोस कहते हैं । और हाथ पैर पटकते हैं वैसे मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है कि जो व्यक्ति इस प्रकार का बर्ताव करता है हाथ पैर पटकता है वास्तव में वह सबसे ज्यादा एहसान फरामोश व बेईमान होता है वह सिर्फ इसलिये करता है जिससे अन्य लोगो का नजरिया उसके प्रति अच्छा बना रहे ।

अमेरिका के राष्ट्रपति रह चुके रूजवेल्ट के पास उनकी ही पार्टी का एक पूर्व मंत्री उनके पास जाकर बोलने लगा “ आपके वित्त मंत्री ने ठीक नही किया उसने मेरे साथ धोखा किया है ।”

रूजवेल्ट - (मुस्कुराते हुये) - “उसने कोई गलत नही किया क्योंकि तुमने भी इसी प्रकार से या इससे भी बड़ा धोखा कई लोगो के साथ किया है ।” पूर्व मंत्री शांत हो गया रूजवेल्ट फिर बोले - “हमारी सबसे बुरी आदत होती हैं कि हम लोगो से चाहते तो हैं कि कोई हमारे साथ धोखा न करें, कोई हमारा अपमान न करें लेकिन जब हम ऐसा ही व्यवहार किसी अन्य व्यक्ति के साथ करते हैं तो भूल जाते हैं कि

सामने वाला भी इंसान ही है उसके पास भी हमारे समान भावनायें हैं और जिंदगी जीने की चाह हैं। कहने का तात्पर्य अगर हम चाहते हैं कि हमारा दोस्त हमारे प्रति ईमानदार रहे हमारी भावनाओं को समझे तो हमें भी उसका पूरा ध्यान रखना चाहिये उसके प्रति छोटे से छोटे स्तर में भी कोई बात नहीं छुपाना चाहिये। कहा भी जाता है दोस्ती तभी तक कायम रहती है जब तक विश्वास कायम रहता है। इस दुनिया में आपको लोग तो बहुत मिल जायेंगे परन्तु एक अच्छा दोस्त बड़ी मुश्किल से मिलता है इसलिये अपनी इस धरोहर को संभाल कर रखें दोस्त अमीर, गरीब विजातीय कोई भी हो सकता है। दोस्त के साथ आपके खून के रिश्ते न होने के बाद भी खून के रिश्ते से भी बड़ा रिश्ता होता है। वह है 'विश्वास' का।''

'' कहा जाता है कि जितना साथ आपके खून के रिश्ते नहीं दे पाते उससे कहीं ज्यादा साथ आपका अच्छा दोस्त दे जाता है। अंत में मैं सिर्फ इतना लिखूँगा, अपनी तरफ से आप पूरी तरह से वफादार रहे और तब तक रहे जब तक सामने वाला खुद आपको छोड़कर न चला जाय। और उसके जाने के बाद उसकी चिंता भी न करें।''

3. अपने मालिक के प्रति ईमानदारी :-

इस दुनिया का प्रत्येक मालिक चाहता है कि उसका कर्मचारी ईमानदार हो वह उन्हीं कर्मचारियों से प्रेम भी करता है जो उसके प्रति ईमानदार होता है। कोई भी मालिक अपने ईमानदार कर्मचारी को कभी नहीं खोना चाहता उसे हर हाल में अपने पास रखना चाहता है।

एक कंपनी का मालिक अपने कंपनी की खाली निर्देशक पद को भरना चाहता था उसकी नजर अपने ही कंपनी के जॉन ब्रायन नामक क्लर्क पर थी जो दस वर्षों से उस कंपनी को अपनी सेवा दे रहा था और बहुत ईमानदार था फिर भी कंपनी के मालिक ने इस पद के लिये विज्ञापित जारी की जिसमें एक से बढ़कर एक योग्य उम्मीदवारों के आवेदन आये उसने अपनी कंपनी के सभी कर्मचारियों को भी साक्षात्कार में शामिल होने के लिये कहा। सभी उम्मीदवारों को बुलाकर एक-एक

बीज दिया और कहाँ '' जिस उम्मीदवार का पौधा सबसे अच्छा होगा वही इस पद का हकदार होगा।'' और छः महीने बाद आने को कहा। सभी ने बीज बोये और अच्छे से अच्छा पौधा बनाने की पूरी कोशिश की जॉन ब्रायन ने भी ऐसा ही किया मगर उसके पास जो बीज था लाख कोशिश के बाद भी अंकुरित नहीं हुआ।

छः महीने बीतने के बाद कंपनी के मालिक ने सभी उम्मीदवारों को बुलाया। सभी ने अपने अपने पॉट रखे जिसमें लहलहाते हुये पौधे थे। मगर उन्हीं पॉट्स के बीच एक पॉट खाली पड़ा था जिसके सामने जॉन ब्रायन खड़ा था उस पॉट को देखकर सभी हंस रहे थे जब कंपनी का मालिक पौधे का निरीक्षण कर रहा था तो उसकी नजर खाली पॉट पर गयी और वह रुक गया उसने देखा वहाँ पर जॉन ब्रायन अपना सिर नीचे किये हुये खड़ा है। कंपनी का मालिक मुस्कराता और आगे बढ़ गया और मंच पर जाकर बोलने लगा।

'' मुझे खुशी है कि आज से इस कंपनी का निर्देशक इसी कंपनी का एक क्लर्क होगा जिसका नाम है 'जॉन ब्रायन' उसने आगे कहते हुये कहा- आप सभी सोच रहे होंगे कि मैंने ऐसा क्यों किया? मैंने अपनी शर्त के अनुसार सबसे खूबसूरत पौधे लाने वाले व्यक्ति का चयन क्यों नहीं किया? मैंने उसका चयन क्यों किया? जिसने पौधा ही नहीं उगा पाया तो मैं बताना चाहूँगा कि मैंने ऐसा इसलिये किया क्योंकि मैंने प्रत्येक व्यक्ति को उबले हुये बीज दिये थे जो कभी भी पौधा नहीं बन सकता था। मुझे एक ईमानदार, कार्यकुशल, निर्देशक चाहिये था जो जॉन ब्रायन के रूप में मिल गया।''

कहने का तात्पर्य यह है कि ईमानदार व्यक्तियों के मूल्य को समझने में देरी हो सकती है लेकिन अंत में मालिक ईमानदार व्यक्ति को ही मौका देता है कुछ लोग कहते हैं मुझे इतने साल ईमानदारी से काम करने पर क्या मिला तो मैं ऐसे व्यक्तियों से कहना चाहूँगा कि आप अपनी आत्मा से पूछें आप कितने ईमानदार हैं और आपको क्या नहीं मिला?

मेरा मानना है कि एक ईमानदार व्यक्ति को जीवन में कुछ न मिले ऐसा

हजार व्यक्तियों में एकाद बार ही होता है इसमें उस व्यक्ति की गलती नहीं होती बल्कि सामने वाले की गलती होती है जिसमें आदमी पहचानने की क्षमता ही नहीं होती और जिस व्यक्ति में आदमी परखने की क्षमता नहीं होती वह पूरी जिंदगी धोखा खाता रहता है।

“ ईमानदारी का उचित ईनाम देर ही सही पर मिलता जरूर है। ”

– सर फिलिप

4. अपने काम के प्रति ईमानदारी :-

कहा जाता है “ कार्य ही पूजा है ” अर्थात् जो काम आप कर रहे हैं उसे ईश्वर की पूजा से ज्यादा श्रेष्ठ माना गया है। गीता हो या बाइबल कुरान हो या बुद्ध गाथा सभी में ईश्वर की आराधना से ज्यादा महत्व कर्म को दिया गया है। सभी में कहा गया है जो व्यक्ति पूरी ईमानदारी से अपना काम करता है वह ईश्वर के उतना ही करीब होता है। और दुनिया की प्रशंसा का पात्र होता है।

एक गांव में एक किसान रहता था और उसी गांव में एक भगवान का भक्त पंडित रहता था। दोनों ही ईश्वर की आराधना करते थे। दोनों का विश्वास उस ईश्वर पर अटल था। जब दोनों की मौत हुई तो एक को स्वर्ग मिला और एक को नरक। भगवान के पास पहुंचने के बाद भक्त पंडित ने कहा – “ हे : प्रभु मैंने तुम्हारी रात दिन पूजा की, तुम्हारी पूजा करते करते मैंने अपनी पूरी जिंदगी गुजार दी फिर भी मैं नरक का भागीदार बना और वह किसान जिसने कभी मंदिर में कदम तक नहीं रखा वह स्वर्ग का भागीदार बना। ऐसा क्यों ? ” ईश्वर ने कहा – “ हे ! पंडित तूने निःस्वार्थ भावना से हमारी पूजा कभी नहीं की, तू पूजा जरूर करता था लेकिन तेरा मन, मेरी पूजा से कम और मंदिर पर आने वाले चढ़ावे में ज्यादा रहता था। तू अपने आपको भौतिकता से कभी मुक्त नहीं कर पाया। वही किसान दिन भर खेत में हल चलाता था जब भी उसे समय मिलता था हमारा नाम लेता था रात को घर लौटकर जानवरों को चारा भूसा खिलाता था अर्थात् उनको आहार देता था इसके बाद हमारी आराधना करता था और प्रत्येक रात हमारी आराधना व मेरा नाम

लेते लेते सोता था। अर्थात् किसान प्रतिदिन अपने काम को पूरी ईमानदारी से पूरा करता था। तुम अपने कर्त्तव्य में अपना स्वार्थ ढूढ़ते थे और वह अपने कर्त्तव्य में हमें ढूढ़ता था। उस किसान ने हमारी दुनिया को खूबसूरत बनाने में हमारी आराधना के साथ साथ बहुत बड़ा योगदान दिया है जबकि तुमने ऐसा कुछ भी नहीं किया। हमें अपना कर्त्तव्य करने वाला भक्त, हमारी दिन रात पूजा करने वाले भक्त से ज्यादा प्यारा होता है। ”

कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर भी उन्हीं से प्रेम करता है जो व्यक्ति निरंतर कर्म करते हैं और अपना काम पूरी ईमानदारी पूर्वक करते हैं। क्योंकि प्रत्येक मालिक की तरह ईश्वर भी चाहता है कि हमारी दुनिया खूबसूरत बनें। और इस खूबसूरत दुनिया को बनाने में हमारा प्रत्येक बंधा अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

भारत के महान वैज्ञानिक – अब्दुल कलाम कहते हैं – “ आने वाली पीढ़िया हमें इसलिये कतई याद नहीं करेगी कि हमने कितने मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और गिरजाघर बनवाये हैं बल्कि वे हमें तभी याद रखेगी जब हम उन्हें स्वस्थ व खुशहाल संसार सौंपेगे। ”

कभी-कभी हममें से कुछ लोग पूरी जिंदगी ईमानदारी पूर्वक काम करते हैं प्रत्येक काम को पूरे मन से करते हैं लेकिन जिंदगी के कुछ झणों में वह इस ईमानदारी से त्रस्त होकर पूरे मन से काम नहीं करते हैं वही समय उनकी जिंदगी भर की ईमानदारी में प्रश्नचिन्ह लगा देता है और वह अपनी पूरी जिंदगी उस एक क्षण का पश्चाताप करते रहते हैं।

दक्षिण अफ्रीका में मकान बनाने वाली एक बहुत बड़ी कंपनी थी एक कंपनी में एक बिल्डर लगातार तीस वर्षों से ईमानदारी पूर्वक काम कर रहा था उसने अपने जीवन काल में एक से बढ़कर एक मकान बनाये थे। एक दिन कंपनी के मालिक ने उस बिल्डर को बुलाया और कहा – “तुमने अपना पूरा जीवन इस कंपनी में लगाया है तुमसे कभी किसी को कोई शिकायत नहीं रही अब मैं सोचता हूँ तुम्हें कंपनी से रिटायर कर दूँ मगर इसके पहले तुम्हें मेरा एक काम करना होगा, तुम हमें अपने

जीवन का सबसे खूबसूरत मकान बनाकर दो।” बिल्डर ने हाँ तो कर दिया मगर उसके दिमाग में एक बात घर कर गयी, वह सोचने लगा मैंने तीस वर्ष तक ईमानदारी पूर्वक इस कंपनी में काम किया, मैंने इस कंपनी को अपने खून पसीने से सींचा मगर मुझे क्या मिला ? और काफी दुखी हो गया। चूंकि वह बिल्डर कर्त्तव्य परायण था इसलिये मालिक की इस बात को पूरा करने के लिये काम शुरू कर दिया लेकिन वह इस बार पूरे मन से, पूरी ईमानदारी से अपना काम नहीं कर रहा था बल्कि सिर्फ अपना फर्ज पूरा कर रहा था। मकान बनकर तैयार हो गया और बिल्डर ने अपने मालिक को काम पूरा होने की सूचना भी दे दी। मालिक ने बिना मकान को देखे उस बिल्डर को बुलाया और उसके हाथ में उस मकान के कागजात देते हुये बोला – “ मुझे नहीं मालूम कि तुमने कैसा मकान बनाया है ? लेकिन तुम्हारे जीवन का यह अंतिम मकान तुम्हारा है तुम थक चुके हो तुम्हे विश्राम की जरूरत है जब कंपनी को तुम्हारी जरूरत महसूस होगी तुम्हे बुला लिया जायेगा।” बिल्डर बहुत आश्चर्य चकित भाव से मालिक की ओर देखता रहा और घर आकर अपने इस कृत्य का पश्चाताप करने लगा। उसने मन ही मन विचार किया काश मैं अपने इस अंतिम काम में भी ईमानदार रहता तो आज दुनिया के सबसे खूबसूरत मकान का मालिक होता।

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर वास्तव में आप अपने काम के प्रति ईमानदार हैं तो अपने जीवनकाल में ऐसा कोई काम न करे जो आगे चलकर आपके पश्चाताप का कारण बने। या फिर आपके पूरे जीवन की ईमानदारी को एक झटके में समाप्त कर दें।

मैंने समाज में ऐसे कई लोगो को देखा है जो अपने काम को पूरी ईमानदारी से नहीं करते और न ही करना चाहते हैं और इसके पीछे बहुत बड़े-बड़े तर्क देते हैं और बेमतलब की नेतागिरी करते हैं। इनका एक ही मकसद होता है किसी प्रकार से समय काटना। अगर आपको इस प्रकार के व्यक्तियों से मिलना है तो हिन्दुस्तान के किसी भी सरकारी आफिस व कार्यालय में जाकर मिल सकते हैं। इस प्रकार के

व्यक्ति न ही खुद काम करना चाहते हैं और न ही दूसरे लोगो को काम करने देना चाहते। इस प्रकार के लोगो से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि कृपया आप अपना काम पूरी ईमानदारी से करे क्योंकि आपके काम करने व न करने से आपको तो कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन एक आम व्यक्ति को इससे बहुत बड़ा फर्क पड़ता है और कभी न कभी आपका इस प्रकार का व्यवहार आपकी मुसीबत का कारण भी बन सकता है।

5. अपने देश के प्रति ईमानदारी :-

किसी भी इंसान की पहचान उसके देश से होती है जो देश गुलाम रहता है उस देश के लोगो की कोई पहचान नहीं बचती। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि अपने देश को शिखर तक पहुंचाने के लिये तन, मन, धन से पूरी ईमानदारी पूर्वक कोशिश करें। भाषा, जाति, धर्म क्षेत्र से ऊपर अपने देश को रखें। देश का गौरव ही हमारा गौरव होना चाहिये। जब तक देश है तभी तक भाषा, जाति, धर्म व क्षेत्र रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन का दो प्रतिशत अपने देश के लिये खर्च करना चाहिये इस प्रकार का योगदान किसी भी क्षेत्र से, किसी भी काम से, किसी भी रूप में दिया जा सकता है। जो व्यक्ति अपने देश के साथ गद्दारी करता है वह अपनी मां के साथ गद्दारी करने के बराबर अपराध करता है। किसी भी देश का निर्माण महान पुरुषो के खून से होता है, वह बहादुर व्यक्ति अपने प्राणों की बलि देकर खुशहाल राष्ट्र का सपना देखते हैं, इसकी एक इच्छा होती है मेरा देश दुनिया के महान देशों में गिना जायें, उसका यश संसार में फैले और हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति खुश रह सके। लेकिन अफसोस हमारे समाज में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपने धर्म के प्रति, जाति के प्रति तो ईमानदार हैं, लेकिन अपने देश के प्रति नहीं। वह अपने धर्म, जाति व भाषा को देश के ऊपर रखते हैं उनकी एक ही शिकायत रहती है मेरे धर्म, जाति, के प्रति भेदभाव किया जाता है। इनका ऐसा तर्क होता है जो गलत है मैं ऐसे व्यक्तियों को एक बात कहूँगा – “ धर्म, जाति, भाषा के प्रति ईमानदारी अच्छी बात है लेकिन इन सबसे उपर देश आता है इसलिये देश के प्रति ईमानदारी और अच्छी बात है।”

जिस देश में पैदा हुये हैं, जिस देश में रहते हैं, जिस देश का खाते हैं, और जिस देश से अपने जीवन की सारी खुशियां ढूढ़ते हैं। जिस देश की मिट्टी हमारे शरीर पर है उस देश के साथ धोखा करना गुनाह है। चंद सिक्को के लिये अपने देश की आबरू नहीं बेचनी चाहिये क्योंकि जिस देश को आप तुक्ष्य समझते हैं उस देश को लाखो करोड़ो लोगो ने अपने खून से सींचा है।

6. दुश्मनों के प्रति ईमानदारी :-

जितनी ईमानदारी अपने परिवार, देश, काम, दोस्त, मालिक के प्रति जरूरी होती है उससे कहीं ज्यादा अपने दुश्मनों के प्रति ईमानदारी की जरूरत होती है। जैसा कि मैंने पहले कहा है जिंदगी का कोई भी पहलू हो प्रत्येक पहलू में ईमानदारी दिखानी चाहिये, दुश्मन के प्रति ईमानदार रहना भी सफलता का एक बहुत बड़ा पहलू होता है, हो सकता है मेरी बात को पढ़कर आपको आश्चर्य हो रहा हो कि आखिर मैं कहना क्या चाहता हूँ? आश्चर्य होना भी चाहिये भला दुश्मनों के प्रति भी कोई ईमानदारी होती है क्या? हाँ होती है।

1. आपको अपने दुश्मनों के प्रति चौबीस घंटे चौकन्ना रहना चाहिये क्योंकि आज के युग में कोई भी सामने से वार नहीं करता वह हमेशा पीछे से और प्लानिंग के साथ वार करता है इसलिये कभी भी अपनी आंतरिक बाते किसी से शेयर न करें।
2. अगर आपके दुश्मन ज्यादा है तो जिस रास्ते से आप जाते हो उस रास्ते से कभी वापस न आये। आप कब कहाँ जाने वाले है इस चीज की जानकारी सिर्फ आपके परिवार व आप तक सीमित रहनी चाहिये।
3. आपके जाने आने का कोई निश्चित स्थान नहीं होना चाहिये। कभी-कभी जीवन में आपके आसपास रहने वाला व्यक्ति व दोस्त (जो अपने स्वार्थ के लिये आप से जुड़ा है) आपके प्रति धोखा कर देता है और आपको पता भी नहीं चल पाता परिणामस्वरूप आपको भयंकर छति उठानी पड़ती है और आपके पास पश्चाताप के आलावा कोई रास्ता नहीं बचता है और आप टूट

जाते हैं ऐसी घटनायें अक्सर होती रहती हैं। अगर अभी आपको याद न आ रहा हो तो आगे देख लेना या सुन लेना।

इस प्रकार की घटना आपकी जिंदगी में न हो इसका उपाय है :-

- ❖ लोगो पर कम से कम भरोसा करें जहाँ पर आपके जिंदगी के निर्णय का सवाल हो।
- ❖ उन लोगो पर कतई भरोसा न करे जो आपके दुश्मनों के संपर्क में बराबर रहते हो।
- ❖ किसी नये दोस्त के सामने अपनी गोपनीयता को बनाये रखें।
- ❖ जो व्यक्ति समाज के बीच पहले से ही अविश्वनीय है और आपका घनिष्ठ दोस्त बन जाता है उससे सदा सावधान रहे क्योंकि चोर चोरी छोड़ सकता हैं लेकिन अपनी आदत नहीं।
- ❖ आपके जीवन में या हमारे जीवन में तीन प्रकार के दुश्मन दोस्त के रूप में आते है जो बहुत ही खतरनाक होते है -
- ❖ पहले प्रकार के व्यक्ति आपके आसपास कुत्तो जैसी दुम हिलाते हुये मड़राते हुये आपकी चापलूसी करते रहेंगे। ऐसे व्यक्ति आपके दोस्त तभी तक रहते हैं, जब तक आपके बराबर नहीं पहुंच जाते या फिर काम रहता है जैसे ही इनका स्वार्थ आपसे हो जाता है वह आपसे संबंध खत्म कर लेते है अर्थात काम खत्म आदमी खतम। ऐसे व्यक्तियों की भरमार है लगभग ऐसे व्यक्ति 70% तो समाज में मिल ही जाते है।
- ❖ दूसरे प्रकार के व्यक्ति आपके पीठ पर वार करते है आपके सामने आपकी बड़बोली लेकिन जैसे ही आप पीछा देते है आपके खिलाफ आग उगलना शुरू। यह हमारे व आपके लिये महाघातक हाते है। इनकी संख्या 20% तो है ही।
- ❖ तीसरे प्रकार के व्यक्ति इधर की बात उधर और उधर की की बात इधर करते हैं अर्थात ये फ्री में समाचार वाहक होते हैं जो दोनो तरफ की बातों में

नमक मिर्ची लगाकर पेश करते हैं ऐसे व्यक्ति चिनगारी का काम करते हैं आग तो अपने आप लग जाती है।

एक लड़का अपने पिता से जिद करने लगा मैं राजनीति में जाऊँगा। लेकिन पिता कुछ नहीं बोलता था बार-बार उसके जिद को देखकर एक दिन उसके पिता ने उसकी बात मान ली और उससे कहा, - “बेटा ठीक है तुम राजनीति में जाना चाहते हो बेसक जाओ लेकिन इसके पहले मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ, मेरे साथ मकान की क्षत पर चलो।” लड़का अपने पिता के साथ छत पर गया। पिता ने लड़के को छत के किनारे ले जाकर जोर से धक्का दे दिया। लड़का छत के नीचे गिर गया और उसका पैर टूट गया। उस लड़के को अस्पताल ले जाया गया। लड़का अस्पताल में लेटा हुआ था। तभी उसका पिता अस्पताल में उससे मिलने के लिये गया। लड़के ने अपने पिता से कहा - “पिता जी : आपने ऐसा क्यों किया ? आप मेरे पिता हैं या फिर कोई और।”

पिता ने कहा - “ बेटा ! मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ मगर मैंने ऐसा सिर्फ इसलिये किया कि जिस चीज को तुम अपना कैरियर बनाना चाहते हो उसमें यह सब आम बात है। तुम इस बात को ध्यान रखना राजनीति की दुनिया में अपने बाप का भी विश्वास नहीं करना चाहिये।”

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर आप समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में शामिल हैं तो आपके हजारों दुश्मन अपने आप तैयार हो जाते हैं इसलिये प्रत्येक व्यक्ति पर बिना उसके बारे में जाने समझे भरोसा करना आपके लिये घातक बन सकता है। और अगर आप राजनीति व व्यवसाय की दुनिया से ताल्लुक रखते हैं तो किसी पर भी अंधभरोसा करना आपके लिये अनुचित हो सकता है। हमारी बातों को पढ़कर सभी के मन में एक विचार आ सकता है और हमारे मन पर भी विचार आया था कि अगर दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति भरोसे के काबिल नहीं है तो जिंदगी जीने के लिये किस पर भरोसा करें ? हमें समाज में रहने के लिये किसी न किसी पर भरोसा तो करना ही पड़ेगा। आप भी सही सोच रहे हैं और मैं भी सही सोच रहा हूँ लेकिन

दुनिया की बुरी नजर से बचने के लिये हमें कुछ न कुछ सावधानियाँ तो बरतनी ही पड़ती हैं। वरना दुनिया वाले हमारे अस्तित्व को दो मिनट में खतम कर देते हैं रही बात किसी न किसी पर विश्वास करने की तो जो व्यक्ति आपका है वह हमेशा आपका ही बन कर रहेगा। आपका विश्वसनीय व्यक्ति आपको कभी एहसास दिलाने की कोशिश नहीं करता कि वह आपका विश्वासपात्र है। मौका मिलने पर अपने विश्वास की परीक्षा देता है और अविश्वसनीय व्यक्ति बार-बार आपको यह एहसास दिलाने की कोशिश करता है कि वह आपका सबसे बड़ा शुभचिंतक है।

- ❖ विश्वसनीय व्यक्ति कभी फलतू की चापलूसी नहीं करता जबकि अविश्वसनीय व्यक्ति बहुत बड़ा चापलूस होता है। क्योंकि वह किसी भी प्रकार से आपका विश्वास जीतना चाहता है।
- ❖ विश्वसनीय व्यक्ति आपकी प्रत्येक गलती के बारे में अवगत करा सकता है जबकि अविश्वसनीय व्यक्ति आपकी गलती को भी महान काम बताता है। कहने का तात्पर्य यह कि आप सोच समझकर इंसान को परखकर ईमानदारी पूर्वक उसके बारे में विश्लेषण कर ही अपना भरोसेमंद व्यक्ति बनाये। ऐसा करने से आप दूरगामी संकटों से बच सकते हैं।

7. खुद के प्रति ईमानदारी :-

दुनिया में दूसरों के प्रति ईमानदारी के तो कई प्रमाण मिलते हैं। कुछ लोगो ने तो अपनी ईमानदारी व वफादारी को निभाने के लिये अपनी जान पर खेलने से पहले एक मिनट भी नहीं सोचा और अपनी जान पर खेलकर अपनी वफादारी के प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। लेकिन दुनिया में खुद के जीवन के प्रति ईमानदारी के प्रमाण न के बराबर ही मिलते हैं मैं मानता हूँ जितना जरूरी दूसरों के प्रति ईमानदारी दिखाने की होती है उतना ही जरूरी खुद के जीवन के प्रति ईमानदारी दिखाने की होती है। क्योंकि अगर दूसरों के प्रति ईमानदारी करने से व्यक्ति समाज की नजरों में महान बनता है तो अपने प्रति ईमानदारी करने से व्यक्ति खुद की नजरों में महान बनता है। और यह बात बिल्कुल सत्य है कि जब व्यक्ति खुद की नजरों में अपने

आपको अच्छा मानता है तो उसका जीवन सुखमय रहता है।

अगर इंसान को दूसरों के प्रति ईमानदारी करने से सामाजिक समृद्धि मिलती है तो खुद के प्रति ईमानदारी करने से उसको सामाजिक समृद्धि के साथ साथ शारीरिक, मानसिक व आर्थिक समृद्धि प्राप्त होती है। खुद के प्रति ईमानदारी क्या होती है? यह ईमानदारी उस ईमानदारी का नाम है जब हम अपने स्वयं के जीवन को उंचा उठाने की कोशिश करते हैं अपने दैनिक क्रियाओं और शरीर के लिये जरूरी सभी प्रकार की गतिविधियों व नियमों का पालन करते हैं जिसे हम देख तो नहीं सकते लेकिन उसका पालन जरूर कर सकते हैं और उसे एहसास भी कर सकते हैं। जिस प्रकार अगर लोहे से बनी मशीनों की देखरेख न की जाय तो वह खराब हो जाती है उसी प्रकार शरीर की ईमानदारी पूर्वक देखरेख न करने से वह बीमार व कमजोर हो जाता है। या फिर नष्ट हो जाता है। मनुष्य जीवन एक ऐसा वाहन होता है जो उतार चढ़ाव के सारे रास्तों पर चलता है इसे सभी प्रकार के रास्तों से बहुत ही सावधानी व कौशल पूर्वक चलाना पड़ता है क्योंकि अगर चालक से थोड़ी भी चूक हुई तो वह बहुत बड़ी दुर्घटना का शिकार बन सकता है क्योंकि जीवन रूपी रास्ते इतने जटिल होते हैं कि अगर हम थोड़ा भी इधर-उधर हुये कि फिसल जाते हैं और फिर एक बार फिसले तो फिसलते ही चले जाते हैं और हम इतने कुचले जा चुके होते हैं कि फिर हमारा दुबारा उठना हमारे लिये बहुत ही कष्टप्रद होता है। किसी विचारक ने लिखा है – **“ आकाश में उड़ते हुये पक्षियों की तरह तुम्हें भी उड़ने की स्वतंत्रता है मगर इस तरह मत उड़ो कि तुम्हारे पंख ही टूट जाय। ”**

कहने का तात्पर्य यह है कि अपने इस शरीर व जीवन को ईमानदारी पूर्वक जियो जितनी मेहनत करो उतना शरीर का भी ख्याल रखो क्योंकि ‘जाँन है तो जहान है।’

एक बार की घटना है पश्चिम यूरोप में एक देश था वहाँ पर एक किलेथिस नाम का लड़का रहता था वह बहुत गरीब था उसके पास न ही अच्छे कपड़े थे और

न ही पैसे। लेकिन पढ़ाई में बहुत अब्बल था। उसके पास पर्याप्त पैसे न होने के बावजूद भी वह एक अच्छी स्कूल में पढ़ाई करता था समय से उस स्कूल की फीस चुका देता था और चूंकि वह पढ़ाई में अब्बल था इसलिये उसके नम्बर सबसे बेहतरीन आते थे इसलिये स्कूल के सारे विद्यार्थी उससे ईर्ष्या रखते थे। एक दिन सभी ने मिलकर उस लड़के के ऊपर चोरी का आरोप लगा दिया। परिणामस्वरूप उसे जेल जाना पड़ा। जब उस लड़के को कोर्ट में पेश किया गया तो उसने दो गवाह बुलाने चाहे।

पहला गवाह – माली आया उसने कहा – “यह लड़का मेरे यहाँ प्रतिदिन आता है और पानी भरकर पौधों को पानी देता है इसके बदले में मैं इसे कुछ पैसे दे देता हूँ।” दूसरा गवाह – बूढ़ी औरत आयी उसने कहा – “यह लड़का मेरे यहाँ आकर प्रतिदिन चक्की चलाता है उसके बदले में मैं इसे कुछ रुपये दे देती हूँ।”

यह सब बाते जानकर संतरी बहुत खुश हुआ उसने उस लड़के को उसकी पूरी पढ़ाई का खर्च देने का प्रस्ताव दिया लेकिन उस लड़के ने मना कर दिया और कहा – “मैं अपने जीवन के प्रति गद्दारी नहीं कर सकता। उस ईश्वर ने मुझे शरीर दिया है मैं इस शरीर का ईमानदारी पूर्वक उपयोग करूँगा और यही हमारा कर्तव्य भी है।”

उसने आगे कहा – “मैं अपनी मेहनत से जो भी कमाता हूँ वह मेरे लिये पर्याप्त है। वाइदबे मैं आपसे ऐसी सहायता ले भी लेता हूँ तो यह सहायता मेरे लिये वैशाखी के समान होगी। और मैं फिर भविष्य में बिना सहायता के कोई काम नहीं कर पाऊँगा।” कृपया मेरी इस बात को मेरा बड़बोलापन न समझे क्योंकि मैं ऐसा ही सोचता हूँ और ईमानदारी से अपने इस शरीर से काम लेता हूँ। यही लड़का आगे चलकर **ग्रीस** का तत्ववेत्ता **जीनो** बना।

कहने का तात्पर्य है कभी भी अपने शरीर को आलस्य, दीनता से ग्रसित न करें, अपने आपको कमजोर न करें, कायर न बनें, मन व इंद्रियों को अपने बस में रखें न कि आप मन और इंद्रियों के बस में रहे।

अगर आप वास्तव में अपने प्रति ईमानदार है तब अपने हृदय में विशालता रखे, मन से उच्च बने, कर्म से महान बने। अपने हृदय से संसार के सारे दुख दर्दों को गंभीरता से अनुभव करें ऐसा मनुष्य बने जो न केवल अनुभव कर सकता हो वरन वस्तुओं के अर्थ का भी पता लगा सके जो प्रकृति और बुद्धि के हृदय की गहराई में पहुंचता हो और उसकी जिंदगी रूकावट से परे हो। यही आपकी जिंदगी के प्रति सच्ची ईमानदारी होगी।

जैसा कि मैंने पहले कहा है इस दुनिया में ईमानदारी से चलना बहुत कठिन है लेकिन एक बात ध्यान रखियेगा – “ लहरों के सहारे तो सभी तैर लेते है परन्तु जो लहरों को चीरते हुये आगे बढ़ता है वही असली तैराक होता है।”

यही बात हमारी वास्तविक जिंदगी में भी लागू होती है।

इस मिट्टी के पुतले को सजाते चले जाना।

हर एक कांटे को हटाते चले जाना ॥

अपने लवो की छटा को बिखेरते चले जाना।

हर दुःख दर्द को सीने से लगाते चले जाना ॥

अपने सुनहले अरमानों को सजाते चले जाना।

हर एक मोड़ को नसीबो से मिलाते चले जाना ॥

खुद वरण करेगी कीर्ती तुम्हे, बस हर रास्ते पर हंसते हुये चलते चले जाना ॥

दसवां चरण व्यक्तित्ववान बनें

“ दुनिया में सफल होना अलग बात है परन्तु अच्छा इंसान बनना अलग बात है ”

व्यक्तित्व क्या है ?

“ आप जिस प्रकार के व्यक्ति है, वही आपका व्यक्तित्व है और वह आपके आचरण, संवेदनशील व विचारों से अभिव्यक्त होता है।”

–कैम्ब्रिज अन्तर्राष्ट्रीय शब्द कोश

“ किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही उसका व्यक्तित्व है ”

– लांगमैन शब्द कोश

अच्छा व्यक्तित्व क्यों जरूरी है :-

समाज में हम कभी-कभी देखते हैं व जिंदगी में आप खुद अनुभव करना कि जिस व्यक्ति का हम पर गहरा प्रभाव पड़ता है उसका व्यक्तित्व कैसा है ? आखिर सामने वाले व्यक्ति में ऐसी कौन सी बात होती है जो इतने सारे व्यक्तियों पर एक झटके में अपना प्रभाव जमा लेता है। आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रभाव किसी न किसी के ऊपर जमाना चाहता है और हम भी ऐसा करने की कोशिश करते हैं लेकिन जरा एक मिनट के लिये सोचिये क्या हम ऐसा कर पाते है या फिर क्या आप ऐसा कर पाते हैं ? अगर आप ऐसा कर पाते है तो आप निश्चित रूप से व्यक्तित्व के धनी है। अगर आप ऐसा नहीं कर पाते तो आपके अन्दर जरूर कुछ न कुछ कमी है। एक बात और अगर आपके डर के कारण आपको कोई इज्जत देता है या फिर किसी मजबूरी के कारण तो मैं मानता हूँ इसमें आपका कोई व्यक्तित्व नहीं है। क्योंकि जैसे ही आप अपने वर्तमान पद या रूतबे से बाहर हुये आपको नमस्कार करने वाला एक भी आदमी नहीं मिलेगा। यही दुनिया की सच्चाई है। ‘फतह करना अलग बात होती है मगर किसी का दिल जीतना अलग बात होती है।’ इस दुनिया में

अपने रूतबे से या अपने पद से किसी को झुका लेना बहुत आसान है किन्तु कोई आपके सामने अपने दिल से झुक जाय यह बहुत बड़ी बात होती है। जब कोई आपके सामने दिल से झुके तभी सही मायने पर आप व्यक्तित्वशाली हैं।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक अच्छा पढ़ा लिखा आदमी आपसे बातें करता है और वह उतना प्रभाव आप पर नहीं छोड़ पाता। वही दूसरी ओर एक अनपढ़ जिसकी व्याकरण संगत भाषा भी नहीं रहती फिर भी वह व्यक्ति आपको इतना प्रभावित कर जाता है कि आप उसे भूल नहीं पाते हैं। दरअसल व्यक्तित्व की पहचान पढ़े लिखे से नहीं होती बल्कि उसके क्रिया कलापो से होती है।

भारत जैसे देश में 75% राजनीतिज्ञ ऐसे हैं जो या तो स्कूल का दरवाजा नहीं देखे या बहुत कम पढ़े लिखे हैं या फिर पढ़े लिखे भी हैं तो भी तृतीय श्रेणी के छात्र रहे हैं फिर भी वह एक अच्छे राजनीतिज्ञ हैं क्योंकि उनके पास एक ऐसी धरोहर है जिसका नाम व्यक्तित्व है।

लोग कहते हैं फलां व्यक्ति अंगूठा छाप था फिर भी इतना बड़ा उद्योगपति बन गया। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जरूरी नहीं है कि एक व्यक्तित्वशाली व्यक्ति उच्च शिक्षित हो। कम पढ़ा लिखा व्यक्ति भी व्यक्तित्वशाली हो सकता है और उच्च शिक्षित व्यक्ति भी भ्रष्ट आचरण वाला हो सकता है।

“ इस संसार में व्यक्तित्वशाली व्यक्ति ही अपनी अलग पहचान बना पाता है और प्रत्येक क्षेत्र में उसकी सफलता लगभग तय होती है। ” नेलसन मंडेला, महात्मा गांधी और ऐसे अनेक महापुरुष हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वह कभी भी अपनी पढ़ाई में टापर नहीं थे फिर भी विश्व प्रसिद्ध हैं क्योंकि उनका व्यक्तित्व कुछ खास ही था। लोग चुम्बक की तरह उनकी तरफ खिंचे चले आते थे। मैंने देखा है कि स्कूल का एक टापर विद्यार्थी अगर व्यक्तित्ववान नहीं होता तो लोग इससे घृणा करते हैं वही एक कमजोर छात्र जिसके पास एक अच्छा व्यक्तित्व होता है उससे सभी प्रेम करते हैं। समाज का एक गरीब व्यक्ति अपने अच्छे व्यक्तित्व के दम पर सभी से प्यार पाता है वही एक धनी व्यक्ति अपने बुरे व्यक्तित्व के कारण व

बर्ताव के कारण घृणा का पात्र बनता है।

“ किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसका आईना होता है ”

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व वास्तविक परिचय होता है जिस व्यक्ति के पास ऐसी श्रेष्ठ पूंजी होती है वह कभी भी लाचार नहीं होता है। यह पूंजी इंसान के पास छोटे-छोटे सूत्रों के माध्यम से जमा होती है। जिसके पास यह जमा पूंजी जितनी अधिक होती है वह उतना ही व्यवहार कुशल व सफल व्यक्तित्व का धनी होता है। इसके अभाव में व्यक्ति व्यावहारिक धरातल पर नितांत दरिद्र होता है भले ही वह अन्य क्षेत्रों में कितना ही समृद्ध क्यों न हो? इसी जमा पूंजी को व्यवहारिक बैंक खाते के रूप में जाना जाता है जो अत्यंत लोकप्रिय है यह हर उम्र के लोगों के लिये एक समान लागू होता है क्योंकि सभी का वाह्य जीवन व्यवहारिक पृष्ठभूमि में पलता बढ़ता है और विकसित होता है। इसी में आंतरिक जीवन के बंद कपाट खुलते हैं।

प्रसिद्ध लेखक स्टीफन कोवे ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक 'द सेवन हैविट्स ऑफ हाइली इफेक्टिव टीन्स' में व्यक्तित्व के बारे में बड़ा ही रोचक विवरण प्रस्तुत किया है उन्होंने व्यवहारिक जीवन के छः बिन्दुओं को प्रस्तुत किया है।

- ❖ अपने वचन की रक्षा करना।
- ❖ प्रत्येक दिन कोई अच्छा कार्य करने का प्रयास करना।
- ❖ विश्वसनीय होना।
- ❖ दूसरों की सुनना।
- ❖ गलतियों के लिये विनम्रता पूर्वक क्षमा मांगना।
- ❖ उचित की इच्छा करना।

स्टीफन कोवे के छः सूत्र उच्च व्यवहारिक आदर्श हैं इनसे न केवल जीवन का व्यवहार पक्ष परिष्कृत होता है, बल्कि आंतरिक जीवन की अनंत संपदा के द्वार भी खुलते हैं।

अब मैं अच्छे व्यक्तित्व को प्राप्त करने के कुछ बहुमूल्य सूत्रों को लिखने जा रहा हूँ जो जिंदगी के प्रत्येक मोड़ पर महत्वपूर्ण होते हैं।

1. रहन सहन आचार-विचार अच्छा रखे :-

किसी भी व्यक्ति का रहन सहन, उसके कपड़े पहनने का तरीका, बात करने का तरीका उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है। वैसे माना जाता है कि “ किसी भी व्यक्ति के कपड़ों व उसके मकान को देखकर उसके व्यक्तित्व को व उसकी औकात को नहीं आका जा सकता है।” लेकिन यह बात पचास साल पहले लागू हो सकती थी आज नहीं। आज के युग में जो दिखता है वही बिकता है। आप खुद सोचिये जब आपके पास बढ़िया सूट बूट पहनकर एक व्यक्ति आता है भले ही उसके जेब में मात्र दो रूपये हो तब आपका नजरिया उसके प्रति क्या होता है ? वही दूसरी ओर साधारण कपड़े पहनकर एक व्यक्ति आता है और वह लाखों रूपयों का मालिक है तब आपका नजरिया उसके प्रति क्या होता है ? निश्चित रूप से सूट बूट पहनकर आने वाले व्यक्ति के प्रति आपका नजरिया सकारात्मक और साधारण कपड़े पहन कर आने वाले व्यक्ति के प्रति आपका नजरिया नकारात्मक होता है। ऐसा मैंने इस समाज में अपने आपको दोनों रूपों में रखकर अनुभव किया है। जब मैं अपने आपको लोगों के सामने साधारण बनकर पेश किया तब लोगों ने मुझे गरीब व लाचार समझा। जब मैंने अपने आपको हाई प्रोफाइल व्यक्ति के रूप में लोगों के सामने पेश किया तब लोगों ने मुझे अमीर व सशक्त व्यक्ति के रूप में देखा। कितनी अजीब बात है मैं दोनों ही रूप में डॉ. शिवशंकर था दोनों ही रूप में मेरे पास उतनी ही दौलत व बुद्धि थी। लेकिन मेरे दोनों रूपों में लोगों का नजरिया अलग अलग था। मैं मानता हूँ अगर समाज के लोग ऐसा सोचते हैं तो इसमें उनकी कोई गलती नहीं है और न ही मैं मानता हूँ क्योंकि दुनिया परिवर्तनशील है प्रत्येक पन्द्रह वर्षों में एक नया परिवर्तन होता है जो व्यक्ति संसार में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार नहीं चलता वह पीछे रह जाता है। इसलिये अगर लोग ऐसी सोच रखते हैं तो इसमें उनकी कोई गलती नहीं है।

आप खुद अनुभव करिये अगर आपके पास कोई व्यक्ति आता है जो बिल्कुल साधारण भेष भूसा वाला है और आपसे कहता है, मैंने अपनी जिंदगी में बहुत दौलत

कमायी है, मेरे पास सब कुछ है, तब आपको कैसा महसूस होता है ? आप निश्चित रूप से उसके प्रति नकारात्मक ही सोचेंगे।

आप किसी ऐसे व्यक्ति के घर जाते हैं जो धनाढ्य तो है मगर उसके रहन सहन का तरीका ठीक नहीं है तब आप उसके पास कितनी देर तक बैठ पायेंगे या फिर बैठने के बाद आपकी उसके प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी आप एक डॉक्टर के पास जाते हैं अगर डॉक्टर उटपटांग कपड़े व संतो जैसी भेष भूषा बनाये मिल जाय तो एक मिनट के लिये आपके मन में तो आयेगा ही कि यह हमें क्या ठीक करेगा ? जो खुद मरीजो जैसा दिख रहा है।

एक व्यक्ति आपके पास आता है और कहता है, मैं तुम्हारी जिंदगी बदल दूंगा और भेष-भूषा से ऐसा लग रहा हो कि वह साधारण आदमी है तब आपके मन में एक बात जरूर आयेगी कि पहले अपनी जिंदगी बदल ले फिर हमारी बदलना। मेरे कहने का तात्पर्य है कि व्यक्ति को अपने भेष भूषा व अपना रहन सहन अपने व्यवसाय के अनुरूप रखना चाहिये। जहाँ जैसी माँग हो उस माँग के अनुसार अपने आपको बदल लेना बुद्धिमानी कही गयी है। अभी मैं व्यक्ति के रहन-सहन के बदलाव के बारे में बात कर रहा था अब मैं इसके साथ जो सबसे जरूरी बात है उसकी चर्चा करूँगा। **“ इंसान अपने रहन सहन में बदलाव मात्र से वह महान नहीं बन जाता बल्कि उसे इसके साथ अपने व्यवहार व आचरण को भी मजबूत रखना पड़ता है तभी वह सही मायने पर एक मनुष्य कहलाने का हकदार होता है।”** इसे दूसरे शब्दों में उसका आचार-विचार भी कह सकते हैं।

मनुष्य बनने के लिये शिक्षा व संस्कृति दोनों की जरूरत होती है जहाँ एक ओर शिक्षा मनुष्य के बौद्धिक एवं मानसिक विकास में सहायक होती है वही संस्कृति उसके व्यवहार को मांजती है और उसे समाज में रहने के तौर तरीके सिखाती है। किसी भी व्यक्ति का व्यवहार व आचरण उसे समाज में प्रशंसा का पात्र बनाता है।

संध्या का समय था। गाँव की चार स्त्रियाँ पानी लेने के लिये अपने अपने घड़े लेकर कुएँ पर पहुंची पानी भरने के साथ साथ वे आपस में बात भी कर रही थी।

उनमें से एक ने कहा “मैं अपने बेटे से खुश हूँ। भगवान अगर किसी को बेटा दे तो ऐसा ही दे, बेटा क्या अनमोल हीरा है उसका कंठ इतना मधुर है कि बस पूछो मत।”

उसकी बात सुनकर दूसरी स्त्री ने बड़े गर्व के साथ कहा – “मेरा बेटा भी ऐसा ही है मल्लविद्या में वह इतना निपुण है कि उसकी बराबरी बड़े-बड़े पहलवान भी नहीं कर सकते हैं।”

तीसरी स्त्री ने कहा – “मेरा बेटा भी हीरे से कम नहीं है उसके कण्ठ में सरस्वती का निवास है। वह ज्ञान का भण्डार है। जो एक बार पढ़ लेता है उसे कभी नहीं भूलता।”

चौथी स्त्री बिलकुल चुप बैठी थी उसे देखकर एक ने कहा “बहन! भगवान ने तुम्हें भी एक बेटा दिया है। तुम भी उसके बारे में कुछ बताओ। क्या उसमें कोई भी गुण नहीं है?” उसने कहा – “नहीं, नहीं ऐसी बात नहीं है मेरा बेटा, तुम्हारे बेटों की तरह न गंधर्व है, न पहलवान और न ही बृहस्पति वह तो बहुत ही सीधा सादा सरल हृदय का है। वह दूसरों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता है।” चारों स्त्रियाँ अपने अपने घड़े उठाकर सिर पर रखने लगी, उसी समय पास से किसी के गीत की मधुर ध्वनी सुनाई दी। पहली स्त्री ने कहा – “देखो मेरा हीरा आ रहा है कितना मधुर गाता है।” तीनों स्त्रियाँ बड़े ध्यान से उसके बेटे को निहारने लगीं और वह गाता हुआ सीधा आगे निकल गया। वे सभी उसकी प्रशंसा करने लगीं। तभी दूसरी स्त्री का बेटा उधर आया वह सचतुच भीम जैसा लग रहा था। उसकी छाती चौड़ी व भुजायें कसी हुई थी। वह भी बिना अपनी माँ की ओर देखे वहाँ से निकल गया। तीसरी स्त्री का लडका भी फर्राटे से संस्कृत के श्लोक और विद्वतापूर्ण बातें करता हुआ वहाँ से निकल गया। तभी चौथी स्त्री का बेटा भी उधर आ पहुँचा। वह अपनी माँ से बड़े स्नेह से कहने लगा – ओ माँ! तुम क्यों तकलीफ उठाती हो? ला अपना घड़ा मुझे दे, मैं उसे ले चलता हूँ। चौथी स्त्री के लाख मना करने पर भी वह नहीं माना उसने अपनी माँ के सिर से घड़े को उतारकर अपने सिर पर रख लिया और आगे आगे चलने लगा। सभी स्त्रियाँ उसके व्यवहार को देखकर आश्चर्य चकित

रह गयी। कुछ दूर बैठे एक वृद्ध पुरुष के मुख से सहज ही ये शब्द फूट पड़े। “धन्य धन्य: यही है सच्चा हीरा जो अवसर मिलने पर अपनी माँ की सेवा से नहीं चूका।”

इस कहानी से यह निष्कर्ष निकलता है कि बहुत बड़ा विद्वान बन जाने से संगीतज्ञ, खिलाड़ी व धनवान बन जाने से कोई बड़ा नहीं हो जाता। कोई बहुत बड़े पद में पहुँच गया लेकिन माँ बाप, गुरुजन व कमजोर लोगों की सेवा से जी चुराता है तो उसका बड़प्पन किस काम का? कोई पैसे वाला हो गया व बड़े पद में पहुँच गया अगर उसमें मिथ्या अहंकार है व वासना है तो कभी भी सच्चा व्यक्तित्ववान नहीं बन सकता है और न ही दूसरों का प्यार व प्रशंसा पा सकता भले ही वह अपने सात पीढ़ियों का तारणहार बन जाय।

2. वाणी में दृढ़ता व शालीनता रखें :-

सम्प्रेषण के दौरान पूरे आत्मविश्वास के साथ बात करनी चाहिये लेकिन शालीनता पूर्वक। कभी भी अपने सम्प्रेषण में ऐसे शब्दों का उपयोग नहीं करना चाहिये जो सामाजिक दृष्टि से अशोभनीय व निन्दकपूर्ण हो। क्योंकि सम्प्रेषण के दौरान उपयोग किये गये शब्द आपके व्यक्तित्व को प्रदर्शित करते हैं मैंने देखा है व आपने भी देखा होगा लोग उसी से मिलना व बातें करना पसंद करते हैं जो लोगों से अच्छी तरह बातें करता है उससे कोई भी व्यक्ति मिलना नहीं पसंद करता जिसकी बातें अमर्यादित व घमंडयुक्त होती हैं हम समाज में अक्सर देखते हैं कि कुछ लोग बातें करते वक्त अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने के लिये अपना आपा खोकर सम्प्रेषण करते हैं। कभी कभी तो उनके शब्दों का चयन वास्तव में अच्छा नहीं रहता है और बाद में यही शब्द उनके पश्चाताप कारण बनते हैं। वास्तव में इस प्रकार के शब्द हमारी ओछी मानसिकता को प्रदर्शित करते हैं और हमें व्यक्तित्वहीन व्यक्ति की ओर ले जाते हैं।

कुछ लोग दूसरों से उल्टी सुल्टी बातें भी करते हैं और बाद में कहते भी हैं मैंने उससे कहा ही है ना, कोई तलवार तो नहीं मारी, जो बोल दिया तो बोल दिया उससे जो करते बने कर लेगा। मैं इस प्रकार के व्यक्तियों से एक बात कहूँगा दुनिया

के प्रत्येक व्यक्ति को उससे बढ़कर कभी न कभी दूसरा इंसान मिल ही जाता है उस समय उसे उसके व्यवहार से नुकसान उठाना पड़ता है। अगर बाइदबे उससे ताकतवर व उसके बराबर का कोई दूसरा व्यक्ति नहीं भी मिलता है तब भी वह अप्रत्यक्ष रूप से अपना व्यक्तित्व खोता है।

एक बार एक बहुत बड़े विचारक वाणी में शब्दों के महत्वता के बारे में ब्याखात दे रहे थे। तभी वहाँ पर बैठा एक व्यक्ति उनके वैक्तव्य के बीच में उठकर बोलने लगा – “ शब्दों में क्या रखा है ? शब्दों से क्या फायदा है ? दार्शनिक महोदय कुछ देर चुप रहे , फिर उन्होंने उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुये कहा – तुम मूर्ख व जाहिल ही नहीं, नीच और कमीने भी हो।” वह व्यक्ति तुरंत आग बबूला हो गया उसने दार्शनिक महोदय से कहा : “आप इतने बड़े ज्ञानी हो क्या आपके मुंह से ऐसे शब्दों का उच्चारण शोभा देता है ? आपके इस कथन से मुझे बहुत दुःख पहुंचा है। मैंने ऐसा क्या कह दिया ? जो आपने मुझे इस प्रकार बुरा भला कहा।”

दार्शनिक महोदय हंसते हुये बोले – “भाई ! वे मात्र शब्द ही तो थे शब्दों में क्या रखा है ? मैंने तुम्हें पत्थर तो नहीं मारा। दार्शनिक महोदय ने आगे बोलते हुये कहा – **जब इस प्रकार के बोले गये शब्द तुम्हारे क्रोध का कारण बन सकते हैं तो तुम्हारे द्वारा बोले गये कुछ ऐसे ही शब्द किसी अन्य व्यक्ति के भी क्रोध का कारण बन सकते हैं। इसलिये व्यक्ति को हमेशा संप्रेषण के दौरान नपे तुले शब्दों का ही उपयोग करना चाहिये। ऐसे शब्दों का उपयोग कभी नहीं करना चाहिये जो किसी अन्य व्यक्ति के दिल में सीधे वार करते हो।**” कहने का तात्पर्य यह है कि किसी से बातें करते वक्त अपनी वाणी को संयमित रखे जिससे आपकी बात पूरी होने के साथ साथ सामने वाले व्यक्ति का सम्मान भी बराबर बना रहे।

हमारे एक बात समझ में नहीं आती जब हम किसी रूतबेदार व अपने से ज्यादा ज्ञान व बुद्धि या दौलतमंद व्यक्ति से बात करते हैं तो हमारी पूरी कोशिश रहती है कि सामने वाले व्यक्ति के सामने ऐसी कोई बात न करें (भले ही हमारी बात

सही हो और उसकी बात गलत हो) जो उसके नाराजगी का कारण बने। वही दूसरी ओर जब हम किसी गरीब व अपने से छोटे व्यक्ति से बातें करते हैं तो हम बेहिचक कुछ ऐसे शब्दों का भी उपयोग कर जाते हैं जो किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं होते और भविष्य में उन्हें सुधारने की कोशिश भी नहीं करते बल्कि उल्टा ऐसे शब्दों का उपयोग कर गर्व महसूस करते हैं। मैं समाज के ऐसे व्यक्तियों के संदर्भ में कहना चाहूंगा आपका इस प्रकार का दोहरा व्यवहार आपको कभी भी व्यक्तित्वशाली नहीं बना सकता। एक बात तो इस दुनिया में बिल्कुल सत्य है कि आपके व्यक्तित्व की सही समीक्षा व सम्मान की देखरेख एक गरीब व कमजोर व्यक्ति ही कर सकता है। जिस प्रकार से यूके लिपटस के नीचे छोटे मोटे पौधे नहीं उग सकते उसी प्रकार एक रूतबेदार व दौलतमंद व्यक्ति की छत्रछाया में छोटे मोटे व्यक्तित्वशाली व्यक्ति उससे आगे नहीं निकल सकते। लेकिन वही दूसरी ओर जिस प्रकार छोटी-मोटी झाड़ियों के बीच एक पौधा उगता है और सुरक्षित एक वृक्ष का रूप धारण भी करता है उसी प्रकार एक व्यक्ति की ख्याति व उसको व्यक्तित्वशाली व्यक्ति बनाने का काम एक गरीब व कमजोर व्यक्ति ही करता है। इसलिये एक गरीब व कमजोर व्यक्ति के साथ अच्छा बर्ताव करें। मैंने समाज में अनुभव किया है गरीब व्यक्ति कभी भी आपसे दौलत व सोहरत मांगने नहीं आता बल्कि एक प्रेम मांगता है जो आप दे सकते हैं। और उसके प्रति आपकी थोड़ी संवेदनशीलता लाखों लोगों के बीच आपको एक अच्छे व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करने के लिये काफी होती है। **“ गरीब हो या अमीर लाचार हो या सशक्त सभी प्रकार के व्यक्तियों को एक ही तराजू में तौलकर मानवता को ध्यान में रखकर एक समान व्यवहार करना चाहिये तभी हम एक अच्छे व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति बन सकते हैं।”**

3. दूसरों से मिलते वक्त मुस्कराकर मिले :-

“दुनिया का कोई भी व्यक्ति तनावयुक्त व रोते हुये व्यक्ति से नहीं मिलना चाहता। और न ही मिलना पसंद करता।”

आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी काम को लेकर तनाव में रहता

है ऊपर से अगर उससे मिलने के लिये एक तनावयुक्त व्यक्ति व रोता हुआ व्यक्ति उसके पास पहुंच जाय तो वह उसके तनाव को और बढ़ा देता है।

हमें कभी कभी समाज के कुछ लोगो को देखकर बड़ी हंसी आती है जब वह अपने तनाव व दुःख को दूसरे व्यक्ति से बांटने की कोशिश करते हैं मुझे हंसी इसलिये नहीं आती कि सामने वाले व्यक्ति ऐसा करते हैं बल्कि हंसी इसलिये आती है कि जिस व्यक्ति से वह अपना दुःख बांट रहे हैं और अपेक्षा कर रहे हैं कि वह व्यक्ति मेरी समस्या का निदान करेगा वह खुद इतना उलझा हुआ होता है कि अपनी समस्याओं का निदान तो कर नहीं पाता फिर आपकी समस्याओं का निदान क्या खाक कर पायेगा ? इसलिये लोगो से मिलते वक्त अपना तनाव व दुःख उसे न बताये बल्कि मुस्कुराकर व हंसकर मिले ऐसा करने से आपके व्यक्तित्व में निखार तो आता ही है साथ ही आपके प्रति सामने वाले व्यक्ति की सोच भी सकारात्मक होती है।

किसी भी व्यक्ति से मुस्कुराकर मिलने से सामने वाले व्यक्ति के प्रति आपकी आत्मीयता प्रदर्शित होती है और सामने वाले व्यक्ति को ऐसा महसूस होता है कि आप उसके प्रति संवेदनशील हैं और उसका पूरा ख्याल रखते हैं व उसके मिलने से आपको खुशी होती है। परिणामस्वरूप सामने वाले व्यक्ति की नजरों में आपका व्यक्तित्व उँचा हो जाता है। समाज में लोग अक्सर कहते हैं फलां व्यक्ति कितना अच्छा आदमी है, जब भी मिलता है दिल खोलकर मिलता है उसके चेहर पर कभी भी तनाव की एक सिकन भी नहीं दिखायी देती। और फलां व्यक्ति जब मिलता है तो ऐसा दर्शाता है कि उससे बड़ा, उससे व्यस्त उससे बुद्धिमान दुनिया में कोई और नहीं है। कहने का तात्पर्य मुस्कुराकर मिलने वाले व्यक्तियों और न मुस्कुराकर मिलने वाले व्यक्तियों के प्रति लोगो का नजरिया अलग अलग होता है। इसलिये किसी भी व्यक्ति से मिलते वक्त अपने चेहरे पर हल्की मुसकान जरूर लाये और सामने वाले व्यक्ति को पूरे अभिवादन के साथ ले। आपका यश अपने आप बढ़ता जायेगा जैसे भी मुस्कुराने की कला सिर्फ इंसानो के पास होती है जानवरों के पास नहीं।

4. एक अच्छे श्रोता बनें :-

आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन से संबंधित घटनायें व अपने विचारों को सुनाना चाहता है। ज्यादातर बुजुर्गों के मामले में ऐसा होता है बुजुर्ग व्यक्ति अपनी आपबीती किसी न किसी व्यक्ति को सुनाना चाहता है। जो व्यक्ति उसकी बातों को ध्यान से सुनता है वह उसके प्रति कुछ ज्यादा ही संवेदनशील होता है और उससे लगाव रखता है।

एक बात तो तय है कि हम हो या आप सभी की एक हसरत होती है कि हमारी बातों को लोग सुने, समझे और भावनाओं की कद्र करें ऐसा कोई भी व्यक्ति जानबूझकर नहीं करता बल्कि वह मानव स्वभाव बस करता है। कोई भी संस्था हो या कोई भी संगठन हो वहां पर उसी व्यक्ति को पसंद किया जाता है व महत्व दिया जाता है जो काम ज्यादा करता है परन्तु बोलता कम है। मैं एक बहुत बड़े सामाजिक संगठन में काम करता था उस संगठन के प्रभारी अक्सर कहा करते थे “ काम भले कम करो मगर बोलो कम ” मैंने इस संगठन में काम करते वक्त एक बात अनुभव की थी कि उस संगठन के कुछ लोग हमसे भी ज्यादा बुद्धिमान व अच्छी प्रकार से काम करने में माहिर थे लेकिन जो प्रभाव मैंने उस संगठन में मात्र तीन महीने में छोड़ दिया था वैसा प्रभाव वह पांच वर्षों में भी नहीं छोड़ पाये थे। कारण सिर्फ एक था मैं बोलता कम था, सुनता ज्यादा था और चुपचाप बिना किसी से कुछ कहे अपने हिस्से का काम पूरा करता था। जब कभी मैं अपना काम नहीं भी कर पाता था उस समय भी कोई मुझसे खफा नहीं होता था बल्कि उस अधूरे काम को पूरा करने के लिये मेरे साथ मदद के लिये आ जाते थे।

कहने का तात्पर्य यही है कि हम कहीं भी काम करते हो या किसी भी व्यक्ति के पास बैठते हो हमें अपने ज्ञान व बुद्धि के बल पर सामने वाले व्यक्ति को रिझाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये (विशेषकर हमसे ज्यादा अनुभव रखने वाले व्यक्तियों के मामले में) बल्कि हमें अपने ज्ञान व बुद्धि के बल पर कोई ऐसा रचनात्मक व अच्छा काम करना चाहिये जो हमारे ज्ञान व बुद्धि व कार्यकुशलता को अपने आप

प्रदर्शित करता हो। हमारा इस प्रकार का व्यवहार हमारे ज्ञान, बुद्धि व कार्य कुशलता को लोगो की नजरों में खुद व खुद प्रदर्शित कर देता है और हम एक सशक्त व्यक्तित्व के रूप में भी स्थापित हो जाते है।

एक अच्छे श्रोता बनने से एक फायदा यह भी है, सामने वाला व्यक्ति आपसे भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है और वह हर संभव आपकी मदद करने की कोशिश करता है क्योंकि वह समझने लगता है कि आप उसे प्रेम करते है और उसकी भावनाओ को समझते है। साथ ही आप उसके सबसे बड़े शुभचिंतको में से एक है।

एक बात ध्यान रखियेगा 'मैने कम बोलने व अच्छा श्रोता बनने' की सीख दी है। मैने यह कही नही कहा कि आप किसी के सामने जाकर पत्थर की मूर्ति के समान स्थापित हो जाय और कुछ भी न बोले। कम बोलिये मगर बोलिये जरूर, सामने वाले व्यक्ति की जो बाते तारीफ के काबिल हो उसकी तारीफ जरूर करें। उसकी प्रत्येक बात पर हाँ या ना ठीक है सही है जैसे शब्दो से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे अपने किसी भी हाव भाव से सामने वाले व्यक्ति को अहसास न होने दे कि आप उसे किसी मजबूरी बस झेल रहे है। आप उसकी बातो को सुनकर आधीर न हो क्योंकि सामने वाला व्यक्ति अपनी पूरी बात कहकर आपको बोलने का मौका जरूर देगा। अगर वह ऐसा नही भी करता तब भी आपकी कीर्ति से सम्बंधित कुछ न कुछ काम करके जरूर जायेगा। कहने का मतलब कही न कही वह आपको फायदा जरूर पहुंचायेगा।

“ जो सबकी सुनते हे उनकी भगवान सुनता है।”

-विनोवा भावे

5. क्रोध पर नियंत्रण रखें :-

“ घमंडी के लिये कोई भगवान नही होता , ईर्ष्यालू का कोई पड़ोसी नही होता और क्रोधी का कोई मित्र नही होता।”

क्षणभर का आवेश जीवन भर को कड़वाहटों और दुखों से भर देता है हमारा क्षणिक आवेश किसी की जान भी ले सकता है। हम अपने क्रोध पर नियंत्रण न कर

पाने के कारण दूसरो की जिंदगी में जहर भर देते हैं।

वास्तव में क्रोध उन्ही को आता है जिनको अपने ऊपर नियंत्रण नही होता है जो स्वयं को वश में नही रख सकते।

सिस्टर एलिजाबेथ केन्नी से एक बार उसके मित्र ने पूछा था कि “वह अपने आप को हर समय प्रफुल्लित बनाये रखने में कैसे सफल होती है ? आखिर उसे कभी तो क्रोध आता ही होगा। तब उस समय अपने क्रोध को कैसे रोक पाती है ?” केन्नी ने कहा – ‘जब मैं छोटी थी तो प्रायः क्रोध करती थी बात-बात में चिढ़ जाती थी। एक बार जब मैं एक छोटी सी बात में अपने मित्र से लड़ गयी तो मेरी माँ ने मुझे एक सलाह दी जिसे मैं कभी भुला नही पायी मेरी मां ने कहा था – ‘केन्नी याद रखो कि जो भी व्यक्ति तुम्हे क्रोध करने को कहता है ऐसा करके वह तुम्हे जीतना चाहता है और ज्यों ही तुम क्रोध करती हो उसे अपने उद्वेश्य में सफलता मिल जाती है।’ इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिये क्योंकि इससे मन की शांति भंग होती है और आपको विनाशकारी कार्यों के प्रति उत्तेजित करता है।

“ जब क्रोध आये तो उसे रोककर उसके परिणामों के बारे में सोचो।”

-कन्फ्यूसियस

जो व्यक्ति सफलता चाहता है आगे बढ़ना चाहता है वह चाहता है कि उसका व्यक्तित्व सबसे अच्छा हो तो सबसे पहले उसको अपने क्रोध पर विजय प्राप्त करनी होगी। क्रोध पर विजय पाना भी एक कला है जिस कला को सीखकर ही आप सफलता का महत्व व क्रोध द्वारा किये गये विध्वंस के बीच अंतर को समझ सकते है। एक बार एक व्यक्ति एक विद्वान के पास किसी समस्या का समाधान पूछने गया। विद्वान ने पूरी समस्या सुनी और कहा – “तुम किसी भी समस्या का हल क्रोध से भरे मस्तिष्क के द्वारा नही कर सकते। किसी भी समस्या का समाधान शांत मन से किया जा सकता है। अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर कभी विश्वास न करो, जब तक की वे पूरी तरह से तुम्हारे नियंत्रण में न हो। कोई भी व्यक्ति जब गुस्से में होता है तो उसका अपनी भावनाओं से नियंत्रण छूट जाता है।”

एक पादरी ने कहा है – “ जब सिंहासन पर क्रोध विराजमान होता है तो बुद्धि वहां से निकलकर बाहर चली जाती है।” क्रोध का प्रभाव इतना प्रबल होता है कि आप उसके रहते सही निर्णय नहीं ले सकते।”

चैतन्य मुनी कहते हैं – “ आपके स्वास्थ्य पर क्रोध का क्या प्रभाव पड़ रहा है, यह जानने के लिये जरूरी नहीं कि आप वैज्ञानिक या शोधकर्ता बने। आपको केवल संवेदनशील होने की जरूरत होती है। जब इंसान को क्रोध आता है तो उसके शरीर से गुस्से व हिंसा की तरंग निकलने लगती है और वह अपने आसपास के लोगो को भी प्रभावित करती है। उसस्थान पर बैठे, खड़े लोग अपने अंदर एक नशा की अनुभूति करने लगते हैं। आपने देखा होगा जिस स्थान पर क्रोधी व्यक्ति रहता है उसके आस पास के व्यक्ति भी क्रोधी प्रकृति के होते हैं लेकिन उसके विपरीत यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के पास बैठे हैं जो शांति और शीतलता प्रदान करता है तो आपको भी शांति व सुख की अनुभूति होती है।”

आपने देखा होगा और महसूस भी किया होगा जब किसी संगठन के लोग अपने भाषणों से जनता को उत्तेजित कर देते हैं तो क्या होता है? हिंसा, अविवेकपूर्ण कार्य दंगे आदि से चारो ओर तबाही मच जाती है। क्रोध हमेशा विनाशकारी होता है उससे शांति भंग होती है चाहे वह खुद में उत्पन्न हो या जनसमूह में।

आज के युग में समाज में स्पर्धा, ईर्ष्या, वैमनस्य आदि का इतना बोलबाला हो गया है कि लोग बात-बात पर हत्या करने से भी नहीं चूकते। मैंने एक बार पढ़ा था मात्र एक रुपये के कारण एक आटोचालक की एक व्यक्ति हत्या कर देता है। ऐसी तमाम घटनायें हो चुकी हैं व हो रही हैं। बच्चों से लेकर बड़ों तक छोटी छोटी बात में झगड़े हो रहे हैं। आज हमारा पूरा समाज क्रोध पर नियंत्रण खो चुका है और यह क्रोधी मानसिकता इंसान को गर्त की ओर ले जा रही है। इसके कारण परिवार टूट रहे हैं, घर टूट रहे हैं। देश बिखर रहे हैं।

कुछ लोगो को बात बात पर क्रोध आता है जो उनके व्यक्तित्व को जलाकर राख कर देता है। अंत में ऐसे व्यक्तियों के पास कुछ भी नहीं बचता न व्यक्तित्व न दौलत।

कुछ समय पहले की एक घटना है, एक बहुत बड़ी कंपनी का मालिक अपने कंपनी में काम करने वाले व्यक्तियों को बात बात पर डांटता रहता था। वह किसी की बातें नहीं सुनता था कोई भी कर्मचारी थोड़ी सी गलती कर दे तो उसके ऊपर वह कहर बनकर टूटता था। अंत में उसका यही क्रोध उसके पतन का कारण बना कंपनी को घाटा उठाना पड़ा। सारे कर्मचारी कंपनी छोड़कर चले गये वह कर्जों से डूब गया और हृदयाघात के कारण उसकी मृत्यु हो गयी। उसके मरते समय उसके पास सिर्फ दो व्यक्ति बचे थे एक उसकी पत्नी दूसरा डॉक्टर। कहने का तात्पर्य बात बात पर क्रोध करने वाले व्यक्तियों का हस्र बहुत बुरा होता है। इसलिये जितना हो सके क्रोध को अपने ऊपर हावी न होने दे हमेशा शांतिपूर्वक निर्णय ले। बात बात पर चिढ़ना जहाँ एक ओर शरीर को नुकसान पहुंचाता है वही दूसरी ओर व्यक्ति को।

“ आप अपने आपके अलावा, शांति कही और से नहीं ले सकते इसलिये क्रोध पर नियंत्रण करना भी आपको ही सीखना होगा।”

6. चरित्र उत्तम रखें :-

कहा जाता है " Money is loss nothing is loss, Health is loss something is loss but character is loss everything is loss "

मैं इस वाक्य से पूर्णतः सहमत हूँ क्योंकि इंसान सब कुछ खोने के बाद भी उसी तरह आत्मसम्मान में चल सकता है और उसके व्यक्तित्व में भी कोई खास फर्क नहीं पड़ता लेकिन चरित्र खो देने के बाद इंसान के पास सब कुछ रहते हुये भी कुछ शेष नहीं रहता है। वह कभी भी सज्जन व चरित्रवान व्यक्तियों का सामना नहीं कर सकता है और न ही उसका कोई प्रभावशाली व्यक्तित्व रहता।

अपनी शिक्षा प्राप्त कर एक ऋषि पुत्र घर लौटा। घर में प्रवेश करते ही उसे सबसे पहले माँ के दर्शन हुये। पुत्र ने पूरे आदर भाव से माँ के चरण स्पर्श किये। इसके बाद उसकी आँखें किसी को खोजने लगी। माँ ने पूछा – “ किसे खोज रहा है?” पिता जी को – ऐसा पुत्र ने कहा। माँ ने कहा – “ वह उस कमरे में बैठे कुछ पढ़

रहे है।" पुत्र कमरे में गया। लेकिन पिता वहां नहीं मिले। उसने घर का कोना कोना छान मारा मगर पिता नहीं दिखे। माँ भी आश्चर्यचकित थी आखिर कहां खो गये। पुत्र घर से बाहर आया हर जगह पिता की खोजबीन की परन्तु उनका कहीं पता नहीं चला। पिता का इस प्रकार गायब हो जाना एक रहस्य बनकर रह गया था। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी यह गुथी न सुलझी। इस प्रकार एक वर्ष बीत गये। अचानक एक दिन पिता वापस आ गये। पुत्र ने पिता से अचानक इस प्रकार अदृश्य होने का कारण पूछा। पिता ने कहा बेटे: मैंने तुम्हें घर में प्रवेश करते और माता के चरण स्पर्श करते हुये देख लिया था, उस समय तुम्हारे चेहरे की कान्ति देखकर मैं हतप्रत रह गया था। मेरे मन में तत्काल प्रश्न उठा क्या मैं तुम्हारा प्रणाम व चरणस्पर्श लेने लायक हूँ? मैंने अपने आपको इसके योग्य नहीं पाया और अगले ही क्षण मैंने तपस्या करने का निर्णय ले लिया और पीछे वाले द्वार से तपस्या करने चला गया। कारण यह था कि उस समय तक मैं सांसारिक माया मोह में फंसकर अपने चरित्र को इस योग्य नहीं बना सका था कि तुम जैसे तपस्वी का प्रणाम व चरणवन्दन स्वीकार कर सकूँ। मैंने वन में जाकर तपस्या की और आज अपने आपको इस योग्य पा रहा हूँ कि तुम्हारा प्रणाम व चरणवन्दन स्वीकार कर सकूँ। वास्तव में **" प्रणाम लेने और चरण स्पर्श कराने का अधिकारी वही है जो अपने सामने खड़े व्यक्ति से अधिक योग्य हो।"**

" चरित्र और व्यक्तित्व मनुष्य के दो ऐसे आभूषण हैं जो उसके जीवन में सफलता को अवलोकित करते हैं।"

इमर्सन ने कहा है - " चोरी से कोई धनवान नहीं बन सकता, दान से कोई कंगाल नहीं बन सकता। थोड़ा सा झूठ भी कभी छुप नहीं सकता। यदि तुम सच बोलोगे तो सारी प्रकृति और सारे जीव तुम्हारी सहायता करेंगे। चरित्र मनुष्य की असली पूंजी है।"

जिसका चरित्र निष्कलंक है, जो सदाचारी है, उसका चरित्र प्रत्येक कसौटी में खरा उतरता है। व्यक्ति कही जाय, सुवर्ण के समान निर्दोष प्रमाणित होता है

और इस प्रकार का व्यक्ति निःसंदेह सफल भी होता है। जो व्यक्ति सदाचारी होता है, उसके आगे सभी सिर झुकाते हैं। जिस व्यक्ति का चरित्र जितना दृढ़ होता है उसकी आत्मशक्ति इतनी ही प्रबल होती है और उसका व्यक्तित्व उतना ही आकर्षक होता है।

एक विचारक ने कहा है कि - **" चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है ऐसे चरित्र की मुख्य शक्ति होती है आत्मविश्वास/ चरित्र की दृढ़ता के लिये आत्मविश्वास जरूरी है।"**

" चरित्र एक वृक्ष के समान है और ख्याति व व्यक्तित्व उसकी छाया है, छाया नहीं है तो हम उसके बारे में सोचते हैं, परन्तु वृक्ष वास्तविक वस्तु है जिसके बारे में हम नहीं सोचते हैं।" अब्राहम लिंकन कहते हैं वास्तव में मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं, वरन चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा अंगरक्षक है।" एक विचारक ने लिखा है - " उच्चादर्श वाला दृढ़ आदमी, हमेशा एक खरे आदमी के समान काम करता है, एक किराये पर रखे हुये आदमी की तरह नहीं उसमें, उसके जीवन का अंश होता है एक दिन का काम उसके लिये बहुत आवश्यक होता है और वही उसके लिये मूल्यवान वस्तु होती है। जिसका उसे हमेशा ख्याल रहता है अतः जो व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार व्यक्तित्व पाना चाहता है उसे किसी भी काम को अधूरा व खराब ढंग से नहीं करना चाहिये। उनका लक्ष्य अपने काम के हर भाग को पूर्ण रूप से करना ही होना चाहिये।"

❖ चरित्र व व्यक्तित्व में निखार तभी आता है जब व्यक्ति कठोर परिश्रम करता है। केवल चरित्र अच्छा बना लेना या व्यक्तित्व प्रभावशाली बना लेना काफी नहीं है। इसके लिये अथक परिश्रम व निरन्तर प्रयास की भी आवश्यकता होती है।

" कर्म को बोओ और आदत की फसल काटो आदत को बोओ और चरित्र को काटो, चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो"

- अमरीकी पादरी बोर्डमैन

कहने का तात्पर्य चरित्र मानव की एक ऐसी संपत्ति है जो उसके इस दुनिया

से जाने के बाद भी बची रहती है। चरित्रवान व्यक्ति ही समाज, राष्ट्र व विश्व समुदाय का सही नेतृत्व व मार्गदर्शन कर सकता है। अपने चरित्र व सत्कर्मों से ही मानव चिरआदरणीय व महान व्यक्तित्वशाली हो जाता है। क्योंकि व्यक्तित्व निर्माण में चरित्र का बहुत बड़ा योगदान होता है।

7. दूसरों का ख्याल रखें :-

परिवार के सदस्य हो, दोस्त हो या फिर आपके अधिनस्थ कर्मचारी व व्यवसाय के सहयोगी सभी लोगों को साथ लेकर चलने का सबसे बड़ा रहस्य यही है कि दूसरा व्यक्ति क्या चाहता है, उसे किसकी भूख है? किसकी प्यास है और वह क्या पाने का इच्छुक है अगर हम उसके इस बात का पूरा ध्यान रखेंगे तो वह व्यक्ति भी हमारी समस्त इच्छाओं का ध्यान रखेगा।

विभिन्न भौतिक आवश्यकताओं एवं सुविधाओं को पाने की इच्छा के अतिरिक्त मनुष्य की कुछ अन्य इच्छायें व लालसायें हमेशा रहती हैं जो भौतिक सुविधाओं से भी बढ़कर होती हैं।

1. स्वयं का महत्व अनुभव करने की इच्छा।
2. प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा।
3. प्रेम पाने की इच्छा।
4. थकान से यथा संभव बचने की इच्छा।
5. प्रेम पूर्ण बाते करने की इच्छा।

हम लोगों की इन इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं और ऐसा कर हम उन्हें अपने पक्ष में कर सकते हैं, इसलिये हमें उनकी सहायता करनी चाहिये ताकि वे हमारी सहायता कर सकें। हमें दूसरों में रूचि लेनी चाहिये उनके बारे में अधिक से अधिक जानने का प्रयास करना चाहिये। उन्हें अपने खुद के बारे में बात करने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये जैसा कि मैंने पहले भी कहा है किसी भी व्यक्ति की आप बीती को सुनकर उसे हंसकर नहीं टालना चाहिये बल्कि उसकी बातों को गंभीरता से सुनकर उसके प्रति उदारता व संवेदनशीलता दिखानी चाहिये। जितना

हो सके उसके दिल तक उतरकर उसकी बातों को सुनना चाहिये।

जब आप दूसरों में वास्तविक एवं गंभीर रूचि लेने लगेंगे तो आप पायेंगे कि यही सब दूसरे व्यक्ति भी आपके साथ कर रहे हैं। वे भी आप पर रूचि ले रहे हैं और आपकी सहायता कर रहे हैं। आप हमेशा और सदा के लिये शक्तिशाली लोकप्रिय और प्रसिद्ध होना चाहते हैं यदि कुछ क्षण इस बात पर विचार करें तो आपको ज्ञात हो जायेगा कि केवल आप ही नहीं बल्कि विश्व का प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है, व्यवहारिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति अमीर शक्तिशाली, लोकप्रिय व प्रसिद्ध होना चाहता है। यदि हम सतही तौर पर देखें तो हम एक प्रकार से पूरे विश्व के प्रत्येक व्यक्ति से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और कभी न समाप्त होने वाली होड़ में लगे हैं। सभी मनुष्यों में ऐसी इच्छा व प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक है यह मानव का नियम है मानवीय प्रकृति के सिद्धांत को समझने के बाद अब यह जानने का प्रयास करते हैं कि हम इस सिद्धांत से किस प्रकार लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- ❖ यदि आप दूसरों की इच्छापूर्ति में सहायता करते हुये अमीर व शक्तिशाली बनने की राह में अग्रसर होते हैं तो लोग आपको लक्ष्य की ओर पहुंचने में पूरा पूरा सहयोग करेंगे।
- ❖ जब कोई व्यक्ति आपके साथ मिलकर कार्य करता है तो सबसे पहले वह यही जानने का प्रयास करता है कि इस कार्य में उसे क्या लाभ होगा? इसलिये हमें परिस्थितियों को सामने वाले की दृष्टिकोण से देखना चाहिये अपना लाभ सोचने से अधिक हमें उसे यह बताना चाहिये कि यहां से उसे क्या लाभ होगा? हमें आप शब्द को मैं से ज्यादा महत्व देना चाहिये अगर आप के लिये मैं का त्याग करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिये क्योंकि कहीं न कहीं इस आप में मैं छुपा रहता है।
- ❖ दूसरे व्यक्तियों की गलतियों पर उन्हें दंडित करने के बजाय उस गलती को सही करने के लिये उसके साथ खुद पहल करें।
- ❖ दूसरों के प्रत्येक अच्छे काम की खुले दिल से तारीफ करें और पुरुस्कृत करें।

❖ समाज में कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो बहुत स्वाभीमानी होते हैं वह पैसो से ज्यादा सम्मान को महत्व देते हैं इसलिये ऐसे व्यक्तियों को उचित सम्मान दें।

“ मानव स्वभाव की गहनतम आकांक्षा है, सराहे जाने की इच्छा पसंद किये जाने की इच्छा, दूसरों का सम्मान प्राप्त करने की आकांक्षा ।”

-विलियम जेम्स

“ हम सबकी इच्छा होती है कि उस तरह दुर्लभ व्यक्ति बन जाय जिसके बारे में लोग कहते हैं कि निश्चित रूप से उनमें कुछ बात तो है ऐसा बनने के लिये दूसरों का ख्याल रखना पड़ेगा ।”

-अज्ञात

8. छोटी-छोटी बातों को प्रतिष्ठा का विषय न बनायें :-

“अगर छोटी-छोटी बातों को दिल दिमाग में ले लिया जाय तो वह बहुत जल्दी बड़ी बनकर सामने आ जाती है ।”

हमारे जीवन में प्रत्येक दिन छोटी छोटी घटनाये होती रहती हैं कभी कभी हम उन बातों को दिमाग में भी ले लेते हैं और बिना पर्याप्त कारण दिन दिन भर रात रात भर परेशान रहते हैं बार बार सोचते हैं और कहते हैं उसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ? उसने मुझे ऐसा क्यों कहा ? उसको मैंने फोन लगाया उसने क्यों नहीं उठाया ? मैंने उसे बुलावा भेजा था मगर वह नहीं आया , उसने ऐसा क्यों किया ? ऐसी तमाम बातें हैं जिनको पकड़कर हम परेशान रहते हैं जबकि मेरे विचार से इन बातों का कोई व्यवहारिक महत्व नहीं होता इस प्रकार की बातों पर अगर गौर न किया जाय तो ही उचित रहता है।

जरा सोचिये किसी ने आपका काम नहीं किया, आपका फोन नहीं उठाया आपके बुलावे पर नहीं आया या फिर आपको कुछ कह दिया, अगर वो आपका दोस्त है तब उसने जान बूझकर ऐसा नहीं किया होगा, उसके पास भी कोई न कोई समस्या रही होगी, वह भी किसी मजबूरी में रहा होगा। अगर अब भी आपको इस

पर विश्वास न हो तो एक मिनट के लिये अपने आपको उसकी जगह रखकर देखिये शायद आपको उस पर विश्वास हो जाये। क्योंकि कई बार हम भी इस प्रकार की छोटी छोटी गलतियाँ कर देते हैं। इसलिये हमें दूसरों की भी समस्या समझनी चाहिये जो भूल जाने लायक हो उसे भूल जाइये उसी में हमारी और अन्य लोगों की भलाई है।

दो अच्छे दोस्त थे एक दिन मजाक ही मजाक में एक दोस्त को एक दोस्त ने गाली दे दी। गाली बहुत बड़ी नहीं थी उसने सिर्फ अपने दोस्त से 'हरामखोर' बोल दिया था। यह छोटी सी बात इतनी ज्यादा बढ़ गयी कि उसमें से एक तो अपनी जान गवानी पड़ी दूसरे को जेल जाना पड़ा। यह वास्तविक घटना मद्रास की है जब 11 सितम्बर 2009 को लगातार तीस वर्ष की दोस्ती का इस प्रकार अंत हुआ।

ऐसी ही एक घटना महाराष्ट्र के पूणे शहर की है जहां पर एक पार्टी में पति ने अपनी पत्नी को सिर्फ 'बेवकूफ' कह दिया था। यह शब्द उस औरत को इतना नागवार गुजरा कि उसने न सिर्फ अपने पति को छोड़ दिया बल्कि उसकी हत्या भी करवा दी।

मेरे जीवन की एक घटना है मैं अपने एक दोस्त की शादी में नहीं जा पाया, ऐसा नहीं है कि मैंने ऐसा जानबूझकर किया था वास्तव में मैं उस समय ऐसी परिस्थिति में था कि मैं चाहकर भी उसके यहाँ नहीं जा पाया। लेकिन मेरे लाख समझाने के बाद भी उसे मुझ पर विश्वास नहीं हुआ। परिणामस्वरूप हमारी दस वर्षों की दोस्ती दो मिनट में टूट गयी। कितनी अजीब बात है जिन रिश्तों को बनाते उन्हें पालते पोषते हम अपनी जिंदगी का आधा भाग खर्च कर देते हैं उसे (छोटी सी बात को लेकर जिसे आराम से भुलाया जा सकता था) दो मिनट में मिटा देते हैं। व खत्म कर देते हैं।

समाज में अक्सर देखा जाता है कि कुछ लोग चीख चीखकर कहते हुये नजर आते हैं कि उसने मुझे ऐसा कहा क्यों ? उसने बहुत बड़ी गलती की है मेरे आत्म सम्मान व प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाया है मैं उसे छोड़ूंगा नहीं। इस प्रकार की सोच रखने

वाले व्यक्तियों से मैं एक बात कहना चाहूंगा ठीक है सामने वाला व्यक्ति आपके आत्मसम्मान को धक्का पहुंचाया है ऐसा करके सामने वाले ने गलती की है लेकिन अगर आप उसकी इस गलती को लेकर बैठ जाते हैं तो इसमें अप्रत्यक्ष रूप से निकट भविष्य में आपका ही नुकसान होने वाला है। क्योंकि उससे आप तनावग्रस्त होंगे जो आपके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आर्थिक छति के लिये पर्याप्त होता है।

जब मैं ग्वालियर में था तो अपनी अंकसूची सुधरवाने के लिये विश्वविद्यालय गया। मैंने जरूरी सारी फारमेल्टी पूरी करके वहां के बाबू को दे आया। उसने मुझे तीन दिन बाद आने के लिये कहा, जब मैं तीन दिन बाद गया तो बाबू ने यह कहते हुये टाल दिया कि तुम्हारा काम पन्द्रह दिन बाद ही होगा। मैंने पूछा क्यों? उसने कहा – “क्योंकि मैं अभी तुम्हारा काम नहीं कर सकता मैं समझ गया कि इसको सौ दो सौ चाहिये लेकिन मैंने उसे सौ दो सौ देने की जगह शरारत बस उससे कहा – “कोई मेरा काम रोक दे जमाने में दम नहीं।” और आराम से घर चला गया चूंकि मुझे अंकसूची की कोई खास जरूरत नहीं थी इसलिये मैं एक महीने बाद ही दुबारा गया। और उस बाबू से अंकसूची के बारे में बात किया तो उसने कहा – “मैं तुम्हारा काम नहीं कर पाऊंगा।” मैंने पूछा – ‘ऐसा क्यों सर’, उसने कहा – “तुम कहते हो कि मेरा काम कोई रोक सके, जमाने में दम नहीं” तो अब मैं भी देखता हूं तुम्हारा काम कैसे नहीं रूकता? मैंने कहा – “अरे सर मैं तो ऐसा सिर्फ मजाक में बोल देता हूं अगर आपको मेरी इस बात से बुरा लगा हो तो इसके लिये मैं आपसे क्षमता चाहता हूँ।” उसने कहा – “मैं बहुत जिद्दी किस्म का आदमी हूँ एक बार जो सोच लिया” तो सोच लिया। मैंने उससे एक बार पुनः मांफी मांगी लेकिन उसने कहा – “तुमने ऐसा कहा तो कहा क्यों?” मेरे साथ मेरा एक दोस्त था उसने भी उसे समझाया मगर उसको कोई फर्क नहीं पड़ा। चूंकि अब मुझे अंकसूची की शख्त जरूरत थी इसलिये मैं किसी भी प्रकार से अंकसूची निकलवाने की कोशिश करने लगा। लेकिन लगातार तीन दिन कोशिश करने के बाद भी बात नहीं बनी। अब तो

मेरे लिये भी वह अंकसूची प्रतिष्ठा का विषय बन गई थी। मैंने भी आव न देखा ताव सीधे उस बाबू की केविन के सामने जाकर उसको भला बुरा कहने लगा मेरी बातों को सुनकर सारे कर्मचारी वहाँ पर आ गये बाद में एक अधिकारी के हस्ताक्षेप से मामला शांत हुआ और मेरी अंकसूची आधे घंटे में मेरे हाथ में थी और उसी बाबू ने मुझे दी। और जिस प्रतिष्ठा की डींगे वह मुझसे हांक रहा था, उसकी सारी प्रतिष्ठा दो मिनट में पचास लोगो के बीच मिट्टी में मिल गयी।

मेरे कहने का तात्पर्य है कि छोटी छोटी बातों को प्रतिष्ठा का विषय न बनाये क्योंकि ऐसा सामने वाला भी कर सकता है और जब दो लोगो की प्रतिष्ठा आपस में टकराती है तो इसका परिणाम बहुत बुरा होता है मैं यह नहीं कहता कि इस टकराव में सिर्फ आपका ही नुकसान होगा, सामने वाले का भी नुकसान हो सकता है लेकिन नुकसान तो नुकसान ही होता है।

9. किसी की मजबूरी का गलत फायदा न उठाये :-

“आज के युग में हर एक व्यक्ति दूसरों की मजबूरी पर संवेदनशीलता प्रकट करने के बजाय उसका गलत फायदा उठाने की कोशिश करता है।” मैंने समाज में कई लोगो को देखा है जो इंसान की मजबूरी का फायदा उठाने से नहीं चूकते हैं उनकी नजरे हमेशा मजबूर व कमजोर व्यक्ति को ढूढती रहती है और जैसे ही उन्हें कोई ऐसा आदमी मिलता है उसका भरपूर फायदा उठाते हैं चाहे वह शारीरिक हो व आर्थिक। और कुछ दिनों बाद अपना मकसद पूरा कर चले जाते हैं। इस प्रकार की सोच रखने वाले व्यक्तियों से मैं कहना चाहूंगा कि आपका इस प्रकार का व्यवहार आपके व्यक्तित्व को गर्त में पहुंचा रहा है। क्योंकि आज नहीं तो कल आपके बारे में पता चल ही जाना है और जैसे ही आपके इस प्रवृत्ति के बारे में लोगो को पता चलेगा, फिर कोई भी दूसरा व्यक्ति आप पर भरोसा नहीं करेगा और भविष्य में जब आपको किसी मददगार की जरूरत पड़ेगी, एक भी व्यक्ति आपकी मदद के लिये नहीं आयेगा।

10. घर में आये मेहमान की यथासंभव सेवा करें :-

हमारे भारतीय संस्कृति में घर आये मेहमान को भगवान की संज्ञा प्रदान की जाती है। जब कोई व्यक्ति आपके घर आता है तो वह यह सोचकर आता है कि आप उसके अजीज हैं इसलिये जब भी कोई व्यक्ति आपके घर आये तो उसे अपने आसन से उठकर पूरे स्नेह पूर्वक बैठाये।

- ❖ मेहमान के आने पर आप अपने आपको व्यस्त प्रदर्शित न करें।
- ❖ किसी भी व्यक्ति के आते ही उससे उसके आने का कारण पूछना शुरू न कर दें, उससे आपकी उसके प्रति जल्दबाजी प्रदर्शित होती है।
- ❖ सबसे पहले उससे चाय पानी इत्यादि के बारे में पूछें और दें। इसके बाद उसके आने का कारण पूछें।
- ❖ वह आपसे मिलने आया है इसलिये यथासंभव उसे ही बोलने का मौका दें। ऐसा कतई न करें कि सिर्फ आप ही बोलते रहे और वह चुपचाप बैठा रहे और उसके बाद वह चला जाय।
- ❖ जो व्यक्ति आपसे मिलने के लिये आया है अगर वह किसी दूसरे स्थान से आया है तो उसके जाते वक्त उसे यथा संभव रोकने का प्रयास करें।
- ❖ आये हुये मेहमान के साथ अधिकतम समय व्यतीत करने की पूरी कोशिश करें।

उपर लिखी बातों के पालन करने से आपका व्यक्तित्व उठता है आप प्रशंसनीय बनते हैं और आपका यश सतत् बढ़ता जाता है। कहा जाता है कि अगर दुश्मन भी घर पर आये तो उसका भी अनादर नहीं करना चाहिये। फिर दोस्त तो दोस्त ही होता है।

11. दूसरों पर यथा संभव बोझ न बने :-

आज के युग में इंसान इतना व्यस्त है कि उसके पास सब कुछ होते हुये भी एक चीज का अभाव हमेशा रहता है वह है समय। इसलिये जब हम किसी के घर जाय तो कम से कम समय में अपनी बात पूरी कर वापस आने की कोशिश करें।

जब हम किसी के यहाँ मेहमानी के लिये जाते हैं तो कम से कम दिनों तक रुकने की कोशिश करें और सामने वाले की समस्या का पूरा ध्यान रखें जिससे उसके किसी भी काम में हमारे कारण बाधा उत्पन्न न हो। जब आप किसी के घर पर अपने स्वयं के काम के उद्देश्य से रुकते हैं तो निम्न बातों का ध्यान रखें -

1. अपनी दैनिक उपयोग की चीजे अपने साथ लेकर जाय।
2. सामने वाले व्यक्ति को यथासंभव अपने व्यक्तिगत काम में न घसीटे।
3. सामने वाले व्यक्ति के मान सम्मान का पूरा ध्यान रखें।
4. सामने वाले व्यक्ति के स्थान पर अपने आपको रखकर उसकी समस्याओं को समझें।
5. जब आप किसी ऐसे व्यक्ति के यहाँ जाते हैं जो काफी व्यस्तता की जिंदगी जीता है तो उसके छोटे छोटे काम में हाथ बटाने से न चूके इससे आपका व्यक्तित्व पारदर्शी बनता है।
6. अगर आप एक महिला है तो जिस घर में आप रुकी है उस घर के घरेलू काम (जैसे रसोई का काम) में हाथ बटाने से न चूके।
7. सामने वाले व्यक्ति से आप उतनी ही उम्मीदें रखें जितना आप दूसरों के लिये कर सकते हैं। कभी कभी सामने वाला व्यक्ति आपके मुकाबले आपकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरता तब उस बात को अपने दिमाग में न बैठाये क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की सोच व प्रकृति अलग अलग होती है आपको इस बात की पूरी संतुष्टि होनी चाहिये कि कम से कम सामने वाले ने हमारी मदद तो की भले ही वह छोटी सी ही मदद हो।
8. आप अपने काम को जल्दी से जल्दी पूरा करने की पूरी कोशिश करें फालतू में मेहमानबाजी न दिखायें।
9. जब आप वापस जाये पूरे खुले दिल से उसकी इस मदद के लिये शुक्रिया अदा करें और उसे अपने घर आने का निमंत्रण दें, सामने वाले व्यक्ति के प्रति अपने व्यवहार को ऐसा प्रदर्शित करें कि अगर वह आपकी मदद नहीं

करता तो आपका यह काम आसानी से नहीं हो सकता था।

10. सामने वाले व्यक्ति को उचित पुरस्कार दे चूंकि सामने वाला व्यक्ति आपके किसी भी पुरस्कार को स्वीकार नहीं करेगा इसलिये यह काम सामने वाले व्यक्ति के बच्चों के माध्यम से कर सकते हैं। ऐसा करने से सामने वाले व्यक्ति की आपके प्रति अच्छी भावना होगी और उसके मन में आपके प्रति अच्छा संदेश जायेगा। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे की जरूरत पड़ती है कोई भी व्यक्ति अपने आप मे परिपूर्ण नहीं है। इसलिये एक दूसरे के घर आना जाना भी लाजिमी है और लोग ऐसा करते भी हैं और करना भी चाहिये, लेकिन एक बात को ध्यान में रखते हुये कि जिस घर में हम उठते बैठते हो, जहां हमारा आना जाना हो उस घर को अपने घर के समान ही समझना चाहिये, वहां पर रहने वाले व्यक्तियों को अपने परिवार का एक हिस्सा मानना चाहिये। हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जो सामाजिक दृष्टि से अशोभनीय व सामने वाले व्यक्ति के मान सम्मान के खिलाफ हो।

कभी-कभी समाज में कुछ ऐसे भी व्यक्तियों को देखता हूँ जो किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर रहते हैं, उस व्यक्ति के बिना वह अपना एक भी कदम नहीं बढ़ाते हैं हमेशा किसी भी काम को प्रारंभ करने से पहले उसी व्यक्ति विशेष की ओर देखते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों के इस प्रकार के व्यवहार से मैं सहमत नहीं हूँ क्योंकि प्रत्येक समय वह व्यक्ति विशेष आपका साथ नहीं दे सकता है। परिणामस्वरूप आपका काम बिगड़ भी सकता है और उसके साथ न देने के कारण आपको मानसिक कष्ट भी हो सकता है इसलिये ऐसे व्यक्तियों को मेरी एक सलाह है ज्यादा से ज्यादा अपने काम खुद निपटाने की कोशिश करें। खुद निर्णय लेना सीखें। कभी भी इस बात का इंतजार न करें कि जब सामने वाला साथ में होगा तभी मैं उस काम को करूँगा। अंत में मैं इतना ही कहूँगा कि “किसी दूसरे व्यक्ति पर आश्रित होकर उस पर बोझ न बने, वरना आप अपने जीवन के बहुत सारे अवसर खो सकते हैं।”

11. अपने मूल्य को न गिरने दें :-

इंसान चाहे कितनी भी गहराई पर चला जाय चाहे वह कितना भी कमजोर हो जाय लेकिन वह इंसान ही रहता है।

एक बार एक व्यक्ति प्रसिद्ध दार्शनिक ‘रॉक्सिन’ के पास गया और उनसे कहने लगा “महोदय मैं बर्बाद हो गया अब मेरे पास कुछ भी शेष नहीं बचा। अगर आप चाहे तो मुझे बचा सकते हैं। अगर आप ऐसा न कर सके तो मुझे अपनी सेवा में रख लीजिये।” रॉक्सिन ने कुछ देर तक विचार किया और फिर उसे सोने का एक टुकड़ा देते हुये बोले “बाजार में जाकर इसका मूल्य पता करके आओ” वह व्यक्ति बाजार गया और वापस आकर बोला – “महोदय इस टुकड़े की कीमत पांच सौ डालर है।” रॉक्सिन ने उस सोने के टुकड़े को वापस लेकर उसे कूट-कूट कर दूसरे रूप में ढाल दिया और बोले “एक बार पुनः बाजार जाकर इसकी कीमत पूँछ कर आओ।” वह व्यक्ति बाजार गया और वापस आकर बोला महोदय इसकी कीमत पाँच सौ डालर ही है। रॉक्सिन ने एक बार पुनः उस सोने के टुकड़े को वापस लिया और इस बार उस टुकड़े को दो भागों में बाँटकर उस व्यक्ति को पुनः बाजार जाने के लिये कहा। वह व्यक्ति पुनः बाजार गया और वापस आकर बोला महोदय इन दोनों टुकड़ों को मिलाकर अभी भी इसका मूल्य पांच सौ डालर ही है। रॉक्सिन ने कहा – “जब सोने के दो टुकड़े करने के बाद भी उसका मूल्य उतना ही रहा जितना की पहले था तो फिर तुम कैसे बर्बाद हो सकते हो तुम कल भी उद्योगपति थे और आज भी उद्योगपति हो अंतर इतना है कि कल तुम्हारी कंपनी फायदे में थी आज वह नुकसान में है लेकिन तुम वही के वही हो अगर तुम इतनी बड़ी कंपनी खड़ी कर सकते हो तो उसे नुकसान से भी उबार सकते हो बसर्ते अपने आपको समर्पित मत करो, किसी के सामने अपने आपको नौकर बनाकर पेश मत करो अगर तुम कल मालिक थे तो आज भी दुनिया के सामने अपने आपको मालिक के रूप में पेश करो। तुम्हारा जितना महत्व कल था, उतना ही महत्व आज भी है। बस मुसीबत के कारण तुम्हारा अपने प्रति नजरिया बदल गया है।”

रॉक्सिन की बातों को सुनकर उस व्यक्ति ने पुनः एक नई उर्जा का संचार हो गया और आगे चलकर वह एक कंपनी की जगह दस कंपनियों का मालिक बना।

कहने तात्पर्य यही है कि व्यक्ति के असफल हो जाने पर व कमजोर हो जाने पर उसका मूल्य व महत्व कम नहीं होता बस उसके सोचने का नजरिया बदल जाता है जिसके कारण वह अपनी हिम्मत खो देता है जरा सोचिये जो व्यक्ति शून्य से उठकर शीर्ष तक पहुंच जाता है और अचानक किसी कारण बस शून्य के निकट पहुंच जाता है तो इस स्थिति में क्या इंसान का महत्व व मूल्य गिर जायेगा ? कभी नहीं क्योंकि व्यक्ति वही है जो शून्य से शीर्ष तक पहुंचा था बस स्थिति बदल गयी है अगर वह हिम्मत से पुनः काम करने की कोशिश करें तो वह अपना खोया हुआ सम्मान व रूतबा पुनः प्राप्त कर सकता है। क्योंकि उसके अन्दर अपार क्षमता मौजूद होती है। इसलिये कभी भी इंसान को अपना मूल्य नहीं गिरने देना चाहिये क्योंकि मानव शरीर अमूल्य होता है। जिसकी कीमत कभी भी नहीं आंकी जा सकती है।

12. किसी की मदद करने के बाद बार-बार उसे एहसास न दिलाये :-

मैंने देखा है, आपने भी देखा होगा ज्यादातर लोग दूसरे की थोड़ी सी मदद कर उसे जताते रहते हैं कि मैंने फलां जगह तुम्हारी मदद की थी। इससे स्वयं के काम की महत्ता घट जाती है।

एक दिन एक मुल्ला पोखर पर गिर गये। उन्हे तैरना नहीं आता था हाथ पैर तो मार रहे थे लेकिन खुद को बचा नहीं पा रहे थे। उन्हे डूबता देख उनका मित्र तुरंत पानी में कूद गया और उन्हे बचा लिया। इस घटना के बाद मुल्ला की जब भी अपने मित्र से मुलाकात होती वह उन पर यह एहसान जताना न भूलता कि अगर मैं न होता तो उस दिन अपनी जान गवां चुके होते। शुरु-शुरु में तो मुल्ला उसकी इस बात को तवज्जो नहीं दिया। लेकिन प्रतिदिन यह सुनकर मुल्ला ने उसका जबाब देने की ठान ली।

एक दिन मुल्ला अपने उस मित्र को एक पोखर के किनारे ले गये और उसमें कूद गये। इस पोखर में पानी उनके सीने तक ही था। वे उस समय आराम से खड़े होकर अपने मित्र से बोले “भले तुमने मुझे आज डूबने से नहीं बचाया, फिर भी मैं डूबा नहीं हूँ।” मित्र को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने मुल्ला से अपनी कथनी के लिये मांफी मांगी।

दरअसल हममें से ज्यादातर लोग भी मुल्ला के इस मित्र की तरह ही होते हैं। यहाँ हम किसी दूसरे की थोड़ी सी भी मदद कर बार बार उसे इसका एहसास दिलाते रहते हैं। इससे आपके अहं की संतुष्टि मिल सकती है लेकिन आपकी महत्ता घट जाती है और आपके व्यक्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है। कोई भी व्यक्ति आपके द्वारा की गई मदद को कभी भी भुला नहीं सकता लेकिन बार बार आपके द्वारा याद दिलाने से उस व्यक्ति की आपके प्रति नकारात्मक भावना पैदा होती है। और आपकी वह मदद सामने वाले व्यक्ति को बोझ महसूस होती है।

13. दूसरो से सिर्फ स्वार्थ सिद्ध के लिये ही न मिलें :-

समाज में कुछ लोग ऐसे हैं जो तब तक लोगों से मिलना पसंद नहीं करते जब तक उनका कोई विशेष स्वार्थ उस व्यक्ति से न हो। ऐसे लोगों का इस प्रकार का व्यवहार सामाजिकता की दृष्टि से बिल्कुल गलत है।

समाज में आपको ऐसे कई लोग मिल जायेंगे जो काम पड़ने पर ही आपके पास आते हैं और उस समय अपने आपको इतने बेहतर तरीके से आपके सामने पेश करते हैं जैसे इनसे बड़ा बेहतर व शुभचिंतक अन्य दूसरा कोई नहीं है और जैसे ही आपसे काम पूरा हो जाता है फिर वापस कभी नहीं आते। इस प्रकार के व्यक्तियों का व्यक्तित्व नहीं होता और न ही महत्व, ऐसे व्यक्ति तो सिर्फ स्वार्थ के साथी होते हैं। मैं मानता हूँ दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से स्वार्थवश जुड़ा है लेकिन प्रत्येक स्वार्थ का अपना अलग अलग तरीका होता है। जब अपने स्वार्थ के साथ साथ मानवता व दूसरों का भी स्वार्थ उपस्थित होता है तो इसे अच्छा माना जा सकता है। जो व्यक्ति अच्छे व्यक्तित्व का धनी होता है वह अपने स्वार्थ से ज्यादा

दूसरों के स्वार्थ पर ध्यान देता है। इसलिये अन्य लोग उसे अच्छा व्यक्ति मानते हैं। इस प्रकार का व्यक्ति अच्छा व्यक्तित्व प्राप्त करने के साथ साथ अप्रत्यक्ष रूप से अपना भी स्वार्थ पूरा कर लेता है। मैं उन व्यक्तियों से कहना चाहूंगा जो सिर्फ दूसरे लोगों से अपने काम के लिये मिलते हैं व बातें करते हैं आपका ऐसा व्यवहार आपको एक व दो कामों में तो कामयाबी दिला सकता है परन्तु हमेशा नहीं। क्योंकि सामने वाला व्यक्ति भी आपके व्यवहार को समझने लगता है। वही दूसरी ओर अगर आप किसी व्यक्ति से बिना काम के भी बातें करते हैं व मिलते हैं और उसकी भी समस्या में भागीदारी निभाते हैं तो सामने वाला व्यक्ति भी आपसे आत्मीय रूप से जुड़ जाता है और फिर आपके प्रत्येक काम को करने में उसको कोई एतराज नहीं होता है और आपका व्यक्तित्व भी कमजोर नहीं पड़ता।

एक व्यक्ति था जो सिर्फ लोगों से अपने काम के लिये ही मिलता था उसने अपने जीवन में खूब कामयाबी भी हासिल की लेकिन इस दर्मियान उसके प्रति अन्य लोगों की एक धारणा बन गयी थी कि फलां व्यक्ति तो लोगों से तभी मिलता है व बातें करता है जब उसका कोई प्रयोजन होता है। इसलिये लोग उसे देखकर रास्ता बदलने लगे। अंत में यहाँ तक भी होने लगा कि जब वह लोगों से बातें करने की कोशिश करता तो लोग उससे यह पूछकर आगे बढ़ जाते कि – ‘कोई काम था क्या?’ लोगो कि यह बात – “कोई काम था क्या?” उसे तलवार के घाव जैसी प्रतीत होती थी। अंत में उसके पास सबकुछ होते हुये भी वह अकेला हो गया। उसके मरने के बाद भी लोग उसके प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करने के बजाय अन्य लोगों को उसके इस व्यवहार की कहानियाँ सुनाते थे।

इस कहानी से यही निष्कर्ष निकलता है कि – **“व्यक्ति को हर समय सिर्फ अपना ही स्वार्थ नहीं देखना चाहिये। बल्कि सामाजिकता व मानवता का भी पूरा ख्याल रखना चाहिये।”**

14. व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहें :-

“जब वाद-विवाद तर्क संगत होता है तो कई समस्याओं का हल

करने वाला होता है लेकिन जब यही वाद-विवाद तर्कविहीन होता है तो यह बहस का रूप लेता है जिससे कोई हल तो नहीं निकलता उल्टा मानसिक, शारीरिक, सामाजिक हानि पहुंचाता है।”

कभी-कभी हम जब चार लोग बैठते हैं तो बेतुकी बात पर जिसका हमारी जिंदगी से कोई ताल्लुकात नहीं होता, उस पर वाद-विवाद शुरू कर देते हैं और एक स्थिति ऐसी आती है जब यह छोटी सी बात हमारे बहस का कारण बन जाती है और कभी कभी तो इसका अंत बहुत बुरा होता है। इसका कारण है जब हम किसी बात पर बहस करते हैं तो अपने आपको सिद्ध करने के लिये अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं। इस दौरान न सामने वाला झुकने को तैयार होता और न हम। जबकि हम दोनों में से एक व्यक्ति पूर्णतः गलत होता है।

एक बार मैं चार पाँच लड़कों के बीच बैठा था बातों ही बातों में दो लड़कों के बीच राजीव गांधी एवं संजय गांधी में से कौन बड़ा है? इस बात को लेकर गरमा गरम बहस प्रारंभ हो गई एक इस पक्ष में था संजय गांधी बड़े हैं और दूसरा इस पक्ष में था राजीव गांधी बड़े हैं। जबकि सबको पता था कि संजय गांधी के पक्ष में बोलने वाला लड़का गलत था लेकिन वह मानने को तैयार ही नहीं था। इतनी छोटी सी बात को लेकर बहस इतनी बढ़ गयी की दोनों के बीच मार-पीट की स्थिति निर्मित हो गयी। उन दोनों लड़कों ने अपने साथ साथ हम अन्य लोगों की पूरी रात खराब कर दी।

यह तो एक छोटी सी घटना थी इस प्रकार की हजारों घटनायें प्रतिदिन होती रहती हैं अगर वास्तव में इस प्रकार की घटनाओं पर गौर किया जाय तो इनका कोई अर्थ नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि जब तक आपके पास किसी बात का प्रमाण न हो तो किसी से बहस न करें। अगर आप बहस करते हैं और सामने वाला व्यक्ति आपकी बात को नहीं मान रहा तो ज्यादा आगे बढ़ने की जरूरत नहीं है बस उससे इतना कहकर बहस का रूख बदल दीजिये कि ‘जब हमारे पास इस बात की सत्यता का प्रमाण होगा उस समय हम लोग इस बारे में बात कर लेंगे।’

कभी-कभी हमारे जीवन में कुछ ऐसी बातें आती हैं जिन पर हमें विचार विमर्श करना जरूरी होता है उस समय हमें तार्किक व शालीन भाषा का उपयोग करना चाहिये, सामने वाले व्यक्ति की बातों पर भी पूरा ध्यान रखना चाहिये और शालीनता पूर्वक अपनी सहमति व असहमति प्रस्तुत करनी चाहिये। अपनी ही बातों पर अड़िग रहना ठीक नहीं होता।

कभी-कभी कुछ लोग बातों ही बातों पर सामने वाले व्यक्ति की निजी जिंदगी व उसके परिवार तक पहुंच जाते हैं। परिणामस्वरूप बहस का मुद्दा विवाद का रूख ले लेता है। इसलिये बहस के मुद्दे को सामने वाले व्यक्ति के निजी जिंदगी से तुलना कर तर्क संगति नहीं बनाना चाहिये। क्योंकि कोई भी व्यक्ति उसकी निजी जिंदगी में हस्ताक्षेप बर्दाश्त नहीं करता। चाहे हम हो या आप। एक बात मैंने समाज में देखी है जो व्यक्ति बात-बात पर तर्क वितर्क व बहस करता है उसका व्यक्तित्व सही नहीं माना जाता और न ही कोई अन्य व्यक्ति उससे बातें करना पसंद करता है।

“ ज्यादा बात करने वाले व्यक्ति व बात-बात पर तर्क वितर्क करने वाले व्यक्ति को अन्य दूसरा व्यक्ति सिर्फ मजबूरी बस बर्दाश्त कर सकता है। भावनात्मक रूप से नहीं। ”

जो व्यक्ति कम बोलता है लेकिन जब वह बोलता है अगर उस समय वह तथ्यात्मक बातें ही करता है तो वह सभी का आदरणीय बन जाता है।

ऊपर वर्णित सूत्र जीवन के अभिन्न सूत्र है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को उस सूत्र का पालन करना ही चाहिये अगर उसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में समाज में स्थापित कर और एक कामयाब जिंदगी की ओर बढ़ना है।

15. गुणवान व्यक्तियों के संपर्क में रहने की कोशिश करें :-

मैं यह नहीं मानता कि किसी भी महान व्यक्ति को कोई बुरी संगति प्रभावित कर सकती है लेकिन अन्य व्यक्तियों की नजरों में ऐसा माना जाता है और किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आइना दूसरे व्यक्ति ही होते हैं इसलिये हमें यथासंभव बुरी संगति में नहीं रहना चाहिये और न ही सामाजिक रूप से बदनाम व्यक्तियों के

बीच अपनी उपस्थिति दर्ज करानी चाहिये। अगर आप ऐसा करते हैं तो आप उसी प्रकार के व्यक्तियों के समान व्यक्तित्व की श्रेणी में आ सकते हैं फिर चाहे आप कितने भी पाक हो इस बात का फर्क समाज के अन्य व्यक्तियों पर नहीं पड़ता। क्योंकि कहा भी जाता है कि ‘गेंहू के साथ घुन भी पिसता है’।

बहुत पुरानी घटना है गाँव के लोग एक स्त्री को गाँव से निकाल देते हैं क्योंकि वह एक वेश्या थी। उसके पास कहीं भी रुकने की जगह नहीं थी, वह भटकती-भटकती एक संत के आश्रम में पहुंच गई। और संत के चरणों में लेटकर रोने लगी। संत ने उसके इस प्रकार विलाप का कारण पूँछा। उस स्त्री ने अपनी पूरी व्यथा संत से कह सुनायी। जैसा कि कहा जाता है ‘संत हृदय नवनीत समाना’ संत को उस स्त्री पर दया आ गयी और उनसे उसे अपने आश्रम में रुकने की जगह दे दी। कुछ दिनों तक सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा। लेकिन एक दिन ऐसा आया जब गाँव के लोग संत के चरित्र पर उगली उठाने लगे। और इस प्रकार कि हवा चारों ओर फैल गई कि संत ने अपनी कुटिया में एक वेश्या को रखा हुआ है। वह संत नहीं ढोंगी है, और हमारे समाज को गुमराह कर रहा है। संत के लाख समझाने पर लोगो को उन पर विश्वास नहीं हुआ। अंत में संत को उन लोगो के सामने अपनी पवित्रता के सबूत प्रस्तुत करने पड़े जो कल तक उनके चरणों की धूल अपने माथे में लगाते थे। और एक भयंकर अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ा। तब कही जाकर उन्होंने अपने आपको निर्दोष साबित किया।

कहने का तात्पर्य यही है कि आप अगर सामाजिक दृष्टि से तिरिस्कृत व्यक्ति के संपर्क में रहते हैं तो निश्चित रूप से आप उसी के आचरण के अनुसार समाज के द्वारा देखे व महसूस किये जायेंगे। यह एक कटु सत्य है जो सामाजिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति में लागू होता है। जिस गाँव में, जिस कौम में, जिस परिवार में बुरे लोग व चरित्रहीन व्यक्ति रहते हैं उस गाँव, कौम व परिवार के सारे व्यक्तियों को उसी नजरिये से देखा जाता है जबकि यह बिल्कुल जरूरी नहीं है कि उस गाँव, कौम व परिवार का प्रत्येक व्यक्ति एक ही समान हो। जब लंका जैसी जगह में विभीषण हो सकता है तो फिर वहाँ पर एक अच्छा व्यक्ति क्यों नहीं हो सकता है ?

लेकिन समाज ऐसा नहीं मानता ।

अगर आप चोरो के साथ उठते बैठते हैं तो आप भी चोरो की श्रेणी में आ जाते हो, अगर आप शराबी व जुआड़ी व्यक्तियों के बीच बैठते हैं तो आप भी वही कहलाओगें ।

अगर आप संत व सज्जन व्यक्ति के बीच बैठते हैं तो चोर व चरित्रहीन होने के बावजूद भी सज्जन व्यक्ति कहलाओगे । जो व्यक्ति जिस प्रकार के व्यक्तियों व वातावरण के संपर्क में रहता है उसके प्रति समाज के अन्य व्यक्तियों की भावना व नजरियाँ उसी प्रकार का होता है और आपका व्यक्तित्व उसी प्रकार के व्यक्तियों के चरित्र व वातावरण के अनुसार ही निर्धारित किया जाता है । अगर आप सोचते हो कि मैं तो अच्छा हूँ लोगो को जैसा सोचना हो सोचते रहे यह लोगो का काम है इस प्रकार की सोच के लिये मैं आपको कुछ हद तक सही मान सकता हूँ लेकिन पूरी तरह से नहीं क्योंकि मैं भी समाज में रहता हूँ और आप भी समाज में रहते हैं, हम सभी लोगो को समाज के तौर तरीके के अनुसार जीवन व्यतीत करने की नैतिक जिम्मेदारी बनती है । इसलिये सामाजिक तौर तरीको के पालन न करने वाले व्यक्तियों के साथ उठने बैठने वाले व्यक्तियों के प्रति इस प्रकार की सोच रखने वाले व्यक्तियों को मैं गलत नहीं मानता । क्योंकि इस समाज में 95% लोग आम इंसान की जिंदगी जीते हैं और आम इंसान वही सोचता है व देखता है जो उसे दिखायी देता है वह उसके बारे में सोचना पसंद नहीं करता जो उसे दिखायी नहीं देता है और न ही उस काम का आंकलन करता जो गुमनाम तरीके किया जाता है । वह उसी काम का आकलन करता है जो उसे दिखता है ।

मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि जो व्यक्ति चाहते हैं कि उनका व्यक्तित्व समाज

के बीच बेहतर ढंग से स्थापित हो तो उन सारे व्यक्तियों को समाज के तौर तरीके के अनुसार चलना चाहिये । इस चीज को कभी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता ।

“ जो व्यक्ति समाज में रहता है उसे समाज के नियमों का पालन करना ही पड़ता है वरना वह मानव समाज का नहीं बल्कि जंगल का अधिकारी होता है जहां पर विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी व दानव-पिशाच निवास करते हैं ।”

-अरस्तु

शिक्षक की कलम से

मैं एक शिक्षक हूँ। मैं कुशल मानवता का निर्माता हूँ। मैं स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी उच्चतम भूमिका का निर्वहन करने वाला एक मार्गदर्शक हूँ। मैं कोमल भी हूँ और कठोर भी हूँ। मैं कठोर सिर्फ इसलिए हूँ कि मेरा विद्यार्थी दिशाहीन मार्ग का चुनाव न कर सके। जब मेरा विद्यार्थी प्रशंसनीय कार्य करता है तो मेरा हृदय खुशी व गर्व से ओतप्रोत हो जाता है, जब वह मुस्कराता है तो मेरा हृदय भी मुस्कराता है पर जब वह निराश होता है तब मैं उसकी निराशा का कारण ढूँढकर उसके चेहरे पर पुनः मुस्कान लाने की हर संभव कोशिश करता हूँ। सच मानिये जितनी दुआ मैं अपने आप के लिए नहीं मांगता उससे कहीं ज्यादा दुआ अपने विद्यार्थी के लिए मांगता हूँ। मैं हमेशा अपने विद्यार्थी को समाज की प्रथम पंक्ति के प्रथम स्थान में देखना चाहता हूँ। मैं उसके जन्म दाता का स्थान तो नहीं ले सकता पर जन्मदाता के बराबर रहने की कोशिश हमेशा करता हूँ। मैं, मेरे द्वारा दी गई विद्या का मूल्य कभी नहीं लेना चाहता, परन्तु मेरी पारिवारिक एवं समाजिक जिम्मेदारी मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर करती है। सच मानिये मैं अपने विद्यार्थी से निःस्वार्थ, निहायत प्रेम करता हूँ। उसके सुनहरे, भविष्य के लिए हमेशा चिन्तनशील रहता हूँ।



डॉ. शिवशंकर पटेल

मूल्य : ₹ 175/-

“सकारात्मक प्रयास कभी
निष्फल नहीं होता।”

